प्रकाशकः—

मास्टर मीश्रीमल

मंत्रीः—श्री जैनोदय पुस्तक प्रकाशक समिति,

रतलाम.

मुद्रक—

मैनेजर—श्री जैनोदय प्रिंटिंग प्रेस, रतलाम.
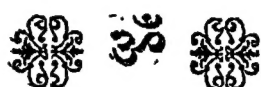
निवेदन।

प्रिय पाठकों! आप यह अच्छी तरह से जानते हैं कि कविवर सरल स्वभावी पण्डित मुनि श्री हीरालालजी महाराज के सुशिष्य जगत् वल्लभ प्रसिद्ध वक्ता पण्डित मुनि श्री चौथमलजी महाराज ने केवल ललित ही नहीं, किन्तु प्रभावशाली और अति ही सारगर्भित व्याख्यानों द्वारा संसारी जीवों के साथ अनेकों उपकार समय समय पर किये, तथा आज भी उसी प्रकार करने में लगे हुए हैं। इन उपकारों को यहां दर्शाने की न तो हमारी मनशा हैं और न हमारे में इतनी सामर्थ्य है।

जब मुनि प्रवचन करते हैं उस के बीच बीच में आप अपने बनाये हुए उपदेश जनक पदों को कह कर, जनता का चित्त धर्म मार्ग की ओर आकर्षित करते है। वे पद समय पर पृथक् पृथक् और छोटे छोटे पुस्तकाकारों के रूप में प्रकाशित हो चुके हैं। तथापि इससे जनता का मन संतोष नहीं हुआ, उनका इससे भूख न बुझी। जनता चाहती थी कि एक ही जगह बैठकर आपके अभी तक के सभी स्तवनों के अमृत मय रस को पान करने का, एक ही समय में मजा चख सके। तब हमने साहित्य प्रेमी पण्डित मुनि श्री प्यारचन्दजी महाराज से आग्रह किया। बस यह उन्हीं मुनि श्री की कृपा का सुफल है मुनि श्री के रचे हुए जितने भी स्तवन नये और पुराने, हमें आज तक मिले, हमने उन्हें इस संग्रह में रखने की ओर भरपूर चेष्टा की है।

इस में आपके सुख के साधन हैं, मन संतोष का मसाला है, परलोक को बिगाड़ देने वाले कार्यों का कथन है, लोक और परलोक को सुधार ने के साधनों का सम्मिश्रण है, जन्म और मरण के दुख दर्दों की ओर आपका ध्यान दिलाया गया है, और जगत् की धांधली में यम दूतों की कठोर करतूतों का वर्णन कराया गया है। इतना सब होने पर भी, एक

बात आपके बड़ी ही तबियत के लायक इस में है; और वह है, सम्पूर्ण संग्रह आपकी निजु घरेलू और बोल चाल की भारतीय भाषा में होना, जिससे कि बाल वृद्ध नर नारी सब पढ़ सुन कर एकसा लाभ इससे उठा सकें।

थोड़े ही समय में इस पुस्तक के चार संस्करण निकल चुके इससे इसकी उपयोगता के विषय में हमें कोई बोलने-लिखने की विशेष आवश्यकता नहीं।

भवदीय

मास्टर मिश्रीमल

मंत्री श्री जैनोदय पुस्तक प्रकाशक समिति

रतलाम (मालवा)

अकारायनुक्रमणिका

सं०	अ	पृष्ठाङ्क

सं०	ए	पृष्टांक

सं०	क	पृष्ठांक

सं०	क	पृष्ठाङ्क

सं०	त	पृष्ठाङ्क

सं०		पृष्ठाङ्क

सं० | ल | पृष्ठाङ्क

व

श

सं०	श	पृष्ठाङ्क
३८७ श्री जादुपति महाराज		२५७
३८८ श्री वीर प्रभु से विनति		२६४
३८९ श्री श्री महावीर गुण धीर		२५४
३९० श्री संघ से विनय कर के		२६७

श्रीसौधर्मगच्छीयहुक्मीचन्द्राजितसूरिश्वरेभ्यो नमः ।

सर्वज्ञाय नमः

जैन सुबोध गुटका

मंगलाचरण.

दृष्ट्वा भवन्तमनिमेष विलोकनीयं,
नान्यत्र तोपमुपयाति जनस्य चक्षुः ।
पीत्वा पयः शशिकरद्युतिदुग्धसिंधोः,
क्षारं जलं जलनिधे रशितुं क इच्छेत् ॥ १ ॥

१ वीर स्तुति.

। नाटक ।

महावीर जिनेश्वरा, सकल सुखकरा । विघन हरण शांति करण, अघरिपु हरा ॥ टेर ॥ सिद्धार्थ के नन्द आप छो, त्रशला देवी मात । क्षत्री कुल में जन्म लियो है, तीन लोक विख्यात ॥ महा० ॥ १ ॥ वर्षीदान दे संयम लीनों, पाम्या केवल ज्ञान । मुनि तपीश्वर सुरनर किन्नर, सेवा करे नित्य आन ॥ महा० ॥२॥ अधिक चन्द्र से निर्मल छो तुम, रवि से अधिक प्रकाश । सागरवर गंभीर आप छो,

पूरो दास की आश ॥ महा० ॥३॥ कल्पवृक्ष हो कामधेनु, चिन्तामणि रत्न समान । जहां जावें हो विजय धर्म्म की, ऐसा दो वरदान ॥महा० ॥४॥ असी साल चेत सुदी एकम, किजे प्रभुजी निहाल । गुरु प्रसादे चौथमल कहे, सेलाना गुणमाल ॥ महा० ॥ ५ ॥

२ दया का फल.

तर्ज—या हसीना बस मदीना, कर्वला में तूं न जा ॥

दया की बोवे लता, शुभ फल वही नर पायगा । सर्वज्ञ का मंतव्य है, गर ध्यान में जो लायगा ॥ टेर ॥ आयु दीर्घ होता सही, अरु श्रेष्ठ तन पाता वही । शुद्ध गौत्र कुल के बीच में, फिर जन्म भी मिल जायगा ॥ १ ॥ घर खूब ही धन धान्य हो, अति वदन में बलवान हो । पदवी मिले है हर जगह, स्वामी बड़ा कहलायगा ॥ २ ॥ आरोग्य तन रहता सदा, त्रिलोक में यश विसतरे । संसार रूप समुद्र को, आराम से तिर जायगा ॥ ३ ॥ गुरु के परसाद से, यूं चौथमल कहता तुम्हें । दया रस भीने पुरुष के, इन्द्र भी गुण गायगा ॥ ४ ॥

३ मिथ्या ममत्व.

तर्ज-लावणी

कर धर्म्म ध्यान ले सीख गुरुकी मानी । क्यों सटर पटर में, खोवे सारी जिन्दगानी ॥ टेर ॥ तु धंधा बीच में, अंधा होके डोले । पैसेके नशे में आंखें भी नहीं खोले ।

कोई कहे नीति की, अभिमान में बोले। मैं ग्राम बीच जरदार, मुझे कौन तोले। मेरे चन्द्रमुखी है नार जैसे सुलतानी ॥ १ ॥ तूं किसको कहता महल ये मंदिर हाथी। और ये गुलाम दिन रात के सेवक साथी। सब छोड़ चले जैसे तेल जले पे बाती। ये झूंठी दुनियां साथ कोई नहीं आती। तेने किया पुण्य अरु पाप भोगे तूं प्राणी ॥ २ ॥ तेरा बालपना तो खेल कूद में जाता। जवानी बीच में फिरे होय मद माता। नहीं सत्संग में लेजा भर तूं आता। हीरे को तज के पत्थर पर ललचाता। तुझे बार २ समझावे सद्गुरु ज्ञानी ॥ ३ ॥ यूं अनंतकाल गयो, अब न इसे बितावो। प्रमाद छोड़ के जिनवर के गुण गावो। धर्म आराम में सदा जीव रमावो। करे सुमति सखियां अर्ज ध्यान में लावो। मुनि चौथमल उपदेश देवे नित तानी ॥ ४ ॥

४ मनशुद्धि प्रयत्न.

(तर्ज--या हसीना बस मदीना कर्बला में तू न जा)

लो तन को धोए क्या हुवे, इस दिल को धोना चाहिये। बाकी कुछ भी ना रहे, बिलकुल ही धोना चाहिये। ॥ टेर ॥ शिल्ला बनावो शील की, और ज्ञान का साबुन सही। प्रेम पानी बीचमें, सब दाग खोना चाहिये ॥ १ ॥ व्यभिचार हिंसा झूंठ चोरी, काम क्रोध मद लोभ का। मैल बिलकुल ना रहे, तुम्हें पाक होना चाहिये ॥ २ ॥ दिल खेत को करके सफा, पाप कंकर को हटा। प्रभु नाम का इस

खेत में, फिर बीज बोना चाहिये ॥ ३ ॥ मुंह को धोती है बिल्ली, स्नान भी कव्वा करे। ध्यान बक कैसा धरे, ऐसा न होना चाहिये ॥ ४ ॥ गुरु के प्रसाद से, कहे चौथमल सुन लीजिये। झूंठ गोहर छोड़दे, सच्चे पिरोना चाहिये ॥ ५ ॥

५ सु स्त्री.

(तर्ज--थारो नरभव निष्फल जाय, जगत का खेल में)

ऐसी पतिव्रता मिले नार पुरुष पुण्यवान को ॥ टेर ॥ पंखो ढोरी अन्न जिमावे, समझे पिउ भगवान् को । दासी समान हो हुक्म उठावे, बोले मिष्ट जबान को ॥ १ ॥ सास सुसर का मात पिता ज्यूं, माने वह फरमान को । लज्जा नम्रतावंत भ्रात ज्यूं, समझे पर इन्सान को ॥ २ ॥ कुलोद्धारिणी कुल वर्द्धक वही, घर श्रृङ्गार कुलवान को । सत्य सलाह देके समझावे, लाभ और नुकसान को ॥३॥ विपति में सहायक पतिको, देवे साज धर्म्म ध्यान को । पति रक्षक अति क्षम्यावान् वो, आदर करे महमान को ॥ ४ ॥ देव गुरु की भक्ति करे है, अभ्यास करे नित ज्ञान को । गुरु प्रसादे चौथमल कहे, समरे सीता इतिहास को ॥ ५ ॥

६ द्रोपदी का चीर हरण.

(तर्ज--ना छेड़ो गाली दूंगारे, भरवादो मोय नीर)

मैं तो आई शरण तुम्हारीरे, प्रभु कीजे मेरी सहाय ॥ टेर ॥ सती द्रौपदी राणी, ग्रही दुष्ट दुशासन तानी । फिर लाया सभा मंझारी रे ॥१॥ सती देखे निगाह पसारी

फिर छूटी आंसू धारी। और कांप रही उस वारीरे ॥ २ ॥ कहे दुर्योधन ललकारी, लो तन से चीर उतारी। अब करदो इसे उघारीरे ॥ ३ ॥ सती बोले करी पुकारी, मारी नाव पड़ी मंझधारी। अब कौन लगावे पारीरे ॥ ४ ॥ है पाण्डव महा बलकारी, पर बैठे समता धारी। ये गए द्यूत में हारीरे ॥ ५ ॥ तुम पत राखो गिरधारी, मुझ गऊ को देदो उबारी जो आज भई निरधारीरे ॥ ६ ॥ जो हो सत शील सहाई, तो कीजो रक्षा आई। क्यों देरी मेरी वारीरे ॥ ७ ॥ पापयों ने चीर ऊतारा, पर नहीं आया वह पारा। हुआ ढेर चीर का भारीरे ॥ ८ ॥ कहे चौथमल हितकारी, 'सुर' बोले जय जयकारी। यह सत्यकी महिमा जहारीरे ॥ ९ ॥

७ पर पुद्गल से शोभा।

(तर्ज--पनजी मूंडे बोल)

काया थारीरे २ पर पुद्गल से या शोभा पावेरे ॥ टेर ॥ कंपिलपुर को भूप दूमोई, न्यायवंत कहवावेरे। वर्ष २ में इन्द्र महोत्सव, आप मंडावेरे ॥ १ ॥ इन्द्र स्तम्भ चित्र युक्त, नगर में रोपावेरे। दुनियां पूजे आयने, फूल माला पहनावेरे ॥ २ ॥ महिमा देखी उसी स्तम्भ की, राजा मन हुलसावेरे। कालांतर में वही स्थम्भ नीचे गिर जावेरे ॥ ३ ॥ धूल मैलमें स्थम्भ भरियो, राजाके नजरां आवेरे। कहां गया चित्रामण सारा, ज्ञान लगावेरे ॥ ४ ॥ ऐसे देही रंगी चंगी, आछी या दार्शवेरे। अनित्य असार सार धर्म

वैराग्य में छावेरे ॥ ५ ॥ राज्य कुंवर ने राज्य देई, राणीने समझावेरे । प्रत्येक बुद्धि संयम ले फिर, मोक्ष सिधावेरे ॥ ६ ॥ साल गुण्यासी रतनपुरी, फागण वदि चउदस आवेरे । पूज्य प्रसादे चौथमल, सुख संपत पावेरे ॥ ७ ॥

८ करुणा रस

(या हशीना बस मदीना, करबला में तू न जा)

रहम करले अय दिला, सवाव इसमें मानकर । रहम बड़ी है चीज जहांमें, अय सनम पहिचान कर ॥ टेर ॥ नबी महमद रसूल हकका, एक रोज जंगल में गये । देखा तो हिरणी को किसीने, बांध रक्खी तान कर ॥ १ ॥ देख हजरत को वह हिरणी, इन्सान की बोली जवां । महरबां हो खोलदो, मस्कीन मुझको जानकर ॥ २ ॥ जान बच्चों की बचेगी, दूध मिलने पर सही । सुनके हजरत बोले मेरी, बात पर तू ध्यान कर ॥ ३ ॥ करना क्या जो तू न आवे, हिरणी कह सुनलो बयां । देती हूं जामिन खुदा; तुमको पेगम्बर मानकर ॥ ४ ॥ रहम ला उस हिरणी को, हजरत ने फोरन खोलदी । इधर एक दम फिर वहां, बोला शिकारी आनकर ॥ ५ ॥ खोली किसने हिरणी को, हजरत कहे हम ही तो हैं । आती अभी खामोश कर, मत बोल ज्यादा तान कर ॥ ६ ॥ इतने में मय बच्चों के, आ हिरणी हाजिर होगई । रो के बच्चे कहे छुड़ादो, अम्मा को अहसान कर ॥ ७ ॥ बच्चों की बातें सुन शिकारी,

नबी के कदमों पे गिरा। शिकार से तोबा करी, हुआ नेक ला इमान कर ॥ ८ ॥ मय बच्चों के आजादगी, हिरणी को रस्सा खोलकर। दे दुआ हिरणी गई, वन बीच सुख वो मानकर ॥ ९ ॥ खुदा के प्यारे ऊमत के सरवर, ऐसे नबी साहिब हुए। रहम ला हिरणी बचाई, बात को परमान कर ॥ १० ॥ बे जबां को मारना, कब रब को ये मंजूर है। छोड़दे गफलत को अय दिल, आगे का सामान कर ॥ ११ ॥ हिरणी नामे पे करा, इस नज़्म को सारा खतम, चौथमल देता नसीहत, इस तरफ कुछ ध्यान कर ॥ १२ ॥

९ स्वार्थ मय संसार.

(तर्ज—ना छेड़ो गाली दूंगारे, भरने दे मोय नीर)

दुनियां मतलब की यारीरे, तू किण से बांधे प्रीत ॥ टेर ॥ भाई को भाई बुलावे, बे मतलब वो छिटकावे। नहीं आने दे घर द्वारीरे ॥ १ ॥ माता सुपुत्र बतावे, जो धन कमाई ने लावे। बे मतलब देवे निकारीरे ॥ २ ॥ यूं मीठी बोले बेना, बीरा कोड़ दिवाली जीना। बे मतलब देवे विसारीरे ॥ ३ ॥ नारी अति प्रेम रचावे, भरतार कर तार बतावे। बे मतलब बोले करारीरे ॥ ४ ॥ एक नारी थी अति प्यारी, निज बालम को उस वारी। उन्हें दिया कूप में डारीरे ॥ ५ ॥ सब झूठा जगत पसारा, तुझे सम झाऊं हर वारा। मैं जोड़ी जैसी निहारीरे ॥ ६ ॥ बजाज

खाना चोक कहावे, चौथमल उपदेश सुनावे । इस इन्दौर शहर मंझारी रे ॥ ७ ॥

१० तप का महत्व.

(तर्ज—या हसीना बस मदीना, करबला में तू न जा)

यह कर्म दलको तोड़ने में,तप बड़ा बलवान है । काम दावानल बुझाने, मेघके समान है ॥ टेर ॥ ग्रासरूपी सर्प कीलन, मंत्र यह परधान है । विघन घन तम हरण को, तप जैसे भानु है ॥ १ ॥ लब्धिरूपी लक्ष्मी, की लता का यह मूल है । नंदिखिण विष्णु कुंवर का, साराही बयान है ॥ २ ॥ वन दहन में आग है, और आग उपशम मेघ है । मेघ हरण को अनल है, और कर्म को तप ध्यान है ॥ ३ ॥ देवता कर जोड़ के, तपवान के हाजिर रहे । वर्धमान प्रभु तप तपे, उपना जो केवल ज्ञान है ॥ ४ ॥ गुरु के परसाद से, करे चौथमल ऐसा जिकर । आमोसही ऋद्धि मिले, यही स्वर्ग सुख की खान है ॥ ५ ॥

११ दुर्बुद्धि.

(तर्ज—थारो नरभव निष्फल जाय जगत का खेलमें)

ऐसे विनाश काले, विपरीत बुद्धि इन्सान की ॥टेर॥ पाप कर्म में धन ने खरचे, नहीं इच्छा पुण्य दान की । बोले झूंठ दे गवाही झूंठी, नहीं प्रतीत जबान की ॥ १ ॥ नित्य घर में कुसंप चलावे, बात नहीं धर्म्म ध्यान की । मान मर्यादा छोड़ चले, नहीं माने नीतिवान की ॥ २ ॥

चोरी चुगली करे पराई, परवा नहीं भगवान की । ठठा-बाजी करे रात दिन, लड़वा में अगवानकी ॥ ३ ॥ काम अंध हो आदत ऐसी, जूं कातों के श्वान की । झूंठे कलंक देवे पर के सर, नहीं चिन्ता अपमान की ॥ ४ ॥ सर्प सरीखो क्रोध वदन में, नहीं सोचे लाभ नुकसान की । गुरू परसादे चौथमल कहे, सुणे न शिक्षा ज्ञान की ॥ ५ ॥

१२ प्रभु प्रार्थना.

(तर्ज—ना छेड़ो गाली दूंगारे भरवादो मोए नीर)

सुनिये प्रभु विनय हमारीरे, क्यों देरी मेरी बार ॥टेर॥ दीनबन्धु दीनानाथ, संकट मेटन साक्षात । मैं आयो तेरे दरबारीरे ॥ १ ॥ सीता की विपता निवारी, अग्नी का बनाया वारी । है अद्भुत महिमा थारी रे ॥ २ ॥ द्रौपदी की सभा मंझारी, तुम पत राखी उस वारी । किए लम्बे चीर विस्तारीरे ॥ ३ ॥ सुदर्शन को शूली चढ़ाया, जब उसने तुमको ध्याया । हुआ सिंहासन सुखकारीरे ॥ ४ ॥ कई भक्तों का प्राण बचाया, अब शरण चौथमल आया । दो झटपट मुझको तारीरे ॥ ५ ॥

१३ परभव सुख प्रबन्ध.

(तर्ज—पनजी मूंडे बोल)

ले संग खर्चीरे २, परभव की खर्ची लीधा सरसीरे ॥ टेर ॥ कूड़ कपट कर धन कमाई, जोड़ जमी में धरसीरे। सुन्दर महल बागने छोड़ी, जाणो पड़सीरे ॥ १ ॥ आगे

धंधो पाछे धंधो, धंधो कर २ मरसीरे । धर्म सुकृत नाय करे, परभव कांई करसीरे ॥ २ ॥ राजा वकील बेरिस्टर से, कर मोहबत तूं संग फिरसीरे । कौन छुड़ावे काल आय, जब घेंटी पकड़सीरे ॥ ३ ॥ पांच कोस गामांतर खातिर, खरची लेई निकलसीरे । नया शहर है दूर, नहीं मनियाडर मिलसीरे ॥ ४ ॥ यौवन की थने छाक चढ़ी, बुढ़ापा आया उतरसीरे । इस तनकी तो होसी खाक, कहां तक निरखसीरे ॥ ५ ॥ घरकी नारी हांडी फोड़ने, पाछी घरमें वरसीरे । मसाण भूमि में छोड़ थने, फिर कुटुम्ब बिछड़सीरे ॥ ६ ॥ लख चौरासी की घाटी करड़ी, कैसे पार उतरसीरे । रत्ती सीख नहीं लागे थारी छाती वजरसीरे ॥ ७ ॥ साल गुण्यासी हातोद में, जिनवाणी जोर से वरसीरे । गुरू प्रसाद चौथमल कहे, किया धर्म्म सुधरसीरे ॥ ८ ॥

१४ स्त्री शिक्षा.

(तर्ज-स्वामी भले विराजाजी)

बायां सूतर सुणोए २, सूतर सुण्या में लाभ घणो ॥ टेर ॥ पांच पचीस मिल आइ बखाण में, बातां करवा मंडी । पापड़ बड़ियां दाल भात में, आइ बणाई कड़ी ॥ १ ॥ गेंदी कहे म्हारे आया जंवाई, गारां गावा लागी । धूरी कहे म्हारे आयो पियर को, पूछण ने रह गई आगी ॥२॥ फूली कहे नान्या का भाईजी, समझे नहीं समझाया । गेंद दियो सोनी ने घड़वा, हाल तलक नहीं लाया ॥ ३ ॥

निर्थक बातां करवा में तो, घड़ियां बन्द लगावे । सज्झाय बोल की बात करे तो, उठी ने चली जावे ॥ ४ ॥ साधां के आतां लाजां मरो, ब्याही के डेरे गाल्यां गावो । बरात गया पिछे टूंट्यो काड़ो, भैसा रोल मचावो ॥ ५ ॥ टमकू झमकू लालां गुलावां, मूली सब मिल जावे । केतो काणि को घर भांगे, के किणरे राड़ लगावे ॥ ६ ॥ साधु सतियां की निन्दा करना; सासु श्वसुर से लड़ना । इण बातों से सुणजो बायां; लक्ष चौरासी फिरना ॥ ७ ॥ चौथमल कहे सुणजो बायां, मैं वखाण करवा लागो । एक चित्त से सूत्र सुणो थे; निरथक बातां त्यागो ॥ ८ ॥

❀ ❀ ❀ ❀

१५ प्रभु से मुक्तिदान की प्रार्थना.

(तर्ज—मांच.)

ऋषभ प्रभु मांगु मोक्ष को दान कृपा कर दीजे श्री भगवान ॥ टेर ॥ लक्ष चौरासी में भटकत आयो, चवदे राज दरम्यान । आप सरीखा देव न दूजा, केवल ज्ञानी गुणवान ॥ १ ॥ तुम गुण सिन्धु अपार पार नहीं, पावे कोई इन्सान । सुर गुरू महिमा कथ २ हारे, तो म्हारी एक जबान ॥ २ ॥ अलख निरंजन तू अविनाशी; अगम अगोचर महान । नाम लियां सुख सम्पदा पावे, वरते क्रोड कल्याण ॥ ३ ॥ नाभी राय मरू देवी के नन्दन, इखाग वंश के भान । गुरू प्रसादे चौथमल तो, शरण लियो है आन ॥ ४ ॥

१६ सत्य की महत्त्वता.

(या हशोना वस मदोना करबला में तू न जा)

सत्य कभी तजना नहीं यह; सर्व गुण की खान है। विपत वारक सुर सहायक, देखलो परधान है ॥ टेर ॥ सत्य का शरणा ग्रहो, यश विस्तरे त्रिलोक में। जलाग्नि समन अहि व्याघ्र स्थंभन, विश्वास का यही स्थान है ॥ १ ॥ वशीकरण जादू बड़ा, प्रेम का यही मित्र है। पावन परम निडर वही, प्रबल अतिशयवान है ॥ २ ॥ नियम सृष्टि जाय पलटी, सत्य कभी पलटे नहीं। सत्य पे ही तन मन धन, तीनों ही कुरबान है ॥ ३ ॥ सत्य रवि परगट हुवे, मिथ्या तिमिर का नाश हो। सर्व सिद्धि राज्य ऋद्धि का अमूल्य निधान है ॥ ४ ॥ आग के बीच बाग हो, दरियाव के बीच थाग हो। जहर का अमृत बने, और महा सुखों का स्थान है ॥ ५ ॥ अयोध्या का राज्य फिर, हरिश्चन्द्र को दिया सत्य ने। सत्यधारी भूप विक्रम, सभी करे परमाण है ॥ ६ ॥ गुरू के परसाद से, करे चौथमल सत्य पे जिकर। यतो धर्मस्ततो जयः सत्य पे भगवान है ॥ ७ ॥

१७ सुबुद्धि.

(तर्ज—थारो नरभव निष्फल जाय जगत का खेल में)

ऐसा भाग्य उदय सुबुद्धि, होय इन्सान की ॥ टेर ॥ सर्व जगह प्रतीत जमावे, बात करे इमान की। मात पिता की माने केन, और लगन लगी धर्म ध्यान की ॥ १ ॥

दुर्व्यसन को अनर्थ समझे, चले चाल कुलवान की। सत्संग करे डरे अपयश से, कथा सुने भगवान की ॥ २ ॥ कुमार्ग में धन नहीं खरचे, परमार्थ में परवा न की। सत्य से प्रेम नम्रता पूरी, दृढ़ता पक्की जबान की ॥ ३ ॥ कुशिक्षा को कान सुने नहीं, माने बात नीतिवान की। दुःखी जीव ने देवे सहायता, कदर करे बुद्धिवान की ॥४॥ पक्षपात को काम नहीं है, नहीं लहेर अभिमान की। गुरु प्रसादे चौथमल कहे, इच्छा रहे निर्वान की ॥ ५ ॥

१८ पर स्त्री निषेध.

(तर्ज--ना छेड़ो गाली दूंगारे भरवादो मोए नीर)

मानो यह कहन हमारीरे, पर नारी छोड़ियो ॥टेर॥

या हँस २ तुझे बुलावे, कर नेन सेन समझावे। है विष की भरी कटारीरे ॥ १ ॥ या मीठी २ बोलें, घूंघट के पटके ओले। फिर अपयश की करनारीरे ॥२॥ तन सुंदर वस्त्र सजावे, नवयुवक से प्रीत लगावे। कई छलबल की करनारीरे ॥ ३ ॥ मत रीझो रूप निहारीरे, इसे समझो आफू क्यारी। हुई रावण की कैसी खुवारीरे ॥ ४ ॥ मत प्यारी प्रिया जाणो, काली नागन है पहचानो। पल क्षण में प्राण हरनारीरे ॥ ५ ॥ सब भूख प्यास बिसरावे, स्वप्ने में वही दर्शावे। है पूरी कामणगारीरे ॥ ६ ॥ ये साल गुण्यासी जानो, हुओ इन्दौर शहर में आनों। कहे चौथमल हर वारीरे ॥ ७ ॥

१६ मन को शिक्षा.

(तर्ज—कांटो लागोरे देवरिया मोंसूं संग चल्यो नहीं जाय)

तों को बार २ समझाऊं रे मनवा, जिनवर के गुण गाले ॥ टेर ॥ जैसे पूर नदी का बहावे, जूं जोबनिया कल ढलजावे । किसपे करे मरोड़, छोड़ जाना है भेद तू पाले ॥ १ ॥ मात पिता कुटुम्ब परिवारा मोह रह्यो रमणी के लारा । स्वार्थ के साथी जान मान तू सत्कार्य में आले ॥ २ ॥ माया दोलची कहलावे, आत जात ये देती जावे । चंचल चपला जूं निहार, नार नादेसी न्यायलगाले ॥ ३ ॥ गोरा बदन देख घुमरावे, रंग पतंग सा कल उड़जावे । क्या गंधी देह का गर्व, अभ्र जैसे ये पलटा खाले ॥ ४ ॥ छत्र-पति कइ राजा राणा, देखत खाक में जाय समाणा । सरपे काल निशाना दिखाना, गफलत दूर हटाले ॥ ५ ॥ गुरू प्रसादे चौथमल कहता, जो नाम प्रभुका हरदम लेता । तिरजावे संसार सार, यही दया धर्म को पाले ॥ ६ ॥

२० सत्य की महत्त्वता

(तर्ज—वारी जाऊंरे सांवरिया तुम पर वारनारे)

सत्य मत हारणारे, सत्य के ऊपर तन मन धन सब वारणारे ॥ टेर ॥ सत्य से सर्प हो पुष्प की माला । अग्नि मिट जल हो ततकाला । विष अमृत हो जाय, सत्य को धारणारे ॥ १ ॥ सत्य है स्वर्ग मोक्ष को दाता । सत्याग्रही का सुर गुण गाता । पुष्प वृष्टि करे देव, सत्य जय कारणारे

॥ २ ॥ देखो हरिश्चन्द्र ने सत्य धारा । बेची उसने रानी तारा । आप भंगी घर रहा, न किया विचारणारे ॥ ३ ॥ सत्य तुंबा नहीं जल में छिपेगा । कंचन के नहीं कीट लगेगा । चौथमल कहे सत्य है विघन विदारणारे ॥ ४ ॥

२१ सती सुभद्रा का यश

(तर्ज-ना छेड़ो गाली दूंगारे भरवादो मोय नीर)

प्रभु कीजे रचा हमारीरे, विपता को दूरी टार ॥ टेर ॥ एक जिन कल्पी मुनिराया, सुभद्रा के घर आया । उठ हाथां हर्ष वहरायारे ॥ १ ॥ कर्म योग नेन के मांई, पड़ा फूस मुनिके आई । सती काढ्यो कर चतुराईरे ॥ २ ॥ सासुने कलंक चढ़ाया । सती तप तेला का ठाया । 'सुर' प्रकटी धीर बंधायारे ॥ ३ ॥ दिया वज्र कमाड़ वनाई । चारों दरवाजा ताई । खोले से खुलते नांईरे ॥ ॥ ४ ॥ जब खुले देव कहे बानी, सती कच्चे सूत में आनी । चलनी से काढ़े पानीरे ॥ ५ ॥ ढूंडी नृप ने पिटवाई, हो सती खोले वो आई । सासु को सती जांईरे ॥ ६ ॥ नहीं पूर्व पाप छिपाया, फिर पर किडी के आया । यूं सासू वाक्य सुनायारे ॥ ७ ॥ सुभद्रा आय उस वारी, लियो चलनी से जल कारी । दीनी तीनों पोल उघारीरे ॥ ८ ॥ मिल सुर नर मंगल गावे, सत्य धर्म्म की महिमा छावे । सासु अपराध खमावेरे ॥ ९ ॥ रतलाम चौथमल आया, पूज्य राज्य का दर्शन पाया । साल गुरयासी में गुण गायारे ॥ १० ॥

२२ संसार अनित्य.

(तर्ज--पनजी मूंडे बोल)

माया दुनियां की २ है झूठी मनवा, क्यों ललचावेरे ॥ टेर ॥ उगे जोई आथमेरे, फूले जो कुमलावेरे । सदा एकसी रहे नहीं, ज्ञानी फरमावेरे ॥ १ ॥ पूंडवर्धकको भूपति निघाई नाम कहावेरे । मान मर्दन कर दुश्मन को, सिर छत्र धरावेरे ॥ २ ॥ भोग विलास करे राण्यां संग यूं सुखमें दिवस वितावेरे । एक दिन वन क्रीड़ा करवा; आप सिधावेरे ॥३॥ मांझरी से छायो आंबो, मारग में दरशावेरे । उपर बैठी कोयली; वा राग सुनावेरे ॥ ४ ॥ एक लूंव राजा ने तोड़ी, पीछे सेना आवेरे । देखा देखी तोड़ने, ये सब लेजावेरे ॥५॥ राजा फिरने आंबो देख्यो, स्तंभ रूप जब पावेरे । विरूप जोई पूछियो; सब बात बतावेरे ॥ ६ ॥ अनित्य पणो राजा विचारे; ऊमर बीत्यां जावेरे । रूप यौवन ऋद्धि संपदा; नहीं स्थिर रहावेरे ॥ ७ ॥ राज्य तिलक देइ पुत्रने, नृप संयम को पद पावेरे । प्रत्येक बुद्धि होके केवली; फिर मोक्ष सिधावेरे ॥ ८ ॥ साल गुण्यासी गोतमपुरा में; दस ठाणा सुख पावेरे । गुरु प्रसादे चौथमल; मुनिका गुण गावेरे ॥ ९ ॥

२३ मनको शिक्षा.

(तर्ज-गर्बी)

मना समझो अवसर एवो पायेनेरे; क्यों बैठा तुम्हें

ललचायनेरे ॥ टेर ॥ मना पूर्व पुण्य संयोग सेरे । पांचों इंद्रियशरीर निरोग वेरे ॥ १ ॥ मना उत्तम कुल मानव भव सहीरे । गुरु मिलिया निर्ग्रंथ फिर चाहे कहीरे ॥ २ ॥ मन: कुटुंब धन जाणो आपणोरे । नहीं आवेगा साथ झूठो थापणोरे ॥ ३ ॥ मना भुगतणा वेला तू एकलोरे । नहीं मानो तो सूत्र देखलोरे ॥४॥ ऐसी जाणी ने दया धर्म कीजियेरे । पाई लक्ष्मी को लावो लीजिएरे ॥ ५ ॥ नाथद्वारे साठ साल मांयनेरे । कियो चौमासो चौथमल आयनेरे ॥ ६ ॥

२४ चेतन—प्रतिबोध.

(तर्ज-पनजी मूंडे बोले)

चेतन थारोरे २ नहीं चेते तो यो वांक सारोरे ॥टेर ॥ आरंभ परिग्रह माहे राचे, समझे नहीं मन थारोरे । सागर सेठ सागर में डूबो । रेगयो धन सारोरे ॥१॥ हुई कुमोदनी द्रह से दूरी, काछेव दुख निकारयोरे । मोह माया में फेर पड्यो, निजचंद विसारयोरे ॥ २ ॥ आयु कमल को काल भमरो, रस पीवे हरवारोरे । तू सूतो किस नींदमें, यो जावे जमारोरे ॥ ३ ॥ पर वस्तु ने अपनी मानी, योही कियो बिगाड़ोरे । सिंहपणो तज गाडर में,क्यों होय सुमारोरे ॥४॥ गुरु प्रसादे चौथमल कहे, जो करणो थने सुधारोरे । दया धर्म की नाव वैठ, उतरो भव पारोरे ॥ ५ ॥

२४ सीता प्रार्थना

(तर्ज—कव्वाली)

तुरत रघुनाथजी आकर,बचालोगे तो क्या होगा । नि-

शाचरने ग्रही मुझको, छुड़ालोगे तो क्या होगा ॥ टेर ॥ मुझे मालूम न थी इसकी-कि, यह दंभी प्रपंची है। धोखा देके ले जाता है, छुड़ा लोगे तो क्या होगा ॥ १॥ चिड़िया को पकड़ ले बाज, इसी मानिंद करी इसने। अरे इस नीच पापी को, हटादोगे तो क्या होगा ॥ २ ॥ सुनो लछमण मेरे देवर, तुम्हारी भाभी पर आकर । पड़ी आफत बड़ी भारी, मिटादोगे तो क्या होगा ॥ ३ ॥ दयालु कोई दया करके मेरी तकलीफ की बातें । अभी श्रीराम पे जाकर, सुना दोगे तो क्या होगा ॥ ४ ॥ तन से जेवर गिराती हूं, आना इस खोज को पाकर । मुझे निराधारको आधार, बंधादोगे तो क्या होगा ॥५॥ चौथमल कहे सुनो सज्जन, सिया रो २ पुकारे है। कोई रघुनाथ से मुझको, मिला दोगे तो क्या होगा ॥६॥

२६ चेतन को शिक्षा.

(तर्ज—पंजी सूंडे बोल)

मती लीजेरे २, बदनामी कितनो जाणो प्राणीरे ॥ टेर ॥ ली बदनामी राजा रावण, हरी राम की राणीरे । स्वार्थ भी हुआ नहीं, गई राजधानीरे ॥ १ ॥ दियो पींजरे बापनेरे, कंश अनीति ठाणीरे । विरोध करीने मर्यो हरिसे, हुई उसीकी हानीरे ॥ २ ॥ ली बदनामी कौरवांने, नहीं बात हरिकी मानीरे । पांडवों की जीत हुई, महाभारत बखानीरे ॥३॥ ली बदनामी बादशाह ने, गढ़ चितौड़ पर

आनीरे। हाथ न आई पदमणी, गई नाम निशानीरे।।४।। वाशन तो विरलाय जावे, बासना रह जानीरे। तज घुमराई लीजे भलाई, या सुख दानीरे।। ५।। धर्म ध्यान से शोभा होवे, सुधरे नर जिंदगानीरे। गुरु प्रसादे चौथमल कहे, धन जिन बानीरे।। ६।।

२७ लक्ष्मणजी का राम से कहना.

(तर्ज—कँवरा साध तणो आचार)

लक्ष्मन अरज करे हित काज, सुनो श्री रामचन्द्र महाराज।। टेर।। सीता है निर्दोष प्रभुजी, मत वनवास पठावें। दुनियां की प्रतीत नहीं है, खाली गप्प ऊड़ावे।।१।। पानी में पत्थर तिरेस कोई, हो पश्चिम दिनकार। नेन अंध देखना चाहे, सकल रूप संसार।। २।। पंकज हो पाषाण पै ज कोई, समुद्र लोपे पाल। वैश्वानल शीतलता भजे स कोई, माता मारे बाल।। ३।। दिन की तो रजनी बने स कोई, रजनी दिन प्रकटाय। इतनी बातें नहीं बने स जूं सिया शील नहीं जाय।। ४।। राम कहे अपयश की सोगुं, बात सुणी नहीं जाय। घर से इसे निकाल दूं स यह, लोक कहन मिट जाय।।५।। दांतां बीच दिनी अंगुली को, सुनकर ऐसी बात। किया शीघ्रता कार्य बिगड़े, सोच करो जगन्नाथ।। ६।। वह दिन याद करो प्रभुजी, सिया का हुआ हरण। आंसू नहीं नेन से रुकता, नहीं रुचता जल अन्न।। ७।। कहे

विशेषण सुनो राम, सीता की देऊं जमान। कष्ट सह्यो धर्म नहीं छोड़ा, बहुत गुणों की खान ॥ ८ ॥ मिलकर सारा करे वीनती, राम धरे नहीं कान। चौथमल कहे कैसे माने, होन हार बलवान ॥ ९ ॥

२८ चेतन के साथी कौन ?

(पनजी मूंडे बोल)

साथे आसीरे २ सुन प्रानी जो सत कर्म कमासीरे ॥टेर॥ तू जाने मारे मात पिता, सुत दारा मामा मासीरे। स्वार्थ का है सकल सगा, तू लीजे विमासीरे ॥ १ ॥ स्नान करे बागों में जा नित,तन पोशाक सजासीरे। दर्पण में मुख देखर तू पातर नचासीरे ॥२॥ भोगों में मद मस्त बनी तू,फूल्यो नहीं समासीरे। चटके यौवन उतर जाय,पीछे पछतासीरे ॥३॥ बार बार यह उत्तम नरदेह,प्रानी फिर कब पासीरे। शोभा ले संसार में, अमर रह जासीरे ॥४॥ खेल गोठ में साथीड़ा संग, खूब माल उड़ासीरे। सुकृत की कोई बात करे, मन में नहीं भासीरे ॥५॥ बोवे पेड़ बंबूल को फिर,आम कहांसे खासीरे। सुख अभिलाषी पाप करे, सुन आवे हांसीरे ॥ ६ ॥ दान सुपात्र देने से तू, भव सागर तिर जासीरे। गुरु प्रसादे चौथमल कहे, तजे बदमासीरे ॥ ७ ॥

२९ एकयता

(तर्ज--माच)

अरज म्हारी, सुनियो सब सरदार। एको कर मेटो या

तकरार ॥ टेर ॥ चिड़िया ने तो गुलाम जीते, गुलाम बीबी से जावे हार । पुनःबीबी से बादशाह जीते, सबमें एको मुखत्यार ॥ १ ॥ तृण मिलाय छप्पर नर छावे, पड़े नहीं जल धार । तृण के रस्से से गज बांधे, चसके नहीं लगार ॥ २॥ देखो जल की धार बहे तो, पर्वत नांखे विदार । जिस घर मांही एको नाही, कैसे हुआ बिगार ॥ ६ ॥ गज ने पिंज से चूहा निकारच्या, करुणा कर उस बार । चूहा कूप से गज ने उबारच्या, कास्तकार गयो हार ॥ ४ ॥ ऐका से श्रीरामचन्द्रजी, रावणने लियो मार । गुरु प्रसादे चौथमल कहे, एको जगत में सार ॥ ५ ॥

३० पाप.

(तर्ज—पनजी मूंडे बोल)

क्यों पाप कमावेरे २ वरजे सत्गुरु नहीं ध्यान में लावेरे ॥ टेर ॥ पाप कर्म कर धन थें जोड्यो, कुटुम्ब मिली खाजावेरे । भोगे परभव एकलो, ज्ञानी फरमावेरे ॥ १ ॥ छाने २ कर्म करे ज्यूं, रुई में आग छिपावेरे । फूटे पाप को घड़ो प्रगट, आखिर पछतावेरे ॥ २ ॥ इखाई राठोड़ भव पाप किया, मरगा लोढ़ा दुख पावेरे । वीर वचन से इन्द्रभूति, देखन को जावेरे ॥ ३ ॥ धर्म रुची ने नाग श्री, कडवो तूंबो वहरावेरे । सोलह रोग हुआ तन में, मर नर्क सिधावेरे ॥ ४ ॥ कीड़ी सहित फल डाल्यो

आग में, भागवत बतलावेरे । चित्रकेतु के लाल ने, राण्यां जहर पिलावेरे ॥ ५ ॥ अस्मी साल इन्दौर चौमासो,दित-वारया में ठावेरे । गुरु प्रसादे चौथमल, उपदेश सुना-वेरे ॥ ६ ॥

३१ दान की योजना.

(तर्ज—नागी नवल बनीका व्याव में)

सारे मन्दरिये वेरण ने हालो, तीन भवन रा नाथ ॥ टेर ॥ सज श्रृङ्गार कामिनी वारी, उभी मार्ग मांय । धन दहाड़ो आज को वारो, प्रभुजी हम घर आय ॥ १ ॥ भांत २ का भोजन द्वारी, उभी लेके थाल । एक कहे प्रभु अठे पधारो, करदो जल्दी निहाल ॥ २ ॥ नगर कौशुम्बी वीच प्रभु, फिर अभिग्रह धार । थोडासा बाकला ले दी, चन्दनबाला को तार ॥ ३ ॥ त्रशला दे के लाड़ला, प्रभु सिद्धार्थ के नन्द । चौथमल की मनोकामना, पूरो वीर जिनन्द ॥ ४ ॥

३२ फूट की करतूत.

(तर्ज—पनजी मूंडे बोल)

फूट तज प्राणीरे २, आपस की फूट है या दुख दानीरे ॥ टेर ॥ पड़ी फूट गयो बदल विभीषण, रावण बात नहीं मानीरे । सोना की गई लंका टूट, मिट्टी में मिलानीरे ॥ १ ॥ कौरव पांडव के आपस में, जब या फूट भराणीरे । लाखों मनुष्य गये मरी युद्ध में, हुई नुकसानीरे

॥ २ ॥ पृथ्वीराज जयचंद राठोड़ के, हुई फूट अगवाणीरे। बादशाह ने कियो राज, दिल्ली पे आनीरे ॥ ३ ॥ फूट थिके या कैसी सख्ती, फूटे सर नहीं दानीरे। फूटे मोती की देखो, किमत हलकानीरे ॥ ४ ॥ संप जहां पर मिले सम्पदा, फूट जहां पर हानिरे । ऐसी जानने बुद्धिवान, तज कुत्ता तानीरे ॥ ५ ॥ अस्सी साल में रामपुरे, मंडी बाजारमें आनीरे। गुरु प्रसादें चौथमल यूं, केवे हित आनीरे ॥ ६ ॥

३३ नेत्रादेश.

(तर्ज--लावणी छोटी खड़ी)

नयनन में पुतली लड़े भेद नहीं पावे, कोई सच्चा गुरु का चेला बना छन्द गावे ॥ टेर ॥ इस मनके तच्छन लच्छन सब नयनन में। यह नेकी बदी के दोनों दीप नयनन में। ये योगी भोगी की मुद्रा है नैनन में। और खुशी गमी की पहिचान है नैनन में। ये करे लाखों में चोट चूक नहीं जावे ॥ १ ॥ यह काम क्रोध दो जालिम रहे नैनन में। ये प्रीति नीति रस दोनों बसे नैनन में। है शक्ति हटोटी बदकारी नैनन में । ये लिहाज नम्रता सभी बसे नैनन में । नैनन के वश हो प्राण पतंग गमावे ॥२॥ ये शूरवीर के तोड दीखे नैनन से । और सुगडाई के अक्षर मिले नैनन से। अष्टादश देश की लिपी लिखे नैनन से। और वरणादिक की खास विषय नैनन से।

विष अमृत ये दोनों नैन में रहावे ॥ ३ ॥ मुनि मुद्रा का दरस करे नैनन से। पांव धरे जीवों को टाल नैनन से। गौशाले की रक्षा वीर करे नैनन से। इलायची कुंवर गुरू देख तिरे नैनन से। मुनि चौथमल नैनन पै छंद सुनावे ॥४॥

३४ शिष्य प्रार्थना.

(तर्ज—अम्मा मुझे छोटीसी टोपी दिलादे)

गुरू मुझे ज्ञान का प्याला पिलादो, प्याला पिलादो आला बनादो। गुरू मुझे मोहब्बत का शरबत पिलादो ॥टेर॥ सोता हुआ हूं गफलत की निंद में। हां मेरा पकड़ के पल्ला जगादो ॥ १ ॥ भवसिन्धु में मेरी नौका पड़ी है। आप इसे मल्लाह होके तिरादो ॥ २ ॥ काम क्रोध मद मोह चोर हैं। इस डाकू से मुझको बचादो ॥ ३ ॥ संसार का नाता झूंठा है त्राता। मुझे मुक्ति के मार्ग लगादो ॥ ४ ॥ चौथमल कहे गुरूजी मुझको। ज्ञशलानन्द से वेग मिलादो ॥ ५ ॥

३५ चेतन को अनित्य की शिक्षा.

(तर्ज—पनजी मूंडे बोल)

प्राणी परदेशी २ अमर दुनियां में कुण रेसीरे ॥टेर॥ मोटो पंथ संत फरमावे, तू क्यों रयो वेसीरे। मारग मांही विलम रयो, थारी बुद्धि कैसीरे ॥ १ ॥ सुन्दर का रंग रूप में मोयो, तूं बणरयो भोग गवेषीरे। सत शिक्षा देव—णवाराको, तू बणे द्वेषीरे ॥ २ ॥ उदे अस्त तक राज्य

करता, थी ऋाद्धि इन्दर जैसीरे। बादल ज्यूं विरलाय गया तू कहां तक रहेसीरे ॥ ३ ॥ पुण्य से छत्रपति हुवो मोटो, हाथी घोड़ा मवेसीरे। आगे सुख मिले तुझको, कर करणी वैसीरे ॥ ४ ॥ माल खजाना धर्या रहेगा, कुण लजावा देसीरे। अंत समय थारा तनका भूषण, उतार लेसीरे ॥ ५ ॥ परभव में जासीरे पापी, जम हाथां थारी पेसीरे। नर्क कुंड में कर्म फल तू, कैसे सेसीरे ॥ ६ ॥ गुरू प्रसादे चौथमल कहे, या वाणी उपदेशीरे। वे ही तीरे जो जिन प्रभु को, शरणों ग्रहसीरे ॥ ७ ॥

३६ कुपुत्र लक्षण.

(तर्ज-थारो नरभव निष्फल जाय जगत का खेलमें)

ऐसे कुल लजावन, कलियुग में संतान है ॥ टेर ॥ पिता माता से करे लड़ाई, बोले गेर जबान है। चले नारकी आज्ञा मांही, बन रह्या दास समान है ॥ १ ॥ जुआ चोरी वैश्या परनारी, दुर्व्यसनों में गलतान है। कुसंगत में फिरे भटकतो, नहीं इज्जत को ध्यान है ॥ २ ॥ माता कहे कठिन से पाला, जिसका भी कुछ ध्यान है। कुत्ती वैश्या रांड तेरा, क्या मुझ पर अहसान है ॥ ३ ॥ साला श्वसुर से हेत घणों, भ्राता से तानों तान है। धन खोई ने करजदार हो निर्लज्ज फिरे अज्ञान है ॥ ४ ॥ सत्संग तो खारी लागे, कुकर्म में अगवान है। चौथमल कहे प्रतीत नहीं, नहीं बोली का परमान है ॥ ५ ॥

३७ रहनेम को प्रतिबोध.

तर्ज-कांटो लागोरे देवरिया मोसूं संग चल्यो नहीं जाय

तो को वार वार समझाऊं हो मुनिवर मन अपनो समझाले ॥ टेर ॥ मुं तो रहगई दर्शन प्यासी, आप बने जा गिरिवर वासी । तू रिष्टनेम भगवान् पे, देवरिया निगाह लगाले ॥ १ ॥ मुझे अकेली आप निहाली, विषयभोग की जबां निकाली । नहीं वंछु तुझे लगार, वार तू चाहे जितना पटकाले ॥ २ ॥ धिक्कार पड़ो अब तुझके ताईं, गज तज खर पे सुरत लगाई । इससे मरना परधान जान, प्रतिज्ञा पूरि निभाले ॥ ३ ॥ जातिवंत सर्प कहलावे, वमें जहर वह भी नहीं चहावे । पड़े आग में जाय ध्यान में लाय वाज तू आले ॥ ४ ॥ सती वेन रहनेम सुणी ने गए मोक्षमें शुद्ध बनीने । कहे चौथमल चित्त लाय, आगम के माय सदा गुण गाले ॥ ५ ॥

३८ योग्यता का परिचय.

(तर्ज—लावणी खड़ी)

पापी तो पुण्य का मारग क्या जाने है, खर कमल पुष्प की गंध न पहचाने है ॥ टेर ॥ नकटाने नाक दूजा को दाय नहीं आवे । विधवा ने सांग स्वागन को नहीं सुहावे । हो उदय चँद्रमा चोरों को नहीं भावे । लुब्धक को लागे अनिष्ट जो जाचक आवे । सुनके सिद्धान्त मिथ्यात्वी रोस आने है ॥ १ ॥ अगायक गायक की करे बुराई ।

निर्धन धनी से रखता है अकड़ाई । दाता को देख मूंजी ने हंसी उड़ाई । पतिव्रता को देख लंपट ने आंख मिलाई । गुणी के गुण को द्वेषी कब माने है ॥ २ ॥ बंध्या क्या जाने कैसे पुत्र जावे है । संतन के भेद को वही संत पावे है । हीरे की जांच तो जौहरी को आवे है । या घायल की गति घायल बतलावे है । सत शिक्षा को मूरख उलटी ताने हैं ॥ ३ ॥ मुक्ता तजके गुंजा शठ उठावे । इक्षु को तजके ऊंट कटारो खावे । पा अमूल्य नरतन विषयों में ललचावे । गज से विरोध हो जैसे श्वान घुरावे । कथे चौथमल समझे वही दाने है ॥ ४ ॥

३६ चेतन प्रतिबोध.

(तर्ज—शेर खानी दादरा)

चेतन दुनियां में, देखो भरा क्या है ॥ टेर ॥ कोठी बनी है बागमें, पानी का होज है । लीलम के कंठ पहनते, मोटर की मौज है । बजे नकारे जोर से, संग लाखों फोज है । कहां गए वह राजा उनका भी खोज है । खाली मोह बीच फंसना पड़ा क्या है ॥ १ ॥ माता पिता और भ्राता स्वजन परिवार है । सोले श्रृङ्गार सजती अप्छरासी नार है । फूलों की सेज उपरे करती प्यार है । पकड़ के काल लेगया करती पुकार है । स्वार्थका रोना और अड़ा क्या है ॥ २ ॥ बाटी के बदले खेत दे कैसा गंवार है । कव्वा उड़ाने खातिर दिया रत्न डार है । नपुसंक को

ब्याही कन्या वो होती बेजार है । ऐसे नर जन्म खो सेवे विकार है । अरे पापी ये तेने करा क्या है ॥ ३ ॥ दिन चार की है बहार मत भूलियो जनाब । आखिर तो वह कुमलायगा जो खुल रहा गुलाब । तकलीफ देके गैर को करते हो तुम अजाब । कहे चौथमल रहिम कर तू जो बने नवाब । मान नसीहत बंदा खड़ा क्या है ॥ ४ ॥

४० दान का फल.

(तर्ज—या हसीना बस मदीना करबला में तू न जा)

लाखों प्राणी तिरगये हैं, दान के परताप से । सुखी होवे पलक में, एक दान के परताप से ॥ टेर ॥ दारिद्र दुर्भाग्य अपयश, समूल तीनों नाश हो । 'सुर' सम्पदा हाजिर रहे, एक दान के परताप से ॥ १ ॥ पाप रूपी तम हरण को, पुण्य रवी प्रकट करे । निर्वाण पद उसको मिले, एक दान के परताप से ॥ २ ॥ धन्नाशालिभद्रजी श्रीमंत कैवन्ना हुए । भरतजी चक्रवर्ती हुए, एक दान के परताप से ॥ ३ ॥ हर जगह सत्कार हो, राज्य मान्य सरदार हो । धन से भरे भंडार हो, एक दान के परताप से ॥ ४ ॥ गुरु के परसाद से, करे चौथमल ऐसा जिकर । सुरलोक की सम्पत मिले, एक दान के परताप से ॥ ५ ॥

४१ चेतन बोध.

(तर्ज—खाजा लेलो खबरिया)

जीआ साथ क्या यहांसे लेजावेगा ॥ टेर ॥ पोपे तू

खूब तन, डोले तू बन ठन । मिट्टी में मिल जावेगा ॥ १ ॥ पापों को कर कर, खजाने को भर भर; कौड़ी साथ नहीं जावेगा ॥ २ ॥ यौवन के अंधे, पड़े भोगों के फंदे; सो आगे पछतावेगा ॥ ३ ॥ जागना हो तो जाग अज्ञानी, ऐसा समय कब पावेगा ॥ ४ ॥ गुरु प्रसादे चौथमल कहे, धर्म्म से सुख प्रगटावेगा ॥ ५ ॥

४२ शील का फल.

(तर्ज—या हसीना बस मदीना करबला में तू न जा)

तारीफ फैले मुल्क में, एक शील के परताप से । सुरेन्द्र नमे कर जोड़ के, एक शील के परताप से ॥ टेर ॥ शुद्ध गंगाजल जैसा, चिन्तामणि सा रत्न है । लो स्वर्ग मुक्ति भी मिले, एक शील के परताप से ॥ १ ॥ आग का पानी बने, हो सर्प माला पुष्प की । जहर का अमृत बने एक शील के परताप से ॥ २ ॥ विपिन में बस्ति बने, हो सिंह मृग समान जी । दुश्मन भी किङ्कर बने, एक शील के परताप से ॥ ३ ॥ चंदनबाला कलावती, द्रोपदी सीता सती । सुखी हुई मेनासती, एक शील के परताप से ॥ ४ ॥ गुरु के परसाद से, करे चौथमल ऐसा कथन । सुर संपति उसको मिले, एक शील के परताप से ॥ ५ ॥

४३ संसार स्नेह असत्य.

(तर्ज-ना छेड़ो गाली दूंगारे भरवादो मोए नीर)

मैंने अच्छी तरह से जानीरे, दुनियां की झूंठी प्रीत ।

है श्वासा जहां लग आशारे, दुनियां की झूंठी प्रीत ॥ टेर ॥ ये मात पिता सुत भ्राता, मतलब का सब है नाता । बिन मतलब दूरा जातारे ॥ दु० ॥ १॥ लाखों का माल कमाया, पापों से घड़ा भराया । तेने सुन्दर महल चुनायारे ॥ २ ॥ उमदा पोशाक सजावे, तू इत्तर फूलेल लगावे । सब तेरा हुक्म उठावेरे ॥ ३ ॥ कानों में मोटा मोती, तेरी झग मग दीपे जोती । कई त्रिया मोहित होतीरे ॥ ४ ॥ फूलों की सेज बिछावे, पद्मन से प्रीत लगावे । वा पूरो प्रेम जनावेरे ॥ ५ ॥ जो अन्तकाल आजावे, भूमि पे तुझे सुलावे । सब सुन्दर वस्त्र हटावेरे ॥ ६ ॥ तू कहता धन घर मेरा, अब हुआ लदाउ डेरा । चले पुण्य पाप संग तेरारे ॥ ७ ॥ सब छोड़ी काया मुलाजा, मिली मुख २ धन सब खाजा । तेरा करके मृत्यु काजारे ॥ ८ ॥ फिर उसी सेज के माईं, पर पुरुष को लेत बुलाई । वो तुझको दे विसराईरे ॥ ९ ॥ नृप परदेशी की प्यारी, थी सूरी कन्ता नारी । उन्हें दिया पतिको मारीरे ॥ १० ॥ गुरु प्रसादे चौथमल गावे, सच्चा उपदेश सुनावे, कर धर्म ध्यान सुख पावेरे ॥ ११ ॥ यह साल गुण्यासी खासा, किया उज्जैन शहर चौमासा । किया लूणमंडी में वासारे ॥ १२ ॥

४४ भावना महत्व

(तर्ज—या हसीना बस मदीना करवला में तू न जा)

सर्वोपरि हितकारिणी है, भावना भव नाशिनी । अघ

हटानी पुण्य बधानी, भावना भव नाशिनी ॥ टेर॥ विवेक वन संचारिणी,उपसम सुख संजीवनी। संसार समुद्र तारिणी है, कर्म अरिने त्राशिनी ॥ १ ॥ दान शील तप तीनों भावना से सफल हो। शिव मिलावनी पाविनी, कषाय शैल विनाशिनी ॥ २ ॥ वन रहो चाहे घर रहो, भाव बिन करणी वृथा। गुण स्थानारोहन मोह ढाहन, परम ज्ञान प्रकाशिनी ॥ ३ ॥ श्रेष्ठ जीरण स्वर्ग में गए,भवन में भर्त केवली। मरुदेवी भगवती को, शिव धाम निवाशिनी ॥ ४ ॥ गुरु के परसाद से, करे चौथमल ऐसा कथन। ऐसी भावो भावना, सदा हर्षानन्द विलाशिनी ॥ ५ ॥

४५ कु स्त्री.

(तर्ज—थारो नर भव निष्फल जाय जगत का खेल में)

मिले पाप उदय कुलच्छणी नार इन्सान को ॥ टेर ॥ पति से करे विरोध सदा, और बोले कटुक जबान को। हुक्म चलावे पति के ऊपर, माने नौकर दुकान को ॥ १ ॥ मने परणिया जदसुं थाने, अन्न मिल्यो है खान को। सारा घर को काम चलाऊं, यूं वाक्य कहे अभिमान को ॥ २ ॥ कुटल कलेसणी व्यभिचारिणी, करे कुधान शुद्ध धान को। पियर सासरा की तज लज्जा, लिहाज नहीं खानदान को ॥ ३ ॥ स्वछंद हो उल्टी चले, नहीं माने पति फरमान को। साधु सत्यां की करे बुराई, नहीं काम पुण्य दान

को ॥ ४ ॥ कुलक्षणी कहे पति मरे कद, विनती कर भगवान को । गुरु प्रसादे चौथमल कहे, वह नारी जा नर्क स्थान को ॥ ५ ॥

४६ सीता प्रण.

(तर्ज-ना छेड़ो गाली दूगारे भरवादो मोए नीर)

मैं दिलोजान से कहतीरे, स्वप्ने में वंछुनाय । मैं सांची सांची बोलुंरे, पर नरने वंछु नाय ॥ टेर ॥ इस महेन्द्र बाग के माई, दिया अगनी कुण्ड रचाई । खड़े राम लछमण भाईरे ॥ १ ॥ कर स्नान वो सीता माई, अग्नि के कुण्ड पर आई । सब सुनजो लोग लुगाई रे ॥ २ ॥ प्रभु छोड़ी मुझको वन में, सब रहगई मनकी मन में । अब कौन सुने विपिन में रे ॥ ३ ॥ मेरे शिर पर कलंक चढाया, पापीयों ने दोष लगाया । क्या हाथ में उनके आयारे ॥ ४ ॥ है उज्ज्वल मेरी सारी, कोई दाग न लगा लगारी । है रवि शशी साख तुम्हारी रे ॥ ५ ॥ जो नहीं हो दोष लगारा, मिट अगनी हो जल सारा । सती कूद पड़ी उस वारारे ॥ ६ ॥ फूलों की वृष्टि वरसावे, सत धर्म्म वहां प्रकटावे । यूं चौथमल दरसावेरे ॥ ७ ॥

४७ काल से सावधान.

तर्ज-पनजी मूंडे बोल

माथे गाजेरे या फौज काल की, ध्यान में लाजेरे ॥ टेर ॥ पूर्व पुण्य से पाई संपदा, खाई मति खुटाजेरे ।

चुगने जावे ॥ २ ॥ जैसे ख्वाब में बादशाहों के शिरपर छत्र धरावे । ताजिम देते हैं हुरमा उनको, चश्म खुले विरलावे ॥ ३ ॥ जैसे खेल रचत बादीगर, प्रत्यक्ष अंब दिखावे । क्षणभरमांही देखो तो प्यारे कुछ नहीं नजरांआवे ॥ ४ ॥ पुद्गलिक है सुख जगत का, ज्ञानी यूं फरमावे । चौथमल कहे सुनरे चेतन, नाहक तू ललचावे ॥ ५ ॥

५१ तम्बाखू निषेध.

(मारो बनो नखरारोरे हाथी के होदे तोरण बांधसी)

प्रीतम से पदमण नित्य उठ विनवे, मत पियो तमाखू ॥ टेर ॥ नान्या का भाईजी, तमाखू मत पियो बरजा आपने ॥ टेर ॥ कहतां आवे लाज-घणी पण, थां लेवो जद श्वास । मुंडाने तो डोडो राखो, म्हाने आवे बास जी ॥ १ ॥ पीला दाग लग्या हाथों के, पीला पड़ गया दांत । खांसी से नहीं आवे निंद्या, म्हाने सारी रात ॥ २ ॥ पीके बिगाड्यो आंगणो सरे, खुणो बिगाड्यो खाय । सुंघ बिगाड्यो वस्त्र ने सरे, कहूं कठा लग ताय ॥ ३ ॥ तुरत हाथ लंबो कियो सरे, आग तमाखू काज । संगत आदत अणी सीखाई, उत्तम छुड़ाई लाज ॥ ४ ॥ पंडित मुख मैंने सुना सरे, तमाल पत्र अधिकार । पीवे सो शूकर वनेस यो, दाता नरक द्वार ॥ ५ ॥ खाया पीया बिना तमाखू, बादी मनें सतावे । इण कारण नान्या की बाई, मांसे रयो न जावे ॥ ६ ॥ लाखों मनुष्य नहीं पिये तमाखू कांई सारा मरजावे । थांके सामल जीमणों सरे, मांने नहीं

सुहावे ॥ ७ ॥ बैठ मंडली पिवो तमाखू, आनो रोज़ बिगाड़ो । एक वर्ष को लाभ खरच थें, पति राज विचारो ॥ ८ ॥ पी तमाखू गया दुकान पे, नान्ये चिलम उठाई । मना कियो मान्यो नहीं मारो, उलटी करी लड़ाई ॥ ९ ॥ सूता बैठा प्रभुनाथ तज, याद तमाखू आवे । अंत समयभी हाय तमाखू, ज़िवड़ो यो डुल जावे ॥ १० ॥ बिडी सिगरेट जरदो तमाखू, से दुखिया हिंदुस्तान । क्रोडो रुपेका सालमें सरे होय रयो नुकसान ॥ ११ ॥ गुरू प्रसाद चौथमल कहे, आज सभा दरम्यान । सुंदर को केनो जो माने, सो प्रीतम सुजान ॥ १२ ॥

५२ शिक्षा दर्पण.

(तर्ज़–लवणी लंगडी)

अच्छी सोबत मिली पुण्य से, तुझको शुद्ध बनना चहिये । बद सोबत पाकर तेरेको, कभी बिगडना ना चहिये ॥ टेर ॥ निर्दोष देवकी सेवा करो, कुदेव को ध्याना ना चहिये । रत्न मिले तो फिर पाषाण उठाना ना चहिये । जो राणी मिली तो महेतराणी से, प्रेम लगाना ना चहिये । जोहरी होकर तुझे खोटा, न कभी खाना चहिये । मात पिता भाइयों के साथ में, तुझको लड़ना ना चहिये ॥ १ ॥ सब से प्रीति रखना तुझको वैर बसाना ना चहिये । रस्तमें चलते तेरेको, पांव घीसना ना चहिये । हर बातों में तेरेको, कभी रिसाना ना चहिये । मिष्ट वाक्य वशीकरण मंत्र है,

दान दया को लावो ले, आगे सुख पाजेरे ॥ १ ॥ सत्संग में प्राणी तू तो, वेगो २ आजेरे। साथीड़ा ने भाइला ने, लारे लाजेरे ॥ २ ॥ पर नारी और वैश्या के संग, भूल चूक मत जाजेरे। दारुने तू खोटो जाणी, मत पीजे पिलाजेरे ॥३॥ फागण में गेरया के संग, डफड़ा मति बजाजेरे। भूंडो २ मुख से बोली, मति जन्म गुमाजेरे ॥ ४ ॥ गधा की असवारी करने, मत झाडू का चंवर ढुराजेरे। मत ढोरजे पाणी ने, मत धूल उड़ाजेरे ॥ ५ ॥ मनुष्य जन्म का हाट में आ, खाली हाथ मत जाजेरे। काम क्रोध मद लोभ वणिक से, मति ठगाजेरे ॥ ६ ॥ चार दिन की है या जवानी, मत मूंछां बंट लगाजेरे। अर्जुन भीम भी नहीं रया, करता जोई छाजेरे ॥ ७ ॥ भांग तमाखु गांजो छोड़ी, पूरो प्रण निभाजेरे। गुरु प्रसादे चौथमल कहे जिन गुण गाजेरे ॥ ८ ॥

४८ दान की महत्वता.

(तर्ज--सेवो श्री रिष्टनेम २ जहां घर वरते कुशल जी क्षेम)

दीजो दान सदारे २ जहां घर वरते सुख संपदा ॥टेर॥ पूर्व भवमें बेराई थी खीर। शालिभद्र हुए कैसे अमीर ॥ १ ॥ धन्ना सेठने दियाथा दान। तो पग २ प्रगटा उनके निधान ॥ २ ॥ सुबाहु कुंवरजी हुआ पुण्यवान। दानको प्रताप बतायो वर्द्धमान ॥३॥ रिद्धि सिद्धि नव निधि घरे। शुद्ध भाव सुं जो दान करे ॥ ४ ॥ दानेश्वरी की महिमा अपार। स्वर्ग

मोक्ष सुख आगे तैयार ॥ ५ ॥ पूज्य मन्नालालजी बीज का चंद । चौथमल कहे सदा वरते आनंद ॥ ६ ॥

४६ कटुक वाक्य निषेध.

(तर्ज-पनजी मूंडे बोल)

छोड़ अज्ञानीरे २ यह कटुक वचन समझावे ज्ञानीरे ॥ टेर ॥ कटुक वचन द्रौपदी बोली, कौरव ने जब तानीरे। भरी सभामें खेंचे चीर, या प्रकट कहानीरे ॥ १ ॥ कटु वचन नारदने बोली, देखो भामाराणीरे। हरिको रुखमण से व्याव हुओ, वा ऊपर आणीरे ॥ २ ॥ ऐवंता ऋषिने कटु कह्यो या, कंश तणी पटराणीरे । ज्ञान देख मुनि कथन कर्यो, पिछे पछताणीरे ॥ ३ ॥ वधु सासुने कटु कह्यो, हुई चार जीव की हानीरे । कटु वचन से टूटे प्रेम, लीजो पेहचानीरे ॥ ४ ॥ थोड़ो जीनो क्यों कांटा बोणो, मति वेर बसाओ प्राणीरे। गुरुप्रसादे चौथमल कहे, बोलो निर्वद्य वाणीरे । ॥ ५ ॥

५० झूंठा स्नेह.

(तर्ज-आशावरी)

पंछी काहे को प्रीत लगावे, काहेको प्रीत लगावेरे। पंछी काहेको प्रीत लगावे ॥ टेर ॥ यह संसार मुसाफिर खाना आत जात रहावे। प्रात हुए भानु जब निकसे, निज २ रस्ते सिधावे ॥ १ ॥ जैसे वृक्ष पे रवि अस्त भये, पक्षी वासो लहावे । दिन नहीं ऊगे जहां लग चेतन, आखिर

आवेजी ।, व भूख प्यास विसराई ॥ १ ॥ दस बीस दिनों की आशा; फिर करसी प्राण विनाशाजी । यह देर पड़े इण माँई ॥ २ ॥ तरस्यो नीर पे जावे; गरजी निज गरज जणावेजी । दुखिया के धीरज नांई ॥ ३ ॥ सुग्रीव अलगरज रहावे, मतलबी जगत कहावेजी । या चौथमल दरसाई ॥ ४ ॥

५६ श्रीराम से लक्ष्मण का कहना

(तर्ज-वनजारा)

सुन लखन उठे जोश खाई, लिया धनुप बाण कर माँई ॥ टेर ॥ ऐसा क्रोध बदन में छाया, पृथ्वी परवत थरहायाजी । कहे सुग्रीव पा आयी ॥ प्रभु तरु तले कष्ट उठावे, तु महलों में मोज उड़ावेजी । थने तानिक लाज नहीं आयी ॥ २ ॥ वर्ष समान दिन जावे, छे गुणी रेन विहावेजी । सो बीती है तुझ माँई ॥ ३ ॥ रोगी दवा वैद्य से खावे, हो निरोग उसे विसरावेजी । अब लो खुद वचन निभाई ॥ ४ ॥ नहीं तो शाहा शक्ति की नाइ, दूं परलोक पहुंचाइजी । पड़े सुग्रीव चरण के माँई ॥ ५ ॥ फिर आये जहाँ रघुराई, कहे शोध करां अब जाईजी । य ऐसी चौथमल गाई ॥ ६ ॥

५७ सीता से विभीक्षण का कहना

(तर्ज—वनजारा)

पूछे विभीक्षण हितकारी, तुम कौन पुरुप की नारी

॥ टेर ॥ तुम कौन कहाँ से आया; यहाँ कौन पुरुष तुम्हें लायाजी । दो शंका मेरी निवारी ॥ १ ॥ कौन तात भ्रात कहो सारा; मत राखो शंका लगाराजी । मुझे कहो आप विसतारी ॥ २ ॥ [टेर फिरी] प्रमाणिक पुरुष कोई जानी, सीता बोली यूं वानी ॥ टेर ॥ लज्जा से नीचे नैन कर दीना, कर घुंघट तन ढक लीनाजी । फिर केवे सुनो कहानी ॥ १ ॥ जनक पिता भामंडल भाई, पति अयोध्यानाथ सुख दाईजी । दशरथ-कुल वधु बखानी ॥ २ ॥ लक्ष्मण खरदुपण के साथ, लड़ते फिर गये रघुनाथजी । पीछे आया रावण अभिमानी ॥ ३ ॥ ये चुरा के मुझको लाया, मैंने बहुत इसे समझायाजी । लेकिन मेरी नहीं मानी ॥ ४ ॥ इसके दिल में बईमानी, मिलेगी मिट्टी में राजधानीजी । इसकी या आई मोत निशानी ॥ ५ ॥ कहे चौथमल यूं सीया, मेरे छुड़वाया पियाजी । है रावण को दुख दानी ॥ ६ ॥

५८ हनुमान का श्रीराम से कहना.

(तर्ज—कव्वाली)

प्रभु तेरी कृपा से आज, बल इतना रखावें हम । राक्षस द्वीप से लंका, उठाके यहां पे लावें हम ॥ १ ॥ रावण सहित कुटुम्ब सारा, बांध के ला धरें प्रभु पां । कहो निर्वंश रावण का, करें ना वार लावें हम ॥ २ ॥ सत्यवती सती सीता को, लाऊं मोद से यहां पर । हुक्म दीजे कृपा-सिन्धु, कार्य करके दिखावें हम ॥ ३ ॥ चौथमल राम कहे

इसे विसरना ना चहिये ॥ २ ॥ सम दृष्टी होकर तुझको, राग द्वेष तजना चहिये । श्रावक होकर भैरू भवानी नहीं भजना चहिये । विश्वास देकर नहीं बदलना, अनरथ घडना ना चहिये । सुरासुर मिथ्यात्वी डिगावे, तुझको डिगना ना चहिये। धर्म करनेमें तेरेको कभी नहीं लजना चहिये ॥ ३ ॥ हिंदु होकर जीव की हिंसा, तुझको करना ना चहिये । ब्राह्मण होकर तेरेको, ब्रह्मध्यान धरना चहिये। क्षत्री होकर रक्षा करना, दुश्मन से डरना ना चहिये। वैश्य होकर श्रद्धा रख, दातापन धरना चहिये । जमींकंद रात्रीभोजन अब, तुझको परहरना चहिये ॥ ४ ॥ संसारमें तिरना क्या मुश्किल दयाधर्म रुचना चहिये । पवित्रहोकर दारु मांस से, तुझे बचना चहिये । धन कुटुंब आवे कब संग, फिर नाहक क्यों पचना चहिये । काम भोग के कीचमें, तुझको नहीं फसना चहिये । चौथमल कहे झूठ गवाह को, कभी नहीं भरना चहिये ॥ ५ ॥

५३ नीति का प्रकाश.

(या हसीना वस मदीना करवला में तू न जा)

उज्ज्वल नीति की रीति से, प्रीति करो मेरे सजन । विजय हो संसार में, ऐसी नीति हैगा रतन ॥ टेर ॥ नीति से भय नाश हो, यश चन्द्रमा परकाश हो। सर्व लोक को विश्वास हो, जो कुछ करे वह नर कथन ॥ १ ॥ नीति से इज्जत बढ़े, सरकार भी आदर करे । शृङ्गार यह सबसे

सिरे जूं नाक से शोभे वदन ॥ २ ॥ कपट से परधन हरे स्वार्थ वश अकृत्य करे । अन्याय से जो ना डरे, लिखे हाथ से झूठा कथन ॥ ३ ॥ ऐसे अनीतिवान नर, द्विलोक में निंदित बने । व्यवहार भी रहता नहीं, कोई नहीं माने वचन ॥ ४ ॥ प्राण गर जाय तो जाय, नीति कभी तजना नहीं । चौथमल कहे इच्छित फले, कीजिये नीति का यतन ॥ ५ ॥

५४ सुपुत्र लक्षण.

(तर्ज—थारो नरभव निष्फल जाय लगत का खेल में)

मानें मात पिता की केन; पुत्र पुनवान है ॥ टेर ॥ कुल दीपक कुल चन्द्रमा सेरे, कुल में ध्वजा समान है । सरल नम्रता अधिक वदन में, जो पूरा लज्जावान है ॥ १ ॥ उपकार माने मात पिता को, रखे सवायो मान है । विद्या वन्त पर गुण ग्राही, बोले सत्य जबान है ॥ २ ॥ सुख शांति की करे बात जो, कुल मर्यादावान है । कुसंगत में कभी न जावे, इज्जत का पूरा ध्यान है ॥ ३ ॥ मुनिराज की करे वन्दगी; कर करुणा दे पुन्यदान है । गुरू प्रसादे चौथमल कहे; मानु दशरथ सुत समान है ॥ ४ ॥

५५ लक्ष्मण से श्रीराम का कहना—

(तर्ज वनजारा)

कहे राम सुन लक्ष्मण भाई, कौन जाने पीड़ पराई ॥ टेर ॥ सीता की शुद्ध कुण लावे; त्रिपता में नींद नहीं

ऐसे, सत्य हनुमान तुम समरथ। एक दफे जाय कर आवो, खबर जल्दी से पावें हम ॥ ४ ॥

५९ हनुमानजी के साथ मुद्रिका भेजना.

(तर्ज—श्री नंदजी के कन्हैयालाल मारे घर आवजो २)

मुद्रिका मुझ करकी हनुमान, लेई ने जावजो २ ॥ टेर ॥ कही जो सीताजी ने खास, प्रभुको चित्त तुम्हारे पास। लग रही एक मिलन की आश, यही सुनावजो २ ॥ १ ॥ स्वाद न लागे अन जल पान, सुन्दर एक ही तेरा ध्यान। योगी जैसे भजे भगवान, धैर्य बंधावजो २ ॥ २ ॥ विश्वास खूब उसे दिराजो, कहजो मतना प्राण गमाजो। आता चूड़ामणि तुम लाजो, भूल मत जावजो २ ॥ ३ ॥ चौथमल कहे राम यूं फेर, लच्छमण आने की है देर। मार रावण को बरतावे खेर, न संशय लावजो २ ॥ ४ ॥

६० प्रत्युत्तर में चूड़ामणि का भेजना.

(तर्ज—श्री नंदजी के कन्हैयालाल मारे घरे आवजो २)

लेकर चूड़ामणि हनुमान, वेगा जाव जो २ ॥टेर॥ प्रभु ने कहीजो तुम्हारी दासी, आपके दर्शन की है प्यासी। जानकी रहवे सदा उदासी, सविनय सुनावजो २ ॥ १ ॥ मरती सिया न संशय लगार; जीवी नाम तणों आधार। लीजो सुध कौशल्या कुमार; न देर लगावजो २ ॥ २ ॥ यह है दुश्मन का ही स्थान; हुश्यार तुम रहना हनुमान। अरज मेरी जहां पर है भगवान; ठेठ पहुंचावजो २ ॥ ३ ॥

चौथमल कहे सीता हितकार, लगाओ मत रघुवर अब वार।
भैया लछमन को ले लार; वेगा आवजो ३ ॥ ४ ॥

६१ मनुष्यत्व की उत्कर्षता.

(तर्ज-माड़)

जिवराज थे तो आछो प्राक्रम फोड़ो म्हाकाराज ॥ टेर ॥ काया वाड़ी गुलाबकीरे, सींचता कुम्हलाय। चेतना होवे तो चेतजोरे, जोवन ढलियो जाय ॥ १ ॥ नर देह खेती मांयनेरे, पंछी बैठा पांच। गुण रुप्यो दानो चुगेरे, लंबी जिसके चांच ॥ २ ॥ रस्तागीर देख्यो मानवीरे ऊजड़ होतो खेत। कोई गफलत में हो मतीरे; उपकारी हेला देत ॥ ३ ॥ थोड़ो सो उद्यम करोरे, माल जावते होय। परमादी जोको रेहेरे, गयो जमारो खोय ॥४॥ खेती तो निपजी थकीरे, कुंडरिक दीधी खोय। गति उद्यम कर पुंडरिक मुनीरे सिद्ध पामी सोय ॥ ५ ॥ उगणीसो चोसठमेंरे, पोष आगरे मांय। गुरु हीरालालजीके प्रसादे, चौथमल यों गया ॥ ६ ॥

६२ उद्यम ही सिद्धि का हेतु.

(तर्ज-आसावरी)

पुरुपारथ से सिद्धि पावे ॥ टेर ॥ पुरुपारथ ही वंधु जगत में, दुष्कर कार्य करावे। पुरुपारथ करके महा मुनिवर खप्पक श्रेणी चढ़ जावे। उद्यम हीन दीन नर वांकी कुण माखी उड़ावे ॥ २ ॥ सत्य शील आचार तपस्या। पुरुपारथ पार लगावे। अरिहंत सिद्ध लब्ध पात्र पद। सो सब

दुःख मिटावे ॥ ३ ॥ पुरुषारथ कर रामचन्द्रजी, सीता को लंका से लावे । उद्यम हीनके मनके मनोरथ; दिलके बीच रहजावे ॥ ४ ॥ पुरुषारथ करके चींटी देखो, वजन खेंच ले जावे । पुरुषारथ करके राजा बादशाह, समर जीत घर आवे ॥ ५ ॥ परम धरम में पुरुषारथ कर, आवागमन मिटावे । चौथमल कहे गुरु प्रसादे, जाके जग गुण गावे ॥ ६ ॥

६३ सत्य की जय.

(तर्ज—मैं तो मारवाड़ को वनियो)

थेतो सांचा बोलो बोलजी, सगलांने वाला लागो ॥ टेर ॥ प्रिय अने हितकारी बानी, ज्ञानी सत्य वखानी । सत्य छता अप्रिय कटुक हो वोही असत्य कहानी ॥ १ ॥ झूठा बोल प्रतीत जमावे, कई कुयुक्ति लगावे । सत्य भाषी निर्भयहो रहवे; सुर जिसका गुण गावे ॥ २ ॥ सत्य खीर प्रिय मिश्री सम है, असत नौन सा खारा । क्रोध लोभ भय हास्य से बोले, कभी न हो निस्तारा ॥ ३ ॥ तोतली जीभ गूंगा मुख रोगा, दुस्वर मूरख जानो । अनादेज वचन इत्यादिक, झूठ तणा फल मानो ॥ ४ ॥ चोखी जीभ सुस्पष्ट भाषी, पंडित सुस्वर जीका । निर्दोष आदेज वचनादिक सब, सत्य तना फल नीका ॥ ५ ॥ ऐसी जान असत्य को छोड़ी, बोलो निरवद वाणी । चौथमल कहे गुरु प्रसादे मिले मोक्ष पटरानी ॥ ६ ॥

६४ दारू से होती हुई दुर्घटना.

(तर्ज-मांड)

हो सरदार थें तो दारुड़ा मत पीजो म्हांका राज ॥ टेर ॥ आम फले परिवार सेरे, मउआ फले पत खोय । ज्ञाका पानी पीवतांरे, तामें बुद्धि किम होय ।।हो।।१।। पी पी प्याला हो मतवाला, हरकांई गिरजाय । गाली देवे बेतरहरे, सुध बुध को विसराय ।।२।। वमन होय बाजार मेंरे; मखियां तो भिनकाय । लोग बुरा थांने कहेरे; मांसु सुना न जाय ॥ ३ ॥ इज्जत धन दोनों घटेरे, तन सुं होय खराब । चौथमल कहे छोड़ो सज्जन; भूल न पीयो शराब ॥ ४ ॥

६५ स्त्री शिक्षा

(तर्ज-वनजारा)

सखि मान कहन तू मेरी; जिससे सुधरे जिन्दगी तेरी ।।टेर।। फिरे जोबन में मद माती । नित नया शृङ्गार सजाती जी । नाना विध गहना पहरी।।सखी०॥१॥डो परमेश्वर से राजी तू मतकर नखरा बाजी जी । ऐसी वख्त मिले कब फेरी ॥२॥ ऐसी जान गफलत तज दीजे, दया दान बीच जस लीजे जी । जो चले वहां पर लेरी ॥ ३ ॥ तेरी पुष्प सी कोमल काया । तापे कामी भंवर लुभाया जी । सो होगा राख की ढेरी ।४। तू जाने कंथ मुझ प्यारा; न करे कभी किनाराजी । है श्वास वहां तक देरी।।५। तुझे वनमें छोड़ के टरके, वो दूजी कामिन वरके जी।नहीं याद करे फिरावेरी।।६।।पुन्य पाप का तू फल पावे; वहां

कोई न आन छुड़ावे जी । फकत तूही अकेली हैरी ॥७॥ शील धर्म क्षमा ले धारी; कहे सब अच्छी ये नारीजी । न बोले एरी गेरी ॥८॥ कहे चौथमल हितकारी; ले देव गुरु शुद्ध धारीजी । धरो ध्यान प्रभुका सबेरी ॥ ६ ॥

६६ स्त्री की धूर्तता से बचो

(तर्ज-लावणी रंगत छोटी)

मत पड़ त्रिया के फंद मानले कहना; है नया रंगसी प्रीत चित्त क्या देना ॥टेर॥ ये सूरत की तो दिखती भोली भाली । डसने में हैगी पक्की नागिन काली । हँस २ रिझावे लगा हात की ताली । फँसे इसके जाल में पढ़े लिखे कईजाली । नहीं इसके विषकी दवा होवे कब चैना ॥ है० ॥ १ ॥ नहीं करना कोई विश्वास ऐसी कपटन का । कर देगी सत्यानाश तेरे तन धन का । ये बुरी लुटेरी लूटे रस जोबन का । किया इसका संग वो अधिकारी नरकन का । लेती चलते को बींध तीर यों नैना ॥२॥ ये मात पिता भगनी से प्रीति छुड़ावे । इक क्षणभर में नाराज खुशी हो जावे । कभी बोले मधुरे बेन कभी घुरकावे । इसकी माया का पार कहो कुण पावे । बड़े २ वीर को चलावे अपनी एना ॥ ३ ॥ इसके कारण दशकंठ ने दुःख उठाया । पुन पद्मनाभ ने अपना राज गमाया । भीमजीने कीचक को मार गिराया । फिर इसके भोग से त्रपत नहिं हो काया । कहे चौथमल सत शील रत्न को लेना ॥ ४ ॥

६७ चेतन ! होशियारी से रहना.

(तर्ज--मांड़)

हो म्हारी मानो क्यों नहीं कहन रे बटाउआ खरची ले ले लार ॥ टेर ॥ तू मुसाफिर खाने में सोतो, भूलती मांझल रात । आस पास तेरे हेरु फिरत हैं, और न कोई सात ॥ हो० ॥ १ ॥ तीन रतन तेरे बंधे गठरीमें, जिनका करियो जतन । गफलत में रहियो मतीरे, नरभव मिले कठिन ॥ २ ॥ पर भूमि पर भूप कीरे, तेरो यहां पर कौन । वृथा माया में फँसी थे तो, भुगतो चौरासी जौन ॥३॥ इस मुसाफिर खाने मांही, लख आवत लख जात । सुकरत खर्ची पल्ले बांधो, तू मत जा खाली हाथ ॥ ४ ॥ भोर भये उठ जावनोरे, चार पहर की बात । चौथमल कहे सुयश लीजो, ये जग में रहजात ॥ ५ ॥

६८ सांसारिक कृत्यों से चेतनको बचना.

(तर्ज—ख्यालकी)

थारो नरभव निष्फल जाय जगत के खेलमें ॥ टेर ॥ सुन्दर के संग सेज में सोवे, रात दिवस तू महल में । इत्तर लगावे पेच झुकावे, जावे शामको सैलमें ॥ थारो० ॥ १ ॥ कंठी डोरा डाल गले में, बैठे मोटर रेलमें । मोत पकड़ लेजावे तोकूं, हवालगे ज्यूं पेल में ॥ २ ॥ कसूमल पाग केशरिया वागा, पटा चमेली तेलमें । काम अंध घूमे गलियोंमें, होय छबीलो छेल में ॥ ३ ॥ धर्म करेगा तो

मोक्ष वरेगा, वदी चौरासी जेलमें । चौथमल हित शिक्षा दीनी, इन्दौर अलीजा शहरमें ॥ ४ ॥

६६ गुरु शिक्षा चेतन को.

(तर्ज—मांड़)

चेतन अब चेतो अवसर पाय, थांने सद्गुरुजी समझाय ॥ टेर ॥ काल अनंतो भव मांही फिरतो, पायो नर अवतार । तारन तरन सद्गुरु मिल्यारे, हृदय ज्ञान विचार ॥ चे० ॥ १ ॥ तन धन यौवन जान अथिर तू, बीजूको चमकार । पलटत वार न लागे निशीभर, सुपना सो संसार ॥ २ ॥ जो नर ढोल्यें पोढ़तारे, फूलन सेज बिछाय । बत्तीस विध नाटक को देखतारे, ते पण गया विरलाय ॥ ३ ॥ टेड़ी पगड़ी बांधतारे, चावता नागर पान । लाखों फौजां लारे रहतीं, कहां गया सुलतान ॥ ४ ॥ अबतो चेतो चतुर सुजान मत जगमें ललचाय । चौथमल कहे लाओ लीजे । प्रभु से ध्यान लगाय ॥ ५ ॥

७० जैसे कर्म वैसे फल.

(तर्ज--ठुमरी)

कर्मन की गति ज्ञाता सुनावे । जैसा करे वैसा फल पावे ॥ टेर ॥ दोनों भाई राम और लक्ष्मण । देखोजी बनवास रहावे ॥ कर्म० ॥ १ ॥ हरिश्चन्द्र राजा तारादे रानी ताके पासे नीर भरावे ॥ २ ॥ सीता सती चन्द्रसी निरमल कलंक उतारने धीज करावे ॥ ३ ॥ क्रोड़ विलाप कियां

नहीं छूटे । ज्ञानी तो हंस २ के चुकावे ॥ ४ ॥ चौथमल कहे कर्म मिटे सब, वीर प्रभु से जो ध्यान लगावे ॥ ५ ॥

७१ प्रभु भजन प्रतिबोध.

(तर्ज--ठुमरी)

प्रभु के भज़न बिन कैसे तिरोगे । सांच कहूं फिर सोच करोगे ॥ टेर ॥ आठ पहर धंधेमें लागो । सजन कुटुम्ब बीच नेह धरोगे ॥ प्रभु ॥ ॥ १ ॥ मोह नशाके मांही छक़ के । बुरे कर्मों से नहीं डरोगे ॥ २ ॥ ज्वानी चली है झटपट । ज्यों नदियां को पूर उतरेगो ॥ ३ ॥ परभव में तेरो कोय न साथी । तेरो किग्रो फिर तुहीं भरेगो ॥ ४ ॥ चौथमल कहे सत् गुरु सीख सुन । सभी काज तेरो सुधरेगो ॥ ५ ॥

७२ सत्य ही स्त्री का आभूषण.

(तर्ज—बनजारा)

सत्य धर्म्म धारोरी बहिना, क्या काम आवेगा गहना ॥ टेर ॥ तेरे हार रेशमी सारी, सब लेगा तुरत उतारीजी । जब मुदित होगा नयना ॥ सत्य० ॥ १ ॥ देह मूत्र मल मयी गंधी, मत बन काम में अंधीजी, है यौवन ज्यूं जल फैना ॥ २ ॥ कर-शोभा कंकण नाहीं, कर दान खूब हुल-साईजी, कर जीवां की तू जयणा ॥ ३ ॥ पर पुरुष समझ तू भाई, प्रिय वाक्य वद सुखदाईजी, चल कुल मर्यादा की एना ॥४॥ सुन नित्य शास्त्र की वाणी, जिससे सुधरेगा

जिन्दगानी जी, यह चौथमल का कहना ॥ ५ ॥

७३ सत्संग की महिमा.

(तर्ज—या हसीना बस मदीना, करबला में तू न जा)

लाखों पापी तिरगए सत्संग के परताप से । छिन में बेड़ा पार हो, सत्संग के परताप से ॥ टेर ॥ सत्संग का दरिया भरा, कोई न्हाले इसमें आन के । कटजाय तन के पाप सब; सत्संग के परताप से ॥ लाखों० ॥ १ ॥ लोह का सुवर्ण बने, पारस के परसंग से । लट की भंवरी होती है, सत्संग के परताप से ॥ २ ॥ राजा परदेशी हुआ, कर खून में रहते भरे । उपदेश सुन ज्ञानी हुआ, सत्संग के परताप से ॥ ३ ॥ संयति राजा शिकारी, हिरन के मारा था तीर । राज्य तज साधु हुआ, सत्संग के परताप से ॥ ४ ॥ अर्जुन मालाकार ने, मनुष्य की हत्या करी । छः मास में मुक्ति गया, सत्संग के परताप से ॥ ५ ॥ एलायची एक चोर था श्रेणिक नामा भूपति । कार्य सिद्ध उनका हुआ, सत्संग के परताप से ॥ ६ ॥ सत्संग की महिमा बड़ी है, दीन दुनियाँ बीच में । चौथमल कहे हो भला, सत्संग के परताप से ॥ ७ ॥

७४ कृतकर्म फलाफल.

(तर्ज—बिना रघुनाथ के देखे)

शुभाशुभ जो किया तुमने; वही अब पेश आते हैं । कभी नीचा दिखाते हैं, कभी ऊंचा बनाते हैं ॥ टेर ॥ आश्रव हिंसा असत्य चोरी; भोग ममत्व में राचे । कर्म बंधन यही कारण, गुरू

प्रगट जिताते हैं, ॥ शुभा० ॥ १ ॥ कर्म मत बांधना कोई, कर्म शैतान है जहां में । अवतार श्री राम लक्ष्मण को, उठा बन में ले जाते हैं ॥ २ ॥ त्रिखंडी नाथ जो माधव, थे यादु वंश के भानु । जरद कुमार के जरिये, पांव में बाण खाते हैं ॥ ३ ॥ सत्यधारी हरिचन्द को, चंडाल के घर लेजाते हैं । पतिव्रता सती तारा, से ये पानी भराते हैं ॥ ४ ॥ कभी तो नर्क के अन्दर, ताते स्तंभ कराते हैं । कभी सुर लोकके अन्दर, ताज शिर पर सजाते हैं ॥ ५ ॥ अजब लीला करम की है, कथन करने में नहीं आती । राजा नल को दमयंति से, जुदाई ये कराते हैं ॥ ६ ॥ कथे यों चौथमल बानी, अरे सुन लीजो भव प्राणी । भजो तुम देव निर्मानी, करम सब भाग जाते हैं ॥ ७ ॥

७५ उद्बोधन.

(तर्ज--या हसीना बस मदीना, करबला में तू न जा)

उठो बादर कस कमर, तुम धर्म्म की रक्षा करो । श्री वीर के तुम पुत्र होकर, गीदड़ों से क्यों डरो ॥ टेर ॥ दुर्गति पड़ते जो प्राणी; को धर्म्म आधार है । यह स्वर्ग मुक्ति में रखे, तुम धर्म्म की रक्षा करो ॥ उठो० ॥ १ ॥ धरमी पुरुष को देख पापी; गज श्वानवत् निन्दा करे । हो सिंह मुआफिक जवाब दो, तुम धर्म्म की रक्षा करो ॥ २ ॥ धन को देकर तन रखो, तन देके रक्खो लाज को । धन लाज तन अर्पन करो; तुम धर्म्म की रक्षा करो ॥ ३ ॥ माता पिता भाई जंवाई, दोस्त फिरे तो डरे नहीं । प्रचार

धर्म्म से मत हटो, तुम धर्म्म की रक्षा करो ॥ ४ ॥ धैर्य का धारो धनुष और तीर मारो तर्क का । कुयुक्ति का खंडन करो तुम, धर्म्म की रक्षा करो ॥ ५ ॥ धर्मसिंह मुनि लवजी ऋषि लोंका शाह संकट सहा । धर्म को फैला दिया, तुम धर्म्म की रक्षा करो ॥ ६ ॥ गुरू के परसाद से कहे, चौथमल उत्साहियों । मत हटो पीछे कभी तुम, धर्म्म की रक्षा करो ॥ ७ ॥

७६ स्त्रियों को प्रतिबोध.

(तर्ज—थारो नरभव निष्फल जाय जगत का खेल में)

सखी सत्य देऊं मैं शिख, हृदय धर ध्यान तू ॥ टेर ॥ तन सज कर सिंणगार यह सोले, मुख में चाबे पान तू । दया नहीं लावे जीवों पर, ऐसी बनी मस्तान तू ॥ सखी० ॥ १ ॥ योवन रंग पतंग उड़े कल, क्यों बनी नादान तू । पुण्य योग से हुई मनुष्यणी, दिल में कर अहेसान तू ॥ २ ॥ कुदेव कुगुरु कुधर्मका, पक्षपात मत तान तू । किधर गई है बुद्धि तेरी, नहीं पीती जल छान तू ॥ ३ ॥ देवर जेठ कंथ कुटुम्ब संग, मत कर ताना तान तू । कानों से सुन बानी प्रभु की, हाथों से दे दान तू ॥ ४ ॥ पर पुरुष को ऐसा समझ, ले भाई बाप समान तू । लज्जायुक्त नयन पढ़ विद्या, तन से तप ले ठान तू ॥ ५ ॥ गंधी देह का क्या है भरोसा, मत कर मान गुमान तू । चार दिनों की समझ चांदनी करले सत्य धर्म ध्यान तू ॥ ६ ॥ गुन्नीसे इकत्तर साल में लश्कर ग्रीष्म ऋतु जान तू । गुरु प्रसादे चौथमल कहे हो सीता सी प्रधान तू ॥ ७ ॥

७७ कौशल्या का पुत्र वधू को बनवास से रोकना

(तर्ज बिना रघुनाथ को देखें)

सिया को सासुजी लेकर, बिठाई गोदी के अन्दर । कठिन बनवास का रस्ता, कहां जाती वधू सुन्दर ॥ टेर ॥ पुरुष का पांव बंधन हो, जो परदेश संग नारी । सासु श्वसुर की करे खिदमत, पति सेवा से ये बहतर ॥ सिया० ॥ १ ॥ बदन नाजुक है तेरा, बैठ पींजस में फिरती है । वहां पैदल का चलना है, सूल का फेर है खतर ॥ २ ॥ कठिन सहना क्षुधा तृषा, रहना फिर वृक्ष की छाया । परिसहा ठंड गरमी का, मानले कहन रहजा घर ॥ ३ ॥ हरगिज यहां न रहूंगी, रहूं जहां नाथ वो रहवे । पतिव्रत धर्म यही सहे, दुख सुख संग में रहकर ॥ ४ ॥ चौथमल कहे सच्ची नारी, पतिव्रता पियु प्यारी । लेवे शोभा जहां अन्दर, पति सेवा में यूं रह कर ॥ ५ ॥

७८ प्रोत्साहन.

(तर्ज–या हसीना बस मदीना, करबला में तू न जा)

अय जवानों चेतो जल्दी; करके कुछ दिखलाइयो । उठो अब बांधो कमर तुम; करके कुछ दिखलाइयो ॥ टेर ॥ किस नींद में सोते पड़े; क्या दिल में रखा सोच के । बेकार वक्त मत गुमाओ; करके कुछ दिखलाइयो ॥ अय० ॥ १ ॥ यश का डंका बजा; इस भूमि को रोशन करो । एश में भूलो मती; तुम करके कुछ दिखला-इयो ॥२॥ हिम्मत बिना दौलत नहीं; दौलत बिना ताकत कहां । फिर मर्द की हुरमत कहां, करके कुछ दिखलाइयो ॥ ३ ॥

हिकारत की नजर से; सब देखते तुमको सही। मरना तुम्हें इससे बहत्तर, करके कुछ दिखलाइयो ॥ ४ ॥ जापान यूरोप देश ने, किनी तरक्की किस कदर। वे भी तो इन्सान हैं, करके कुछ दिखलाइयो ॥ ॥ ५ ॥ उठा के गफलत का पड़दा, सुधार लो हालत सभी। इन्सान को मुश्किल नहीं, करके कुछ दिखलाइयो ॥ ६ ॥ जो इरादा तुम करो तो, बीच में छोड़ो मती। मजबूत रहो निज कौल पर, करके कुछ दिखलाइयो ॥ ७ ॥ नीति रीति शान्ति क्षमा; कर्तव्य में मशगूल रहो। खुद और का चाहो भला, करके कुछ दिखलाइयो ॥ ८ ॥ काम अपना जो बजाना, लोगों से डरना नहीं। उत्साह से बढ़ते चलो, करके कुछ दिखलाइयो ॥ ९ ॥ संतान का चाहो भला, रंडी नचाना छोड़दो। वृद्ध बाल विवाह बंद करो, करके कुछ दिखलाइयो ॥ १० ॥ फिजुल खर्ची दो मिटा, मुँह फूट का काला करो। धर्म जाति की उन्नति, करके कुछ दिखलाइयो ॥ ११ ॥ दुनियां अव्वल सुधर जातो, दीन कोई मुश्किल नहीं। चौथमल कहे इसलिये, करके कुछ दिखलाइयो ॥ १२ ॥

७९ स्त्रियों को हित शिक्षा.

(तर्ज--गवरल ईसरजी कहे तो हंसकर बोलनाए)

सुन्दर हित की देऊं मैं सीख, हृदय में धारजेए। दुर्लभ उत्तम तन को पाय तू, कुल उज्जवालजेए ॥ टेर ॥ कक्का कंथ आज्ञा को, नहीं उलंघनाए। खखा क्षमा धार कर रहिजे, गगा गाल कलह तज दीजे, घघा घर में सुयश लीजे। नना नरम वचन तज कठिन मति उच्चारजेए ॥ सुन्दर० ॥ १ ॥ चचा

चंचल बुद्धि छोड़ धैर्य तू धारणाए । छछा छलवल दूर ही टाल, जजा जयणा विन मत चाल । झझा झटपट नीति संभाल । नना निर्लज्ज गाना दूर तू निवारजेए ॥ २ ॥ टटा टेक तजी सुगुरु धारणाए । ठठा ठपको न कुल के लागे, डडा डरे पाप से सागे, ढढा ढेठाई को त्यागे । नना निसंदेह यश तेरा होय विचारजेए ॥ ३ ॥ तता तन से तपस्या करके जन्म सुधारनाए । थथा स्थिर मन से पढ़ ज्ञान, ददा दीजे सुपात्र दान, धधा ध्याजे तू धर्म ध्यान । नना नवतत्वों का ज्ञान पणा तू चितारजेए ॥ ४ ॥ पपा पर पुरुषों की सेज कभी मत वैठनाए । फफा फर्क रखो मतकांई । ववा बाप श्वसुर के मांही । भभा भाभी नणद एक साही । ममा मर्म वचन को दूर टारजेए ॥ ५ ॥ यया यत्ना से तू जीवदया नित्य पाल-णाए । ररा रमत गमत ने टाल । लला लख पतिव्रत धर्म पाल । ववा वस्त्र अमोल निहाल । शशा श्रवण करी गुरु वचन मती विसारजेए ॥ ६ ॥ षषा षट द्रव्यों का भेद गुरु मुख धारणाए । ससा समकित निर्मल पार । हहा हीरालाल गुरुधार । कहता चौथमल हितकार । जोड़ा कृष्णगढ़ के मांय सलूणी धारजेए ॥ ७ ॥

८० नेकी का नतीजा नेक

(तर्ज बिना रघुनाथ के देखे नहीं दिलको.)

सज्जन तुम नेकी कर लेना; हमेशा नेकी पर रहना । सज्जन चन्द रोजका जीना; इसी पर ध्यान कर लना ॥ टेर ॥ सज्जन तेरा तात और भाई; मिले मतलब से वे आई, धर्म पर लोक में सहाई; इसीको साथ में लना ॥ सज्जन० ॥ १ ॥ सज्जन तेरे घरमें सुन्दर नार; रात दिन करता उससे प्यार । मगर आती नहीं ये लार, यही सत्पुरुषों का कहना ॥ २ ॥ सज्जन

तुझे युवानी का जोर, राज्य धन फौज का है और । आखिर तो जाना छोड़, यहां दिन चार का रहना ॥ ३ ॥ सज्जन ये सद्गुणी वाणी, करो शुभ धर्म्म सुखदानी । चौथमल कहे सुन प्राणी, यही लेना यही देना ॥ ४ ॥

८१ नेक नसीहत.

(तर्ज--या हसीना बस मदीना, करबला में तू न जा)

दिल सताना नहीं रवा यह खुदा का फरमान है । खास इबादत के लिए, पैदा हुआ इन्सान है ॥ टेर ॥ दिल बड़ी है चीज जहां में, खोल के देखो चशम । दिल गया तो क्या रहा, मुर्दा तो वह स्मशान है ॥ दिल० ॥ १ ॥ जुल्म जो करता उसे, हाकिम भी यहां पर दे सजा । मुआफ हरगिज हो नहीं, कानून के दरम्यान है ॥ २ ॥ जैसे अपनी जान को, आराम तो प्यारा लगे । ऐसे गैरों को समझ तू, क्यों बना नादान है ॥ ३ ॥ नेकी का बदला नेक है, कुरान में लिखा सफा । मत बदी पर कस कमर, तू क्यों हुआ बेईमान है ॥ ४ ॥ वे गुफ्तगु दोजखमें, गिरफतार तो होगा सही । गिन्ती वहां होती नहीं, चाहे राजा या दीवान है ॥ ५ ॥ बैठकर तू तख्त पर, गरीबों की तेने नहीं सुनी । फरीश्ते वहां पिटते, होता बड़ा हैरान है ॥ ६ ॥ गले कातिल के वहां, फेरायगा लेके छुरा । इन्सान होके ना गिनें, यह भी तो कोई जान है ॥ ७ ॥ रहम को लाके जरा तू, सख्त दिल को छोड़ दे । चौथमल कहे हो भला, जो इस तरफ कुछ ध्यान है ॥ ८ ॥

८२ स्त्री हित बोध.

(देशी-धूंसो बाजेरे)

थे तो सुणजो ए वाह वाह थे तो सुणजोए सुलक्षणी सर्व सुंदरयां ॥ टेर ॥ देवर कंथ से लड़ाई न करजो, सासु श्वसुर

लज्जा तन धरजो ॥ थे० ॥ १ ॥ सुशिक्षा पुत्र पुत्री को सिखावे, तो मोटा हुआ से सुख पावे ॥ २ ॥ कामी लंपट से बचकर रहीजे, थें पीहर सासरा पर ध्यान दीजो ॥ ३ ॥ पति-व्रत धर्म्म है जो तुम्हारो, सो याद रखो न विसारो ए ॥ ४ ॥ भैरु भवानी पीर और होरी, नहीं समरथ क्यों फिरो दौरी ॥ ५ ॥ थे तो धमक चाल ताली द हंसना, ऐसी वातों से सदा बचना ॥ ६ ॥ विना छाण्यो पानी नहीं पीजो, जीवाणी यत्ना कीजो ॥ ७ ॥ सीता सती दमयन्ती तारा इनके चरित्रों पर करो विचारा ॥ ८ ॥ गुरु प्रसादे कहे चोथमल गाई, तुम पक्की रहीजो सम्यक्त्व मांही ॥ ६ ॥

८३ आयु की चंचलता.

(तर्ज—बिना रघुनाथ के देखे)

सज्जन तेरी उमर जाती देख, मुझे विचार आता है। नहीं ये वक्त सोने का, लाभ क्यों नहीं कमाता है ॥ टेर ॥ चाहे राजा चाहे राणा, चाहे हो बादशाह वजीर। चाहे हो श्रेष्ठी साहूकार, वहां किसका न खाता है ॥ सज्जन० ॥ १ ॥ क्या माता पिता न्याती, क्या धन माल व हाथी। क्या तेरे संग के साथी, साथ में कौन आता है ॥ २ ॥ समय अनमोल जाता है, किसी को क्यों सताता है। वाज तू क्यों न आता है, जहां का झूठा नाता है ॥ ३ ॥ सजी पोषाक तन प्यारे, वैठ बग्घी फिरे सारे। ले जिन शर्ण वो तारे, चौथमल यों जिताता है ॥ ४ ॥

८४ क्रोध निषेध.

(तर्ज—या हसीना बस मदीना, करबला में तू न जा)

आदत तेरी गई बिगड़, इस क्रोध के परताप से। अजीज को बुरा लगे, इस क्रोध के परताप से ॥ टेर ॥ दुश्मन से

बदकर है यही, महोब्बत तुड़ावे मिनिट में । सप मुआफिक डरे तुझसे, क्रोध के परताप से । आदत० ॥ १ ॥ सलवट पड़े मुँह पर तुरंत, कम्पे मानिन्द जिन्द के । चश्म भी फैले वंन, इस क्रोध के परताप से ॥ २ ॥ जहर या फांसी को खा, पानी में पड़ कई मरगये । वतन कर गये तर्क कई, इस क्रोध के परताप से ॥ ३ ॥ बाल बच्चों को भी माता, क्रोध के वश फेंकदे । कुछ सूझता उसमें नहीं, इस क्रोध के परताप से ॥ ४ ॥ चंडरुद्र आचार्य, की शिलालपर करिये निगाह । सर्प चंड कोसा हुआ, इस क्रोध के परताप से ॥ ५ ॥ दिल भी काबू न रहे, नुकसान कर रोता वही । धर्म कर्म भी न गिने, इस क्रोध के परताप से ॥ ६ ॥ खुद जले पर को जलावे, विवेक की हानि करे । सूख जावे खून उसका, क्रोध के परताप से ॥ ७ ॥ जन के लिय हंसना बुरा, चिराग को जैसे हवा । इन्सान के हक में समझ, इस क्रोध के परताप से ॥ ८ ॥ शैतान का फरजन्द यह, और जाहिलों का दोस्त है । बदकार का चाचा लगे, इस क्रोध के परताप से ॥ ९ ॥ इबादत फाका कसी, सब खाक में देवे मिला । बीच दोजख के पड़े, इस क्रोध के परताप से ॥ १० ॥ चाण्डाल से बदतर यही, गुस्सा बड़ा हराम है । कहे चौथमल कब हो भला, इस क्रोध के परताप से ॥ ११ ॥

८५ नारी भूषण.

(तर्ज-मांड मारवाड़ी.)

पहिनो २ सखी री ज्ञान गजरा २ तुम्हें लगे अजरा ॥ टेर ॥ शील की सारी ओढ़ले ओरी, लज्जा गहिनो पहिन । प्रेम पान को खाय सखीरी, बोलो सच्चा वैन । प० ॥ १ ॥ हर्ष को हार हृदय में धारो, शुभ कृत्य कंकण सोहय । चतु-

राई की चूड़ी सुन्दर, प्रभु वाणी विंदली जोय ॥ २ ॥ विद्या को तो बाजूबंद सोहे, प्रभु लोह लौंग लगाय । दांतन में चूंप सोहे एसी, धर्म में चूंप सवाय ॥ ३ ॥ नव पदार्थ दश सिखो नेवर का झणकार। चौथमल कहे सची सजनी, ऐसा सजे सिणगार ॥ ४ ॥

८६ दुनिया फ़ना.

(तर्ज-बिना रघुनाथ के देखे)

लगाता दिल तू किसपर यहां, जहां में कौन तेरा है। सभी मतलब के गरजी हैं, किसे कहता यह मेरा है ॥ टेर ॥ कहलाते बादशाह जहां में, हजारों रहते थे तावे । चले वो हाथ खाली कर,न उनके साथ पहरा है। लगाता० ॥ १ ॥ छुपे रहते थे महलों में, हो गलतान ऐशों में। दिखाते मुंह न सूरज को, उन्हें भी काल ने हेरा है ॥ २ ॥ मिलकर कुमत बदखुवाने, पिलादी शराब तुझे मोहकी। खबर ना उसमें पड़ती है, यहां चंद रोज डेरा है ॥ ३ ॥ कहां तक यहां लोभाओगे, कि आखिर जाना तुमको वहां। उठाकर चश्म तो देखा । हुआ शिरपर सवेरा है ॥ ४ ॥ गुरु हीरालालजी के प्रसाद, चौथमल कहे अरे दिल तू। दयाकी नाव पर चढ़जा, यहां दरियाव गहरा है ॥ ५ ॥

८७ मान निषेध.

(तर्ज—या हसीना बस मदीना, करबला तू न जा)

सदा यहां रहना नहीं तू, मान करना छोड़दे । शहनशाह भी न रहे, तू मान करना छोड़दे ॥ टेर ॥ जैसे खिले हैं फूल गुलशन में अज़ीजों देखलो। आखिर तो वह कुम्हलायगा, तू मान करना छोड़दे ॥ सदा० ॥ १ ॥ नूरसे वे पूर थे, लाखों उठाते हुक्म को। सो खाक में वे मिल गये, तू मान करना

छोड़दे ॥ २ ॥ परशु ने क्षत्री हने, शंभूम ने मारा उसे । शंभूम भी यहां ना रहा, तू मान करना छोड़दे ॥ ३ ॥ कंस जरासिंघ को, श्री कृष्ण ने मारा सही । फिर जर्द ने उनको हना, तू मान करना छोड़दे ॥ ४ ॥ रावण से इंदर दबा, लक्षमण ने रावण को हना । न वह रहा न वह रहा, तू मान करना छोड़दे ॥ ५ ॥ रब्ब का हुक्म माना नहीं, अजाजिल काफिर बन गया । शैतान सब उसको कहैं, तू मान करना छोड़दे ॥ ६ ॥ गुरुके प्रसाद से कहे चौथमल प्यारे सुनो । आजिजी सब में बड़ो, तू मान करना छोड़दे ॥ ७ ॥

८८ सदुपदेश.

(तर्ज--गजल, बिना रघुनाथ के देखे नहीं दिलको करारी हैं.)

कर सत्संग ए चेतन ! तेरा इसमें सुधारा है । देखले ज्ञान दर्पणसे, झूठ यह जग्त सारा है ॥ टेर ॥ यह नर तन रत्नसा है, यत्न कीजे जिताता हुं । सदा रहता न यहां कोई, चंद दिनका गुजारा है । कर० ॥ १ ॥ जो लखपति तू होगा, तो रक्षा कर अनाथों की । आगे को साथ ले खर्चा, और तो धन्ध सारा है ॥ २ ॥ अरे घट टूट जाता है, रह जाती है सुगंधी । नेकी सदा रोशन, रहेगा तेरी अप प्यारा ॥ ३ ॥ शाहनशाह हो चुके लाखों, गये तज तख्त शाहीको । नहीं धन धान रानी दूत, संग उनके सिधारा है ॥ ४ ॥ सो करले काज तू एसा, हो सुख चैन आगेको । गुरु हिरालाल के शिष्य ने, किया तुझको इशारा है ॥ ५ ॥

८६ कपट निषेध.

(तर्ज--गजल, या हसीना बस मदीना, करबला में तू न जा)

जीना तुझे यहां चार दिन, तू दगा करना छोड़ दे पाक रख दिलको सदा, तू दगा करना छोड़ दे ॥ टेर ॥ दगा कहो या

कपट जाल, फरेब या तिरघट कहो । चीता चोर कमानवत्, तू दगा करना छोड़ दे । जीना० ॥१॥ चलते उठने देखत, बोलंत हंसते ठगा । तोलने और नापने में, दगा करना छोड़ दे ॥ २ ॥ माता कही बहनें कही, पर नार को तकता फिरे । क्यों जाल कर जाहिल बने, तू दगा करना छोड़ दे ॥ ३ ॥ मर्द की औरत बने, औरत का नापुरुष हो । लख चौरासी योनि भुगते, दगा करना छोड़ दे ॥ ४ ॥ दगा से आ पोतना ने, कृष्णको लिया गोद में । नतीजा उसको मिला, तू दगा करना छोड़ दे ॥ ५ ॥ कौरवोंने पांडवों से, दगा कर जूआ रमा । हार कौरव की हुई, तू दगा करना छोड़ दे ॥ ६ ॥ कुरान पुरानमें है मना, कानूनमें लिखी सजा । महावीरका फरमान है, तू दगा करना छोड़ दे ॥ ७ ॥ शिकारी करके दगा, जीवोंकी हिंसा बह करे । मंजार और बुगकी तरह, तू दगा करना छोड़ दे ॥ ८ ॥ इज्जत में आता फरक, भरोसा कोई न गिने । मित्रता भी टूट जाती, दगा करना छोड़ दे ॥ ६ ॥ क्या लाया क्या ले जायगा, तू गौर कर इस पर जरा । चौथमल कहे सरल हो तू दगा करना छोड़ दे ॥ १० ॥

६० महिला हितोपदेश.

(तर्ज--सत्य धर्म ए सबको सुनाय जायंगे)

बहिनों शिक्षा पर ध्यान तुम दीजोए ॥ टेर ॥ उत्तम कुल की होकर बाला, नीच कर्तव्य मत कीजोए । बहिनो० ॥ १ ॥ रूपवान पर पुरुष कैसा हो, उस पर कभी मत रीझोए ॥ २ ॥ विद्या शील दोही भूषण तुम्हारा, खुश हो तन पर सजलोए ॥ ३ ॥ निर्लज्ज गीत कभी नहीं गाना, नशा बुरा तज दीजोए ॥ ४ ॥ सासु श्वसुर और देवर जी का, कभी न निरादर कीजोए ॥ ५ ॥ घर में संप रहे तो संपत्ति सारी, न कटु वाक्य कह खीजोए ॥ ६ ॥ सत्य वक्ता विदुषी सती का, सत्संग का

अमृत पीजोए ॥ ७ ॥ गुरुकृपा से चौथमल कहे, सीता ज्यों धर्मपर रहिजोए ॥ ८ ॥

६१ दिवानी युवानी.

(तर्ज गजल, बिना रघुनाथ के देखे.)

कवज करलो युवानी को, युवानी तो दिवानी है । फल पैदा करे पलमें, खराबी की निशानी है ॥ टेर ॥ यही तारीफ और बदनाम, नेकी बदी कराती है । कमाने में उड़ाने में, यही मुखिया युवानी है ॥ कवज० ॥ १ ॥ चढ़े है जोश जब इसका, उसे फिर कुछ नहीं सूझे । गर्क रहे ऐश असरत में, जमाने की घुमानी है ॥ २ ॥ अगर हो दोस्त की सुन्दर, चाहे हो बंधु की प्यारी । भले विधवा कुमारी हो, नहीं आती गिलानी है ॥ ३ ॥ सकल श्रृंगार क्रीड़ा का, चतुरता का यही घर है । सोदाई और खुदाईमें, नहीं कोई इसक सानी है ॥ ४ ॥ लगे नहीं दिल प्रभु अन्दर, सदा ही घूमता रहवे । करे निर्लज्ज तजे मर्याद, कई रोगों की खानी है ॥ ५ ॥ मणरया के लिये मणिरथ, करा है क़त्ल भाइ को । पट् ललिताङ्ग पुरुषों की, कराई इसने हानि है ॥ ६ ॥ युवानीरूपी बग्घी में, जुता है अश्व मन चंचल । ज्ञान लगाम से रोको, चौथमल की यह वानी है ॥ ७ ॥

६२ संतोष.

(तर्ज–गजल)

सबर नर को आती नहीं, इस लोभ के परताप से । लाखों मनुष्य मारे गये, इस लोभ के परताप से ॥ टेर ॥ पाप का वालिद बड़ा, और जुल्म का सरताज है । वकील दोजख का बने, इस लोभ के परताप से ॥ सबर० ॥ १ ॥ अगर शहन-शाह बने, सर्व मुल्क तावे में रहे । तो भी ख्वाहिश ना मिटे,

इस लाभ के परताप से ॥ २ ॥ जाल में पत्नी पड़े, और मच्छी कांटे से मरे। चोर जावे जेलमें, इस लोभ के परताप से ॥ ३ ॥ ख्वाब में देखा न उसको, रोगी क्यों न नीच हो। गुलामी उसकी करे, इस लोभ के परताप से ॥ ४ ॥ काका भतीजा भाई भाई, वालिद या बेटा सज्जन। बीच कोर्ट के लड़े, इस लोभ के परताप से ॥ ५ ॥ सम्भूम चक्रवर्ती राजा, सेठ सागर की सुना। दरियाव में दोनों मरे, इस लोभ के परताप से ॥ ६ ॥ जहां के कुल माल का, मालिक बने तो कुछ नहीं। प्यारा तज परदेश जा, इस लोभ के परताप से ॥ ७ ॥ बाल बच्चे बेच दे, दुःख दुर्गुणों की खान है। सम्यक्त्व भी रहती नहीं, इस लोभ के परताप से ॥ ८ ॥ कहे चौथमल सद्‌गुरु वचन, संताप इसकी है दवा। और नसीहत नहीं लगे, इस लोभ के परताप से ॥ ९ ॥

६३ माता ही संतति सुधारने का मुख्य हेतु

(तर्ज धूंसो बाजेरे)

सुन्दर स्वांचीए २ जो पतिव्रता धर्म रही राची ॥ टेर ॥ जो माता होवे सदाचारी, तो कन्या उसकी हो सुशीला नारी ॥ १ ॥ जो माता विद्या हो भणी, तो पुत्री उसकी होवे बहु गुणी ॥ २ ॥ जो माता हो मर्यादा धारी, तो पुत्र पुत्री हो आज्ञाकारी ॥ ३ ॥ जो माता हो चतुराईवान, तो पुत्र पुत्री हो चतुर सुजान ॥ ४ ॥ माता का गुण सीखे बेटी, यह चली आय रीति ठेटा ठेटी ॥ ५ ॥ सासु की चाल बहू में आवे, ऐसे ही बाप की बेटा सीख जावे ॥ ६ ॥ चौथमल कहे सुनजो बाई, यह व्यवहार की बात सुनाई ॥ ७ ॥

६४ सराय से उपमित, संसार.

(तर्ज गजल, बिना रघुनाथ के देखे)

सकल संसार को जानो, सराय जैसा उतारा है। मुसा-

फिर छोड़ द गफलत, रैन भर का गुज़ारा है ॥ टेर ॥ थोड़ी सी जिन्दगी खातिर, बनाई बाग में कोठी। कोई पूछे तो कहे ऐसा, मकां यह तो हमारा है ॥ सकल० ॥ १ ॥ सजी पोशाक लगा इत्तर, बैटा बग्घी या मोटर में। घूमता तू गरूरी से, कौल अपना विसारा है ॥ २ ॥ कमाने के लिये आया, सदर बाजार आलिम में। तू लेटर बक्स को भरले, यहां व्यापार सारा है ॥ ३ ॥ हजारों बादशाह वज़ीर, सेठ सरदार आ आ के। कम ज्यादा बसेरा ले, चले गये बेशुमारा है ॥ ४ ॥ सदा यहीं पर रहना हो, छावनी ऐसी छाई। मगर यह कूंच का हरदम, साफ बजता नकारा है ॥ ५ ॥ कहां श्रेणिक नृप कौणिक, कहां है भूपति विक्रम। बान है आज तक रोशन, किया जिसने सुधारा है ॥ ६ ॥ परोपकार को करके, सखावत का मजा ले लो। चौथमल कहे सुनो मित्रों, भला इसमें तुम्हारा है ॥ ७ ॥

६५ कुव्यसन निषेध.

(तर्ज–या हसीना बस मदीना, करबला में तू न जा)

लाखों व्यसनी मर गये, कुव्यसन के परसंग से। अय अज़ीजों बाज आओ, कुव्यसन के परसंग से ॥ टेर ॥ प्रथम जूंवा है बुरा, इज्जत धन रहता कहां। महाराज नल बनवास गए, कुव्यसन के परसंग से ॥ लाखों० ॥ १ ॥ मांस भक्षण जो करे, उस के दया रहती नहीं। मनुस्मृति में है लिखा, कुव्यसन के परसंग से ॥ २ ॥ शराब यह खराब है, इन्सान को पागल करे। यादवों का क्या हुवा, कुव्यसन के परसंग से ॥ ३ ॥ रण्डीबाजी है मना, तुमसे सुता उनके हुवे। दामाद की गिनती करे, कुव्यसन के परसंग से ॥ ४ ॥ जीव सताना नहीं रवा, क्यों कत्ल कर क़ातिल बने। दोजख का मिजबान

हो, कुव्यसन के परसंग से ॥ ५ ॥ माल जो परका चुरावे, यहां भी हाकिम दे सजा । आराम वह पाता नहीं, कुव्यसन के परसंग से ॥ ६ ॥ इश्क बुरा परनार का, दिल में जरा तो गौर कर । कुछ नफा मिलता नहीं, कुव्यसन के परसंग से ॥ ७ ॥ गांजा, चरस, चण्डू अफीम, और भंग तमाखू छोड़दो ! चौथमल कहे नहीं भला, कुव्यसन के परसंग से ॥ ८ ॥

६६ महिलोपदेश.

(तर्ज-गजल रेखता, ये कलियुग घोर आया है, धर्मसे०)

सदा जो धर्म पर रहती, वही कुलवंत है नारी । उल्लंघे न कभी आज्ञा, लगे वह कंथ को प्यारी ॥ टेर ॥ पढ़ो विद्या प्रेम धरके, बनो नवतत्त्व की ज्ञाता । छुड़ाओ विनय कर पति से, जो हो कुचाल बदकारी ॥ सदा० ॥ १ ॥ कोई पर पुरुष के आगे, लगा ताली नहीं हंसना । बाप भाई उसे समझो, इसी में बात है भारी ॥ २ ॥ भोपा आदि अधम जाति को, अपना नहीं बताओ हाथ । भवानी भैरू नहीं मानो, पशु की घात जहां जहारी ॥ ३ ॥ श्वसुर सासु की लज्जा को, विसारे न कभी हरगिज । पढ़े इतिहास सीता का, जो हुई कैसी धर्म धारी ॥ ४ ॥ करे जो काम कोई घर में तो, पहिले सोचलो दिलमें । संपमें संपदा जाने, समझ कर हक में हितकारी ॥ ५ ॥ कहे मुनि चौथमल बहिनों, तुम्हारे गुणों की माला । अरे कुटीला कुलक्षणी की, हुई है बहुत ही ख्वारी ॥ ६ ॥

६७ भारत पुकार

(तर्ज--गजल दिलजान से फिदा हूं)

कहती है भूमि भारत, ऐ सुपुत्रों ! उठकर, इस फूट को मिटादो, ऐ सुपुत्रों ! उठकर । टेर । अविद्या, झूठ, चोरी, हिंसा, हराम, बेहद । इन्हें देशसे निकालो, ऐ सुपुत्रों ! उठकर ॥

कहती॥१॥करके सभायें ऐसी,सब भ्राता को बुलाकर। खीर नीर से मिलो तुम। ऐ सुपुत्रों! उठकर ॥ २ ॥ लाखों मरे हैं भूखे, स्वदेशी तुम्हारे प्यारे। कर गौर उन्हें बचालो। ऐ सुपुत्रों! उठकर ॥ ३ ॥ मेरे लिये तो पूर्वज, करते प्राण न्योछावर। इतिहास को तो पढ़लो। ऐ सुपुत्रों! उठकर ॥ ४ ॥ आतिश बाजी रंडी, कुरिवाज बंध करके,अनाथालय खोलो. ऐ सुपुत्रों! उठकर ॥ ५ ॥ देश समाज जाति, और आत्मा की सेवा, तुम जल्दी से बजा लो। ऐ सुपुत्रों! उठकर ॥ ६ ॥ कहे चौथमल मित्रो, मुरदारपन को छोड़ो। बनो उत्साही दाता। ऐ सुपुत्रों! उठकर ॥ ७ ॥

९८ द्यूत (जुवा) निषेध

(तर्ज-या हसीना बस मदीना, करबला में तू न जा)

कदर जो चाहे दिला तू, जूवा बाजी छोड़दे। सर्व व्यसन का सरदार है, तू जूवा बाजी छोड़दे ॥ टेर ॥ इश्क इसका है बुरा, नापाक दिल रहता सदा, रंजोगम की खान है, तू जूवा बाजी छोड़दे ॥ कदर० ॥ १ ॥ द्रौपदी के चीर छीने, पाण्डवों के देखते। राज्य भी गया हाथ से, तू जूवा बाजी छोड़दे ॥ २ ॥ महाराजा नल जैसे,बनवास में फिरते फिरे। और तो क्या चीज़ है,तू जूवा बाजी छोड़दे ॥ ३॥ अक्ल तेरी गुम करे,सत्य धर्म से करती जुदा। धनवान को निर्धन करे, तू जूवा बाजी छोड़दे ॥ ४ ॥ इलम हुनर लिहाज जावे, झूठ चोरी दे सिखा। हुरमत भी इसमें न रहे, तू जूवा बाजी छोड़दे ॥ ५ ॥ मकान और दुकान जेवर, रखे गिरवे जायके। मां बाप जोरु नहीं कहे, तू जूवा बाजी छोड़दे ॥ ६ ॥ कई बावे बनगये, कई कम उमर में मर गये। फायदा कुछ भी नहीं, तू जूवा बाजी छोड़दे ॥ ७ ॥

दुनियां का रहे नहीं दीन का, गुरु का रहे नहीं पीर का । नर जन्म भी जावे निफल, तू जूवा बाजी छोड़दे ॥ ८ ॥ गुरुके परसाद से, कहे चौथमल सुन लो जरा । मान ले आराम होगा, जूवा बाजी छोड़दे ॥ ६ ॥

६६ दगा से दुर्दशा

(तर्ज—गजल अरे रावण तू धमकी दिखाता किसे)

दिल अपने में सोचो जरा तो सनम, यह दगा तो किसी का सगा ही नहीं । लो यहां पर भी उसको न चैन पड़े । और बहिश्त में उसको जगह ही नहीं ॥ टेर ॥ अव्वल तो रावण ने किया दगा, सती सीता को लेकर लंक गया । मुफ्त में लंक सोने की गई, और देश तो हाथ लगा ही नहीं ॥ दिल० ॥ १ ॥ देखो कंस ने कृष्ण के मारन को, किया कैसा दगा जाने मुल्क तमाम । उसी कृष्ण ने कंश को मार दिया, हुआ कोई शरीक सगा ही नहीं ॥ २ ॥ फिर धव्वल सेठ ने करके दगा, श्रीपाल को मारन ऊंचा चढ़ा । पांव फिसल के सेठ धव्वल ही मरा, श्रीपाल तो डरके भगा ही नहीं ॥ ३ ॥ दामनखा से करके दगा, वह श्वसुर सेठ खुद ही मरा । चौथमल कहे दिल पाक रखो यह दगा तो किसी का सगा ही नहीं ॥ ४ ॥

१०० विषयों का फितूर.

(तर्ज-थारो नरभव निष्फल जाय जगत का खेल में)

क्यों भूल्यो प्रभु को नाम विषय की लहर में ॥ टेर ॥ काम भोग में रहे रंगभीनो, फोनुग्राफ की टेरमें । मदछकियो भांगा गटकावे, फिरे डोलतो गेर में ॥ क्यों० ॥ १ ॥ मुख में

पान हाथ घड़ी बांधे, चले अकड़तो टेढ़ में। जेन्टिलमेन नैन ऐनक धर, पूछा बोले देर में ॥ २ ॥ घोड़े चढ़ी शिकारां खेले, समझे नहीं कुछ मेहर में। दुर्लभ नर तन पाय फेर क्यों, पड़े चौरासी फेर में ॥ ३ ॥ दो घड़ी जिनवर को भजले, अष्ट मन आठों पहर में। चौथमल हित शिक्षा देवे. जयपुर सुन्दर शहर में ॥ ४ ॥

१०१ हृदयोद्गार.

(तर्ज़–बिना रघुनाथ के देखे नहीं दिलको करारी है)

अर्ज पर हुक्म श्रीमहावीर, चढ़ा दोगे तो क्या होगा। मुझे शिव महल के अन्दर, बुलालोगे तो क्या होगा ॥ टेर ॥ सिवा तेरे सुनेगा कौन, मुझ से दीन की अरजी। मुझे बद फेलके फन्दसे, छुड़ा दोगे तो क्या होगा ॥ अरज० ॥ १ ॥ जगह वहां पर न खाली है, क्या तकदीर ही ऐसी। न मालूम क्या सबब शक है, मिटा दोगे तो क्या होगा ॥ २ ॥ पड़ी है नाव भवजल में,चले जहां मोह की सर सर। तो करके महर-बानी जब, तिरा दोगे तो क्या होगा ॥ ३ ॥ जो है तेरी मदद मुझ पर, तो दुश्मन कुछ नहीं करता। भरोसा ही तुम्हारा है, निभालोगे तो क्या होगा ॥ ४ ॥ गुरु हीरालालजी गुणवंता, दिखाया रास्ता शिवपुर का। खड़ा है चौथमल यहां पे, बुला-लोगे तो क्या होगा ॥ ५ ॥

१०२ प्रभु दिग्दर्शन

(तर्ज—या हसीना बस मदीना, करबला में तू न जा)

दिलके अन्दर है खुदा, दिलसे खुदा नहीं दूर है। दिल

सताना ऐ मियां !, उस रब को कब मंजूर है ॥ टेर ॥ तूं कहे इस जहां में, हर शे में उसका नूर है । तो हर शे महोब्बत ना करे, ये भूल तेरी पूर है ॥ दिल० ॥ १ ॥ अय दिवाने कर निगाह, क्या उसका असली अमूर है । चार दिनकी चांदनी पे, क्यों हुआ मसरूर है ॥ २ ॥ मसकीन के ऊपर सदा, तू क्यों करे मकहूर है । नीजात ना होगा कभी, ये तो सही मजकूर है ॥ ३ ॥ जो जुलम को करता सदा, दिल में रख मगरूर है । पड़े दोजख बीच में, वह होता चकनाचूर है ॥ ४ ॥ फते लाखों में करे, और बजावे रणतूर है । चौथमल कहे नफस मारे, वोही जहां में शूर है ॥ ५ ॥

१०३ प्रभु प्रार्थना.

(तर्ज—अटारियां पे गिरारी कबूतर आधीरात)

आर्ज की नय्या डूब रही मझधार ॥ टेर ॥ सोते मोह की नींद खेवैया- दिलमें नहीं करते विचार । आर्ज० ॥ १ ॥ अविद्या छाई भारत में--नाइत्फाकी वेशुमार ॥ २ ॥ कहें किससे और कौन सुने हैं, वन बैठे दिलके सरदार ॥ ३ ॥ हिंसा--झूठ-निन्दा घट घटमें -सत्संगका कम प्रचार ॥ ४ ॥ चौथमल कहे सत गुरू की शिक्षा माने से होवेगा उद्धार ॥ ५ ॥

१०४ मांस निषेध.

(तर्ज—गजल या हसीना बस मदीना, करवलामें तू न जा)

सख्त दिल हो जायगा तू, गोश्त खाना छोड़दे । रहम फिर रहता नहीं, तू गोश्त खाना छोड़दे ॥ टेर॥ जो रहम दिल में न

रहे, तो रहेमान फिर रहता है कब। वह बशर फिर कुछ नहीं, तू गोश्त खाना छोड़दे। सख्त० ॥ १ ॥ जिस चीज़ से नफरत करे, वह गोश्त की पैदाश है। वह पाक फिर कैसे हुआ, तू गोश्त खाना छोड़दे ॥ २ ॥ गौ, बकरे, बैल, भैंसा, लाखों ही कई कट गए। दूध दही मंहगा हुआ, तू गोश्त खाना छोड़दे ॥ ३ ॥ दूध में ताकत बड़ी, वह गोश्त में है भी नहीं। पूछले कोई डाक्टरों से, गोश्त खाना छोड़दे ॥ ४ ॥ गोश्तखोर हेवान के चिन्ह, मिलते नहीं इन्सान में। नेक स्वादी मत बने, तू गोश्त खाना छोड़दे ॥ ५ ॥ कुरान के अन्दर लिखा, खुराक आदम के लिये पैदा किया गेहूं, मेवा, तू गोश्त खाना छोड़दे॥६॥ कत्ल हेवानात के बिन, गोश्त कहो कैसे मिले। कातिल निज्जात् पाता नहीं, तू गोश्त खाना छोड़दे ॥ ७ ॥ जैन सूत्रों बीच में, महावीर का फरमान है। मांस आहारी नर्क जावे, गोश्त खाना छोड़दे ॥ ८ ॥ जिसका मांस खाता यहां, वह उसको वहां पर खायगा मनु ऋषि भी कह गए, तू गोश्त खाना छोड़दे ॥ ६ ॥ नफ्स हरगिज नहीं मरे, फिर इबादत होती कहां। चौथमल की मान नसीहत, गोश्त खाना छोड़दे ॥ १० ॥

१०५ मोह.

(तर्ज—बनजारा)

यह मोह शेतान की जाई, तेने इसको बीबी बनाई ।टेर॥ तेने इससे तबियत लगाई, भूला फरज जाल में आई जी, यह खुदा से रखे जुदाई। तेने० ॥ १ ॥ यह अच्छी पोशाक सजवाती, फिर इतर फूलेल लगवाती जी, इसकी बड़ी बहिन खुदाई ॥ २ ॥ तुझे मोटर बीच बिठवाती, गुलशन की हवा खिलाती जी, है जाहिल इसका भाई ॥ ३ ॥ फिर अच्छा माल चखाती

पुनः महाफिल में ले जाती जी, करे बेहोश नशा पिलाई ॥ ४ ॥ गुनाहों की सेज विछाके, जुल्मों का तकिया लगाके जी, जिस पर दे तुझे लिटाई ॥ ५ ॥ ये तुझको कातिल बनावे, और वे इन्साफ करावेजी, इसे खोफ हशर का नाहीं ॥६॥ कई वज़ीर बादशाह तांई, किये इसने तावे मांहीजी, दिये दोजख्व बीच पठाई ॥७॥ जरा समझ के घर में आओ, तो फिर मजा हकीकी पावोजी, दो इसका फेल मिटाई ॥ ८ ॥ गुरु प्रसादे चौथमल कहवे, जो नसीहत पे चित्त देवेजी, फिर कमी रहे नहीं कांई ॥ ६ ॥
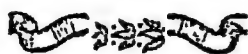
१०६ गुरु प्रार्थना.

(तर्ज-वारी जाऊंरे सांवरिया तुम पर वारणारे)

वारी जाऊंरे सद्गुरुजी तुम पे वारणारे ॥ टेर ॥ यह भव सिंधु अथाग भयों है, जहां बीच मेरो जहाज पड़यो है, कृपा निधान कृपाकर पार उतारनारे ॥ वारी ॥ १ ॥ तुम ही मात पिता अरु बन्धु, परोपकारी करुणा सिन्धु । देदे सत्योपदेश, भर्म निवारणारे ॥ २ ॥ गुरु बिन जप तप करणी कैसी, बिना नरेश के फौज है जैसी । पति बिना शृङ्गार मात बिन पालना रे ॥ ३ ॥ गुरु बिन कौन करे उद्धारा, तीर्थ व्रत चाहे करों हजारा । तो गुरु आज्ञा शिर धार, काज सुधारणारे ॥ ४ ॥ आवागमन में फिर नहीं आऊं, अबके गुरुजी शिव सुख पाऊं । ऐसा मुझ शिर ऊपर पंजा डालनारे ॥ ५ ॥ गुरु हीरालालजी ने गुण कीना, चौथमल को संयम दीना । है गुरु धर्म की जहाज, कभी न विसारणारे ॥ ६ ॥

१०७ ऋषि परिचय.

(तर्ज--गजल. बिना रघुनाथ के देखे)

करे जो कब्ज इस दिलको, रहे इस जहां से निरयाला। श्री जिन आन धारे वो, ऋषिश्वर हो तो ऐसा हो ॥ १ ॥ आत्म जित आसन मार, इन्द्रीय मर्दन मृग छाला। मुद्रा मुनि धर्म धारी वो, ऋषि० ॥ २ ॥ क्षमा की खाक तन पहिने, रहम रुद्राक्ष की माला। तप अग्नी कर्म इन्धन। ऋषि० ॥ ३ ॥ भगवन् नाम की भंग पी. रहे नित मस्त मतवाला। लगावे ध्यान ईश्वर से। ऋषि० ॥ ४ ॥ लंगोटी शील की मारी, अनद हो नाद रस आला। काया कोटी में रहता वो ॥ ऋषि० ॥ ५ ॥ काम मद क्रोध लोभ तांई, दिया टाला दिया टाला। भोग भुजंग सा जाने। ऋषि० ॥६॥ चौथमल कहे गुरु हीरालाल, थे गुणवंत दुनियां में, उन्हीं को नम्र हो वन्दे ॥ ऋषि० ॥ ७ ॥

१०८ प्रभु प्रेमादर्श.

(तर्ज—या हसीना बस मदिना, करवला में तू न जा)

इश्क उससे लगगया; दुनियां से मतलब कुछ नहीं। अपना बिगाना छोड़दे, दुनियांसे मतलब कुछ नहीं ॥ टेर ॥ उसकी मोहब्बत का पियाला, भरके एकदम पी लिया। मस्त वह रहता सदा, दुनियांसे मतलब कुछ नहीं। इश्क० ॥ १ ॥ लज्जत ज्यादे इश्ककी, कहनेमें कुछ आती नहीं। उसका मजा जाने वही, दुनियांसे मतलब कुछ नहीं ॥ २ ॥ बाग या स्मशान हो, चाहे महल या वीरान हो। बदनाम या तारीफ हो, दुनियां से मतलब कुछ नहीं ॥ ३ ॥ बना रहे माशूक वो, दिनरात

उसकी याद में । हसर तक नहीं भूलते, दुनियां से मतलब कुछ नहीं ॥ ४ ॥ चौथमल कहे दोस्ती, मालिक से तेरी लगगई । फिर दीन हो या बादशाह, दुनियां से मतलब कुछ नहीं ॥ ५ ॥

१०९ आयु चंचलता .

(तर्ज--अटारियां पे गिरारी कबूतर आधी रात)

उमर तेरी सगगगगगगग जाय ॥ टेर ॥ तू तो कुटुंब न्याति के अन्दर, मुखं रह्योरेरे लोभाय-उमर० ॥ १ ॥ धन राज्य में गर्भ रह्योरे, खबर पड़े कछु नाय ॥ २ ॥ कर स्नान पोशाक सजे है, इतर फुलेल लगाय ॥ ३ ॥ सुंदर गोरी तेरो, चित्त लियो चोरी, जिन संग रह्यो लिपटाय ॥ ४ ॥ डाब अणि पर जैसे जल बिंदु, ज्यूं जोवन झोला तेरो खाय ॥ ५ ॥ करले तू कुछ सुकृत करनां, वख्त अमोलक पाय ॥ ६ ॥ चौथमल कहे सद्गुरु तुमको, वर २ समझाय-उमर तेरी सगगग० ॥ ७ ॥
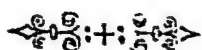
११० शराब निषेध .

(तर्ज-या हसीना बस मर्दना, करबला में तू न जा)

अकल भ्रष्ट होती. पलक में, शराब के परताप से । लाखों घर गारत हुए, शराब के परताप से ॥ टेर ॥ शराबी शोक महा बुरा, खुदकी खबर रहती नहीं । जाना कहां जावे कहां, शराब के परताप से ॥ अकल० ॥ १ ॥ इज्जत और दानीशमंदी, जिस पर दे पानी फिरा । धनवान कई निर्धन बने, शराब के परतापसे ॥ २ ॥ बकते २ हंस पड़े, और चौंक के फिर रो उठे । बेहोश हो हथियार ले, शराब के परताप से ॥ ३ ॥ चलते २ गिरपड़े, कपड़ा

हटा निर्लज्ज बने। मक्खियें भिनके मुंह पर करें, शराब के पर-ताप से ॥ ४ ॥ ज़ेवर को लेवें खोल लुच्चे, ले जेब से पैसे निकाल। कुत्ते देवें मूत मुंह पर, शराबके परतापसे ॥ ५ ॥ इन्साफ ही करते अदल जो, हजारोंकी रक्षा करे। खुदकी रक्षा नहीं बने, शराबके परतापसे ॥ ६ ॥ कम उमर में मर गए, कई राज्य राजों का गया। यादवों का क्या हुआ इस, शराबके परतापसे ॥ ७ ॥ नशे से पागल बने, पुलिस भी लेवे पकड़। कानून से मिलती सजा, शराब के परताप से ॥ ८ ॥ आठ आने वह कमावे, खर्च रूपये का करे। चोरी को फिर वह करे, शराब के परताप से ॥ ६ ॥ जैन वैष्णव मुसलमां, अंजील में भी है मना। कई रोगी बन गए, शराब के परताप से ॥ १० ॥ चौथमल कहे छोड़दे तू, मानले प्यारे अजीज़। आराम कोई पाता नहीं, शराब के परताप से ॥ ११ ॥

१११ संसार से विरक्त.

(तर्ज—बनजारा)

अब लगा खलक मोए खारा, गुरु हृदये ज्ञान उतारा ॥टेर॥ सच २ मुनिवर की वाणी, श्रद्धा प्रतीत रुचि आणी जी, मैं हो जाऊं अणगारा ॥ गुरु० ॥ १ ॥ खुल रहे जिगर के नैने, जग झूठा जाना मैंने जी, यह जैसा भ्रम टिपारा ॥ २ ॥ यह मात तातरु सज्जन, हाथी घोड़ा धन कंचन जी, सब दामनसा भल-कारा ॥ ३ ॥ जो इनके बीच ललचावे, सो परभव में दुख पावेजी, पहुंचेगा नर्क दुआरा ॥ ४ ॥ जहां यम मुद्गर से मारे, वहां हाकोहाक पुकारेजी, ना छुड़ाए सज्जन प्यारा ॥ ५ ॥ ये काम भोग जग सारा, मैंने जाणया नाग सम कारा जी, मैं दूंगा इनको टारा ॥ ६ ॥ मुनि चौथमल कहे धन भाग्ये, सुन ज्ञान

हलु कर्मी जागे जी, जांके अल्प होय संसारा ॥ ७ ॥

—sx※+s—

११२ मनुष्य जन्म की उत्कर्षता.

(तर्ज--वारी जाऊंरे सांवरिया तुम पर वारणारे)

उत्तम नर तन पाय वृथा मत हारनारे ॥ टेर ॥ जीती बाजी नर तन पाया । फिर विषयन में क्यों ललचाया । सत्गुरू देवे सीख हृदय में धारनारे । उत्तम० ॥ १ ॥ मात पिता भगिनी सुत नारी । स्वार्थ वश करे सब यारी । दग्ध तृण मृग तजे न्याय विचारणारे ॥ २ ॥ किसका हाथी घोड़ा पहेरा । चिड़िया जैसा रैन बसेरा । सकल संसार से नेह निवारणारे ॥ ३ ॥ जैनागम है धर्म तुम्हारा । तेने उस को क्यों विसारा । मुनि चौथमल की कहन निज आतम तारणा रे ॥ ४ ॥

---

११३ श्रावक परिचय.

(तर्ज- विना रघुनाथ के देखे)

विवेकी हो न टेकी हो, नहीं मिजाज में शेखी हो । हजारों में भी एकी हो, जो श्रावक हो तो ऐसा हो ॥ १ ॥ जो अरिहंत ध्यान ध्याता हो, वो नव तत्व ज्ञाता हो । सहाय सुरका न चाहता हो, जो श्रावक हो तो ऐसा हो ॥ २ ॥ समभावी हो अमाई हो, वो गुण का ही ग्राही हो । कदर जहां में सवाई हो । जो श्रावक० ॥ ३ ॥ न बुराई का करता हो, सदा जुल्मों से डरता हो । वो समभाव धरता हो, जो श्रावक हो तो ऐसा हो ॥ ४ ॥ आचारी हो विचारी हो, वो बाहर व्रत का धारी हो । स्वधर्मी साज दाता हो जो

श्रावक हो तो ऐसा हो ॥ ५ ॥ दयालु हो कृपालु हो, जो शुद्ध श्रद्धा का धारी हो । न शंका हो न कांक्षा हो, जो श्रावक हो तो ऐसा हो ॥ ६ ॥ गुरु हीरालाल सा ज्ञाता हो, चौथमल को सुख दाता हो । रत्नवत हृदय दिखाता हो, जो श्रावक हो तो ऐसा हो ॥ ७ ॥

११४ रावण से सीता का कहना.

(तर्ज-या हसीना बस मदीना, कर बला में तू न जा)

अकल तेरी गई किधर, सिया कहे कुछ गौर कर । रावण फजा आई तेरी, सीया कहे कुछ गौर कर ॥ टेर ॥ अभिमान छाया तुझे, सोने की लंका देख कर । मेरे लिये यह कुछ नहीं, सीता कहे कुछ गौर कर ॥ अकल० ॥ १ ॥ इश्क में सूझे नहीं अंधा बना तू बेहया, क्यों जुल्म पे बांधे कमर, सीया कहे कुछ गौर कर ॥ २ ॥ खूब सूरत कामिनी, तेरे हजारों महल में । जिनसे सबर आती नहीं, सीया कहे कुछ गौर कर ॥ ३ ॥ सूरज उदय पश्चिम हुए, फिर आग निकले चांद से । ये मन सुमेरु ना चले, सीया कहे कुछ गौर कर ॥ ४ ॥ सच तो स्वयं-वर जीत लाता, क्यों चोर के लाया मुझे । दाग लगता वंशके, सीया कहे कुछ गौर कर ॥ ५ ॥ जुगनुं कमर की दमक जहां तक, आफताब निकले नहीं, ऐसे पिया के सामने तू, सीया कहे कुछ गौर कर ॥ ६ ॥ कुटुम्ब सारा क्या कहे, तुझको जरा तो पूछले । मंदोदरी राजी नहीं, सीया कहे कुछ गौर कर ॥ ७ ॥ देख मेरे हुश्न को, फिदा हुआ हद से कमाल । मगर हक तेरा नहीं, सीया कहे कुछ गौर कर ॥ ८ ॥ बदफेल करने से कोई, आराम तो पाया नहीं । सती सताये है नरक, सीया कहे कुछ गौर कर ॥ ९ ॥ गुरू के परसाद से यूं चौथमल कहता तुझे ।

होने वाली ना टले, सीया कहे कुछ गौर कर ॥ १० ॥

११५ परभव प्रबंध

(तर्ज—अटारियां पे गिरारी कबूतर आधीरात)

मुसाफिर यहां से खरची लेले लार-मुसाफिर यहां से ॥ टेर ॥ यह संसार है शहर पुरानों, जिसका मोहराज मुख-त्यार ॥ मु० ॥ १ ॥ पाप अठारे ये हैं लुटारे, तू इनसे रहियो होशियार ॥ २ ॥ राणा और राजा छत्रपति कई, गया है हाथ पसार ॥ ३ ॥ पांच कोस को बांधे जावतो, परभव की बूझ न वार ॥ ४ ॥ नये शहर में जाना तुझको, वहां नहीं नानीका द्वार ॥ ५ ॥ मनुष्य जन्म की अजब दुकान है, जिसमें नाना विध व्यौहार ॥ ६ ॥ ज्ञान दर्शन चारित्र तपस्या, यह लीजो रत्न संग चार ॥ ७ ॥ सुकृत घोड़ा भीण यत्ना को, जिस पर होजा असवार ॥ ८ ॥ दश विध यति धर्म सुखडी, दानादिक कलदार ॥ ९ ॥ शिवपुर पाटण बीच पधारो, जहां पावोगा सुख अपार ॥ १० ॥ गुरु हीरालाल प्रसादे चौथमल, कहे तुझे ललकार ॥ ११ ॥ उन्नीसे सीतर टोंक शहर में, आया छः ठाणा सेखे काल ॥ १२ ॥

११६ रण्डीबाजी निषेध.

(तर्ज—या हसीना बस मदीना, करबला में तू न जा)

अय जवानों मानों मेरी, रण्डी बाजी छोड़दो । कपट की भंडार है, तुम रण्डीबाजी छोड़दो ॥ टेर ॥ पोशाक उमदा जिस्म पर सज, पान से मुंह को रचा। टेढ़ी निगाह से देखती,

तुम रण्डीबाजी छोड़दो ॥ अय० ॥ १ ॥ धन होवे किस कदर, इस चिन्ता में मशगूल रहे । मतलब की पूरी यार है, तुम रण्डीबाजी छोड़दो ॥ २ ॥ काम अन्ध पुरुष को, मकड़ी के मुआफिक फांसले । गुलाम अपना वह बनावे, रण्डीबाजी छोड़दो ॥ ३ ॥ विषय अन्ध होके सभी, वह माल घरका सोंपदे । मतलब बिना आने न दे, तुम रण्डीबाजी छोड़दो ॥ ४ ॥ इसकी सोहबत में बड़ों का, बड़प्पन रहता नहीं । पानी फिरावे आबरू पर, रण्डीबाजी छोड़दो ॥ ५ ॥ सुजाक गर्मी से सड़े, मुंह पर दमक रहती नहीं । कमजोर हो कई मर गये, तुम रण्डीबाजी छोड़दो ॥६॥ भरोसा कोई नहीं गिने, धर्म कर्म का होता है नाश । चौथमल कहे अय रफीकों, रण्डीबाजी छोड़दो ॥ ७ ॥

११७ प्रबोधन

(तर्ज--ख्वाजा लेले खबरिया हमारीरे)

तेने बातों में जन्म गुमायारे, नहीं प्रभु से ध्यान लगाया रे ॥ टेर ॥ साणी मीठी बातें बना कर, लोगों को ठग २ खाया रे ॥ तेने० ॥ १ ॥ तेरी मेरी करता, मिजाज में फिरता। खाली साफे का पेंच झुकाया रे ॥ २ ॥ पश ख्याल में माल लुटाया, नहीं दया दान में हाथ उठायारे ॥ ३ ॥ गरीबों के ऊपर तू करता है शक्ति, नहीं रहम जरा तू लाया रे ॥ ४ ॥ दारू भी पीवे भंग भी पीवे, पर नारी से प्रेम लगाया रे ॥ ५ ॥ लाखों रुपये का माल कमाया, पैसा साथ नहीं आया रे ॥ ६ ॥ पाप करी प्राणी गया नर्क में, फेर घणा पछताया रे ॥ ७ ॥ कहे यमदूत गुरज उठाकर, ले भोग जो तेने कमायारे ॥ ८ ॥ चौथमल

तो साफ सुनावे, करा धर्म वही सुख पाया रे ॥ ६ ॥

११८ प्रश्न जंबू कुंवर से उसकी स्त्रियों का.

(तर्ज-वारी जाऊंरे सांवरिया तुम पर वारनारे)

प्रियतम अवला की अरदास, ध्यान में लावनारे ॥ टेर ॥ हम सब सुन्दर खुद की दासी, तुम्हरे वचनामृत की प्यासी । महर नज़र कर इधर, छोड़ मत जावनारे ॥ प्रियतम० ॥ १ ॥ कैसे जावे बाल उमरिया, तुम विन कौन आधार केशरिया । बोली मधुबैन, प्रेम दरसावनारे ॥ २ ॥ बात सुनी जियरा घबरावे, पानी विन ज्यूं हरी कुमलावे । पति विना ज्यूं नार, दान बिन भावनारे ॥ ३ ॥ मात पिता भये वृद्ध तुम्हारे, तिनकी ओर दो तनिक निहारे । विना विचारे करे होय पछतावनारे ॥ ४ ॥ सोच समझ कर घर पर रहिजे, हम तुम वय को लावो लीजे । मुनि चौथमल कहे वेरागी !, मत ललचावनारे ॥ ५ ॥

११९ निवास की अस्थिरता.

(तर्ज-बिना रघुनाथ के देखे नहीं दिलको करारी है)

सुनो सब जहां के आलिम, यहां कदतक लुभाओगे । चुनाचे सो वर्ष जिन्दे, तो आखिर यांसे जाओगे ॥ टेर ॥ पाया किस कामको नरभव, लगे किस काम के धंधे । करो तो गौर दिल अन्दर, मौका फिर फिर न पाओगे ॥ सुनो० ॥ १ ॥ अजाब की पोट सिर धर धर, खजाना कर दिया तर तर । धरा धन माल यहां रहेगा, सफर में कुछ न पाओगे ॥ २ ॥ जरा नहीं खोफ लाते हो, वक्त यों ही गुमाते हो । धरी सिर

पाप की गठरी, कहां पर तुम छिपाओगे ॥ ३ ॥ अरे! क्या हुक्म है उसका, फेर क्या फर्ज तुम पर है। हिसाब जिस वक्त बोलेगा, वहां पर क्या बताओगे ॥ ४ ॥ गुरू हीरालाल के परसाद, चौथमल जोड़ के गाता। चौंसठ के साल दिया उपदेश, अमल में कुछ भी लाओगे ॥ ५ ॥

१२० चेतन को सजग करना.

(तर्ज--या हसीना बस मदीना, करबला में तू न जा)

उठाके देखो चशम, दुनियां में लाखों हो गये। किस नींद में सोते पड़े, दुनियां में लाखों होगये ॥ टेर ॥ टेढ़ा दुपट्टा बांधते, पोशाक सजते जिस पे। घड़ी लगाते जेब में, दुनियां में लाखों होगये ॥ उठाके० ॥ १ ॥ हाथ लकड़ी, पान मुंह में, नीलम के कंठे हैं गले। घूमते बाजार में, दुनियां में, लाखों होगये ॥ २ ॥ बग्घीके अंदर बैठके, गुलशन की खाते हवा। मशगूल रहते इश्क में, दुनियां में लाखों होगये ॥ ३ ॥ लाखों उठाते हुक्म को, भारत के सर वो ताज थे। गरीब की सुनते नहीं, दुनियां में लाखों होगये ॥ ४ ॥ इन्सान होकर गैर का जिसने भला कुछ ना किया। हैवान सी खो जिन्दगी, दुनियां में लाखों होगये ॥ ५ ॥ गुरु के परसाद से, यूं चौथमल कहता तुझे। मीजाज करना छोड़दे, दुनियां में लाखों हो गये ॥ ६ ॥

१२१ कुचेष्टा का परिणाम.

(तर्ज—मांड)

अहो मारी मानो मानो मानो मानो मानो मानोरे। अहो

डर आनो आनो आनो आनो आनो आनोरे ॥ टेर ॥ कुचाले चालो मतिरे, कुल में लागे कलंक । रावन सरिखा राजवी जांकि, गई हाथ से लंक ॥ अहो मानो० ॥ १ ॥ जैसे गऊवां होती उजाड़ी, ढींची पांव लगाय । नहीं माने गले डांग लगावे, ऐेत्र तरो फल पाय ॥ २ ॥ पद्मनाभ को मान भंग भयो, मणि-रथ नर्क सीधात । किच्चक का कीचड़का निकलया, या जग में विख्यात ॥ ३ ॥ पर नारी वैश्यां से यारी, तीजो पीवे शराव । मांस आहारी और शिकारी, कां का परभव हाल खराब ॥ ४ ॥ यौवन रंग पतंग सारे, जाता न लागे बार । थोड़ा जीतव्य के वास्ते थां, मत बांधो पाप को भार ॥ ५ ॥ जीवों की यतना करो, देवो सुपातर दान । भजन करो भगवान का, थारा सुर लोकों में मकान ॥ ६ ॥ गुरु हीरालालजी नो ठाणा पधारे, साहाजापुर के मंझार । चौथमल कहे उगणीसे चौसठ, माह महिनो श्रेयकार ॥ ७ ॥

१२२ शिकार निषेध.

(तर्ज--या हसीना बस मदीना, करबला में तू न जा)

श्याह दिल हो जायगा, शिकार करना छोड़दे । कातिल बने मत अय दिला, शिकार करना छोड़दे ॥ टेर ॥ क्यों जुलम कर जालिम बनें, पापों से घट को क्यों भरे । दिन चार का जीना तुझे. शिकार करना छोड़दे ॥ श्या० ॥ १ ॥ सूअर सांभर रोज हिरन, खरगोश जंगल के पशु । इन्सान को देखी डरे, शिकार करना छोड़दे ॥ २ ॥ तेरा तो एक खेल है, और उनके जाते प्राण हैं । मत खून का प्यासा बने, शिकार करना छोड़दे ॥ ३ ॥ वेकसूरों को सतावे, खौफ तू लाता नहीं । बदला फिर देना पड़े, शिकार करना छोड़दे ॥ ४ ॥ जैसी प्यारी जान

तुझको, ऐसी गैरों का भी जान । रहम ला दिल में जरा, शिकार करना छोड़दे ॥ ५ ॥ जितने पशु के वाल हैं, उतने जन्म कातिल मरे । 'मनुस्मृति' देखले, शिकार करना छोड़दे ॥ ६ ॥ हैवान आपस में लड़ाना, निशाना लगाना जान का । 'हदीस' में लिखा मना, शिकार करना छोड़दे ॥ ७ ॥ गर्भवती हिरनी को मारी भूप श्रेणिक तीर से । वह नर्क के अन्दर गया, शिकार करना छोड़दे ॥ ८ ॥ खून से होती नरक, श्री वीर का फरमान है । चौथमल कहे समझलो, शिकार करना छोड़दे ॥ ९ ॥

१२३ कर्म फल.

(तर्ज — दादरा)

इस कर्म संग जीव तेने रूप कई धरे, आपो संभाल आप लक्ष काज तो सरे ॥ टेर ॥ तिलों में तेल क्षीर नीर पुष्प में सुगन्ध । ऐसे अनादिका संयोग, समझ तो अरे ॥ इस० ॥ १ ॥ सोनी के निमत से कंचन का गहना हो । पीकर शराब शराबी जैसे, नाली में गिरे ॥ २ ॥ कभी गया नर्क में, दुःख का न पार है । पुद्गल की मार बे शुमार, सोचो जहां परे ॥ ३ ॥ हैवान बीच पैदा होय, भार को वहां । पुष्प होय सेज बीच, जाके दब मरे ॥ ४ ॥ स्वर्ग बीच अप्सरा के, झुंड में रहे कभी हुआ शिरोमणि, कभो हुआ तरे ॥ ५ ॥ मनुष्य जन्म ऊंच नीच, कौम में हुआ । कभी तो बादशाह कभी, नकीम हो फिरे ॥ ६ ॥ दया धार हिंसा टाल, जिन वेन हैं खरे, कहे चौथमल कर्म मिटे, मोक्ष में वरे ॥ ७ ॥

१२४ जम्बू कुंवर का उत्तर उसकी रानियों को.

(तर्ज—वारीजाऊंरे सांवरिया तुम पर वारनारे)

सुन्दर झूठा जग लिया जान, ज्ञान लगायकेरे ॥ टेर ॥ तन धन यौवन विद्युत् झलकारा, संध्या राग स्वप्न संसारा । इंद्र धनुष क्षण बीच जाय विरलायकेरे ॥ सुन्दर० ॥ १ ॥ जन्म जरा मृत्यु दुख भारी, अनन्त बेर भोगे सुन प्यारी । विषय वासना मांय वृथा ललचायकेरे ॥ २ ॥ पैंसठ सहस्र पांच सो छत्तीस, वादर निगोद में सहस्र है बत्तीस । मुहूर्त एक में जन्म मरण सुन, थर २ जीव कम्पायकेरे ॥ ३ ॥ रंग पतंग सा पुद्गल का ढंग, मृग तृष्णावत् कौन करे संग । कभी तृप्त नहीं होय, स्वर्ग सुख पायकेरे ॥ ४ ॥ प्रेम होय तो उत्तर दीजे, मेरे साथ में संयम लीजे । कहे चौथमल वैरागी यूं समझायकेरे ॥ ५ ॥

१२५ वो तो सबसे निराला है.

(तर्ज-विना रघुनाथ के देखे नहीं दिल को करारी है)

तलाशें कहां उसे ढूंढे, वो तो सबसे निराला है । हीरे वी त्र की ज्योति से, बढ़के भी उजाला है ॥ टेर ॥ फूलों बीच वोही है, खुशबू बीच वोही है । न वो फूल न वो खुशबू.वो तो सबसे निराला है ॥ तलाशें० ॥ १ ॥ पानी बीच वोही है, पाषान बीच वोही है । न वो पानी न वो पाषान, वो तो सबसे निराला है ॥ २ ॥ भोगी बीच वोही है, जोगी बीच वोही है । न वो जोगी ना वो भोगी,वो तो सबसे निराला है ॥ ३ ॥ दिनके बीच वोही है, निशा के बीच वोही है । न वो दिन है न रजनी है, वो तो सबसे निराला है ॥ ४ ॥ दरखत बीच वोही है, पत्तों बीच वोही है । न वो दरखत न वो पत्ता, वो तो सबसे निराला है

॥ ५ ॥ हिन्दू बीच वोही है, मुसलमां बीच वोही है। न वो हिंदू न वो मुसलमां, वोतो सबसे निराला है ॥ ६ ॥ स्त्री बीच वोही है, पुरुषों बीच वोही है। न वो स्त्री न वो मानुष, वो तो सबसे निराला है ॥ ७ ॥ हरशे बीच वोही है, हृदय बीच वोही है। न वो हरशे न वो हृदे, वो तो सबसे निराला है ॥ ८ ॥ सूर्य सम जूदा है सबसे, धूप सम सबके अन्दर है। न वो सूरज न वो है धूप, वो तो सबसे निराला है ॥ ९ ॥ अनंत चतुष्ट करके सहित, न उसके रूप है ना रंग। चौथमल कहे वो निरवानी, वोही भक्तों का वाला है ॥ १० ॥
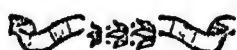
१२६ गौ से लाभ.

(तर्ज-जशोदा मैया, अब ना चराऊं तेरी गैया)

दयालु भैया, मरे वे अपराध पशु गैया ॥ टेर ॥ कहां गये गोपाल लाल, धेनु के थे वो चरैया। शिर पर ओढ़े काली कमलिया, वंशी राग बजैया ॥ दयालु० ॥ १ ॥ हिंदू नाम उसी का जानों, पर के प्राण बचैया। हिंदू होके पशु बीणा से, जमपुरी बीच पठैया ॥ २ ॥ गऊ के जरिये दूध मलाई, पेड़ा खात खवैया। गऊ के सुत से खेती होवे, सबके उदर भरैया ॥ ३ ॥ माता दूध अल्प पिलावे, वो उमर भर दूध पिलैया। उपकार पे अपकार करे, वो कैसे कृत घनैया ॥ ४ ॥ चेतो चेतो जल्दी चेतो, अहो ! निज सुख के चैया। चौथमल कहे दया धर्म से, पार लगे तेरी नैया ॥ ५ ॥

१२७ चोरी निषेध.

(तर्ज—या हसीना बस मदीना, करबला में तू न जा)

इज्जत तेरी बढ़ जायगी, तू चोरी करना छोड़दे। मानले

नसीहत मेरी, तू चौरी करना छोड़दे ॥ टेर ॥ माल देखी गैर का, दिल चौर का आशक हुवे। साफ नीयत नहीं रहे, तू चौरी करना छोड़दे ॥ इज्जत० ॥ १ ॥ निगाह उसकी चौतरफ, रहती है मानिन्द चील के। प्रतीत कोई न गिने, तू चौरी करना छोड़दे ॥ २ ॥ पुलिस से छिपता रहे, एक दिन तो पकड़ा जायगा। बेंत से मारे तुझे, तू चौरी करना छोड़दे ॥ ३ ॥ नापने में तोलने में, चौरी महसूल की करे। रिश्वत भी खाना है यही, तू चौरी करना छोड़दे ॥ ४ ॥ हराम पैसों से कभी, आराम तो मिलता नहीं। दीन दुनियां में मना, तू चौरी करना छोड़दे ॥ ५ ॥ नुकसान गर किसके करे तो, आह लगती है जबर। खाक में मिल जायगा, तू चौरी करना छोड़दे ॥ ६ ॥ सबर कर पर माल से, हक बात पर कायम रहे। चौथमल कहता तुझे, तू चौरी करना छोड़दे ॥ ७ ॥

१२८ प्रतिबोध.

(तर्ज–मांड)

अहो आदेसर भाषे, बूजो बूजो बूजो लो शिवराज ॥टेर॥ संयम लीनो ऋषभ प्रभुजी, पुत्र ने राज दिराय। भरतखंड साधन ने निकल्या, भ्रात कहे इम वाय ॥ अहो० ॥ १ ॥ माने आपने और सभीने, दोनो पिताजी राज। आप करो राज आप को, मैं करां नांको राज ॥ २ ॥ शक्ति देखी भरत कीरे, करे अठ्याणु विचार। ऋषभदेव प्रभु पास आई, ऐसी करे पुकार ॥ ३ ॥ भरत लोभी घन राज को, करी चढ़ाई आय। आण मनावे हम भणि कई, आप देवो समझाय ॥ ४ ॥ आदिनाथ कहे सांभलोरे, क्यों थे रह्या लोभाय। आयु राज ने संपदा कोई, स्थिर नहीं जगमांय ॥ ५ ॥ लेवो राज्य थें मोक्ष कोरे,

छोड़ो सकल जंजाल। मुनि अठाणुं संयम लियो, पहुंचे भव जल पार ॥ ६ ॥ गुरु हीरालाल प्रसादसुं, चौथमल कहे एम, उगणीसे छासट उदयापुर में, चौमासा वरते खेम हो ॥ ७ ॥

१२६ हितोपदेश.

(तर्ज—गजल या हसीना वस मदीना, करवला में तू न जा)

आकबत के लिये तुझको, धर्म ध्याना चाहिये। दिन रात में तुझे दो घड़ी, सत्संग में आना चाहिये ॥ टेर ॥ दुर्लभ मिला नर का जन्म, जिसे न गमाना चाहिये। जिस लिये पैदा हुआ, वो फर्ज बजाना चाहिये ॥ आकबत० ॥ १ ॥ मोह नींद में सोता पड़ा, उसको उठाना चाहिये। जागता सोता रहे, जिसे क्या जगाना चाहिये ॥ २ ॥ गरूर ताके माल का, किसे ना दबाना चाहिये। कर जाल कोई मसकीन को, कभी न फँसाना चाहिये ॥ ३ ॥ चन्द रोज का मुकाम है, यहां ना लोभाना चाहिये। सामान नेकी का बांध के, संग में ले जाना चाहिये ॥४॥ निशा भोजन अभक्ष है, तुझको न खाना चाहिये। चौथमल की नसीहत को, दिल में लाना चाहिये ॥ ५ ॥

१३० गुरु आन्हान.

(तर्ज—नाटक)

लाओजी लाओ तुम ज्ञान के सुनाने वाले, मुक्ति के दिखाने वाले, गुरु गुणवान वो अज्ञान को हटाने वाले. लाओजी लाओ तुम० ॥ टेर ॥ चराचर जीव को निज प्राण के समान देखे। लेना जन्म उन पुरुषों का प्रमाण लेखे। भटका मैं जग में सारे, देखे जोगी और धूतारे, द्वेषी और रागी न्यारे, मोह मायाके वश में सारे। जो सद्गुण राशि, जग से उदासी, शिवपुर

वासी, हो अविनाशी, चौथमल के रिझाने वाले । लाओजी लाओ० ॥ १ ॥
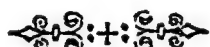
१३१ नेक सलाह.

(तर्ज-विना रघुनाथ के देखे नहीं दिलको करारी है)

मेरा तो धर्म कहने का, भला उपदेश देने का । मान चाहे तू मत माने, हुश्न तेरा न रहने का ॥ टेर ॥ अरे जाती है जिन्दगानी, जैसे वरसात का पानी । जरा तो चेत अभिमानी भरोसा क्या है जीने का ॥ मेरा० ॥ १ ॥ छोड़दे जुल्म का करना जरा आकवत से डरना । प्रेम दिलोजान से करना, समां ये साथ लेने का ॥ २ ॥ दुखावे मत किसी का दिल, तजो अब रात का खाना । नशाखोरी जिनाकारी, त्याग कर मांस छीने का ॥ ३ ॥ मुसाफिरखाने में रह कर, अरे ! वन्दे भजन तो कर कहे चौथमल तजो अभिमान, अरे कञ्चन के गहने का ॥ ४ ॥

१३२ स्वार्थमय संसार.

(तर्ज—गुलशन में आई वहार)

दुनियां तो मतलब की यार, यार मेरे प्यारे दुनियां तो मतलब की यार ॥ टेर ॥ मतलब से महोब्बत करती है जोरु, वे मतलवसे देती धिक्कार ॥ धि० ॥ दु० ॥ १ ॥ मात पिता कहे पुत्र सपुत है, वे मतलब दे घरसे निकाल ॥ नि० ॥ २ ॥ मतलब से बेन भैया २ पुकारे, वे मतलब नहीं आवे तेवार ॥ ते० ॥ ३ ॥ मतलब से नाता मुर्दा से जोड़े, नहीं तो जिन्दे को देवे विसार ॥ वि० ॥ ४ ॥ मतलब से वैश्या यार को बुलावे, वे मतलब वो ढकदे किंवार ॥ किं० ॥ ५ ॥ दावत में दोस्त खुश

हो हो ने आवे, ना पूछे फिर हुआ कर्जदार॥ दा० ॥ ६ ॥ युवा येल की करते हिफाजात, वुड्ढ की पूछे नहीं सार ॥ सा० ॥ ७ ॥ हाथ पसारे चड़स भरे पै, हुआ खाली दे लात की मार ॥ मा० ॥ ८ ॥ डाक्टर बुलाके औषध भी खावे, हुआ मतलब न जावे दुवार ॥ दु० ॥ ६ ॥ दूधारु गाय की लात भी खाले, दे वांटो फिर लेवे वुचकार ॥ वु० ॥ १० ॥ फले वृक्ष पे घूमे हैं पक्षी, याचक भी आवे दुवार ॥ दु० ॥ ११ ॥ मतलब के गीत नारी गाती है सब मिल, मतलब से भरा संसार ॥ सं० ॥१२॥ चौथमल कहे बेस्वार्थ सद्गुरु, देते उपदेश हितकार ॥ हि० ॥ १३ ॥

१३३ परस्त्री परिणाम.

(तर्ज—या हसीना बस मदीना, करबला में तू न जा)

लाखों कामी पिट चुके, परनारके परसंग से । मुनिराज कहे सब बचो, परनारके परसंग से ॥ टेर ॥ दीपक की लो पर पड़ पतंग, प्राण वहीं खोता सही । ऐसे कामी कट मरे, वह परनार के परसंग से ॥ लाखों० ॥ १ ॥ परनार का जो हुश्न है, मानों यह अग्नी कुण्ड सा । तन धन सबको होमते, परनार के परसंग से ॥ २ ॥ झूठे निवाले पर लुभाना, इन्सान को लाजिम नहीं । सूजाक गर्मी में सड़े, परनार के परसंग से ॥ ३ ॥ चार से सत्ताणुवा (४९७) कानून में लिखा दफा । सजा हाकिम से मिले, परनार के परसंग से ॥ ४ ॥ जैन सूत्रों में मना, मनुस्मृति भी देखलो । कुरान बायबल में लिखा, पर नार के परसंग से ॥५॥ रावण कीचक मारे गए, द्रौपदी सीया के वास्ते । मणीरथ मर नरके गया, परनार के परसंग से ॥ ६ ॥ जहर बुझी तलवार से था, अयन मुलाजिम बदकार

ने । हजरत अली पर वहार की; परनार के परसंग से ॥ ७ ॥ कुत्ते को कुत्ता काटता, कत्ल नर नर को करे। पल में महोब्बत टूटती, पर नार के परसंग से ॥ ८ ॥ किस लिए पैदा हुआ, अए वेहया कुछ सोच तू। कहे चौथमल अब ख्वर कर, पर नार के परसंग से ॥ ९ ॥

१३४ बन्धु प्रार्थना.

(तर्ज--मांड)

अहो मुझ बंधव प्यारा, करुणा आणी अर्जी लो मानी जी राज ॥ टेर ॥ भरत सुणी संयम तणी, छूटी आंसु की धार । बांधव से यूं बीनवे, मत लो संयम भार ॥ अहो० ॥१॥ अठाणुं संयम लियो, पूर्व पिता के पास । ऐसा विचार मत करो मुझे, आप तणो विश्वास ॥ २ ॥ यो सघळोई राज्य लो, छत्र चंवर ढुराय । आप रहो संसार में, अर्ज कबूल कराय ॥ ३ ॥ शहर वनिता जावतां, पग नहीं पड़े लगार । माजी साहब ने जायने मैं, कांई कहूं समाचार ॥ ४ ॥ चक्र रत्न निज स्थान पै, आयो नहीं इण काज । करी चढ़ाई आवियो कांई, यह अनादि रिवाज हो ॥ ५ ॥ बाहुबल कहे सुनो भरतजी, जो निकल्या मुझ वेण । गज दन्तवत् नहीं फिरे कांई, यह सुरा का वेण ॥ ६ ॥ समझाया मानी नहीं, लियो संयम हित जान । भरत गये निज शहर वनिता, फेरी अखण्डित आन ॥ ७ ॥ उगणीसे बासठ मेरे, उदियापुर चौमास । चौथमल कहे गुरु प्रसाद, बरते लील विलास हो ॥ ८ ॥

१३५ दीन दुनियां वास्ते मत बिगाड़ो.

(तर्ज—या हसीना वस मदीना, करवला में तू न जा)

अए प्यारो ! मत बिगाड़ो; दीन दुनिया वास्ते । नेक

नसीहत मानलो तुम, दीन दुनियां वास्ते ॥ टेर ॥ यह चन्द रोजा जिन्दगी है, गौर कर देखो जहां । ऐयाशी वनके मत बिगाड़ो दीन दुनियां वास्ते ॥ अरे० ॥ १ ॥ रहम करना जान पर, इन्सान का यह फर्ज है । दिल सताके मत बिगाड़ो, दीन दुनियां वास्ते ॥ २ ॥ इन्साफ पर रक्खो निगाह, रिश्वत का ख्याल छोड़दो । झूठी गवाह भर मत बिगाड़ो, दीन दुनियां वास्ते ॥ ३ ॥ माल और ओलाद हरगिज, साथमें आते नहीं । छल करके मत बिगाड़ो, दीन दुनियां वास्ते ॥ ४ ॥ हुश्न सदा रहता नहीं, दरियाके मुआफिक जा रहा । जिनाह करके मत बिगाड़ो, दीन दुनियां वास्ते ॥ ५ ॥ एक पैसे के लिये, तू खुदाकी खाता कसम । लालच में आकर मत बिगाड़ो, दीन दुनियां वास्ते ॥ ६ ॥ अगर दिल हुशियार है तो, जुल्म से अब बाज आ । नशा करके मत बिगाड़ो, दीन दुनियां वास्ते ॥ ७ ॥ दीन को जिसने बिगाड़ा, वो इन्सां नहीं हैवान है । चौथमल कहे मत बिगाड़ो, दीन दुनियां वास्ते ॥ ८ ॥

१३६ गुरुपकार.

(तर्ज• नाटक)

आवोजी आवो चिदानंद के जगानेवाले, मोहकी नींदको उड़ानेवाले, करके विचार ज्ञान टेलीफोन के लगाने वाले । आवोजी० ॥ टेर ॥ कुमता की सेजों में जाके कैसा यह बैमान लेटा । जवानोंके बीच हो अज्ञानी यह कैसे पैठा, अपना स्वरूप बिसारा, विषयों में धर्म हारा, ममता से फिर मारा, कैसा अज्ञान धारा, कहे सुमता नारी, चेतन थारी, चाल नठारी, देवो निवारी, चौथमल तो समझाने वाला ॥ आवो० ॥ १ ॥
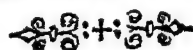
१३७ सत्संगपर सदुपदेश.

(तर्ज—विना रघुनाथ के देखे नहीं दिलको करारी है)

अरे सत्संग करने में, तुझे क्यों शर्म आती है। विना सत्संगके आयु, पशु मानिंद जाती है॥ टेर॥ तमाशा देखने रंडीका, मेफिल बीच जाते हो। धर्म स्थान के अंदर, तुझे क्यों नींद आती है। अरे०॥ १॥ करे लुच्चे की तू संगत, पिलाव वो तमाखू भंग। फेर पर नारी का परसंग, यही इज्जत घटाती है॥ २॥ अरे! सत्संग बड़ा जहांमें, चश्म को खोल करके देख। तिरे सत्संग से पापी, जो गिनती नहीं गिनाती है॥३॥ अगर लाखों करोड़ों का, करे पुण्यदान कोई प्राणी। मगर लव मात्रकी सत्संग, खास मुक्ति दिखाती है॥ ४॥ कहे यों चौथमल पुकार। सभी है झूठा संसार। एक सत्संग जगमें सार, भवसागर तिराती है॥ ५॥

१३८ विश्वमोह दिग्दर्शन.

(तर्ज—गुलशन में आई बहार)

किससे तू करता है प्यार, प्यार मेरे प्यारे, किससे तू करता है प्यार॥ टेर॥ उमर हुश्न दोय दामन का झमका। किस मोटर पर होता सवार॥ स०॥ किससे०॥ १॥ पोशाक जिस्म पे सजता तू उमदा, गले गुलाब का हार॥ हार०॥२॥ दोस्तोंके संग में लहलों को जावे। जीवन की देखे बहार॥ व०॥ ३॥ किस गफलत में सोताहै प्राणी, दुनियां तो मतलब की यार॥ यार०॥ ४॥ मात, पिता, भैया बहिन, कुटुंब सब, छोड़ेंगे तुझको मंझधार॥ धार०॥ ५॥ श्वास है वहां तक सुंदर भूषण, फेर लेवेंगे तन से उतार॥ उ०॥६॥

सब घर के मिल के, खंधे पे धर के ॥ फूंक आवेंगे अग्नि मंझार ॥ मं० ॥ ७ ॥ इंद्र भवन और फूलों की सेजां । प्यारी न आवेगी लार ॥ लार० ॥ ८ ॥ व्यभिचारन हो तो पर पुरुष बुलावे, तुमको दे दिल से विसार ॥ वि० ॥ ९ ॥ सुकृत दुष्कृत करता सो भुक्ता, दिलमें तू करले विचार ॥ वि० ॥ १० ॥ चौथमल कहे राजा संयती, लीना है जन्म सुधार ॥ सु० ॥ ११ ॥ उगणीसे तियोतर पालीके मांही । देता हूं शिक्षा अकार ॥ वहा० ॥ १२ ॥

१३९ सतीत्व का परिचय.

(तर्ज--मांड)

सती सीताजी धीज करे, सत्य धर्म से संकट टरे ॥ टेर ॥ अग्नि कुंड रचियो केशुलम जारों भार जरे । राम और लक्षमण भरत शत्रुघन, जहां राणो राव खरे ॥ सती० ॥ १ ॥ सीया ठाडी अग्नि कुंड पे, परमेष्टि ध्यान धरे । पूर्व जन्म के लेख जो लिखीया, सो टारे केम टरे ॥ २ ॥ अयोध्या के लोक शोर मचायो, राम अन्याय करे । सीता सती चंद्रसी निर्मल, पावक बीच परे ॥ ३ ॥ नख शिखा तक जो हो निर्मल, तब कहो कौन डरे । समक्ष लोकों के देखत जब, तत्क्षण कूद परे ॥ ४ ॥ पुष्प वृष्टि हुई नभ से, सिया जल बीच तरे । चौथमल कहे सत्य सहाई सुर नर यश उचरे ॥ ५ ॥

१४० बद सौबत निषेध.

(तर्ज—या हसीना बस मदीना, करबला में तू न जा)

अगर चाहे आराम, तो जाहिल की सौबत छोड़दे । मान ले नसीहत मेरी, जाहिल की सौबत छोड़दे ॥ टेर ॥ अगर तू

अक्लमन्द है, होशियार जो है दिला। भूल के अख्त्यार मत कर, जाहिल की सौवत छोड़दे ॥ अगर० ॥ १ ॥ जाहिल से मिलता मत रहे, मानिंद शक्कर सीर के। भाग मुआफिक तीर के, जाहिल की सौवत छोड़दे ॥ २ ॥ दुशमन भी अक्लमन्द वेहतर, होवे जाहिल दोस्त के। परहेजगारी है भली, जाहिल की सौवत छोड़दे ॥ ३ ॥ फेलबद के जाहिलों से, नेकी तो मिलती नहीं। सिवा कोल बद के नहीं सुन, जाहिल की सौवत छोड़दे ॥ ४ ॥ रहम दिल का पाकपन, इबादत भी तर्क हो। ईमान भी जावे बिगड़, जाहिल की सौवत छोड़दे ॥ ५ ॥ जाहिल तो आखिर ए दिला, दोजख के अंदर जायगा। निजात नहीं होगा कभी, जाहिल की सौवत छोड़दे ॥ ६ ॥ नशा पीना जुल्म करना, लड़ना लेना नींद का। गरूर आदत जाहिलों की, जाहिल की सौवत छोड़दे ॥ ७ ॥ जाहिलपन की दवा मियां, लुकमान के घर में नहीं। सिविल सर्जन के हाथ क्या, जाहिल की सौवत छोड़दे ॥ ८ ॥ गुरु के परसाद से, कहे चौथमल तू कर निगाह। आलिम की सौवत कर सदा, जाहिल की सौवत छोड़दे ॥ ९ ॥

१४१ मनुष्य के दशांग.

(तर्ज—पनजी मूंडे बोल)

आज दिन फलीयोरे २ थांने जोग बोल यो दश को मिलियोरे ॥ टेर ॥ मनुष्य जन्म और आर्य भूमि, उत्तम कुल को योगोरे। दीर्घ आयु और पूर्ण इन्द्री, शरीर निरोगोरे ॥आज०॥ ॥ १ ॥ सद्गुरु कनक कामनी त्यागी, आप तिरे पर तारेरे। तप क्षमा दया रस भीना, सूत्र उच्चारेरे ॥ २ ॥ ये आठ बोल

तो भवी अभवी, कई जीव ने पायारे। नहीं श्रद्धा २ तो कुगुरु मिल भरमायारे ॥ ३ ॥ अबके श्रद्धा गाढ़ी राखो, शुद्ध पराक्रम को फोड़ोरे। अल्प दिनों के मांही आठों, कर्म को तोड़ोरे ॥ ४ ॥ यह दश बोल की खीर मसाला, दार पुण्य से पाईरे। अनत काल की भूख प्यास, थारी देगा भगाईरे ॥ ५ ॥ निर्धन को धनवान हुए ज्यूं आन्ध आंखां पाईरे। चन्द्रकान्त मोती के मानिंद, नर देह साईरे ॥ ६ ॥ गुरु प्रसादे चौथमल कहे, कीजे धर्म कमाईरे। उन्नीसे और सतर साल में जोड़ बनाईरे ॥ ७ ॥

१४२ क्रोध के कटु फल.

(तर्ज-दीन काय पट भरणे, सुनो जगदीश पुकार)

कब तक हम समझावें, क्रोध को तजो जनाब ॥ टेर ॥ क्रोध बराबर दुःख नहीं है, जैसे अग्नि की ताप। क्रोध बराबर जहर नहीं है, क्रोध बराबर पाप। तपस्या करे खराब ॥ क्रोध० ॥ १ ॥ क्रोध बड़ा चांडाल है, प्रीति जाय सब टूट। जिसके घर में क्रोध घुसा है, कैसी मचाई फूट। उतर गया कई का आब ॥ २ ॥ पत्थर टूटे तालाब की, मिट्टी ज्यूं फट जाय। बालू नीर की लकीर ज्यूं, क्रोध चार कहलाय। गति चारों का हिसाब ॥ ३ ॥ क्रोध करी मर जावे नर्क में, मार गुर्ज की खावे। चौथमल कहे वह क्रोधी, फिर शेर रींछ हो जावे, हुआ नर भव का खुवाब ॥ ४ ॥

१४३ जैसा कर्म वैसा फल.

(तर्ज-बिना रघुनाथ के देखे नहीं दिल को करारी है)

करो नेकी बदी जहां में, तो उस का फल पावेगा। बदी

बदले बदी तैयार, आराम नेकी दिखावेगा ॥ टेर ॥ यही है हुक्म ईश्वर का, रहम सब रूह पर रखना । छुरा जिसपे चलावे यहां, छुरा वो वहां चलावेगा ॥ करो० ॥ १ ॥ दिवाना हो फिरे घन में, भूल के नाम ईश्वर का । जुल्म करता गरीबों पे, उसे वो भी दबावेगा ॥ २ ॥ वे जवां को मार कर खाता, नफ्स तैयार करने को । जिस्म तेरे निकाली गोश्त वहां तुझको खिलावेगा ॥ ३ ॥ शराब से फेफड़ा सड़ता, शराबी नाली में गिरता । नरक में कर गरम शीशा, उसे वो वहां पिलावेगा ॥ ४ ॥ झूठे की जवां ऊपर, डंक बिच्छु लगावेगा । कटेगी जवां गवा झूठी, जो देवे और दिलावेगा ॥ ५ ॥ सच्चा यकीन कर मानो, बदी फूले फलेगा कब । नेकी मोक्ष दिलवाती, यहां इज्जत बढ़ावेगा ॥ ६ ॥ देवांगना नाच वहां करती, महल रत्नों जड़े उम्दा । चौथमल स्वर्ग की सैरें, वही नेकी करावेगा ॥७॥

१४४ हुक्का निषेध.

(तर्ज—मजा देते हैं क्या यार तेरे बाल घूंघर वाले)

कैसा बुरा हुक्के का शोक, धर्म की राह भुलाने वाला ॥ टेक ॥ प्रात ही हुक्के को नलवावे, भजन नहीं प्रभु का करे करावे । चलम को भर के दम लगावे, कुल मर्याद लोपानेवाला ॥ १ ॥ समझा हुक्का ज्ञान अरु ध्यान, यही नेम अरु यही दान । इसी को परम पद पहचान, दिल को शाह बनानेवाला ॥ २ ॥ हुक्का बगल हाथ में रहावे, जहां जावे तहां साथ लेजावे । गुड़ गुड़ गुड़ गुड़ शोर मचावे, गौरव का धुवां उड़ानेवाला ॥ ३ ॥ हुक्का पीवे और पिलावे, हुक्का से हु·म·त जावे । चौथमल तो त्याग करावे, सबका हित चहाने वाला ॥ ४ ॥

१४५ संसार असार.

(तर्ज--या हसीना बस मर्दाना, करबला में तू न जा)

अय दिला दुनियां फनां, इसमें लुभाना छोड़दे । ख्वाब या हो बाव -सा झांसे में आना छोड़दे ॥ टेर ॥ चार दिन की चांदनी क्यों, जुल्म पर बांधी कमर । हुक्म रब का मानले, दिल का दुखाना छोड़दे ॥ अय० ॥ १ ॥ अदा कर अपना फर्ज तू, जिस लिये पैदा हुआ । कर इबादत जिग्र से, रुह का सताना छोड़दे ॥ २ ॥ अच्छे बुरे अहमाल का, बदला हशर में है सही । है नशा हराम तू, पीना पिलाना छोड़दे ॥ ३ ॥ जो गुन्हा हो माफ तो, दोजख कहो किसके लिये ? माफ का हरबार तू, लेना बहाना छोड़दे ॥ ४ ॥ अये प्यारों ! अय अजीजों ! दोस्तों मेरी सुनो । सफर का सामान कर,जी यहां फंसाना छोड़दे ॥ ५ ॥ कहां सिकन्दर कहां अकबर,कहां अली अजगर गये । तू भी अब मिजमान है, गफलत में सोना छोड़दे ॥ ६ ॥ गुरु के प्रसाद से, यूं चौथमल कहता तुझे । मानले नसीहत मेरी, रंडी के जाना छोड़दे ॥ ७ ॥

१४६ धर्मादर्श.

(तर्ज—धन)

इस जगत के बीच में, एक धर्म का आधार है । उठा के देखो निगाह, झूठा सभी संसार है । माता पिता भ्राता सुता, मतलब के पूरे यार हैं । मिजमान तू दिन चार का, किससे करे अब प्यार है । पुरुष जो पाप कमाता है । खता वो आप खाता है । चौथमल साफ जिताता है । वक्त अनमोल जाता

है । जन्म तुम सफल करो अपना, समझ कर खल्क ख्याल सण्नाजी जिन तूही ॥ १ ॥

१४७ इल्म की महत्ता.

(तर्ज—या हसीना बस मदीना, करबला में तू न जा)

इल्म पढ़ले अय दिला, इसका गरम बाजार है । आलिमों की हाजरी में, कई खड़े सरदार हैं ॥ टेर ॥ जिस कौम में लिखे पढ़े, उसका सितारा तेज है । जिस देश में विद्या हुन्नर, वह देश ही गुलजार है ॥ इल्म० ॥ १ ॥ दिवान, हाकिम, अफसरी, वकील, बेरिस्टर बने । बदौलत इस इल्म के दुनियां कहे हुशियार है ॥ २ ॥ इल्म से अक्कल बढ़े, और अक्कल से जाने प्रभु । सच झूंठ दोनों फैसले का, वो तजरबेदार है ॥ ३ ॥ विन इल्मके इन्सान और, हेवान में क्या फर्क है । गौर कर देखो जरा, फक्त इल्म की ही वहार है ॥ ४ ॥ पढ़लो पढ़ालो इल्मको, खेलना खेलाना छोड़दो । कहे चौथमल मित्रो सुनो, नसीहत हमारी सार है ॥ ५ ॥

१४८ दगेबाजों की दुर्दशा.

(तर्ज—शेरखानी दादरा)

मत कीजो दगा समझाते हैं ॥ टेर ॥ दगा तो है बुरा, मुहब्बत छुडायदे । दूध में कांजी पड़े ऐसा बनायदे । यही हरवार जिताते है ॥ मत० ॥ १ ॥ बातों में है सफाई, दिल में और है, अमृत का है ढकन, विष कुम्भ के तौर है । नहीं कोई भरोसा लाते हैं ॥ २ ॥ बांस की जड़ के मानिंद, मींढे का शृंग जान । बैल का पेशाव, कूतिवंश की पहचान । ये चारों गति

ले जाते हैं ॥ ३ ॥ मर्द की स्त्री बने, नपुसंक भी हो जाय। कहे चौथमल वह पापी, विश्व में भ्रमाय। फिर मोक्ष वह कब पाते हैं ॥ ४ ॥

१४६ दया दृष्टि.

(तर्ज—विना रघुनाथ के देखे नहीं दिलको करारी है)

अगर आराम चाहते हो तो, ये नसीहत हमारी है। किसी का ना दुखाना दिल, सबों को जान प्यारी है ॥ टेर ॥ सभी जीव जीवना चाहे, नहीं खुश कोई मरने से। मेरे मकसद पे करना गौर, जो उसकी इंतजारी है ॥ अगर० ॥ १ ॥ हिन्दू दया पुकारे है, मुसलमां रहम कहते हैं। जिवा करते करे झटका, दोनों ने क्या विचारी है ॥ २ ॥ जो जो जान रखते हैं, कहे रब वो मेरा कुनबा। पसंद मुझको जो दे आराम, ये हदीश जारी है ॥ ३ ॥ विष्णु भगवान का फरमान, बचावे जो किसी की जान। सब दानों में बहतर दान, गीता पुरान जहारी है ॥ ४ ॥ जैन शास्त्र का करलो ज्ञान, श्रेष्ठ बतलाया अभयदान। सभी जैनी करें परमान, जैन शास्त्र जहारी है ॥५॥ कहे ईसा अहले इस्लाम, छुटा हुक्म बाईबिलका। तू किसी को न मारियो ऐसे, खतम बस हुई सारी है ॥ ६ ॥ मोही वो शान मौला में, रूहे सब बदला मांगेगा। न छोड़ेगा कभी हरगिज, दीने इस्लाम जारी है ॥ ७ ॥ जैसी समझो हो अपनी जान, वैसी समझो बिगाने की। सच्ची सच्ची कही हमने, फेर मर्जी तुम्हारी है ॥ ८ ॥ गुरु हीरालालजी परसाद, चौथमल कहे सुनो आलम। वोही निजात पावेगा, दया को जिसने धारी है ॥ ९ ॥

---

१५० खामोश.

(तर्ज--या हसीना बस मदीना, करबला में तू न जा)

महावीर का फरमान है, खामोश बहतर चीज है। दिल पाक रखने के लिये, खामोश बहतर चीज है॥ टेर॥ शांति कहो चाहे क्षमा, और गम भी इसका नाम है। दोस्त जहां तेरा बने खामोश बहतर चीज है॥ महा०॥ १॥ जोश खाके बीजली, दरियाव के अन्दर पड़े। नुकसान कुछ होता नहीं, खामोश बहतर चीज है॥ २॥ खामोश खन्जर देखकर, दुश्मन की ताकत नहीं चले। बिन काष्ठ के पावक जैसे, खा-मोश बहतर चीज है॥ ३॥ तप में ऋषि युद्ध में हरी, श्रेष्ठ विषमण दान में। अरिहंत की यह वीरता, खामोश बहतर चीज है॥ ४॥ खामोश कर श्रीराम ने, बनवास का रास्ता लिया। गजसुखमाल ने केवल लिया, खामोश बहतर चीज है॥ ५॥ खामोश से राजा परदेशी, स्वर्ग के अन्दर गया। खंधक मुनि मुक्ति गये, खामोश बहतर चीज है॥ ६॥ ज्ञान ध्यान तप दया, और सर्व गुण की खान है। तारीफ फैले मुल्क में, खामोश बहतर चीज है॥ ७॥ पाप होवे भस्म जैसे, शीत से सब्जी जले। चौथमल कहे ए दिला! खामोश बहतर चीज है॥ ८॥

१५१ मंदोदरी का रावण को समझाना

(तर्ज—मांड)

मंदोदरी कहे यूं कर जोड़, पिया अनीति कायको करे॥ टेर॥ सीता नारी या रामचन्द्र की, सतियां मांय सरे। हरन करी चुपके वन सेती, लाके बाग धरे॥ पिया०॥ १॥ दशरथ कुलवधु के निमित्त से, रावण प्राण हरे। सो बीतक यो दीसे

माने, क्यों नहिं ध्यान धरे ॥ २ ॥ राम और लक्ष्मण शत्रुघन आ, लंका बाहर खरे। सीता दे मम लज्जा राखो, तो सब काज सरे ॥ ३ ॥ सीता दिया पीछे सेती, जो श्रीराम लरे। तो होवे जीत आपकी निश्चे, ना मम वाक्य फिरे ॥ ४ ॥ रावण बोले मूर्ख नारी, औगुन आठ भरे। चौथमल कहे माने कब शिक्षा, भावी नांय टरे ॥ ५ ॥

१५२ उपदेशक का कथन

(तर्ज-या हसीना बस मदीना, कर बला में तू न जा)

आकबत के वास्ते, कहना हमारा फर्ज है। मर्जी तुम्हारी मानना, कहना हमारा फर्ज है ॥ टेर ॥ मुसाफिर खाने में आकर, गरूर करना छोड़दे। नेकी करले ए सनम ! कहना हमारा फर्ज है ॥ आक० ॥ १ ॥ माता पिता भाई भतीजा, साथ में आता नहीं। तो फिर मुहब्बत क्यों करे, कहना हमारा फर्ज है ॥ २ ॥ किसका वसीला है वहां, दिल में तो जरा गौर कर। तू याद में उसके रह, कहना हमारा फर्ज है ॥ ३ ॥ अदब करले तू बड़ों का, अहसान कर कोई और पर। रहम दिलमें ला जरा, कहना हमारा फर्ज है ॥ ४ ॥ देता नसीहत चौथमल, करले इबादत जिग्र से। चार दिन का हुस्न है, कहना हमारा फर्ज है ॥ ५ ॥

१५३ मालिक का कलाम.

(तर्ज—समकित की देखी बहार)

मालिक का सुनलो कलाम-कलाम मेरे प्यारे, मालिक० ॥ टेर ॥ कत्ल का करना रवा नहीं है, है यह काम निकाम ॥ निकाम० ॥ १ ॥ नशा का करना, शराब का पीना, लिखा

हदीश में हराम ॥ ह० ॥ २ ॥ जिनाहकारी का करना बुरा है, नाहक क्यों होते बदनाम ॥ नाम० ॥ ३ ॥ दिल में तो दगाबाजी भरी है, खाली करते हो झुक २ सलाम ॥ स० ॥ ४ ॥ ऐश और दौलत कुन्बे के अन्दर, करते हो उम्र तमाम ॥ तमाम० ॥ ॥ ५ ॥ गफलत को छोड़ो, दिलमें तो सोचो, कितना है यहां पे मुकाम ॥ मु० ॥ ६ ॥ आलिमुलगेब है नाम उस रब का, देखे सब तेरे वह काम ॥ काम० ॥ ७ ॥ चौथमल कहे रहम रखो जो, तुम चाहते हो जन्नत मुकाम ॥ मु० ॥ ८ ॥

१५४ सट्टे का फल.

(तर्ज—दादरा, सांवरो कन्हैयो बन्शी बजा गयो)

देखो सुजान सट्टे ने पागल बना दिया, साहुकारी धंधे को इसने छुड़ा दिया ॥टेर॥ लगे न दिल प्रभु में टिके न पांव घर। दिनरात इसी घाट में ऐसे बिता दिया ॥ देखो० ॥ १ ॥ नी-लाम कई पूछते साधु फकीर से। गांजा भंग मिष्टान्न, भोजन को खिला दिया ॥ २ ॥ नींद में आवे ख्वाब, तेजी मंदी का। होते हैं गुस्सा उसपे जो किसने जगा दिया ॥ ३ ॥ कहे ज्योतिष इस मास में बहुत लाभ है। सुनके छक्का मानने, सब धन लगा दिया ॥ ४ ॥ आर्त ध्यान नित रहे, धर्म ध्यान का न लेश। यह चौथमल ने कई को त्यागन करा दिया ॥ ५ ॥

१५५ हित शिक्षा.

(तर्ज—समकित की देखो वहार)

मत भूल मेरे प्यारे दुनियां की देखी यह वहार ॥ टेर ॥ ऊंधा तू लटका महिना नो उरमें, रज वीर्य का लीना ते आहार ॥ आहार० ॥ १ ॥ भोगी कष्ट पैदा हुआ तू खुशी हुओ परिवार

॥ २ ॥ लाड़ लड़ावे भैया महतारी, खेले तू चौक मंभार ॥ ३ ॥ बीता बालपन आई जवानी, सजता है तन पे सिंगार० ॥ ४ ॥ बग्गी में बैठे मोटर में बैठे, जावे तू बाग मंभार ॥ मंभार० ॥ ॥ ५ ॥ काम में अंध नशे में धुंध हो, ताके तू गैरों की नार ॥ नार० ॥ १ ॥ नदी का पूर ज्यूं गई जवानी, आयो बुढ़ापो जिवार ॥ जिवार० ॥ ७ ॥ शीश हिले पग धूजन लागे, शुद्ध बुद्ध को दीनी बिसार ॥ बिसार० ॥ ८ ॥ बाल युवा वृद्ध तीनों वक्त को, रत्नों सी दीनी निकार ॥ निकार० ॥ ९ ॥ बांधी करम गयो नरक अकेलो, खावे यमदूतों की मार ॥ मार० ॥ ॥ १० ॥ चौथमल कहे जो सुख चाहे, सतगुरु के नमो चरनार ॥ चरनार० ॥ ११ ॥

१५६ कन्या विक्रय.

(तर्ज—सत्य धर्म यह सबको सुनाय जांयगे)

कन्या बेचो न शिक्षा हमारीरे ॥ टेर ॥ सुन्दर कन्या रत्न समानी, हिताहित का तो कीजो विचारीरे ॥ कन्या० ॥ ॥ १ ॥ मात पिता का नाम धरावे । तो निर्दयता दिलमें क्यों धारीरे ॥ २ ॥ साठ के बालम यह छोटीसी बाला । जैसे ऊंट गलेमें छारीरे ॥ ३ ॥ प्रीतम मरे पे रो रो के बाला, उमर बीताती सारीरे ॥ ४ ॥ पैसे के लोभी नेक न सोची, कर दीनी जन्म दुखियारीरे ॥ ५ ॥ अंधे अपंग रोगी पागल हो, पैसे की एक दरकारीरे ॥ पूर्वजों ने महिमा कुलकी बढ़ाई । तापे लकीर निकारीरे ॥ ७ ॥ सत्बुद्धि धर्म नष्ट हो उसका । जिसने सुनीति विसारीरे ॥ ८ ॥ चौथमल हो भारत उदय कब । जो ऐसे पिता महतारीरे ॥ ९ ॥

१५७ दया.

(तर्ज—गुलशनकी आई बहार)

मत लूटो तुम जीवोंके प्रान-प्रान मेरे प्यारे । मत० ॥टेर॥ दिलका सताना रवा नहीं है, खोलके देखो कुरान ॥ कुरान० ॥ १ ॥ गरीबों के ऊपर जुलम करोगे, तो पहुंचोगे दोजख्न दरस्यान ॥ दर० ॥ २ ॥ आरामं प्यारा लगता है तुमको, ऐसी है औरोंकी जान ॥ जान० ॥ ३ ॥ खेलते शिकारी घोड़े पे चढ़ २, देते हो गोली की तान ॥ तान० ॥ ४ ॥ जो कोई कहे दया दान की, उसपे न रखते हो कान ॥ कान० ॥ ५ ॥ जूतियों की नालोंसे मरते हैं प्रानी, पीते हो पानी विन छान ॥ छान० ॥६॥ पशुके बाल हैं जितने जनम में, होना पड़ेगा हैरान ॥ हैरान० ॥ ७ ॥ मनुस्मृति अध्याय पांच में, आठों घातिक को लिखा समान ॥ स० ॥ ८ ॥ हरे दरखत को कभी न काटो, वो भी तो रखता है जान ॥ जान० ॥ ९ ॥ चौथमलकी नसीहतों पे, जरा तो रक्खो तुम ध्यान ॥ ध्यान० ॥ १० ॥

१५८ कन्या कलाप.

(तर्ज—दादरा, सत्य धर्म यह सबको सुनाय जायंगे)

कन्या पितासे जाकर पुकारीरे ॥ टेर ॥ मैंने पिता सुना बुड्ढेके संग में । शादीकी कीनी तैयारीरे ॥ कन्या० ॥१॥ यदि सच्ची हो तो मर्याद नजीने । अर्ज करूं इण वारीरे ॥ २ ॥ यह वायका एक अवला पे गुजरा । मैं कम्पी सो बात निहारीरे ॥ ३ ॥ जहर का प्याला खुशीसे पिलादो, इसमें मुझे न इन्कारीरे ॥ ४ ॥ तलवार चलाओ चाहे फांसी चढ़ादो । ऐसी शादीसे मृत्यु प्यारीरे ॥ ५ ॥ बेटीका धन ले सुखी हुआ नहीं ।

जरा देखो नेन पसारीरे ॥ ६ ॥ हाथ जोड़ तेरे पांव पड़त हूं, तुम कीजो दया हमारीरे ॥ ७ ॥ गौ कन्या पे प्रहार उठा है। जब से यह भारत दुख्यारीरे ॥ ८ ॥ चौथमल की सीख श्रवण कर, तुम दीजो कुरीति निवारीरे ॥ ९ ॥
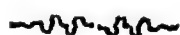
१५९ प्रभु ध्यान.

(तर्ज—रेखता)

लगाओ ध्यान प्रभु जिनका, जीना दुनियां में दो दिनका ॥ टेर ॥ उमर जाती है चली, चश्म खोल देखलो अली। भरोसा क्या जिंदगानीका, जीना दुनियां में दो दिनका ॥ जीना० ॥ १ ॥ गफलत में होके मत सोवो, इस कुनबे में क्यों मोवो। नहीं कोई साथ उस दिन का ॥ २ ॥ जर जेवर खजाना देख, गुल बदन देखके मत बेख। बुलबुला जैसे पानी का ॥ ३ ॥ जाना है तुझे जरूरी, क्यों सतावे है कर गरूरी। इशारा लेगा किन २ का ॥ ४ ॥ चौथमल कहे सुनो प्यारे, भज निरंजन निराकारे। भला जो चाहे गर दिल का ॥ ५ ॥
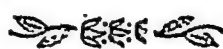
१६० सट्टे का परिणाम.

(तर्ज-मेरे काजी साहब आज सबक नहीं याद हुआ)

मत कीजो सट्टा २ उड़जावे शिर के चोटी पट्टा, मत कीजो सट्टा, कई की इज्जत में लग गया बट्टा ॥ टेर ॥ सट्टेबाज की कहूं हकीकत, जो कोई उसमें कमावे। फिर तो ऐसा इश्क लगे, सब घर का धन लगावे ॥ मत० ॥ १ ॥ रात दिन चिन्ता रहे घट में, नेन नींद नहीं आवे। जो थोड़ी सी आंख लगे तो, स्वपने में दिखलावे ॥ २ ॥ कहे सेठानी सुनो सेठजी, यह है

खोटो चालो । पुण्य विना नहीं मिले सम्पदा, क्यों थे घाटो घालो ॥ ३ ॥ एक आंक आजावे अबके, स्वर्ण का गहना घड़ा दूं । नख से शिखा तलक पहिना के, पीली जर्द बना दूं ॥ ४ ॥ सट्टा में टोटो लग जावे, घर तिरिया पे आवे । गहनो देदे थारो प्यारी, तो इज्जत रह जावे ॥ ५ ॥ मना किया था थांने पहिला, थां म्हारी नहीं मानी । जो मारा गहना लेवो तो, करूं प्राण की हानी ॥ ६ ॥ जहर खाकर कई मर जावे, कई फांसी को खावे । लेणायत दे गाली मुख से, कैसा कष्ट उठावे ॥ ७ ॥ गुरु प्रसादे चौथमल कहे, छोड़ो खोटा धंधा । समता रूप अमृत रस पीने, भजन करोरे वंदा ॥ ८ ॥
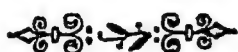
१६१ हित योजना.

(तर्ज-आखिर नार पराई है)

सत्य शिक्षा सुनता नाहीं है, क्यों थे अकल गमाई है ॥ टेर ॥ फागण में गाली गावे है । नित वैश्या के घर जावे है । लाज शर्म विसराई है ॥ क्यों० ॥ १ ॥ मुख उपर वर्षे है नूर । यौवन बीच छकियो भरपूर । ताके नार पराई है ॥ २ ॥ साथी संग भांग गटकावे, करे गोठ और माल उड़ावे । यह कैसी कुमति छाई है ॥ ३ ॥ सत्संग तो लागे है खारी । पाप-करण में है होशियारी । धर्मी की करे बुराई है ॥ ४ ॥ लख चौरासी का मिजमान, अब तो तू भजले भगवान, यह ढाल चौथमल गाई है ॥ ५ ॥

१६२ दया ही मोक्षद्वार.

(तर्ज—बिना रघुनाथ के देखे नहीं दिल को करारी है.)

दया के विदुन ऐ प्रादर ! कभी नहीं मोक्ष पाओगे । हजा-

रों आफतें सहकर, जन्म वृथा गमाओगे ॥ टेर ॥ चाहे तन खाक ही पहनो, चाहे भगवां करो वसतर । चाहे रक्खो जटा लंबी, कान क्यों न फड़ावोगे ॥ वृथा० ॥ १ ॥ चाहे बद्री बनारस जा, चाहे जगन्नाथ रामेश्वर । चाहे गंगा करो स्नान, द्वारका छाप लगाओगे ॥ २ ॥ चाहे मृदंग बजाओ ताल, बांध घूंघर को नाचो । इससे मालिक न होवे खुश; कहो कैसे रिझाओगे ॥ ३ ॥ चाहे रोजा पुकारो बांग, चाहे निवाज कलमा पढ़ । अगर खतना करे क्यों नहीं, हाथ तसबी फिराओगे ॥ ४ ॥ चाहे सीस मूंड नंगा रह, चाहे फकीर क्यों नहीं हो । औंधे शीस भी लटके, कष्ट खाली उठाओगे ॥ ५ ॥ चाहे पूजा करो संध्या, तपो धूनी तो होना क्या । रखो रहम दिल कर साफ, हमल में फिर न आओगे ॥ ६ ॥ गुरु हीरालाल गुणवंता, चौथमल शिष्य है उनका । कृपाकर संजम तो दीना, मोक्ष किस दिन पहुँचाओगे ॥ ७ ॥

१६३ संसार अस्थिर.

(तर्ज-आखिर नार पराई है)

आखिर जाना छिटकाई है, क्यों बैठा ललचाई है ॥ टेर ॥ तू तो परदेशी है छेलो । यह तो हटवाड़ा को मेलो । क्यों सुध बुधको विसराई है ॥ क्यों ॥ १ ॥ मृत्यु हवा बड़ी बलवान । उड़जाता ज्यूं पीपल का पान । चले नहीं ठकुराई है ॥ २ ॥ नदी पूर ज्यूं ऊमर जावे । काम भोग में क्यों ललचावे । दिन दो की अकड़ाई है ॥ ३ ॥ छत्रपती हो राजा राना, नहीं अमर लिक्खा परवाना । एक ही रीत चलाई है ॥ ४ ॥ दया दान को ले ले लाभ । उभय लोक में रहवे आब । या चौथमल सुनाई है ॥ ५ ॥

१६४ रात्रि भोजननिषेध.

(तर्ज-विना रघुनाथ के देखे नहीं दिलको करारी है)

तजो तुम रात का खाना । इसी में पाप भारी है । कहै सत्पुरुष यों तुमसे, मानो शिक्षा हमारी है ॥ टेर ॥ अगर जो रातको खाते, उनके खाने के अंदर । पड़े परदार कई जीव, जिन्हों की जात न्यारी है ॥ तजो० ॥ १ ॥ है अंधा रात का खाना, धर्म्मी को नहीं है लाजिम । पक्षी भी रात के अंदर, चुगादेते निवारी है ॥ २ ॥ जलोदर जूं से होवे है, मक्खी से वमन होता है । कोढ़ मकड़ी से होता है, यही दुनियाँ में जारी है ॥ ३ ॥ बिच्छु गर कोई खावे तो, सिर में दर्द उसके हो । होय नुकसान रात्री में, अरे कुछ भी विचारी है ॥ ४ ॥ छोड़दे रात का खाना तू बारहमास के अंदर । हो छे मास की तपस्या, बड़ी आरामकारी है ॥ ५ ॥ सम्वत् उन्नीसे उन्तर, किया रतलाम चौमासा । गुरु हीरालाल के परसाद, चौथमल कह पुकारी है ॥ ६ ॥

---

१६५ अवस्था दृश्य.

(तर्ज-आखिर नार पराई है)

जब गया बुढ़ापा छाई है, सब निकल गई अकड़ाई है ॥ टेर ॥ यौवन का उतरा है पूर । दांत गिर गया मुख का नूर । कोमल काया कुम्हलाई है ॥ सब० ॥ १ ॥ मुख से देखो लार पड़े है । नैन नासिका दोनों झरे है । बालों पे सफेदी आई है ॥ २ ॥ डग मग डग मग चलता चाल । बैठ गये दोनों ही गाल । कानों से सुनता नाहीं है ॥ ३ ॥ बेटों ने लिया सब धन बांट । दमड़ी नहीं रहने दी गांठ । फिर दिया उसे छिटकाई है ॥ ४ ॥ नवयुवक मिल हंसी उड़ावें । नहीं चले जोर

बुड्ढा चिल्लावे। साठी बुद्धि न्हाटी ठहराई है ॥ ५ ॥ बेटे पोते भी घुर्रावें। क्यों बूढ़ा दुकान पे आवे। मक्खी भिनक मचाई है ॥ ६ ॥ खाट पड़ा मारे है टसका। कुछ हिसाब रहा नहीं वश का। अब दरवाजा परवत नाई है ॥ ७ ॥ यौवन के अब इश्क सतावे। मनका मन मांही पछतावे। मित्रों ने निगाह चुराई है ॥ ८ ॥ बुड्ढे बैल को कौन खिलावे। सूखा समुद्र हंस उड़जावे। स्वार्थ की सभी सगाई है ॥ ९ ॥ जोरु वचन साफ सुनावे। राम आपानें मौत न आवे। घर के गये घबराई है ॥ १० ॥ हासरति नहीं गडपण होय। पहिले अंग कहीं जिन सोय। कर धर्म न आगे माई है ॥ ११ ॥ बाल जमाना गया है भूल। नखरा बाजी न रही बिलकुल। तृष्णा ने तरूणता आई है ॥ १२ ॥ उगणीसे साल सतत्तर आवे। पूज्य प्रसादे चौथमल गावे। कार्तिक में जोड़ बनाई है ॥ १३ ॥

१६६ काल से सावधान रहो.

(तर्ज—विना रघुनाथ के देखे नहीं दिल को करारी है)

तुझे जीना अगर दिन चार, भलप्पन क्यों नहीं करता। खड़ी है मौत ये सर पे, अरे! तू क्यों नहीं डरता ॥ टेर ॥ अरे! जाती है जिन्दगानी। जैसे बरसाद का पानी। खबर तुझको नहीं प्रानी, पशुवत् रेन में चरता ॥ तुझे० ॥ १ ॥ मस्त है ऐश असरत में, बना चातुर तू कसरत में। पहन पोशाक सज गहना, सेल करने को तू फिरता ॥ २ ॥ हाथ लकड़ी घड़ी लटका, टेढ़ा साफा झुका सर पे। घूमता तू गरूरी से, नजर असमान में धरता ॥ ३ ॥ तर्क कर जहां को जाना, वहां है मुल्क बीगाना। नहीं कोई यार साथी है, जो कर्त्ता है वही भरता ॥ ४ ॥ साल उन्नीसे पैंसठ में, किया चौमास उदेपुर।

दिया उपदेश जीवों को, दया की नाव से तरता ॥ ५ ॥

१६७ तिथि शिक्षा.

(तर्ज—आखिर नार पराई है)

काल पकड़ ले जाता है, तू क्यों इतना अकड़ाता है ॥ टेर ॥ एकम एक उमर घट जावे। गया वक्त पीछा नहीं आवे । वृथा जन्म यह जाता है ॥ क्यों० ॥ १ ॥ बीज बीजली का झलकारा । तन धन यौवन समझो सारा । झूठा जगत का नाता है ॥ २ ॥ तीज त्योहार कामी मन भावे। विषय भोग में वह ललचावे। ज्यूं मिट्टी में कीट लिपटाता है ॥ ३ ॥ चौथ चार गतिका फेरा। किया जीव अनन्तों वेरा। ज्यूं संतुष्ट नृप नहीं पाता है ॥ ४ ॥ पंचम पंच अग्रसर होय, कुरिवाज नहीं मेटे सोय । वह कैसा बड़ा कहलाता है ॥ ५ ॥ छट छकियो जवानी मांई। ताके तू तो नार पराई। जरा खौफ नहीं लाता है ॥ ६ ॥ सातम साथ तू खर्ची लीजे। मिला योग खाली मत रहिजे। एक धर्म साथ में आता है ॥७॥ आठम फँसा तू आठों पोहर। धन्धा करे तेज और मोहर। लोभी नर दुख पाता है ॥ ८ ॥ नम से नरक दुख है भारी। पापी की वहां जाय सवारी। मार मुद्गर की खाता है ॥ ९ ॥ दशम कहे दश उसके शिर। ऐसा रावण था शूरवीर। वह बादल ज्यूं बिरलाता है ॥ १० ॥ ग्यारस के दिन सुन ले ज्ञान । कर तपस्या भजले भगवान। जो मुक्ति तू चाहता है ॥ ११ ॥ वारस कहे बात ले मान। मत पीजो पानी अनछान । क्यों नाहक जीव सताता है ॥ १२ ॥ तेरस तेरी उलटी बुद्धि। करे फाटका रखे न सुधी। साहूकार पछताता है ॥ १३ ॥ चौदस

चतुर्दश रत्न के धारी । लक्षवाण वे सहस्र थी नारी । सो दीपक ज्यूं बुझाता है ॥ १४ ॥ पूनम पूर्ण करणी तो करले । भवसिन्धु से जल्दी तिरले । यूं चौथमल जितलाता है ॥ १५ ॥ शहर जोधपुर है सुलतान । श्रावक लोग वसे गुणवान् । सतत्तर कार्तिक में गाता है ॥ १६ ॥

---

१६८ जमाने की खूबी.

(तर्ज—विना रघुनाथ के देखे नहीं दिलको करारी है)

उलट चलने लगी दुनियां, न्याय को कौन धरता है । अगर सच्ची कहे किससे तो वह उलटी समझता है ॥ टेर ॥ सखी वखील वन बैठा, अज़ीज दुश्मन भये सारे । अरे ! धर्मी वने पापी, गीदड़ से शेर डरता है ॥ उलट० ॥ १ ॥ ब्रह्मचारी अनाचारी, त्रिया खाविंद को दे गाली । वहू से सास भी डरती वाप से पुत्र लड़ता है ॥ २ ॥ उंच ने नीच कृत धारा, नीच जपता है नित माला । सच्चे बोलते हैं झूंट, नेक वदी में फिरता है ॥ ३ ॥ होके कुलवान की नारी, करे पर पुरुष से यारी । योगी भोग चाहता है, ब्रह्म निज कर्म हर्ता है ॥ ४ ॥ देखते २ दुनियां, पलटती ही चली जाती । चौथमल वीर जो भजता, वही संसार तिरता है ॥ ५ ॥

---

१६९ झगड़े का मूल.

(तर्ज—आखिर नार पराई है)

तीनों की फक्त लड़ाई है । ज़र जोरू जमीन जग मांई है ॥ टेर ॥ चेड़ा और कोणक महाराज । लड़े हार हाथी के काज वाई पदमा ने आग लगाई है ॥ तीनों० । १ । सीता के लिए

लड़े रघुवीर । मारा गया रावण सा वीर । क्षण में लंक गमाई है ॥ २ ॥ भरत बाहुबल दोनुं भाई । आपस में हुई उनके लड़ाई । समझाया इन्द्र ने आई है ॥ ३ ॥ महाभारत का है परमाण । कौरव पांडव सा बलवान, दिये लाखों लोग कटाई है ॥ ४ ॥ कई बादशाह और वजीर । राजा राना और अमीर । रही धरा यहां की यहां ही है ॥ ५ ॥ चौथमल कहे धन्य मुनिराज । तजा खजाना सुन्दर राज । महिमा जिनकी छाई है ॥ ६ ॥

—ऽ+ॐ×ऽ—

१७० मिथ्या ममत्व.

(तर्ज—बिना रघुनाथ के देखे नहीं दिल को करारी है)

चले जाओगे दुनियां से, कहना ये हमारा है । उठाके चश्म तो देखो, कौन यहां पर तुम्हारा है ॥ टेर ॥ कहां से आए हो यहां पर, और क्या साथ लाए थे । बनो मुखत्यार तुम किसके, जरा ये भी विचारा है ॥ चले० ॥ ॥ १ ॥ गुनाहों के फरश ऊपर, लगा जुल्मों का तकिया है मजे में नींद लेते हो, खूब शैतान प्यारा है ॥ २ ॥ दिन खाने कमाने में, ऐश मस्ती में खोई रात । भलाई कुछ न की ऐसी, जिससे वहां पर सहारा है ॥ ३ ॥ जहां तक दम वहां तक है, तेरे धन माल और कुनबा । निकलते दम घरे जंगल, करे आखिर किनारा है ॥ ४ ॥ निगाह चौ तरफ तू उस वक्त, जो फैला के देखेगा । तो अकेला आप खाली हाथ, लिए जुल्मों का भारा है ॥ ५ ॥ कजा आने की है देरी, फकीर सी दे

चला फेरी। फिर मौका कहां ल्हेरी, किया तुझ को इशारा है॥ ४॥ कहां शम्भूम चक्र मानी, कहां ब्रह्मदत्त से भोगी कहां वसुदेव से योधा, हुए ऐसे हजारां है ॥ ७॥ गुरु हीरालाल के परसाद, कहे मुनि चौथमल सबसे। बनो जिन धर्म के प्रेमी, तो सुधरे काज सारा है॥ ८॥

१७१ साधु संगत सार.

(तर्ज—पनजी मूंडे बोल)

संगत करलेरे २ साधु की संगत शिव सुखदातारे॥ टेर॥ प्रत्यक्ष कल्प वृक्ष-सा जुग में, जाने पारस मिलियारे। तुरत होसी तिरणो थारो, ज्ञान के सुणीयारे॥ संगत० ॥ १॥ कुटुम्ब कबीला धन दौलत में, मत ना कभी तुम राचोरे। विन मतलब विन कोई न पूछे, सगपण काचोरे॥ २॥ जूंआवाज चोर लंपट, और मद्य मांस खानारारे। इतनों की संगत मत कीजो, सुन बेन हमारारे॥ ३॥ कुगुरु कनक कामिनी भोगी, लोभी और धूतारारे। आप डूबे कैसे तुझ तारे, करो विचारारे ॥ ४॥ गौतम स्वामी पृच्छा कीधी, देखो भगवती माईरे। दश वोल की होवे प्रासी, सुगुरु संगत पाईरे॥ ५॥ कहे चौथमल गुरु हमारा, हीरालालजी ज्ञानीरे। चतुर हो तो समझो दिल में अति हित आनीरे॥ ६॥

१७२ कराल काल.

(तर्ज— विना रघुनाथ के देखे नहीं दिल को करारी है)

कज़ा का क्या भरोसा है, न मालूम कब ये आवेगा । खड़ा रह जायगा लशकर, पकड़ तुमको ले जावेगा ॥ टेर ॥ तीतर को बाज पकड़े है, मेंडक को सांप ग्रसता है । बिल्ली चूहा झपटती है, काल ऐसे दबावेगा ॥ कजा० ॥ १ ॥ कहां है वेद धनवंतर, कहां लुकमान जहां में है । मिलाया खाक में उनको, तू क्या बाकी रहजावेगा ॥ २ ॥ जैसे सिंह हिरन को ले, कजा नर को लहे आखिर । नहीं माता पिता भाई तुझे आके छुड़ावेगा ॥ ३ ॥ धरे रह जायंगे हथियार, क्या उमराव और साथी । धरे रह जायंगे न्याती, नहीं कोई बचावेगा ॥ ४ ॥ चले नहीं जोर जादू का, चले नहीं जोर बाजू का । पड़े त्रिलोक में डंका, तू कहां जाके छुपावेगा ॥ ५ ॥ अरे ! जिसकी धमक आगे, कांपते चांद व सूरज । मगर सोता तू गफलत में, अधर आके उठावेगा ॥ ६ ॥ गुरु हीरालालजी परसाद, कहे मुनि चौथमल ऐसे । करो क्रिया वरो मुक्ति, तो काल भी ताप खावेगा ॥ ७ ॥
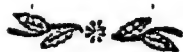
१७३ स्वार्थी संसार.

(तर्ज -परदेशों में रमगई जान अपना कोई नहीं)

सब मतलब को संसार, तेरा तो कोई नहीं ॥ टेर ॥ मात और तात कुटुंब और सज्जन, मतलब को परिवार ॥ तेरा० ॥ १ ॥ कंठी डोरा कानों का मोती, धरी रहेगा नार ॥ २ ॥ कसूमल पाग केशरियां बागा, सब झूंठा सणगार ॥ ३ ॥ जो तू जन्म सुधार्यो चाहे, सेव २ अणगार ॥ ४ ॥ असल धर्म है

थी जिनवर का, धार २ हो पार ॥ ५ ॥ चौथमल कहे गुरु हीरालाल, जहां के नमो चरणार ॥ ६ ॥

१७४ कूंच का नक्कारा.

(तर्ज–बिना रघुनाथ के देखे नहीं दिल को करारी है)

दिला गाफिल न रहे मूरख, कूंच का यह नकारा है। दमादम जा रहा मकलूक, कौन यहां पर तुमारा है ॥ टेर ॥ मुसाफिर खाना है दुनियां, एक आता एक जाता है। उठाके चश्म तो देखो, चंद दिन का गुजारा है ॥ दिल० ॥ १ ॥ पचा के मुफ्त का खाना, फुलाया गाल को तुमने। सताते हो गरीबों को, वहां इन्साफ सारा है ॥ २ ॥ जुल्म करना न मुश्किल है, मुशकिल्ल रहम का करना। नेकी करते रहम रखते। वो ही ईश्वर का प्यारा है ॥ ३ ॥ घूमते हो गरूरी से, बड़े सज धज के बागों में। मगर मत भूलना प्यारे, ऐसे हुए हजारां है ॥ ४ ॥ गुरु हीरालाल के परसाद, चौथमल कहे सुनो लोकों। धरो जिन ध्यान तजो अभिमान, तो सुधरे काज सारा है ॥ ५ ॥

१७५ ममता.

(तर्ज–तू म्हारो बावो रे बावो)

पापिन ममतारे ममता, या चाहे है मन गमता ॥ टेर ॥ पुण्य योग मनुष्य भव पायो, जिस पर ध्यान नहीं धरता। ऐश आराम में मगर मस्त तू, होय बोकरां फिरता ॥ पा० ॥१॥ तन धन यौवन कुटुम्ब सभी को, मेरा २ करता। दिन रेनी धंधा में लागो, श्रावण भैंस ज्यूं चरता ॥ २ ॥ कर २ ममता जगह बंधाई, अभिमान तू करता। पाप कमावे फिर हुलसावे परभव से नहीं डरता ॥ ३ ॥ ख्याल तमाशा रंग राग में, अग-

वानी हो फिरता । परोपकार में कुछ न समझें, द्रव्य संग्रह करता ॥ ४ ॥ ममता छोड़ धार जिन धर्म को, हो शुद्ध आत्म दमता । चौथमल तो सुखी हुओ है, आई दिलमें समता ॥ ५ ॥
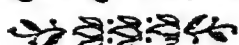
१७६ रावण का सीता को कहना.

(तर्ज—विना रघुनाथ के देखे नहीं दिल को करारी है)

सिवा सीता तेरे बोले, नहीं दिल को करारी है । कहे रावन जरा तो देख, क्या मरजी तुम्हारी है ॥ टेर ॥ अठारा सहस्र मम रानी, करूंगा सब में पटरानी । मान ले बात सुलतानी, तेरी ही इंतजारी है ॥ सिवा० ॥ १ ॥ देखो लंका की अब बहार, पहिनो मणि मोतियों का हार । सजो दिल चाहे सो सिंगार, सब हाजिर तैयारी है ॥ २ ॥ फंसी आ मेरे कबजे में, कहीं अब जा नहीं सकती । मेरे मिजाज के आगे, क्या ताकत तुम्हारी है ॥ ३ ॥ राम लक्ष्मण तो वनवासी । नहीं संग फौज जिनके है । देखले राज बल मेरा, खड़ी कैसी सवारी है ॥ ४ ॥ कहे यों चौथमल ज्ञानी, तजो व्यभिचार की बातें । मगर जो थी सती सच्ची, तो रह गई बात सारी है ॥ ५ ॥

१७७ सीता का प्रत्युत्तर

(तर्ज—विना रघुनाथ के देखे०)

कहे सीता सुनो रावण, तू डर किसको दिखाता है । सिवा श्री राम के मुझको, नजर दूजा न आता है ॥ टेर ॥ तुझे है राज का अभिमान, या सोने की लंका का । मगर ना चीज जानूं मैं, कदर तू क्यों घटाता है ॥ कहे० ॥ १ ॥ अठारह सहस्र घर नारी, सबर तुझको नहीं आता । गैर औरत से इस दिल को, अरे ! क्यों नहीं हटाता है ॥ २ ॥ स्वयंवर जीतके लाता,

कायदा था नरेशों का। चुराके तू मुझे लाया, फेर मुंह क्यों दिखाता है ॥ ३ ॥ अगर गंगा चले उल्टी, चांद से आग भी निकले। फेर सूरज भी शीतल हो, मगर ये सत न हटता है ॥ ४ ॥ नहीं परवा सुरेन्द्र की, तेरी फिर हैसियत है क्या। भेजदे राम पे मुझको, जो तू आराम चाहता है ॥ ५ ॥ सिया ने बहुत रावण को, कहा लेकिन नहीं माना। चौथमल कहे जो होनी हो, वही फिर ध्यान आता है ॥ ६ ॥

१७८ पापी की नौका.

(तर्ज-तू ही २ याद आवेरे दरद में)

भवसागर में पापी की नौका, अध बिच जायने डूबीरे लोरे ॥ टेर ॥ सुकृत न कीना, लाभ न लीना। खोई मनुष्य भव खूबीरे लोरे ॥ भव० ॥ १ ॥ क्रोध मान माया लोभ वजन है, राग द्वेष रह्यो लूंबीरे लोरे ॥ २ ॥ सुमती सखी से मुंह को मुंडाया, कुमता बुलावे वा ऊभीरे लोरे ॥ ३ ॥ मोक्ष नगर के ताला लगाया, नर्क द्वार खोल्या भुंबीरे लोरे ॥ ४ ॥ अध बिच जायने गडगप्प होगा, देर लगे नहीं कबीरे ॥ ५ ॥ चौथमल कहे तिर झटपट तू, हाथ लई तप तूंबीरे लोरे ॥ ६ ॥
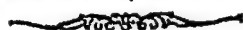
१७९ चेतन चेत.

(तर्ज—सेवो श्री रिष्टनेम)

चेत चेतरे चतुर!, समझावे तुझको सद्गुरु ॥ टेर ॥ लाधो नर भव रत्न सही, अरे नर मूरख परख नहीं ॥ चेत० ॥ १ ॥ गफलत में हो सूतो नचीत, अमूल्य घड़ी थारी जावे या बीत ॥ २ ॥ अब तो जागो छोड़ो कुमता कुनार, बन जाओ सुमति का भर्तार ॥ ३ ॥ मात पिता और कुटुम्ब परिवार।

चलती वैरा थारे कोई न लारे ॥ ४ ॥ चौथमल कहे मानो शिक्षा सुजान, चालो मुक्ति में करो धर्म ध्यान ॥ ५ ॥

१८० रावण मंदोदरी संवाद.

(तर्ज—दियो दान सुपातर, पाया सुख सम्पत धना सेठजी)

सीता प्रीतम दो पाछी सोंपजी, यह अर्ज हमारी, सीता० ॥ टेर ॥ सीता नहीं देसां निश्चय जाणजे, करसां पटराणी, सीता० ॥ टेर ॥ सीता पाछी सोंपदो सरे, वाजी रहवे पेश। सुवागपणो म्हारो रहे सरे, मानो लंक नरेश। नहीं तर आप का कुल विषे सरे, लागे कलंक विशेष ॥ यह० ॥ १ ॥ नारी जाति अकल की हीनी, वात करे तू वेकी। सीता जैसी रूपवान मैं स्वप्ना में नहीं लेखी। मन धार्यो मारो करूं सरे तूं पण लीजे देखी ॥ कर० ॥ २ ॥ थे प्रीतम छाया भोग विषे, थाने सूझे नहीं लगार। रामचंद्र संग सेन्या लेकर, आय रह्या ललकार। लक्ष्मण जिनके संग में सरे, है बांका सरदार ॥ यह० ॥ ३ ॥ राम लक्ष्मण दोनों वनवासी, फौज नहीं है पास। लंकागढ़ के आड़ा प्यारी भरा समुद्र खास। यहां पर कोई नहीं आसके सरे, रख पूरा विश्वास ॥ कर० ॥ ४ ॥ यह जनकराय की पुत्रिका सरे, सीता इसका नाम। सत्यवंती और है पतिव्रता, जाने मुलक तमाम। पर पुरुष को कभी न वंछे, क्यों होवे बदनाम ॥ यह० ॥ ५ ॥ विभीषण और कुंभकरण यह हैं मेरे दो भ्रात। सीता पाछी सोंपते सरे, लाजे क्षत्री जात। मत बोलो मनोदरी-स थारी नहीं सुहावे वात ॥ कर० ॥ ६ ॥ सीता हाथ आसी नहीं सरे, लंक हाथ से जावे। काम अन्ध पहिले नहीं समझे, पीछे ही पछतावे। चौथमल कहे भावी प्रवल, एक आस नहीं आवे ॥ यह० ॥ ७ ॥
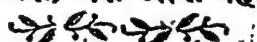
१८१ गफलत को छोड़.

(तर्ज—इन्द्र सभा)

क्यों सोए भर नींद में, और अब तो नैन उघाड़ । नहीं वसीला आगे तेरा, दिल में करले विचार ॥ टेर ॥ इस खलकत के बीच में, तुझे जीना है दिन चार । धन दौलत के बीच लोभाकर, मत तू पांव पसार ॥ क्या० ॥ १ ॥ मात पिता और सज्जन स्नेही, निज मतलब के यार । आखिर में वे बदल जायंगे, नहीं आवेंगे लार ॥ २ ॥ ऊंची झरोखा रावटी, और चंचल गज तुखार । सोने की सेजां छोड़ेगा, सुंदर अबला नार ॥ ३ ॥ नित्य नई पोशाक बनावे, गले मोतियन के हार । दम निकले तन से खींचेंगे, तेरे सब श्रृंगार ॥ ४ ॥ परम वसीला जैन धर्म का, यही जग में आधार । चौथमल कहे वीर प्रभु भज, सफल करो अवतार ॥ ५ ॥

१८२ प्रबोधन.

(तर्ज—भजन)

ऐसी देह पाई, भजो भगवंत तांई रे टेर ॥ मास सवा नव रह्यो गर्भ में, बहुत सही संकड़ाई । नीठ करीने बाहर निकल्यो, अब क्यों बंदा करे चतुराई ॥ ऐसी ॥ १ ॥ भांत २ का वस्त्र पहेरी, टेढ़ी पाग झुकाई । गृह क्रिया में मग्न हुआ है, माया में रह्यो तू लुभाई ॥ २ ॥ मात पिता से मुख नहीं बोले, साला से गुस्ठ लगाई । यम के दूत पकड़ेंगे आकर, भूल जायगा बंदा घुमराई ॥ ३ ॥ गुरू हीरालाल प्रसादे चौथमल ऐसी जोड़ बनाई । नर तो नारायण बन जावे, बन्दा तैंने ऐसी देह पाई ॥ ४ ॥

१८३ अध्यात्मिक–भांग

(तर्ज–भांग के गीत की)

अजी भांग पियोतो पिया म्हारे महलां आजो काई कुमतिरे महलां मती जाओ, हो राज पियो भांगडली ॥ १ ॥ लो जो लगे जिकी लोड़ी बनाई, फिर शील शिला पर बंटाई, हो राज पियो भांगडली ॥ २ ॥ भक्ति की तो भांग बनाई, जिमें समता की शक्कर डलाई, हो राज पियो भांगडली ॥ ३ ॥ परतीत पानी से साफ धुआई, ब्रह्मचर्य की बिदाम नखाई, हो राज पियो भांगडली ॥ ४ ॥ करणी की तो काली मिरचां मांई, और प्रेम का पिस्ता सांई, हो राज पियो भांगडली ॥ ५ ॥ अध्यातम का इलायची दाना, यह भी भांग के बीच नखाना, हो राज पियो भांगडली ॥ ६ ॥ सर्व मसाला सामिल मिलाई. या तो ज्ञान की घाट मचाई, हो राज पियो भांगडली ॥ ७ ॥ सुमता सखि ने चेतनताई, दम दुधीया भांग बनाई, हो राज पियो भांगड़ली ॥ ८ ॥ प्रथम प्यालो या झट भरलाई सत चित्त आनंद के तांई, हो राज पियो भांगड़ली ॥ ९ ॥ ऐसी भांग पिया प्याला भर पियो, फिर मुक्ति की लहरां लेवो हो राज पियो भांगडली ॥ १० ॥ गुरु हीरालालजी महा सुखदाई, चौथमल ने भाव भांग गाई, हो राज पियो भांगड़ली ॥ ११ ॥

१८४ संसार त्याज्य.

(तर्ज–मांड, भजो नित त्रिशला नंद कुमार)

तजोरे जिया झूठो यो संसार, जरा हृदे ज्ञान विचार ॥ टेर ॥ ज्यूं स्वपना में राजलक्ष्मी, मिले नार परिवार । नैन खुलते ही विरला जावे, इण विध ज्ञान विचार ॥ तजो० ॥ ॥ १ ॥ रत्न जड़ित का मालियारे, सुन्दर अबला नार । नाना

प्रकार का मेवा मसाला, सो भोग्या अनंतीवार ॥ २ ॥ छत्र चंवर शिर वींजतारे, समा २ करता नर नार। गादी तकिया बैठतारे, सो चले गये सरदार ॥ ३ ॥ राजा राणा बादशाह रे, रहता संग सवार। माल मुल्क छोड़ी गया रे, देर न लगी लगार ॥ ४ ॥ चुआ चंदन फुलेल लगाई, हींडे हींडा मंझार। नया २ सणगार सजीने, गर्व मती लगार ॥ ५ ॥ इम जानी जग जाल ने छोड़ो, निज आतम को तार। जंबूकुमार अतुल वैरागी, उतरया भवजल पार ॥ ६ ॥ रंभा बत्तीसों तजीरे, शालिभद्र कुमार। मुनि अनाथी महा वैरागी, छोड़्या धन भंडार ॥ ७ ॥ बाल ब्रह्मचारी गज मुनि रे, यादव कुल शणगार। नेम समीपे संयम लेने, कर गया खेवा पार ॥ ८ ॥ गुरु हीरा-लाल प्रसादे चौथमल, जोड़ करी श्रीकार। मांडलगढ़ उगनीसे बांसठ, फागण सेखे कार ॥ ९ ॥
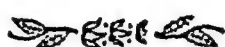
१८५ मूर्ख को शिक्षा देना व्यर्थ.

(तर्ज—आशावरी)

सन्तों नुगरा का नहीं विश्वासा ॥ टेर ॥ इत उत डोलत माया कुं ढूंढत, जेता मूंढ तेता दिलासा। क्रोड़ यत्न चाहे सो करलो, कबहु न होता खुलासा ॥ सन्तो० ॥ १ ॥ ऊसर भूमि में बीज पड़े ज्यूं वर्षा बांच जवासा। उष्ण तवा पर बूंद पानी का, क्षण में होत विनाशा ॥ २ ॥ दग्ध बीज अंकुर न मेले, मुरदा ले कब श्वासा, ठहडू मूंग कभी नहीं सीजे, जो आंच लगे पचासा ॥३॥ गुरु प्रसादे चौथमल कहे, सुन जो यानी खासा। जो घट अन्दर है विश्वासा, ता घर लील विलासा ॥ ४ ॥

१८६ मोटा नु कर्तव्य

(तर्ज- मांड, भजो नित त्रिशला नंद कुमार)

मोटाने एवुं करवुं घटतुं नथी, हूं कहूं छूं पाड़ी बूम अति ॥ टेर ॥ वचन आपी हाथ बीजाने, कहे आ शुं तारे काम । वखत आवे वदली जावे, नटत न आवे लाज । मोटा० ॥ १ ॥ पोते बाग लगावे कोई, ते वाडी मोटी थाय । सिंचन की वेला जब आवे, टालो खाई जाय ॥ २ ॥ बुड़तां माणस ने पकड़ी निकाले, ला अधवच दे छटकाय । एवा विश्वास घाती नुं प्रभु, मुखडुं नथी वताय ॥ ३ ॥ मोटा थावे माणसोरे, पाले बोल्या बोल । मोटा ढोल जेवा नहीं थाये, मांहे पोलम पोल ॥ ४ ॥ अठारदेशना राजा मोटा, आव्या चढा नृप नी भीड़ । स्वधर्मी ने साज जो आपी, निज वचनों री पीड़ ॥ ५ ॥ साचा थाओ काचा न थाओ, रखो वचन अडोल । गुरु हीरालाल प्रसादे चौथमल, देवे सीख अनमोल ॥ ६ ॥

---

१८७ आयु की अस्थिरता.

तर्जः-भर्तृहरिकी-धुणी तो धका द्यो वादल महल में आसन डोडिया के मांय दिन दल अठे ही तापोजी

अमर कोई न छेजी, काची काया का सरदार ॥टेर॥ सुवर्ण का पलंग सेजा फुलां की जी, सोता सुन्दरी के साथ ॥ अमर० ॥ १ ॥ लाखां तो फोजां जांके संग रहती जी, उमराव जोड़ता था हाथ ॥ २ ॥ सोलह तो शृणगार

तन सज करता जी, मोती पहनता था कान ॥ ३ ॥ काच तो देखी पाघां बांधता जी, मुखमें चावता था पान ॥ ४ ॥ धन तो योवन माया पावणी जी, जाता नहीं लागे बार ॥ ५ ॥ बड़ा तो बड़ा ने धरनी गल गई जी, गल गया हिन्दु मुसलमान ॥ ६ ॥ गर्व करी घोड़ा फेरता जी, हिन्दु पत सुलतान ॥ ७ ॥ चांद ने सूरज जग में स्थिर नहींजी स्थिर नहीं इन्द्र ने नरेन्द्र ॥ ८ ॥ चक्रवर्ती वासुदेव कई जी गया दीपक ज्यूं विरलाय ॥ ६ ॥ काया तो माया जैसे धूप छायांजी, प्रभु भजले दिन चार ॥ १० ॥ गुरु तो महाराज हीरालालजी, चौथमल देवे यों उपदेश ॥ ११ ॥

---

१८८ राजा हरिश्चन्द्र की सत्यता.

(तर्ज-मीरा थारे कांई लागे गोपाल)

कर्म गति कहिय न जावे राज हो कर्म० ॥ टेर ॥ काशी नगर के वागमें, हरिश्चंद्र करे विचार । देखी रानी फिकरमें, छूटी आंसु धार ॥ कर्म० ॥ १ ॥ सत्य को कैसे राखसुं, कौन देसी मुझने दाम । अब मुझको क्या जीवना हाथ कमाया काम ॥ २ ॥ सत्य गया तो क्या रह्या, प्राण गया प्रमाण । जद राणी अर्जी करी, सुण लीजो धर ध्यान ॥ ३ ॥ निज प्यारा का नेन सुं, जुहे आंसु चीर । मत झुरो थे साहवा, राखो सत्य शरीर ॥ ४ ॥ तारा कहवे मुझ भणी, वेच्यो मध्य वाजार । सत्य राखुं पीसु पीसणो,

नीर भरु पणिहार ॥ ५ ॥ राणी वचन काने सुनी, राज होगये दंग । रानी कुंवर ने देखनेरे, करवत वेगई अंग ॥ ६ ॥ राजा मन विचारीयो रे, करनो कौन उपाय । नारी गहेने मेलतारे, जग बदनामी थाय ॥ ७ ॥ बदनामी से मत डरोरे, सुण प्राणेश्वर नाथ । कायर मत वे सायबा, क्षत्राणी अंग जात ॥ ८ ॥ राजा कहे रानी सुनोरे, पूर्व पुन्य प्रकार । धन्य थारी जननी प्रतिरे, मुझ घर ऐसी नार ॥ ६ ॥ गुरु हीरालाल प्रसाद सुं, चौथमल यूं गाय । सत्यधारी के सत्य प्रभावे, मिले कुटुम्ब सुखदाय ॥ १० ॥

१८६ नवधा भक्ति दिग्दर्शन.

(तर्ज—आशावरी)

या नवधा भक्ति धारो, जासे सुधरे नर अवतारो ॥ टेर ॥ प्रथम ब्रह्मचर्य अवस्था में शिक्षा सम्भारो । मात पिता आचार्य गुरु की, हो भक्ति करनारो ॥ या० ॥ १ ॥ श्रवण भक्ति पहली सो प्रभु, गुण सुनके धारो । कीर्तन भक्ति दुजी, सो गुण स्वयं उच्चारो ॥ २ ॥ स्मरण भक्ति तीजी है ये, स्वभावी जप विचारो । पाद सेवणा भक्ति चौथी, पर के प्राण उबारो ॥ ३ ॥ अर्चन भक्ति पांचवी, करे सर्व को सतकारो । पाद वन्दन भक्ति षष्ठी, नम्रता हृदय विचारो ॥ ४ ॥ दास भक्ति कहो सातमी चाकर वन चरनारो । सखा भक्ति करो अष्टमी, मित्र भाव संसारो ॥ ५ ॥ आतम निवेदन भक्ति सो तो, परमातम पद हो सारो । चौथमल कहे ऐसी भक्ति, सर्व फल दातारो ॥ ६ ॥

१६० आत्म बोध.

(तर्ज—बटवा गूंथन देरे)

पलक २ आयु जायरे चेतानिया पलक २ आयु जाय। अरे! मेरे कहने से करलोरे सुकरत पलक २ आयु जाय ॥ टेर ॥ बाल पणो हंस खेल गंवायो, योवन तिरिया चाय। वृद्धपना के मांयनेरे, फेर बने कछु नाय ॥ अरे० ॥ १ ॥ मात पिता और सज्जन स्नेही, स्वार्थ भेला थाय। जो स्वार्थ पूगे नहीं तो, तुर्त ही बदली जाय ॥ २ ॥ च्यार दिनां की चांदनीरे, जिस पे रहा लोभाय। लाया पुन्य खूटी रह्यारे, फेर करेगा कांय ॥ ३ ॥ गफलत में मत रहे दिवाना, सांची देऊं बताय। ऐसा वक्त फेर न मिलेरे, जाग तू प्रमाद उड़ाय ॥ ४ ॥ सूतर को सुणबो मिल्योरे, सद्गुरु सेवा पाय। जन्म सुधारो आपणोरे, धर्म करो चित्तलाय ॥ ५ ॥ उगणीसे चौसठ जाणजोरे, मन्दसोर के मांय। गुरु प्रसादे चौथमल यों, जोड़ सभा में गाय ॥ ६ ॥

१६१ झूठ पाप का मूल.

(तर्ज—विना रघुनाथ के देखे नहीं दिल को करारी है.)

सजन तुम झूठ मत बोलो साहब को सत्य प्यारा है। सत्य सम सरणा नहीं दूजा। सत्य साहब को प्यारा है ॥ टेर ॥ सजन इस झूठ के जरिये, इज्जत में फर्क आता है। भरोसा ना गिने कोई, झूठ निमक से खारा है ॥ सजन० ॥ १ ॥ चाहे गंगा चाहे यमुना, चाहे सरजू किनारा है। चाहे मन्दिर चाहे मसजीत, चाहे ठाकुर द्वारा है ॥ २ ॥ दोजख के बीच फरीस्ते, झूठों की जीभ कतरेंगे। फेर गुरजों से मारेंगे, करे यहां पर पुकारा है ॥ ३ ॥ सांच को आंच है नांहीं, सांच आकबत में

हो सहाई । चौथमल सांच नौका ने, कई पापी को तारा है ॥ ४ ॥
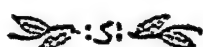
१९२ भरतको श्रीराम की शिक्षा.

(तर्ज--विना रघुनाथ के देखे नहीं दिलको करारी है)

कहे श्रीराम भरत तांई भैया बात सुन लीजे । बैठ के अवध की गादी, अदल इन्साफ ही कीजे ॥ कहे० ॥ ॥ टेर ॥ पर स्त्री मात सम जानी, कभी महोव्वत में मत फंसना । लोभ को त्याग पर धनमें, भंग मर्याद ना कीजे ॥ १ ॥ नीच इन्सान की संगत, कभी मत भूल के करना । अदू के सामने भैया, सदा ही शूरमा रहजे ॥ २ ॥ विपत् और सम्पदा दोनों, शुभाशुभ कर्म के फल हैं । धीर्यता धार जननी को, सदा विश्वास तू दीजे ॥ ३ ॥ नसीहत देके वन अन्दर, चले सीयाराम व लक्ष्मण । चौथमल कहे जावे यूं, प्रजा की पालना कीजे ॥ ४ ॥

---

१९३ प्रभु से अपराधों की क्षमा मांगना.

(तर्ज—आसावरी)

मैं तो हूं जी ओगनगारो, नाथ मुझ किस विधि पार उतारो ॥ टेर ॥ कामी, क्रोधी, चोर, अन्याई, लोभी और धूतारो । इत्यादिक औगुण बहु भरिया, कैसे सुधरे जमारो । बड़ो यो उपजे विचारो ॥ नाथ० ॥ १ ॥ भक्त बनी ने तुझ कु समरुं, लज्जा आत तिवारो । मुझ कर्तव्य छीपे नहीं तोसुं,

सर्वज्ञ नाम तुम्हारो । झूंठ नहीं बात लगारो ॥ २ ॥ वेवार दशा देखी ने दुनियां, देत है जी धिक्कारो । करज उतरसी कैसे हो स्वामी, जो लावे मांग उधारो । चढ़े थो उलटो भारो ॥ ३ ॥ महावीर जिनराज दयाकर, अपना विरध संभारो चौथमल शरणे आ पड़ीयो, जिम तिम पार उतारो । एक प्रभु तेरो ही सहारो ॥ ४ ॥

१६४ द्विलोक संतापिनी पर स्त्री

(तर्ज—तुलसी मगन भये हरि गुण गायके)

चतुर न कीजो संग चौथा अधरमकी ॥ टेर ॥ कामण युग में कामण कारी, जहर कैसी बेली जानो नागिन सार की ॥ चतुरन० ॥ १ ॥ परनारी है ऐंठ को सो कुण्डो, मुंडो डूबोवे नर भूंडो अणाचार की ॥ २ ॥ रावण राजा त्रीखण्ड को नायक, सीता हरण कीधी रामजी का घर की ॥ ३ ॥ हाथ न आयो कुछ अपयश लई मुंओ, होगई बात जांकी बिना शरम की ॥ ४ ॥ इस भव में तो धन जोबन लूटे, परभव में देने वाली है नारकी ॥ ५ ॥ साँची २ देखी जैसी जिन भाखी, तोरे तो न लगी जिया, तोरा करमकी ॥ ६ ॥ चौथमल कहे शीलव्रत धर, मान मान सीख गुरु परम की ॥ ७ ॥

१६५ आत्मा पवित्र करने का उपाय.

(तर्ज—चलत)

मुगत में सुख है दुःख न न न न् ॥ टेर ॥ कर तप संयम जोर लगाले, कर्म कटत है खनननन् ॥ मु० ॥ १ ॥ ज्ञान दर्शन चारित्र आराधो, धर्म्म कथा कहो झनन न न न न् ॥ २ ॥ पाप करंता लज्जा आणो, धर्म करंता गाजो घननन न न् ॥ ३ ॥ इस विध करणी करो भव जीवां, आवागमन छूटे छननन न न् ॥ ४ ॥ शिव अचल स्थान पधारो, वाजो मही में धनन न न न् ॥ ५ ॥ अनंत सुख की लहर में विराजो, फेर न आवो इन न न न न् ॥ ६ ॥ चौथमल कहे गुरु हीरालालजी, ज्ञान सिखायो सन न न न न् ॥ ७ ॥
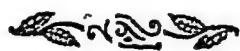
१६६ मनुष्य जन्म की महत्ता.

(तर्ज पणिहारी)

मनुष्य जन्म को पायने, सुन चेतनजी, कीजे खूब जतन चेतनजी, मत पड़ो जग जाल में, सुन चेतनजी, सुधपुर थारो वतन चेतनजी ॥ १ ॥ आयो आप जो एकलो सुन चेतनजी नहीं लायो कोई संग चेतनजी, फेर जाती वेलां एकलो सुन चेतनजी, समझो धरी उंमग चेतनजी ॥ २ ॥ काला का धोला हुआ सुन चेतनजी, अजुअन समझा आप चेत-नजी, दूत आया यमराज का सुन चेतनजी, मैं कहूं छूं

साफ चेतनजी ॥ ३ ॥ इत्तर फुलेल लगावतां सुन चेतनजी, पगड़ी बांधता टेड सुन चेतनजी, कुंकुम वरणी दे होती सुन चेतनजी, या बुढ़ापा लीधी घेर चेतनजी ॥ ४ ॥ अब चेतो तो चेतलो सुन चेतनजी, अभी हाथ में बात चेतनजी, चौथमल कहे धर्म करो सुन चेतनजी, भजलो श्री जगन्नाथ चेतनजी ॥ ५ ॥
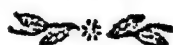
१६७ कृपण का फोटू.

(तर्ज—पनजी मूंडे बोल)

सुकृत करलेरे, माया का लोभी, संग चलेगारे ॥टेर॥ ऐसो मनुष्य जमारो पाके, अब तो लावो लीजेरे। कुटुम्ब कबीलो धन दोलत में चित्त न दीजेरे ॥ सुकृत ॥ १ ॥ इस धन कारण देश प्रदेशां, धूप गीणी नहीं छायारे। करे नोकरी बहु नरनारी, जोड़े मायारे ॥ २ ॥ महँगो कपड़ो कभी न पहरे. दिन काढे कूकस खाइरे। सोनो रूपो नहीं पहरणदे, घर के मांहीरे ॥ ३ ॥ तू जाणे धन लारे आसी, बांधे गाडी २ रे। अंत समय हाथां की वींटी, लेगा काढीरे ॥ ४ ॥ नहीं खावे नहीं खरचे मूरख, दान देता कर धूजेरे। छाछ तणो पाणी नहीं घाले, घर गायां दूजेरे ॥ ५ ॥ अणचित्यां को सुणले मूंजी, काल नकारा देगारे। कंठी डोरा मोहरां की थेल्यां, धरी रहेगारे ॥ ६ ॥ चौथमल कहे अखूट खज़ाना, धर्म का धन कमावोरे। दया

शील तप दान करी, मुक्ति में जावोरे ॥ ७ ॥
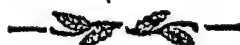
१९८ उपालंभ.

(तर्ज-कव्वाली)

अरे ! देखी तुम्हारी अकल, क्यों मुझ से कहलाते हो । बस २ वाहजी वाह, खाली बातें बनाते हो ॥ टेर ॥ अरे कोई जान के आलिम, दिया था ज्ञान हमने यह । अब मालूम हुआ हमको, धोखेबाजी चलाते हो ॥ अरे० ॥ १ ॥ नहीं दया दान के हो तुम, नहीं कोई लाज मर्यादा । नहीं कोई खोफ परभव का, मानो गुल्लर दिखाते हो ॥ २ ॥ नहीं तप जप है करणी, नहीं कोई त्याग पर परणी । नहीं ज़ुल्मों से आते बाज, पेंच खाली झुकाते हो ॥ ३ ॥ नहीं भलपन बने खुद से, बुराई नेक की करते । बड़े अफसोस की है बात, थान को लजाते हो ॥ ४ ॥ खान पान ख़्याल ऐशों में, सजी पोशाक बुग वरतीं । तुम्हारी तुम जानो बाबा, इतने किसपे एंठाते हो ॥ ५ ॥ कहे यूं चौथमल तुमसे, बुरा मत मानियो प्यारे । सच्ची २ कही हमने, अमल में क्यों न लाते हो ॥ ६ ॥

१९९ सुकर्त्तव्य.

(तर्ज–तीलंगी दादरा)

दया करने में जिया लगाया करो ॥ टेर ॥ चलो तो

पहिले, भूमि को देखो छोटे मोटे जीवों को बचाया करो ॥ दया० ॥ १ ॥ बोलो तो पहिले, दिल में सोचलो । ना किसके दिलको दुखाया करो ॥ २ ॥ बेहक का माल न, खाओ कभी तुम। ना परधन पे ललचाया करो ॥ ३ ॥ चाहे हो गोरी;चाहे हो काली। परनारी से निगाह न लगाया करो ॥ ४ ॥ पास हो माल खजाना तुम्हारे, पर जीवों का दुःख मिटाया करो ॥ ५ ॥ चारों ही आहार न रात में खाओ, ऐसी बातों को दिल में जमाया करो ॥ ६ ॥ चौथमल कहे आठों ही पहर में, दो घड़ी प्रभु को ध्याया करो ॥ ७ ॥

---

२०० उठो लक्ष्मण २.

(तर्ज-विना रघुनाथ के देखे नहीं दिलको करारी है)

लगा जो तीर लक्ष्मण के, पड़े गश खाके भूमी पर। कहे तब राम आंसू भर, उठो लक्ष्मण उठो लक्ष्मण ॥ टेर ॥ सीया रावण के कब्जे में, और तुमने करी ऐसी। मेरा इस बनमें बेली कौन, उठो लक्ष्मण उठो लक्ष्मण ॥ लगा० ॥ १ ॥ अरे रन बीच सेना को, सिवा तेरे हटावे कौन। गिराया क्यों धनुष तेने, उठो लक्ष्मण उठो लक्ष्मण ॥ २ ॥ तेरी हिम्मत पे ही बन्धु, चढ़ाई की जो लंका पे। बंधावो धीर अब हमको, उठो लक्ष्मण उठो लक्ष्मण ॥ ३ ॥ रहे गर्भा यहां दुश्मन, इन्हों के गर्व को गालो। नहीं यह वक्त सोने का, उठो लक्ष्मण उठो लक्ष्मण॥४॥

ये सुग्रीव और हनुमान, बभीक्षण पास है ठाड़े। दे विश्वास अब इनको, उठो लक्ष्मण उठो लक्ष्मण ॥ ५ ॥ अगर नफरत हो लड़ने से तो, फिर बन को चलें वापस। कुछ भी तो कहो भाई, उठो लक्ष्मण उठो लक्ष्मण ॥ ६ ॥ तुझे विन देख के हमको, माता रो रो के पूछेगी। कहेंगे क्या जवां से तब, उठो लक्ष्मण उठो लक्ष्मण ॥ ७ ॥ जिसके लिए ले लशकर, खाके जोश आये यहां। मिटावे कौन दुख उसका, उठो लक्ष्मण उठो लक्ष्मण ॥ ८ ॥ दयालु शख्स के कहने से, विसल्या को लाये हनुमान। भगी शक्ति सती को देख, उठे लक्ष्मण उठे लक्ष्मण ॥९॥ हुआ आराम लक्ष्मण को, पाया सुख राम और सेना। जीत रावण को ली सीता, उठे लक्ष्मण उठे लक्ष्मण ॥ १० ॥ हुआ मङ्गल अयोध्या में आये जब राम और लक्ष्मण। चौथमल कहे खुशी घर घर, उठे लक्ष्मण उठे लक्ष्मण ॥ ११ ॥

२०१ दया ही हिन्दुओं का खास धर्म.

(तर्ज—तीलंगी दादरा)

प्यारे हिन्दू से कहना हमारारे। दया करना ही धर्म तुम्हारारे ॥ टेर ॥ उत्तम कर्तव्य थे जो तुम्हारे, क्यों तुमने उसको विसारारे ॥ प्यारे० ॥ १ ॥ दारु न पीओ मांस न खाओ, खेलो न कभी शिकारारे ॥ २ ॥ हिंसा से दूर रहे सो हिन्दू, दिल में तो करो विचारारे ॥ ३ ॥ हिन्दू घटे

ईसाई बढ़े हैं, डूबे यह देश तुम्हारारे ॥ ४ ॥ विद्या पढ़ाओ शास्त्र सिखाओ, देओ एक दूजे को सहारारे ॥ ५ ॥ चौथमल कहे अब भी चेतो, झटपट करो सुधारारे ॥ ६ ॥

२०२ फूट का दुष्फल.

[तर्ज-विना रघुनाथ के देखे नहीं दिल को करारी है]

उठो ग्रादर मिटाओ फूट, ये शिक्षा हमारी है। सम्प में फायदे हैं बहुत, फेर मर्जी तुम्हारी है ॥ टेर ॥ प्यारे मित्र ये सारे, तुम्हारे नैन के तारे। सभी दिल खींच बैठे क्यों, जरा यह भी विचारी है ॥ उठो० ॥ १ ॥ चली अब तानाबाजी है, बने खुद मुल्ला काजी हैं। एक की एक नहीं माने, इसी से गैरत भारी है ॥ २ ॥ पढ़े लिखे की तबीयत पे, गजब छाई खराबी है। लड़े आपस में दुनियां तो, उन्हें देती धिकारी है ॥ ३ ॥ अलगरज होय के डूबे, चाहें अपनी बड़ाई को। स्वारथ के ही लिये सबले, भली तुमने बिगाड़ी है ॥ ४ ॥ मुलामी धार के सब को, निगाह प्यारी से देखो आप। तोड़ दो बद रसूमो को, बढ़े इज्जत तुम्हारी है ॥ ५ ॥ आप के सामने अब आज, कहो दम मारता है कौन। बनो सब दूध मिश्री सम, यही तुमको हितकारी है ॥ ६ ॥ पड़ी जब फूट रावण घर, गई जब लंका हाथों से। सम्प से राम भरत अन्दर रही, मोहब्बत हजारी है ॥ ७ ॥ गुरु हीरालाल के परसाद, चौथमल कहे सुनो लोगों। करो तुम सम्प जल्दी से, तो रहती बात सारी है ॥ ८ ॥

—:‹‹%%››:—

२०३ मांस परिहार.

[तर्ज—तीलंगी दादरा]

मांस अभक्ष नर का न खानारे ॥ टेर ॥ जाती है दया दूर इस मांस आहार से । होता है महा पातकी देखो विचार से । खास नर्क में उसका ठिकानारे ॥ मांस० ॥ १ ॥ गोश्त की जो उत्पात्ति कहो कैसे आब से । देख खुश होगये खाने खराब से । खाली दिल को सख्त बनानारे ॥ २ ॥ डाक्टरों के लेख पे दिल में करो तो गौर । कितनी बढ़ी बीमारियां समझो तो जरा और । खाजरु जाजरु समानारे ॥ ३ ॥ एक मांसखोर पशु एक घास करे आहार । दोनों की सिफ्तें देखलो नर किस में है शुमार । कहे चौथमल त्यागे सयानारे ॥ ४ ॥

२०४ लोकोक्ति.

[तर्ज—नागजी की]

हंसजी थें मति जाओ छोड़नेरे या सुन्दर काया आपकी हो हंसजी ॥ १ ॥ हंसजी तू भवरों में फूलरे कोई संयोगे आबा लागा हो हंसजी ॥ २ ॥ हंसजी जग मग थारी जोतरे कोई काया महल में खुल रही हो हंसजी ॥ ३ ॥ सुन्दरी थारा मोह में लागरे कांई सुकृत करणी नहीं करी हो सुन्दर ॥ ४ ॥ हंसजी इण में म्हारो कांई बांकरे कोई में हाजिर थांरे खड़ी हो हंसजी ॥ ५ ॥ सुन्दरी सज तन पे शृंगाररे कोई इतर फुलेल लगावीया हो सुन्दरी ॥ ६ ॥ बैठी बग्घी मांयरे कोई, बागों में

खाई हवा हो सुन्दरी ॥ ७ ॥ मानी मोजां खूबरे कोई, पट्रस भोजन भोगव्या हो सुन्दरी ॥ ८ ॥ मानी न सद्गुरु सीखरे कोई योवन छक व्याप्यो घणो हो सुन्दरी ॥ ९ ॥ बाज्या नकारा कूंच-कोरे कोई, अब पिछतावो है खरो हो सुन्दरी ॥ १० ॥ हंसजी धर्म करो त्रिकालरे कोई, मैं करती आड़ी नहीं फिरी हो हंसजी ॥ ११ ॥ जो तुम तजदो मोयरे कोई, साथे मैं थासुं सती हो हंसजी ॥ १२ ॥ चौथमल ऐसे कहे कोई, धर्म सखा परलोक में हो हंसजी ॥ १३ ॥

२०५ प्रभु से विनंति.

(तर्ज—ठुमरी)
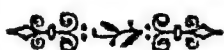
अबेतो नहीं छोड़ांगा प्रभु थांने ॥ टेर ॥ चोसारी लख भटकत आयो, आप मिल्या नीठ माने ॥ अबे० ॥ १ ॥ जिम तिम करने शिव सुख दीजो, चोड़े कहूं के छाने ॥ २ ॥ मन विना म्हारो मन हर लीनो, शाशनपति वृद्धमाने ॥ ३ ॥ तरण तारण बिरध तिहारो, तीन लोक में जाने ॥ ४ ॥ चौथमल थारे शरणे आवो, तारो २ प्रभु माने ॥ ५ ॥

२०६ फूट परिणाम,

(तर्ज—दिलजान से फिदा हूं)

इस फूट ने बिगाड़ा, मिटे फूट हो सुधारा ॥ टेर ॥ देखो भाई २ झगड़े, कोरट के बीच रगड़े। अभिमान बीच अकड़े,

निर्लज्जपन यह धारा ॥ इस० ॥ १ ॥ नहीं न्यात २ भावे, नहीं जात २ चावे। सब आप की जमावे, यह कायदा बिगारा ॥२॥ नहीं लज्जा जात कुल की, बुड्ढे को देत लड़की। जरा पंच लाज धरके, सुनते नहीं पुकारा ॥ ३ ॥ यह चाल कोई मिटावे, गुस्ताखी पेश आवे। बुजुर्ग की नसीहत पे, करते नहीं विचारा ॥ ४ ॥ गए डूब चाह बड़ाई, जाति में कर लड़ाई। स्वधर्मी धर्मी लड़के, नाइत्तफाक कर डारा ॥ ५ ॥ कैकई के वचन में आके, दिया राज यह भरत को। श्रीराम सम्प रख के, वन-वास को सिधारा ॥ ६ ॥ कहलाते जैन धर्मी, कषाय मांय वरते। अज्ञान अंधता से, त्रियरत्न को विसारा ॥ ७ ॥ अए प्यारे मित्र सब तुम, जरा चश्म खोल देखो। बर्बाद हुआ यह जाता, धन धर्म देश सारा ॥ ८ ॥ इस फूट से भारत में, नुकसान हो रहा है। कहे चौथमल जल्दी, बजा सम्प का नक्कारा ॥ ६ ॥

२०७ प्रभु जाप.

(तर्ज–बिना रघुनाथ के देखे नहीं दिलको करारी है),

अरे जो श्वांस आता है, उसी में उसको रटता जा। अगर हो शौक मिलने का तो हरदम लौ लगाता जा ॥ टेर ॥ अरे संसार है झूठा, इसी से दिल हटाता जा। शैतान का छोड़ो, पलक उससे मिलाता जा ॥ अ० ॥ १ ॥ फंसे मत एश के फंदे, करे मत हुक्म से बेजा। उसी के कदमों के अन्दर, हमेशा सर झुकाता जा ॥ २ ॥ अरे सोते अरे उठते, अरे क्या वैठते चलते। अरे हर बार हर मौके, उसीसे दिल मिलाता जा ॥ ३ ॥ नहीं कोई यार साथी है, नहीं धन माल है अपना। उसी दिन का है वो बेली, उसीसे दिल लड़ाता जा ॥ ४ ॥

गुरु हीरालाल के परसाद, चौथमल कहे सुनो आलिम। शुक्र उसका करो हरदम, बिगानों से कराता जा ॥ ५॥

२०८ योवन की अकड़ाई.

(तर्ज–आखिर नार पराई है)

जो इतनी मस्ताई है, सब योवन की अकड़ाई है ॥ टेर ॥ चढ़ता जब यौवन का पूर। निरखे तू दर्पण में नूर। टेढ़ी पाग झुकाई है ॥ जो० ॥ १॥ पोशाक सुंदर बदन सजावे। मूंछ्या घट दे बाल जमावे। घूमे इतर लगाई है ॥ २॥ मात पितासे करे लड़ाई। चले नार की आज्ञा मांई। नीति रीति विसराई है ॥ ३॥ मिला राज का अथ अधिकार। करे अन्याय और खेले शिकार। गरीबों की सुनता नांई है ॥ ४॥ पीवे भंग मित्रों संग जाई। सिगरेट बीड़ी अफीम खाई। भूला काम कमाई है ॥ ५॥ घर त्रिया तो लागे खारी। पर नारी प्राण-प्रिया प्यारी। सत् शिक्षा दूर हटाई है ॥ ६॥ चार दिनों की बहार दिखावे। खिला फूल वोही कुमलावे। अहमक गया पछताई है ॥ ७॥ एक युवानी फिर धन पले। राम बचावे तो रस्ते चले। करना मुशकिल भलाई है ॥ ८॥ मह्वा मंदर पधारे पूज्य। साल सतत्तर मगसर दूज। यों चौथमल दरशाई है ॥ ६॥

२०९ अहिंसा प्रचार.

(तर्ज—विना रघुनाथ के देखे नहीं दिलको करारी है)

सोहबत संत की ऐसी, अरे पापी भी तिर जावे। सुने एक बार जिन वानी, भवी वैराग्य में छावे ॥ टेर ॥ यात

अगले जमाने की। कहूं मैं ध्यान धर आदर। देश पंचाल के अंदर, कंपिल पुर कहलावे ॥ सौवत० ॥ १ ॥ संजती राजा है वहांका, साथ चतुरंग दल लेके। सजे शसतर केशरी वन, करन आखेट को जावे ॥ २ ॥ मंस लोभी हो आहू पर, लगाया तीर को सांधी, भगा मृग बीच झाड़ीके, पीछा ले राजा संग जावे ॥ ३ ॥ उसी जंगल की झाड़ीमें, ग्रध माली महा मुनिराज। तपोधन ज्ञानके पूरे, ध्यान जिनराज का ध्यावे ॥ ४ ॥ राजा तत्काल ही आया, घायल मृग वहां पड़ा पाया। फेर वहां देख मुनिवर को, नृप दिल बीच घबरावे ॥ ५ ॥ अश्वको छोड़ मुनि तट आ करे वंदन झुका सरको। खता को माफ कर दीजे, मुनि तो मौन में रहावे ॥ ६ ॥ खोफ खाके कहे मुनि से, संजती नाम राजा हूं, कृपा दृष्टी से तो बोलो, मेरा ज्यों जीव सुख पावे ॥ ७ ॥ ध्यान को खोलकर बोले, अभै देता तुझे नर पत। अभै तू भी दे जीवों को, ज़ुल्म क्यों ध्यान पर लावे ॥ ८ ॥ डरा तू देख के मुझको, ऐसे ही डरते तुझसे जीव। घड़ा ज़ुल्मों से तू भरता, दया दिलमें न तू लावे ॥ ९ ॥ किसके राज हैं भंडार, झूंठे साज सब शृंगार। रूप यौवन विज्जु झलकार, जीव के साथ क्या आवे ॥ १० ॥ हजारों नाम वर होगये, नहीं किसका निशां बाकी। मुसाफिर चार दिन के हो, पड़ा सब ठाठ रह जावे ॥ ११ ॥ खता कर्ता वोही भर्ता, यही आगम की वाणी है। सुना मुनिराज से

यह धर्म, तुरत वैराग्य नृप पावे ॥ १२ ॥ छोड़ दी राज रिध सारी, जैन शासन के मंझारी । हुआ संजती व्रतधारी, केवल पा मोक्ष में जावे ॥ १३ ॥ गुरु महाराज हीरालाल, सदा सुख संपदा पाजो । चौथमल को किया पावन, नित्य गुण आपके गावें ॥ १४ ॥

२१० आधुनिक-शिक्षा अपूर्ण.

(तर्ज-आखिर नार पराई है)

जो वर्तमान पढ़ाई है, जिमें रुची धरम की नाई है ॥ टेर ॥ मिले नहीं धर्म का योग । लगे फिर मिथ्यात्व का रोग । नहीं समझे लिहाज के मांई हैं ॥ जो० ॥ १ ॥ कोट पतलून गेटिस को धारे । मुख में सिगरेट कुत्ता लारे । दिया ऐनक नेन चढ़ाइ है ॥ २ ॥ गुड मोर्निंग कर मुख से बोले । राम राम हृदय से भूले । मिलते हाथ मिलाई है ॥ ३ ॥ घर में तो रोटी नहीं भावे, नित होटल में जाके खावे । चा-पानी की चाट लगाई है ॥ ४ ॥ सोडा वाटर सब मिल पीवे । जाति का कोई भेद न रहवे । घूमे घड़ी लगाई है ॥ ५ ॥ खड़ा २ पेशाब करे है । पीवे ब्रांडी जो बुद्धि हरे है । लगा कालर नकटाई है ॥ ६ ॥ आर्य चिन्ह चोटी कटवाई । ललाट पे लिये बाल रखाई । गये बूट पहन अकड़ाई ॥ ७ ॥ कई नास्तिक होके डोले । साधु संत से मुख नहीं बोले । दया हृदय बिसराई है ॥ ८ ॥ विद्या

का तो किया है दोष । कुसंगत को लेवो रोक । यह चौथमल जितलाई है ॥ ६ ॥

२११ पर स्त्री परिणाम.

[तर्ज--आखिर नार पराई है]

यह सतगुरु सीख सुनाई है । खोटी नार पराई है ॥ टेर ॥ पंच साक्षी फेरा खाया । उसी प्रीतम से कर कपटायां, तो तेरी होने की नांई है ॥ या० ॥ १ ॥ खुदकी नार करे परसंग । सुनतें वचन बदल दे रंग । ऐसे ही जिसे ब्याही है ॥ २ ॥ झूठा भक्ष पवित्र नहीं खावे । या कुत्ता या कौवा चावे । ऐसी गैर लुगाई है ॥ ३ ॥ अन्य पुरुषसे नैन मिलावे । बात अन्य मन में पर चावे । कहूं चरित्र कहां ताई है ॥ ४ ॥ देखो भर्तृहरी भूपाल । जान पिंगला बद चाल । तुरत गया छिटकाई है ॥ ५ ॥ कीचक ने निज प्राण गमाया । पद्मनाभ ने क्या फल पाया । रावण ने लंक गमाई है ॥ ६ ॥ सतत्तर साल मगसर मंझार । सोजतिये दरवाज बाहर । चौथमल आ गाई है ॥ ७ ॥

२१२ सुसंयोग.

(तर्ज-रेखता]

सोच दिलमें जरा गाफिल, वख्त तुझको मिला कामिल । बनाले काम वो तेरा, हो जावे बहिश्त में डेरा ॥

सो० ॥ १ ॥ पिता माता कुटुंब भाई, सभी मतलब की सगाई। लगाता जिग्र तू किस पर, अजल घूमे तेरे शिरपर ॥ २ ॥ खलक ये बागसा तू जान, फूल नेकी का ले इन्सान मति जा हाथ खाली कर, लेजा फल फूल तू बहतर ॥ ३ ॥ गफलत की नींद से तू जाग। इन्हीं जुल्मों से दूरा भाग। नशे की चीज जिनाकारी, पाप यह जगत में भारी ॥ ४ ॥ चाहे आराम तू अपना, श्री जिनराज को जपना। चौथमल कहे गुरु परसाद, कर जीवों की तू इमदाद ॥ ५ ॥
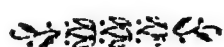
२१३ सराय की उपमा.

(तर्ज-- एक तीर फेंकता जा)

किस भरोसे रहे दिवाने, यह खल्क जारहा है। रास्ते की झूपड़ी में, तू क्यों लुभा रहा है ॥ टेर ॥ देखा सुबह सनम को, कूंचे में बन ठन निकले। सुना शाम को सनम का, कोई कफन लारहा है ॥ किस० ॥ १ ॥ सज सज के सेज फूलन की, दूल्हा दूल्हन सोते। दुल्हन आवाज देती, उठाती न हिल रहा है ॥ २ ॥ था शहनशाह जबर वह, सरताज था भरत का। अजल ने आके पकड़ा, अकेला वो जा रहा है ॥ ३ ॥ पोशाक गुल वदन पे, दरपन में देख सजता। कहता था मुल्क मेरा, जनाजे में जा रहा है ॥ ४ ॥ होना हुशियार जल्दी, मत रहे बेखबर तू। कर बंदोबस्त दूसर का, चौथमल जिता रहा है ॥ ५ ॥
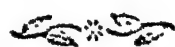
२१४ निन्दा परिणाम.

(तर्ज-आखिर नार पराई है)

जो पर की करे बुराई है। तो तेरे दोष उस मांई है ॥ टेर ॥ प्रश्न व्याकरण सूत्र मंझार। दूजे सम्वर में अधिकार। श्रीवीर जिनंद फरमाई है ॥ जो० ॥ १ ॥ बुद्धिवंत धनवान वो नाहीं। प्रिय धर्मी कुलवान वो नाहीं। वो नहीं दातार युग मांही है ॥ २ ॥ शूर वीर रूपवन्त है नांई। नहीं सौभाग्यवन्त गीतार्थी भाई। नहीं बहु सूत्रों की पढ़ाई है ॥ ३ ॥ तपसी नहीं नहीं परलोक। निश्चय मति है निडर अयोग। नहीं पापी लेत भलाई है ॥ ४ ॥ टेकी धेकी मच्छरी अपकारी। छता गुण वो देत निवारी। या ठाणायंग बतलाई है ॥ ५ ॥ एक जमाली नामा साध, वीर प्रभु का करा अपवाद। वो कुल मुखी की पदवी पाई है ॥ ६ ॥ गुरु प्रसाद चौथमल गाया, सेखे काल पाली में आया, सतत्तर जोड़ बनाई है ॥७॥

२१५ समय की दुर्लभता.

(तर्ज-कव्वाली)

ए दिल मौका ऐसा हरबार दुशवार है। नरभव की कुंज गली का, मिलना दुशवार है ॥ टेर ॥ दस्त चश्म तेरे जर जेवर खजाने डेरे। नहीं उस रोज तेरे हैरें, ये हरबार दुशवार है ॥ ए० ॥ १ ॥ सदा न हुश्न तेरा मानिंद दरिया बहता। क्यों गफलत के बीच रहता, ये हर बार दुशवार है ॥ २ ॥ ये ख्वाब सा जहां है, नां किसके साथ रहा है, खाली जलवा दिखा रहा है ॥ ३ ॥ जहां में दिल न लगा तू जुल्मों से बाज आ तू। कुछ भी तो ध्यान ला तू, हर वार

दुशवार है ॥ ४ ॥ होना मुनि है बहतर, पावेगा खास शिव घर। कहे चौथमल भला कर, पे हरबार दुशवार है ॥ ५ ॥

२१६ नाटकादर्श.

(तर्ज-तू ही तू ही याद आवेरे दरद में)

मनुष्यों की जिन्दगी नाटक दिखावे। नाटक दिखावे ने ज्ञानी फरमावे ॥ टेर ॥ मुष्टी बांधीने हुओरे नानड़ियो, रमत गमत में यह वय जावे ॥ मनु० ॥ १ ॥ वीसे सुन्दर परणिने नारी। चिन्ता रहित भोगों में लोभावे ॥ २ ॥ तीसे खुशी संसार मनावे। प्यारी से पुत्र लेइ ने खेलावे ॥ ३ ॥ आईरे जिन्दगी वर्ष चालीसे। सत्य बुद्धि कोई सत संग चावे ॥ ४ ॥ भूत भविष्य विचार पचासे। साठे नीचे उत्तर वह आवे ॥ ५ ॥ सत्तर लाठी लांबीरे डोकरिये, अस्सी जितव्य अल्प रहावे ॥ ६ ॥ नउ में मृत्यु तोर पे लोयो। सौ में राम शरण होई जावे ॥ ७ ॥ खाली हाथ अकेलो प्राणी। दूजी मुसाफिरि करण सिधावे ॥ ८ ॥ नाटक किया में प्रभु तुम जोया। दीजे रीझ या मना करावे ॥ ९ ॥ फकीरसा फेरी देवेरे अज्ञानी। बुद्धिमान धर्म लाभ कमावे ॥ १० ॥ गुरु हीरालाल प्रसाद चौथमल, आगरे से चल जयपुर आवे ॥ ११ ॥

२१७ कटुवाक्य परित्याज्य.

(तर्ज-धीरा चालो व्रज का वासी)

मत दीजो चतुर नर गाली, पियो समता रस की प्यालीरे ॥ टेर ॥ थें कटुक वाक्य मत बोलो, क्यों वैर बंधावो

खालीरे ॥ मत० ॥ १ ॥ मन मोती टूटी जावे, नहीं जुड़ता लीजो सम्भालीरे ॥ २ ॥ दी गाली द्रोपदी रानी, फिर दुष्ट दुशासन झालीरे ॥ ३ ॥ दी चौथमल या शिक्षा, थें चालो उत्तम चालीरे ॥ ४ ॥

३१८ सत्यादर्श.

(तर्ज-मांड)

सत्य कठिन करारी, ले कुन धारी, हरिश्चन्द्र टारी जी राज, हो सत्यधारी साहब, जननी थारी, थां उजवारी जी राज ॥ टेर ॥ ऊभी तारा बाजार मेंरे, देखे लोग अपार । हरिश्चन्द्र कहे सब सांभलोरे, गिरवे मेलुं नार ॥ सत्य० ॥ ॥ १ ॥ लोग देख आश्चर्य कियोरे, दीसे राज कुमार । मुख लूखो भूखो सहीरे, इण सें दुख अपार ॥ २ ॥ वस्तु बिके बाजार मेंरे, नार बिके नहीं कोय । बर धणी राजी हाथसुं सेरे, यह भी आश्चर्य होय ॥ ३ ॥ हद वार्ता लोक मेंरे नहीं सुनी किसी के पास । हरिश्चन्द्र सोची बातने, दिलमें हुए उदास ॥ ४ ॥ कौन देश का राजवी, कौन पूछे मम सार । काशी नगर के चौवटे, म्हारी बिके तारा दे नार ॥ ५ ॥ तारा कहे कन्था सुनो, पड़ी आज आ भीड़ । सामों सामी देखतांरे नैना खलक्या नीर ॥ ६ ॥ हीरा पन्ना या पहनती, मणी मोत्यों का हार । अब पहिनने

को वस्त्र न पूरा, दुख को छेह न पार ॥ ७ ॥ शूरवीर राजा तुम्हें, कहे रानी जोड़ी हाथ । अब तो सत्य दृढ़ राखजो, कलियुग रहसी बात ॥ ८ ॥ तारा वचन कान सुनी, राजा मन हुलसाय । चौथमल कहे एक वचन में चिंता तुरत मिटाय ॥ ९ ॥

२१९ मान्यता.

(तर्ज- तू ही तू ही याद आवेरे दरद में)

माना हुआ है सुख तेरा ॥ टेर ॥ प्रथम तन से कीनो आपो, मोह माया ने फिर दिया घेरा ॥ माना० ॥ १ ॥
मात पिता और राखन हारा, चक्री भमर गेंद करे मेरा ॥ २ ॥
भणि गुणी ने लग्न करीने, प्रेम बढावे रमणी के लेरा ॥ ३ ॥
नीति कर्तव्य अपना विसारा, जिम तिम कर रहा पैसा मेरा ॥ ४ ॥
बेटा बेटी पोता दोहिता, होगया अबतो कुटुम्ब घनेरा ॥ ५ ॥
यह धन म्हारो यह घर म्हारो, हिस्सादार से करे बिखेड़ा ॥ ६ ॥
कोर्ट में अब फिरे रखड़तो, इधर जराने दिना घेरा ॥ ७ ॥
लहे तरुणता ममता दिन दिन, नहीं होश करे फिकर घनेरा ॥ ८ ॥
परभव साथ चला नहीं कोई, छोड़ चला बनजारा डेरा ॥ ९ ॥
गुरु प्रसादे चौथमल कहवे । लेटर चला संग पुण्य पाप केरा ॥ १० ॥

२२० तारा राणी.

[तर्ज—माड]

यह तारा रानी, प्राण से प्यारी होत जुदारीजी आज । आवे याद हरवारीं, लागी करारी, दिल मंझारीजी आज ॥ टेर ॥ या तारा प्यारी घणीरे, जूदी न रही लगार । सत्य के ऊपर या विकी, मैं वेची सदर बाजार ॥ यह० ॥ १ ॥ कल्प वृक्ष जान लियो थें, मैं तो निकल्यो आक । रत्न लियो कंकर हुओ कांई मुझ सत्य ने तूं राख ॥ २ ॥ मुझ कारण संकट सहे तूं नाकां सल नहीं लाय । धन्य २ जननी थायरी, कहूं कहां लग तांय ॥ ३ ॥ मुहरों की गठड़ी बांधतारे, हरिश्चन्द्र दियो रोय । इस काशी नगर के चोवटे, म्हारो सगो नहीं कोय ॥ ४ ॥ राज्य भी छूटो, पाट भी छूटो, छूटो धन भंडार । आखिर जातां यह भी छूटी, अब किसी का आधार ॥५॥ चौथमल कहे राजा हरिश्चन्द्र, धीरज को चितलाय । सत्य जोगे संकट टले, सुख सम्पत फिर आय ॥ ६ ॥

२२१ चेतावनी.

(तर्ज—तूही तूही याद आवेरे दरद में)

जाग बटाउ क्यों करे मोड़ो । क्यों करे मोड़ो २ ॥ टेर ॥ वागण जैसी जरा अवस्था, सुन्दर तन पै कर रही दोड़ो ॥ जाग० ॥ १ ॥ शत्रु समान रोग कई भांति, प्रगट तो यह पटके फोड़ो ॥ २ ॥ फूटा घट से पानी निकले, ऐसे आयु हो

रख्यो थोड़ो ॥ ३ ॥ अबतो मनुष्यों विषयासक्ति से प्रेम भाव को क्यों नहीं तोड़ो ॥ ४ ॥ चौथमल कहे उत्तम जागे, पापी जन तो कर रख्यो जोड़ो ॥ ५ ॥

२२२ सत्यसार.

(तर्ज—दादरा)

सुनो सुजान सत्य की यह कैसी बहार है। सत्य के बिना मनुष्य का जीना धिक्कार है ॥ टेर ॥ आना हुआ हरिश्चन्द्र का, गङ्गा के तीर पर। रानी भी आई उस समय, पनघट पनिहार है ॥ सुनो० ॥ १ ॥ पड़ी निगाह रानी की, अपने प्राणनाथ पर। तन में देख दूबले, करती विचार है ॥ २ ॥ आंखों में जल आ लगी, हाय! क्या गजब हुआ। गुल हुस्न यह कहां गया, कहां वह दीदार है ॥ ३ ॥ गुरु हीरालाल प्रसाद, चौथमल कहे सुनो। अपना हुए सो आपका, करता विचार है ॥ ४ ॥

२२३ विश्वमोह निदर्शन.

(तर्ज–तू ही तू ही याद आवेरे दरद में)

क्यों तू भूला झूंठ संसारा झूंठ संसारा २ ॥ टेर ॥ इन्द्र धनुष रैन का स्वप्नो, नैन खुले यह कहां गया सारा ॥ क्यों० ॥ १ ॥ रज्जू में सर्प रजत सीप में। मृग तृष्णावत क्यों फिरे मारा ॥ २ ॥ सुषुप्ती जागृत अवस्था, पृथक् या

पें करो विचारा ॥ ३ ॥ चौथमल कहे तू अविनाशी । पाप पुण्य संग रूप आकारा ॥ ४ ॥

२२४ तारा का प्रत्युत्तर.

(तर्ज—वनजारा)

कहे तारा अर्ज गुजारी, पिउ चाकरणी मैं थारी ॥ टेर ॥ मेरे सिरके ताज कहलावो, थे इतना कष्ट उठावो जी । देखो तकदीर हमारी ॥ पिउ० ॥१॥ कहां राज तख्त भंडारा, कहां मणी मोतियां के हाराजी,करी कर्मों ने पनीहारी ॥ २ ॥ अहो लखते जिगर तुम प्यारे, अहो ! मुझ नैनों के तारेजी, प्रभु विपदा कैसी डारी ॥ ३ ॥ कहे हरिश्चन्द्र रानी तांई, नहीं उठे घड़ो दे उठाइजी, जब रानी करत पुकारी ॥ ४ ॥ कर जोड़ी बोली रानी, मैं भरूं विप्र के पानी जी, लगती है छोंत यह सारी ॥ ५ ॥ पिऊ जैसा सत्य तुम्हारा, मुझे मेरा भी सत्य प्याराजी, इस कारण यह लाचारी ॥ ६ ॥ पिउ देखी दुख तुम्हारा, मुझे लगता है बहुत कराराजी,लेकिन सत्य भी न छुटे लगारी ॥ ७ ॥ फिर रानी तरकीब बताई, लियो हरिश्चन्द्र घड़ो उठाइजी, गया दोनों निज २ द्वारी ॥ ८ ॥ ऐसे विरले मनुष्य हैं पाना, संकट में सत्य निभाना जी, हुआ हरिश्चन्द्र जहारी ॥ ९ ॥ सत्य से लच्मी पावे, मन वंछित सम्पत आवेजी,

सत्य धारो सब नर नारी ॥ १० ॥ गुरु हीरालालजी ज्ञानी, चौथमल को सिखाई जिन वाणीजी, मेरे गुरु बड़े उपकारी ॥११॥ शहर जावद के मांई, मैंने बीच सभामें गाईजी, सड-सठ के साल मँझारी ॥ १२ ॥
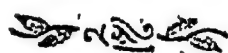
२२५ धर्म ही एक मात्र सहायक,

(तर्ज--तू ही तू ही याद आवेरे दरद में)

केवल तेरे धर्म सहाई २ ॥टेर॥ सुख परम दाता धर्म त्यागी। शास्त्र वाक्य को दूर हटाई ॥ के० ॥ १ ॥ शान्ति समाधी भंग करी ने, परदेशों में भटके जाई ॥ २॥ अन्याय विरुद्धाचरण करिने, यद्यपि ते द्रव्य सम्पदा पाई ॥ ३ ॥ काल आयु तुझ कंठ पकड़सी। सो धन पीछे न लेत बचाई ॥ ४ ॥ लाख कोई चाहे अर्थ खर्च दे। सिंह मृगवत् सके न छुड़ाई ॥ ५ ॥ माता पिता भगिनी सुत नारी। धन बांटे न होत सहाई ॥६॥ गुरू प्रसादे चौथमल कहे। वीर प्रभु को भजले भाई ॥ ७ ॥

२२६ कर्मों का खेल.

(तर्ज--आनन्द वर्ते हो जिनन्द तेरे नाम से)

कैसा कर्मों का यह खेल बताया केवली॥टेर॥मनुष्य सो किस गिनती में सरे, देवों का हाल सुनावे। छत्र चम-

वणा इकीस में पद, वीर जिनन्द फरमावे।। केसा०॥१॥कोई असुर तीजी नरक तले,सहल करण को जावे। त्यांथी चवीने सिद्ध शिला में, एकेन्द्री हो जावे ॥२॥ क्षीर समुद्र में व्यन्तर देव कई,मन की मौजां करता। त्यांथी चवी ने अपकाया में, जन्म तुरंत वो धरता ॥ ३ ॥ ज्योतिष देव कोई देवीके संग मान सरोवर मांही । त्यांथी चवीने कमल बीच में उत्पन्न होवे जाई ॥ ४ ॥ दूजा स्वर्ग को कोई देवता, देखे नाटक सारी । त्यांथी चवी ने निज कुण्डलमें, लेत जन्म वह धारी ॥ ५ ॥ संसार स्वर्ग का कोई देवता, पण्डकवन में आयो । त्यांथी चवीने बीच वावडी, मच्छ तणो तन पायो ॥ ६ ॥ अच्चू स्वर्ग को कोई देवता, मनुष्य लोक मझार। स्त्री के संग क्रीड़ा करतो, चवी ले तहां अवतार ॥७॥ चेत ! चेत ! कर धर्म अज्ञानी, खबर काल की नाहीं। गुरु हीरालाल प्रसादे चौथमल । जोधाणे जोड बनाई ॥ ८ ॥

---

२२७ सत्य सर्वस्व.

(तर्ज--इन्द्रसभा)

सत्य धरजो सब मानवी, लेई मनुष्य जन्म अवतार। सत्य सोही भगवंत है, सत्य सुख सम्पत दातार ॥ टेर ॥ अग्नि मिट्टी पानी हुए है सत्य की महिमा अपार । सत्य धारी हुओ राजा हरिश्चन्द्र, जिसका यह अधिकार ॥

सत्य० ॥ १ ॥ जब हरिश्चन्द्र ने मयांन से, तलवार निकाली बहार । चोटी पकड़ नीची करी, रोने लगी है नार ॥२॥ कहां पीहर कहां सासरो, और किससे करूं पुकार । तेरे कदमों में पड़ूं, कीजे जरा विचार ॥ ३ ॥ हे प्रीतम तारा-मति का, फिर मिलना दुशवार । कर जोड़ी अरजी करूं ना लिना मैंने हार ॥ ४ ॥ इन कर्मों में क्या लिखा है, सुणजो प्राण आधार । देख व्यवस्था रानी की, राजा करे विचार ॥ ५ ॥ चाकर हूं चंडाल का, हुक्म का तावेदार । सत्य मेरा सुन्दर डिगे, इसका मुझे विचार ॥ ६ ॥ कहे इन्द्र यूं आयकेरे, म्यान करो तलवार । धन्य तुझे धन्य रानी को, धन्य तुझ राजकुमार ॥ ७ ॥ रानी पुत्र का दुःख टला है, मिला सकल परिवार । सुखी होयने राजा हरिश्चन्द्र, पहुंचा अयोध्या मंझार ॥ ८ ॥ गुरु हीरालाल प्रसाद से कहे, चौथमल हितकार । सत्य धारी ऐसा नर सूरा, विरला है संसार ॥ ९ ॥

---

२२८ शिवपुर पथ प्रदर्शक कौन ?

[तर्ज-मांने मोतीड़ा मोलायदो म्हांके यदी झगड़ो ।]

मुझे कौन बतावेगा शिवपुर नगरी ॥ टेर ॥ दाय न आवे आगरोरे, दाय न आवे बीकानेर । जैपुर दिल्ली दाय न आवे, आवे ना दा अजमेर ॥ मुझे० ॥ १ ॥ बम्बई ने

कलकत्ता केरी, शोभा करे नर नार। सुरलोक तो मेरे दाय न आवे, तो ओरां को कांई शुमार ॥ २ ॥ अरिहंत भगवंत ना मिलेरे, उपन्यो पंचम काल। केवल ज्ञानी न मनःपर्यवज्ञानी, नहीं मिले लब्धी का धार ॥ ३ ॥ चौथमल शिवपुर के काजे, रह्यो घणो लुभाय। ज्योति में ज्योति किस दिन समाऊं, सफल मनोरथ थाय ॥ ४ ॥

२२६ दान की महत्वता.

(तर्ज-पंजी मूंडे बोल)

दान नित्य कीजेरे, अणी छती लच्मी को लावो लीजेरे ॥ टेर ॥ चार प्रकार है धर्म जिन्हों में, दान प्रथम कहावेरे। चित्त वित्त पातर शुद्ध मिल्या, संसार घटावेरे ॥ दान० ॥ १ ॥ चणा का छोड़ नदी की बेरी, पर को ज्ञान सिखावेरे। कलम किया वृक्ष बधे ज्यूं, दानी सुख पावेरे ॥ २ ॥ मिथ्यात्वी से सहस्रगुणों फल, समदृष्टि ने दीधारे। तेथी मुनि; मुनि से गणधर; तेथी जिन लीधारे ॥ ३ ॥ भरयो सरोवर रत्न खान में, प्यासा निरधन रहावेरे। ऐसे छत्ती पाय लच्मी लाभ गमावेरे ॥ ४ ॥ वृक्ष निष्फल और वन्ध्या नारी; कोई कर्म योग रह जावेरे। दया दान फल जान कभी; निष्फल नहीं जावेरे ॥ ५ ॥ अभय दान सुपात्र दान से, गोत्र तिर्थंकर होवेरे। ज्ञाता सूत्र अध्याय

आठवें, क्यों नहीं जोवेरे ॥ ६ ॥ धन्ना सेठ भव दान दिया से, हुआ ऋषभ जिनरायारे। नेम राजुल दाखों का धोवन; पूर्व वहरायारे ॥ ७ ॥ तीजा स्वर्ग का इन्द्र हुआ देखो भगवती मांईरे। चार तीरथ ने पूरवभव, साता उपजाईरे ॥८॥ ऐसा जान के दीजे दान, तू सीख हृदय में धरजेरे। गुरु प्रसादे चौथमल कहे, भव सागर तिरजेरे ॥ ९ ॥

२३० शिवपुर पथ प्रदर्शक गुरु.

(तर्ज-म्हांने मोतीड़ा मोलायदो म्हांको यही झगड़ो)

मुझे गुरुजी बतावेगा, शिवपुर नगरी ॥ टेर ॥ सुमति सुन्दर दो कर जोड़ी, ऐसी करी अरदास। सोच करो मत वालमारे, पूर्ण होगा आस ॥ मुझे० ॥ १ ॥ जो लब्धी धारी नहींरे, जो नहीं जिनराज। अणगार भगवंत आज विराजे; तरण तारण की जहाज ॥ २ ॥ मंदसोर में बड़ा मुनिवर, जवाहिर मुनि अणगार। ऐसा सद्गुरु आन मिल्या, तो निश्चय देगा तार ॥ ३ ॥ पूज्य महाराज है गुणवंता, और घणा मुनिराज। गुरु हीरालालजी सर्व सुधारे, चौथमल का काज ॥ ४ ॥
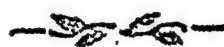
२३१ कुचाल त्याज्य.

(तर्ज—चालो २ सुगतगढ मांई)

कुचाल चतुर तज देना, मानों २ सद्गुरु का तुम

कहनारे ॥ टेर ॥ उत्तम कुल नर जिन्दगानी, हर बार मिले नहीं प्राणीरे ॥ कुचाल० ॥ १ ॥ थें गांजा भांग ने छोडो, पर त्रिया से स्नेह तोड़ोरे ॥ २ ॥ यह मांस भच्च मद पीना, त्याग २ तुझे कम जीनारे ॥ ३ ॥ मत पिओ तंबाखू नर नारी, यह लगे देह के कारीरे ॥ ४ ॥ थें कमती तोल निवारो, चौरी ने दूरी टालोरे ॥ ५ ॥ याने सेव्यां दुर्गति जावे, याने त्यागे सो सुख पावेरे ॥ ६ ॥ कहे चौथमल सुन भाई, मैंने सांच २ बतलाईरे ॥ ७ ॥

---

२३२ धार्मिक उदासीनता.

(तर्ज—जफ़री)

सीख सद्गुरु ने क्या दईरे, भूल गयो याद जरा नहींरे ॥ टेर ॥ मनुष्य भव मांही आवियो, कुल उत्तम तू पायो । दया धर्म नहीं सुहायो, जन्म तेरो फिट फिट सहीरे ॥ सीख० ॥ १ ॥ दया धर्म दियो छोड़ी, प्रीति कुगुरु से जोड़ी । मूल्य होगा फूटी कोड़ी, जिमें शंका तो काई नहींरे ॥ २ ॥ काम भोग मांहीं राच, रत्न तज लियो काच, रीति करे तीन पांच, कीच में डाल दियो मांहीरे ॥ ३ ॥ मानी हिंसा में धर्म, बांध्या चीकना कर्म, यम राखे नहीं शरम, मारेगा मुद्गर तेरे तांईरे ॥ ४ ॥ चौथमल गुरु प्रसाद, दया धर्म ले आराध, आगे आवेगा स्वाद, ले सुख शिव पुर में जाईरे ॥ ५ ॥
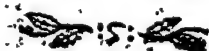
२३३ कुमता नारी.

(तर्ज—चुड़ाने परणावे वटीरे)

प्रीति पर घर मत कीजेरे, कुल मर्याद से रीजेरे।टेर। प्यारी से अंतर करी, पर घर मांडे प्यार । नीति शास्त्र मांही कह्यो, ते प्रीतम ने धिक्कार ॥ प्रीति० ॥ १ ॥ कुमता नारी कामण गारी, कर मीठी मनुहार । चेतन वालम को विल मांई, ले जावे बाग मंझार ॥ २ ॥ अनन्त काल तो हो गयो, रमता इनके संग । बड़ो अफसोस विटल हुआरे, कैसे सुधरेगा ढंग ॥ ३ ॥ सुमता सुन्दर को तुम्हें, मुजरो लीजो झेल । चौथमल कहे गुरु प्रसादे, दसो मुक्ति महेल ॥४॥

---

२३४ गुरु प्रार्थना.

(तर्ज—मीरां ऊंचा राणाजी का गोखरा)

गुणों का धारी हां ओ उग्र विहारी तारो रहो गुरुजी मांने वेग सुं ।टेर ॥इसी घोर संसार समुद्र में, एक आप तणो आधार हो ॥ १ ॥मेरी नाव पड़ी मध्य धार में, जिन्हे वेग लगाओ पहिले पार हो ॥ गुणा का धारी० ॥ २ ॥ मैं शरणे पड़्यो अब आप के, आप ही हो प्राणाधार हो॥३॥ मेरे कलेजे की कोर किकी आंख से, मेरे आप हो हृदय का हार हो ॥ ४ ॥ फूल सुगंध घृत दूध में, ज्यूं बसे मुझ हृदय मंझार हो ॥ ५ ॥पूर्व केशी श्रमण सुण्या महामुनि, जाने तारयो परदेशी भूपाल हो ॥ ६ ॥ संजती ने गृद्ध भाली

मुनि, श्रेणिक ने अनार्थी अणगार हो ॥ ७ ॥ इत्यादिक तास्या आपने, अब मारो करोजी उद्धार हो ॥ ८ ॥ मैं तो इस भव आपको भेट्या, सच्चा पंच महाव्रत धार हो ॥ ६ ॥ गुरु हीरालालजी से या विनंती, चौथमल को दीजो मुक्ति वास हो ॥ १० ॥ उन्नीसे छासठ अगण विदि, ग्राम नाई उदयपुर के पास हो ॥ ११ ॥

२३५ सर्व परिचय.

(तर्ज—लावणी छोटी कड़ी)

वही शूरवीर जो इस मन को बस करले, वोही तरु भवसिन्धु से तिरले ॥ टेर ॥ वह सती जो पति की आज्ञा माने, वही पुत्र रहे पिता वाक्य परमाने । है वही संत जो राग द्वेष नहीं ताने, वही पण्डित जो पर प्राण आत्मवत जाने । है वही बींद जो शिव सुन्दरको वरले ॥ वही० ॥ ॥ १ ॥ वही धनवंत जो निर्धन को पाले है । वही खानदां जो उत्तम चाल चाले है । है वही भ्रात जो बन्धु का कष्ट टाले है । है वही ज्ञानी, जो पर संशय गाले है । है वही होशियार जो, आतम कारज करले ॥२॥ वही व्यसनी प्रभु भजन का रंग लगावे । है वही सिद्ध जो गर्व बीच नहीं आवे । वही माशुख जो आशक के हृदय रहावे । है वही जन्म जो परमार्थ सद जावे । है वही पापी जो धन बेटी

का हरले ॥ ३ ॥ है वही जे पी (J. P.) जो जाति देश सुधारे। है वही मित्र जो मित्र का दुःख निवारे। है वही बड़ा जो क्षमा, धैर्यता धारे। वही सत्यवादी जो प्राण प्रण पर वारे। कहे चौथमल वही श्रोता जो शिक्षा धरले ॥ ४ ॥

२३६ सुशिक्षा.

(तर्ज—लावणी चाल लंगडी)

चेतन पाके मनुष्य जन्म को, प्रभु ध्यान ध्याना चहिये। दूं हित शिक्षा उसीको अमल बीच लाना चाहिये ॥ टेर ॥ शुभ कृत्य में विलम्ब न करना, भवसागर तरना चाहिये। ज्ञानी होके गर्व तुझको न कभी करना चाहिये। बुरे भले सुन वैन क्षमा कर पापों से डरना चहिये। पंडित होकर अकाल मृत्यु न कभी मरना चहिये। चाहे जैसी रूपवान हो पर नारी के जाना ना चहिये ॥ दूं० ॥ १ ॥ स्त्री पुरुष के मर्म किसी को कभी नहीं कहना चहिये। घर के भेद को किसी दुश्मन को ना देना चाहिये। कोई जीव के गुण को तज कर अवगुण लेना ना चहिये। करना भलाई, बुराई में न तुझे रहना चहिये। पाखंडी के जाल बीचमें तुझको आना ना चहिये ॥ २ ॥ अपने मित्र को विश्वास देकर कभी बदलना ना चहिये। उत्तम कुलकी चाल तज नीची ना चलना चहिये। जो अपने से मिले खुशी से उससे हर्ष मिलना चहिये। रांड भांड और अधम पुरुषें से सदा टलना चहिये।

धर्मी होकर रात्रि भोजन, तुझको ना करना चहिये ॥ ३ ॥ दश बोलों का योग मिला गफलत में सोना ना चहिये । गई बात को याद करके तुझे रोना ना चहिये । श्रावक की उत्तम करणी हाथों से खोना ना चहिये । माया जाल के झूंठे नातों में तुझे मोहना ना चहिये । पुद्गल सुख को जान विनाशित निजानंद पाना चहिये ॥ ४ ॥ शुद्ध भावों से देना दान और विद्या को पढ़ना चहिये । गुरु कृपा से चौथमल कहे ऊंचे दरजे चढ़ना चहिये । तप जप करके खास मुक्ति के बीच वरना चहिये । सफल जिन्दगी करना तुझ श्री वीर के गुण गाना चहिये ॥ ५ ॥

२३७ भावना की उत्कर्षता.

(तर्ज—पंजी मूंडे बोल)

महिमा फेलीरे २ इस शीलव्रत की, सुनजो बेलीरे ॥ टेर ॥ उत्तम ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप जप गुण को आगररे । मोक्ष नगर जाता संग बटाउ, सिंह के ज्यूं पाखररे ॥ महिमा० ॥ १ ॥ शील संध्या सर्व धर्म सधे, हुआ शील भंग सब भागेरे । इस कारण कर जतन शील का कहूं हूं सागेरे ॥ २ ॥ दान मांहि तो अभयदान है, सत्य में निर्वध वानीरे । तप में मोटो ब्रह्मचर्य, जग में वीर नाणीरे ॥ ३ ॥ वे मन धारे शील नर नारी, तो स्वर्ग बीच में जावेरे । त्रशला नन्दन सूत्र उववाई में फरमावेरे ॥ ४ ॥ बतीश ओपमा शीलव्रत की, पश्न व्याकरण में जहारीरे ।

सुरेन्द्र नरेन्द्र गुण गावेरे जिनका, धन्य ब्रह्मचारीरे ॥ ५ ॥ सुदर्शन को संकट मेट्यो, सुर नर होगया साखीरे । द्रोपदी की सभा बीच में लज्जा राखीरे ॥ ६ ॥ सिंह अजा हो विष अमृत हो सर्प पुष्प की मालारे । शील प्रभावे अग्नि हो वारि, टले जंजालरे ॥ ७ ॥ शीलवंत भगवंत बराबर सदा पवित्र रहावेरे । स्वर्गापवर्ग में जाय विराजे, सुख सम्पत पावेरे ॥ ८ ॥ उन्नीसे बहत्तर की होली, ग्राम समदड़ी मांहीरे । गुरु हीरालाल प्रसादे चौथमल जोड़ बनाईरे ॥ ९ ॥

—————<>+<>—————

२३८ आयुष्य की चंचलता.

(तर्ज कोई ऐसी चतुर सखी ना मिली, मोही पिव के द्वारे)

क्यों गफलत के बीच में सोता पड़ा, तेरा जावेगा हंस निकल एक पल में । ये तो दुनियां है देख मिसाले रण्डी, कभी उसकी बगल कभी उसकी बगल में ॥ टेर ॥ तूं तो फिरता है आप दूल्हा बन ठन, तेरे साथ बराती हैं कौन सजन । यहां किस से करे अपना सगपन क्यों खोता है वक्त खाली कलकल में ॥ क्यों० ॥ १ ॥ जो हिन्द के ताज को शीस धरे, जो लाखों करोड़ों का न्याय करे । वो राज्य को त्याग के फिरते फिरे, जो नूर से पूर थे तेज अकल में ॥ २ ॥ कहां पाण्डव कहां पृथ्वीराज चोहान । कहां बादशाह अकबर ओरंगजेब यह राज-तख्त सदा न सज्जन, कभी उसका अमल कभी उसके अमल में ॥ ३ ॥ इस माल औलाद जमीं के लिये, कई बादशाह मार

के मर भी गये । यह मुल्क मेरा यूं कहते गये, तो तूं कौनसी बाग की मूली असल में ॥ ४ ॥ जो प्यारी के महल में रहते अमन में, वो खाते हवा सदा बाग चमन में । मुनि चौथमल कहे चेतो सजन, जो ऐसे गये न समझत अजल में ॥ ५ ॥

२३६ कलिकालादर्श.

(तर्ज- लावनी अष्टपदी)

कहूं पंचम आरे का बयान, पहले ही फरमागये भगवान ॥ टेर ॥ शिष्य कहे भाषो गुरुदयाल, वर्तसी कैसा पंचमकाल, गुरु कहे शहर गांवड़ा होय गांवड़ा श्मशान सा जोय ॥ दोहा ॥ कितनेक कुलकी स्त्री, वेश्या के अनुसार । राजा होसी जम सरीखा, अल्प सुखी नर नार ॥ मिलत ॥ लालची होवेगा परधान ॥ प० ॥ १ ॥ पुत्र न माने बाप की कहन, शिष्य कम चले गुरु की एन, दुर्जन के होवेगा धनधान, सज्जन अल्प सुखी धनवान ॥ दोहा ॥ परचक्री भग देश में, बस्ती अल्प कंतार । होसी ब्राह्मण धन का लोभी, जभी दुर्भिक्ष विचार ॥ मिलत ॥ साधु भी छोड़गा निज स्थान ॥ २ ॥ समदृष्टि देव मनुष्य कम होत, मिथ्याति देव मनुष्य है बहुत । विद्या मंत्र का कम परभाव, मनुष्य को दुर्लभ देव दर्शाव ॥ दोहा ॥ गोरस में रस थोड़ो जानजो, नहीं धर्म में चित्त उदार । ताकत धन जिन्दगानी

वस्ती, कम हो पंचम आर ॥ मिलत ॥ जहां २ह मास मुनि गुणवान ॥ ३ ॥ साधु श्रावक की पडमा मत जान । गुरु कम देगा शिष्य को ज्ञान । शिष्य पण ऐसा होवेगा, गुरु का अवगुण जोवेगा ॥ दोहा ॥ शुद्ध आचारी महा मुनि, ऐसे अल्प अणगार । दया दान निषेध कई, होवे भेप का धार ॥ मिलत ॥ समाचारी गच्छ जुदा जान ॥ ४ ॥ म्लेच्छ राजा होगा बलवन्त, चलेगा हिन्दू जिसके पंथ, उत्तम के घर में नीच निशान, हिन्दू राजा कम होसी मान ॥ दोहा ॥ मुख मांगी वर्षा नहीं, नहीं भाई २ के प्रेम । चौथमल कहे सुखी होवेगा, जो धरे प्रभु को नेम ॥ मिलत ॥ सुन के अब चेतो चतुर सुजान ॥ ५ ॥

२४० सम्प से लाभ.

(तर्ज-लावनी छोटी कड़ी)

देता हूं ज्ञान की चूगल, एक चित्त सुनना । अब फूट छोड़ के शीघ्र सम्प कर लेना ॥ टेर ॥ एक ही ईंट से दीवार कहां बनती है । एक ही हाथ से ताली कहां बजती है । एक ही पहिये से गाड़ी का ना हो चलना । अब० । ॥ १ ॥ क्रिया ज्ञान एक २ से सिद्धि नहीं पावे, दोनों मिलने से शिवपुर मांही जावे । तकदीर और तदबीर दोनों उचरना ॥ २ ॥ जो दो के होवे सम्प उसके कौन तोले । हजारों आलिम में सिंह के मानिंद बोले । दुश्मन भी जावे

चमक इन से नहीं अड़ना ॥ ३ ॥ चार दोरड़ी मिलकर रस्सो गूंथे । करे बहुत जोर नर वो तोड़ा कहां टूटे । जूदी र दोरड़ी तोड़े न मुशकिल वरना ॥ ४ ॥ एक से एक मिल दश गुणों बल थावे । तीन चीज मिले सोरो देखा हो जावे फिर पर्वत नाखे तोड न्याय उर धरना ॥ ५ ॥ जिसके घर में सम्प उसे न डर कोई । इस फूट वश रावण ने लंका खोई । ऐसी जान आपस में अदावदी परिहरना ॥६॥ इसी सबब से हिन्दुस्थान के माहीं । औरो ने आकर अमला दिया जमाई । स्वभला के ख्वाहिश जरा ध्यान तो धरना ॥ ७ ॥ गुरु हीरालाल परसाद चौथमल कहवे । कोई अकलबंद गायन के भेद को लेवे । यों शहर जावरे उन्नीसे चौसठ में वरना ॥ ८ ॥

---

२४१ मिथ्या ममत्व त्याज्य.

(तर्ज-कव्वाली)

सुनरे तूं चेतन प्यारे, किसपे लुभा रहा है । दुनियां तो जैसे सपना तूं क्यों वहका रहा है ॥ टेर ॥ कहां खास वतन है तेरा, कहां पै लगाया डेरा । किसको कहे तूं मेरा क्या तुझको दिखा रहा है ॥ सु० ॥१॥ तू तो अखंड अवि-नाशी, अनंत गुण को राशी । पुद्गल तो है विनाशी, नाहक भ्रमा रहा है ॥ २ ॥ कपि घट कर फसाना, घटाकास-

सा बखाना। इस न्याय से बंधाना, वक्ता सुना रहा है ॥३॥ जड़ चेतन भिन्न जानी, बन निज आतम ध्यानी। कहे चौथमल ज्ञानी—सब में समा रहा है ॥ ४ ॥

—०—

२४२ प्रिया प्रलाप.

(तर्ज-दिलजान से फिदा हूं)

पिया की इन्तजारी में जोगन बन फिरूंगी। जो कहे जहां पै ढूंढू, जाने से ना डरूंगी ॥ टेर ॥ किसी ने कहा पिया तो, पर्वत की नोख पर है। वहां पर भी जाके देखा, ना मिला क्या करूंगी ॥ पिया ॥ १ ॥ किसी ने कहा जा मथुरा, किसी ने कहा जा गोकुल। ना मिला वृन्दावन में, अब ध्यान कहां धरूंगी ॥ २ ॥ कुमति के फांसे में आ, पिया बिछड़ गए हैं। वह मिल जाय एक विरीयां, तो प्यार से लडूंगी ॥ ३ ॥ पिया को संग लेकर, रहूं ज्ञान के भवन में। कहे चौथमल पिया की, बहियां पकड़ तिरूंगी ॥ ४ ॥

—ऽ×卐+ऽ—

२४३ उपदेश.

(तर्ज—एक तीर फेंकता जा)

जाती है उम्र तुम्हारी, प्रभु को भजो रे भाई। गफलत में क्यों पड़े हो, अनमोल देह पाई ॥ टेर ॥ सेजों के बीच

सोते, नारी का रूप जोते । अरे हरे सुख थाते, तू क्यों रहा लुभाई ॥ जा० ॥ १ ॥ पोशाक तन सजाते, इतर फुलेल लगाते । बागों के बीच जाते, सैलें करें सवाई ॥ २ ॥ दुनियां तो है तमाशा, पानी में जूं पताशा । जब निकल जाय स्वांसा, दे मिट्टी में मिलाई ॥ ३ ॥ कौन किसी के साथ जाता, नाहक तू दिल फसाता । कर धर्म साथ आता, दिया चौथमल चेताई ॥ ४ ॥

२४४ दया दिग्दर्शन.

(तर्ज-म्हारो श्याम करेला अवधार घनश्याम री महिमा अपार है)

दया को लेव दिल में धार, वो भव सिन्धु तिरे ॥ टेर ॥ दया धर्म सब में परधान, सब राजइय करते पर सान, देखो सूत्र दरम्यान, वो भव सिन्धु तिरे ॥ १ ॥ देखो नेम नाथ भगवान, त्यागी राजुल महा गुणवान, पशुओं पे करुणा आन, वो भव सिन्धु तिरे ॥ २ ॥ धर्म रुची तपसी अणगार, कीडियां की दया दिल धार । कड़वा तुंबाको कीनो आहार, वो भव सिन्धु तिरे ॥ ३ ॥ मेघरथ राजा हुआ भूपाल, शर्ण परे वा रख्या दयाल । कीना है काम कमाल, वो भव सिन्धु तिरे ॥ ४ ॥ फेर हुआ शिवी राजान, कबूतर की बचाई जान । है विष्णु में लिखा बयान, वो भव सिन्धु तिरे ॥ ५ ॥ नबी महम्मद हुआ हजूर तन को देना किया मंजूर । फाकता पे कीनी दया पूर, वो भव

सिन्धु तिरे ॥ ६ ॥ दया हीन मत तजा तमाम, सब मजहब में वही निकाम। मानो यह सच्चा कलाम, वो भव सिंधु तिरे ॥ ७ ॥ बैठो दया की जहाज मंझार, भवसिन्धु दे पार उतार। यही है तप जप को सार, वो भव सिंधु तिरे ॥ ८ ॥ चौथमल कहे सुनो सुजान, दया धर्म महा सुख की खान। यह है वीर फरमान, वो भव सिन्धु तिरे ॥ ६ ॥

२४५ चेत !

(तर्ज—कव्वाली)

करो दिल में जरा विचार, क्यों जुल्मों से नहीं डरते हो ॥ टेर ॥ ये माता पिता सुत दारा, तुम करो इसीसे प्यारा। नहीं चले तुम्हारे लार, फिर वृथा स्नेह करते हो ॥ करो ॥ १ ॥ ये राज्य तख्त भंडारा, जर जेवर माल हजारा नहीं आती साथ छदाम, नाहक फिर पच २ क्यों मरते हो ॥ २ ॥ खूबसूरत प्यारी तुम्हारा, यह काया गुलाब सी क्यारी। ये होगा आखिर छार, फिर तपस्या क्यों नहीं करते हो ॥ ३ ॥ यह जवानी हैगी दिवानी। नहीं इसमें छकना प्रानी। है बिजली का चमकार, कुसंगत से नहीं हटते हो ॥ ४ ॥ श्रीवीर जिनन्द्र को ध्यावे, तो जनम मरण मिट जावे। कहे चौथमल हितकार, भव सागर क्यों नहीं तिरते हो ॥ ५ ॥

२४६ कर्मादर्श.

(तर्ज—पंजाबी)

सज्जन मत बांधो कर्म, सत गुरुजी समझावे ॥ टेर ॥ लिखा भागवत दरम्यान, वालि के मारा राम ने वाण। हरि का सुनो मर्म, पुनः वाण पांवमें खावे ॥ सत० ॥ १ ॥ स्थावर जंगम प्राणी, पहुंचावे इनके प्राण को हानी। विगड़ जा सेकी सनम, कर्म उदय जब आवे ॥ २ ॥ था हरिश्चन्द्र सत्य धारी, वेची काशी में उस ने नारी। तजा नहीं अपना धर्म, खुद मरघट पर रहावे ॥ ३ ॥ लत्त वावन सहस्त्र जो रानी, भोगी ब्रह्मदत्त अभिमानी। बांधकर पाप कर्म, सीधा नर्क में जावे ॥ ४ ॥ ऐसी जान कर्म ना कमाओ, सभी जीवों पर करुणा लावो। मेटो कुल मिथ्या भर्म, मुनि चौथमल सत्य गावे ॥ ५ ॥

---

२४७ स्त्री धर्म.

(तर्ज--मजा देते हैं क्या यार)

जो होवे सच्ची नार, कुल धर्म निभाने वाली। पति-व्रता के आचार, उन पर ध्यान लगाने वाली ॥ टेर ॥ तन रखे अपना छुपाई, ना बोले नैन मिलाई। ना करे छल पतराई, नहीं हो सीना दिखलाने वाली ॥ जो० ॥ १ ॥ ना पति से सामना करती, नित नीचे नैनों से रहती। ससुर की लज्जा करती, ना पर घर के जाने वाली ॥ २ ॥ ना

कभी उदासी छावे, सदा सुख बीच दिन जावे। परोपकार चित्त चावे, मुख सौम दिखाने वाली ॥ ३ ॥ सत्य वदे सरल स्वभावे, दया दान करे हुलसावे। दीर्घ दृष्टी खूब लगावे, न लड़ लड़ानेवाली ॥ ४ ॥ पति सिवा पुरुष जग मांहीं, जानें समझे बाप और भाई। उसकी करते सर्व बड़ाई, ऐसे गुण धरने वाली ॥ ५ ॥ दमयंती सीता रानी, चेलना को वीर बखानी। रुखमन और तारा नार, सत्य धर्म निभाने वाली ॥ ६ ॥ चौथमल को शिष्य बनाया, गुरु हीरालाल मुनिराया। सतवंती का जिकर सुनाया, जो शोभा बढ़ाने वाली ॥ ७ ॥

२४८ मान त्याज्य.

(तर्ज--पंजाबी)

सद्गुरू देवे ज्ञान, सज्जन मत करना मान ॥ टेर ॥ मान बराबर अरि नहीं रे, मान करे अपमान। मान करे चिंता को उत्पन्न, बहु अवगुण की खान, फर्क इसमें मत जान ॥ सद्० ॥ १ ॥ मद कहा है मदिरा जैसा, नहीं आने दे ज्ञान। जाति, कुल, बल रूप लाभ तप, सूत्र माल की स्थान। विनयकी करता हान ॥ २ ॥ मगरूरी वश मूछ मरोड़े, टेढ़ो २ झांके। आप बड़ाई परकी नीची, बात बातमें फांके। फूल रहा फूल समान ॥ ३ ॥ वज्र दांत और बेंत, त्रण, लिजो मित्र पहिचान, ये चारों गतिके

देने वाले : चार किस्मके मान ॥ ४ ॥ मानी हो चाकर का चाकर, सदा परतंत्र रहावे । मुनि चौथमल कहे वह मानी फिर, कृत्य का फल पावे । न संदेह इसमें आन ॥५॥

२४६ स्त्री गुण.

(तर्ज—मजा देते हैं क्या यार तेरे बाल घुंघर वाले)

उसे जानों धारनी नार, गुण इकवीस के धरने वाली ॥ टेर ॥ सोम महा सुख दाय, सत्य वदे सरल स्वच्छकाय । नहीं क्षुद्र रूप रसाल, पापों से डरने वाली ॥ उसे० ॥ १ ॥ लज्जा भी रखे घनेरी, सम दृष्ट दया बहुतेरी । गुन रागन सरल स्वभाव, धर्म कथा के करने वाली ॥ २ ॥ शुद्ध कुल जात की जाई, करे काम सोच मन मांही । धर्मात्मा गुण की जान, शिक्षा सिर धरने वाली ॥ ३ ॥ सब घर का विनै जो करती । पर हित में दृष्टि वह धरती । लब्ध लखी वो नार वही कुल उद्धार ने वाली ॥ ४ ॥ गुरु हीरालाल मुनि राई कहे चौथमल हुलसाई । ऐसी जानों रुकमण नार, जो गोविन्द वरने वाली ॥ ५ ॥

२५० शिक्षा.

(तर्ज—लावणी बेर खड़ी)

पा मोका सुकृत नहीं करता, वह जहां में इन्सान नहीं । हीरा त्याग सुकर को लेवे, वह जौहरी प्रधान नहीं

॥ टेर ॥ जिसके दिलमें रहम नहीं, उसके दिलमें रहमान नहीं। जिसने सतसंग नहीं करी, उसको शहूर और ज्ञान नहीं। जिसके वदन में नहीं नम्रता, उसको मिलता मान नहीं। वह वैद्य है क्या दुनियां में, जिसे नवज पहिचान नहीं। वह मोक्ष कैसे जावे, जिसका साबित ईमान नहीं ॥ हीरा० ॥ १ ॥ जो अनाथ की करे न रक्षा, उसे कहे श्रीमान नहीं। जो राग द्वेष को नहीं छोड़े, वह भी साधु महान नहीं। विश्वास देके जावे बदल, उससा फिर बेईमान नहीं। जिसने इस मन को नहीं जीता, वह बहादुर बलवान नहीं। उसे सम दृष्टि कैसे कहें, जिसे पाप पुण्य पहि-चान नहीं ॥ २ ॥ उसका भरोसा कैसे आवे, जिसके एक जबान नहीं। जो पक्षपात से कथन करे उसको भी कहे गुणवान नहीं। नेक काम से गुम रहा करता, उससा फिर शैतान नहीं। जो जुल्म करे कातिल कहलावे, उसका बहिश्त मकान नहीं। जो इबादत नहीं करे, वह हिंदु मुसलमान नहीं ॥ ३ ॥ जिसकी इज्जत नहीं दुनियां में, उसका होता जमान नहीं। जो लालच में आ बेटी बेचे, वह भी बुद्धिमान नहीं। जो देश, धर्म की करे न सेवा, उसका जन्म प्रमाण नहीं। मुनि चौथमल कहे शिक्षा न धारे, उससा कोई अज्ञान नहीं। जो वीर प्रभु का भजन करे, तो उस जैसा धनवान नहीं ॥ ४ ॥
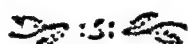
२५१ दुराचरण से हानि.

(तर्ज—मज़ा देते हैं क्या यार तेरे)

कैसे इज्जत रहे तुम्हारी, हो पर नार के जाने वाले । पर नार के जाने वाले, कुल में दाग लगाने वाले ॥ टेर ॥ इतर फुलेल लगाई, फिर टेढ़ा पेच झुकाई । पोशाक को खूब सजाई, हवा के खाने वाले ॥ कैसे० ॥ १ ॥ गलियों में चक्कर लगावे, कोई नार नजर आजावे । फिर वांही गोते खावे, नहीं पैर बढ़ाने वाले ॥ २ ॥ नहीं नींद रात को आती, सुपनेमें वही दिखाती । रोटी भी पूरी नहीं भाती, कहे न भूख बहाने वाले ॥ ३ ॥ जब गरमी रोग बढ़ जावे, धरे पांव चला नहीं जावे । कहने में बहुत शरमावे, ऐसे दुख उठाने वाले ॥ ४ ॥ फिर पति बात सुन पावे, जूतों से मार लगावे । खा मार चुप रह जावे, नहीं मुख के उठाने वाले ॥ ५ ॥ हो खबर मुकदमा चढ़ता, हाकिम भी न्याय यहीं करता । वहां पर भी सजा यही पावे, तन धन को गवांने वाले ॥ ६ ॥ देखो जैसी नार तुम्हारी, वह करे और से यारी, । नहीं बात लगे तुम्हे प्यारी, समझो कहे समझाने वाले ॥ ७ ॥ सुनोरे शोकीन लाला, क्या युवा वृद्धा व बाला । पर त्रिया का मुँह काला । बचो कहे बचाने वाले ॥ ८ ॥ गुरु हीरालालजी ज्ञानी, कहे चौथमल यह बानी । उत्तम ने दिल में ठानी, अच्छी नजर लगाने वाले ॥ ९ ॥

२५२ हर भजे सो हरका.

(तर्ज—लावनी बहर खड़ी)

दया धर्म जो करे उसीका, श्री महावीर का यह फरमान। तप संयम की महिमा जैन में, नहीं जाति का कोई अरमान ॥ टेर ॥ राज वंश में प्रगट हुए, श्री तारण तरण चौवीस भगवान। जैसे अंधकार मेटन को, सुबह प्रगट होता है भान। चक्रवर्ती छ खण्ड के नायक, एक छत्र धारी थे महान। तज कंचनके महल पधारे, वनके बीच लगाया ध्यान॥

शेर.

हरि हलधर महा बली, श्रेणिक जैसे भूपति।
जैन धर्म धारण किया, शास्त्र में महिमा कथी ॥
राजा और युवराज कई, सेठ और सेनापति।
तप संयम धारण करी, गये स्वर्ग कई शिव गति ॥

[मिलत] तप संयम ने भृगु पुरोहित, जयोप विप्र का किया कल्याण ॥ तप संयम० ॥ १ ॥

पैदा हुए चंडाल के कुल में, हरकैसी कुरूप आकार, तप संयम को किया आराधन, उत्तराध्येन में है अधिकार। तिंदुक वृक्ष का यक्ष मुनि की, सेवा में रहता हरवार। मासखमन का आया पारना, यज्ञ बीच गये लेने आहार ॥

शेर.

विप्र देख मुनिको, करने लगे तिरस्कार जी।
राज सुता वरजे न माने किया विप्र गुरु दप वारजी॥

माफी मांगी विप्र ने, लिया मुनि ने आहार जी ।
अशर्फी जल पुष्प बरसे, हुई दुंदुभी ललकारजी ॥
[मिलत] धन्य धन्य धन्य कहे विप्र, फिर गये मोक्ष केवल ले ज्ञान ॥ २ ॥

अर्जुनमाली विद्धुषमति संग, पहुंचे यक्ष मंदिर दरम्यान । छः शख्सों ने करी अनीति, नारी से जब वहां पर आन । दैव योग से माली ने उन सातों के लिए लूट प्रान । आस पास वो फिरे पधारे, उसी वक्त वहांपर वर्धमान ।

शेर

गया सेठ सुदर्शन दर्श को, माली मिला बीच आनजी ।
जोर चला नहीं सेठसे, गया देव निकल निज स्थानजी ॥
सेठ संग उस मालीने, भेटे श्री भगवान जी ।
ज्ञान सुन संयम लिया, तपस्या करी प्रधानजी ॥
[मिलत] अन्तगढ में हुआ केवली, सुनो भाविक जन धर के ध्यान ॥ ३ ॥

सकडाल नामा प्रजापति था, तीन क्रोड़ सोनैया पास ।
दस सहस्र गौ दुकान पानसे, अगनमति नारी थी खास ।
गौशाले का था ये शिष्य, देव योग भाग हो गया प्रकाश ।
वीर प्रभु का होगया श्रावक, व्रत धारी सद्गुणी की रास

शेर

सुनके गौशाला आगया, कई कदर समझायजी ।
मगर पक्का नहीं डिगा, दृढ़ रहा धर्म के मांयजी ॥

तन मन से पडिमा वही, करणी करी उत्सायजी ।
सलेखणा कर सुर हुआ, पहिले कल्प में जायजी ॥
[मिलत] उपासकदसा में लिखा जिकर, महाविदे बीच पावे निर्वाण ॥ ४ ॥

दया धर्म के झंडे नीचे, जो कोई शरण भी आता है । तप संयम को धारन करके, वही मोक्ष में जाता है । भगवान और भक्तों के बीच, नहीं न्यात जात का नाता है । गुड़ लगता है सबको मीठा, जो कोई इस को खाता है।

शेर

इसी तरह से धर्म भक्ति, सब को तारण हारजी ।
उठावे उसके बापकी, भूमि पड़ी तलवारजी ॥
जहाज उतारे सकल को, नहीं करे इन्कारजी ।
केवली के वचन को, ले धारके हो पार जी ॥
[मिलत] गुरुप्रसादे चौथमल कहे, सुत्रों का देकर प्रमाण ॥ ५ ॥

---
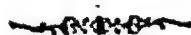
२५३ रावण को बिभीक्षण ने कहा.

(तर्ज—मजा देते हैं क्या यार)

सुनो रावन मेरी बात, पर नार के लाने वाले ॥ टेर ॥
कहे लङ्का के लोग लुगाई, रावण लायो नार पराई । बांधव के नहीं समाई, अपयश के उठाने वाले ॥ सुनो० ॥ १ ॥ यों कहे बिभीषण भाई, ये क्या कुबुद्धि कमाई । कहे जगत करी अन्याई,

तुफान उठाने वाले ॥ २ ॥ या रामचन्द्र की रानी, सतियां में श्रेष्ठ बखानी । तैंने यह क्या दिल में ठानी, कुल के दाग लगाने वाले ॥ ३ ॥ मेरे दिल में यह नहिं भाई, मैं घर में दूं समझाई । दे पीछी इसे पठाई, निज लाज गमाने वाले ॥ ४ ॥ कहे रावण कोप भराई, मत कहना बात फिर आई । बस समझो मन के मांही, निज सुख के चाहने वाले ॥ ५ ॥ लगे रामचन्द्र तुझे प्यारा, तो जा उसके पास ततकारा । जब शरण राम का धारा, बिभीषण सत्य पे रहने वाले ॥ ६ ॥ कही बात बहुत सुखदानी, रावण ने उल्टी तानी । वदे चौथमल सत्य बानी, कहे कहां तक कहने वाले ॥ ७ ॥

२५४ अज्ञात का उपदेश असार.

[तर्ज—लावणी बेर खड़ी]

जो खुद ही नहीं समझा, वह गैरों को क्या समझावेगा । जो खुद ही सोया पड़ा हुआ, सोते को क्या जगावेगा ॥ टेर ॥ जो हर सूरत से लायक नहीं, वह गैरों पे क्या ऐसान करे । जो जहाज खुद ही फूटा, वह क्या पार इन्सान करे । जो खुद ही दरिद्री है, वह गैरों को क्या धनवान करे । जिसकी बात माने नहीं कोई, वह क्या वृथा मान करे । जो खुद ही बन्धा हुआ है, वह गैरों को क्या छुड़ावेगा ॥ जो० ॥ १ ॥ जो खुद ही व्यसनी है, वह गैरों को क्या उपदेश करे । जो खुद खत लिखने

वाला है, वह क्या उसमें विशेष करे। जिसका दिमाग काम नहीं देता, वह क्या हर एक से बहस करे। जो असली में है झूठा, वह सच्चा ऊजर क्या पेश करे। जो विषयों में रहे रक्त वह कैसे गुरु कहलावेगा ॥ जो० ॥ २ ॥ खुद की जिसको खबर नहीं, वह शख्स खुदा को क्या जाने। जो खुद ही पक्षपाती बन बैठा, वह इन्साफ को क्या छाने। जिस में नहीं है सहन शीलता, उसको कौन बड़ा माने। जिसका जिसको नहीं तजुर्बा, वह उसको क्या पहचाने। जो खुद ही भूला हुआ है, वह गैरों को क्या बतलावेगा ॥ जो० ॥ ३ ॥ जिसके दिल में दया धर्म नहीं, वह दुनियां में क्या इन्सान। जिसका चित्त चंचल भोगों में, उसको कठिन आना धर्म ध्यान। आराम आकबत में कब पावे, दिया नहीं जिसने यहां दान। हिताहित का बोध हो कैसे, जिसने सुना नहीं गुरु से ज्ञान। मुनि चौथमल कहे बबूल बोके, कैसे आम वह खावेगा ॥ जो० ॥ ४ ॥

२५५ रक्षक की आवश्यकता.

[तर्ज—मजा देते हैं क्या यार तेरे]

कोई नर ऐसा पैदा हो, भारत धीर बंधाने वाला ॥ टेर ॥ जो होते आज गोपाल, तो न करते किसी से सवाल। कैसा आया है दुष्काल, सत्य मर्यादा मिटाने वाला ॥ कोई० ॥ १ ॥ बढ गए ठग हत्यारे चोर, खरीदें बन २ हिन्दू ढोर। निर्दयी जुल्म

करते हैं घोर–सुख का नाश मिटाने वाला ॥ कोई० ॥ २ ॥ देखो आरज नाम धरावे, जिनको जरा शर्म नहीं आवे । हड्डी चमड़ा काम में लावे–उत्तम थान लजाने वाला ॥ कोई० ॥ ३ ॥ जो वधिक है नरनार, उनसे करते हैं व्योपार । वाह वाह अच्छे हुए साहूकार, मूल का मूल गंवाने वाला ॥ कोई० ॥ ४ ॥ बस खाना या करना कमाई, नर देह इसी लिए क्या पाई । जन्म ले जननी को लजाई, पशुसा जन्म बिताने वाला ॥ कोई० ॥ ५ ॥ नर के बनते जुम्मेदार, वकील व बैरिस्टर मुखत्यार । सुने कौन पशु की पुकार–है कोई दया चाहने वाला ॥ कोई० ॥ ६ ॥ कहे चौथमल पुकार, दीजो गफलत की नींद निवार । हो तब भारत का उद्धार, ए नर रत्न कहाने वाला ॥ कोई० ॥ ७ ॥

२५६ चेतन की व्यवस्था.

(तर्ज–सती सीता का धीज पे आना हुआ)

तेरा चेतन यह नरतन का पाना हुआ । खाली ऐशों में फिर क्यों दिवाना हुआ ॥ टेर ॥ करो दिल में विचार, पहुंचा नरक मंझार, उठी यम की जो धार । देवे गुर्जों से मार, शामली वृक्ष के तले बैठाना हुआ ॥ तेरा० ॥ ताते आसन बेठाय, तावों तरवो पिलाय, नाक कान छिदाय, उपर खार छिटकाय, यह पापों का बदला चुकाना हुआ ॥ तेरा० ॥ २ ॥ भोगी पशु की योन, उठाई मिट्टी की

गौन, फिर करके तू मौन, रचा करे वहां कौन, घास पानी पे दिन का बिताना हुआ ॥ ३ ॥ कीट चिंटी पतंग, टीड मक्खी ज्यों भृंग, घुमा होके विहंग, करा मुर्गा हो जंग, घोड़ा बनके जो इक्का फिराना हुआ ॥ तेरा० ॥ ४ ॥ हुआ देव अवतार, गले मोतियों का हार, करे अप्सरा प्यार, पड़े नाटक झंकार, वहां शीश पे ताज सजाना हुआ ॥ तेरा० ॥ ५ ॥ कभी असुर होय, कुल मुखी में जोय, गिना नीचा तहां तोय, देव छिये न कोय, अपमान का दुख उठाना हुआ ॥ तेरा० ॥ ६ ॥ लिया गर्भ मंझार, रजशुक्र का आहार, उल्टा झूलातीवार, तिर्छी योनी के द्वार, कट कटके निकल जब आना हुआ ॥ तेरा० ॥ ७ ॥ आया गर्भ के बाहर, हुआ चुडा चमार, भील मीना गंवार सही क्षुधा अपार, घास लकड़ी का बोझा उठाना हुआ ॥ तेरा० ॥ ८ ॥ उत्तम कुल में जो आन, सुन ले सूत्र तूं कान, करले खूब धर्म ध्यान, होवे जन्म प्रमान, सद्गुरु का ऐसा फरमाना हुआ ॥ तेरा० ॥ ९ ॥ उन्नीसे सतत्तर के साल, पूज्य मन्ना जो लाल, जोधपुर में दयाल, चोमासो कियो रसाल, चौथमल का सभामें यह गाना हुआ ॥ तेरा० ॥ १० ॥

२५७ मोक्षाभिलाषी.

(तर्ज—कोई चतुर सखी ऐसी न मिली)

मेरा प्यारा सात राजू पै बसे, मेरे पैरों में चलने का

जोर नहीं । कोई ऐसा सनम मुझे देवे मिला, उससा उपकारा और नहीं ॥ टेर ॥ आप बसो हो मे त्तनगर, जहां बादल न विजली अगन का खतर । वहां शाम सुबह नहीं शमसोकमर, फिर हजूर मजूर का तौर नहीं ॥ मेरा० ॥ ॥ १ ॥ न रूप न रंग संयोग वहां, न योग न भोग न रोग न शोक । न खान न पान न तान न मान, वहां जन्म मरण की ठौर नहीं ॥ मेरा० ॥ २ ॥ मैं मोहके मुल्क में नाहीं रहूं, मुझे प्यारी लगे शिव की नगरी । मनभाता यही मिलुं वहां पे आइ, जहां जुल्म का कोई शोर नहीं । मेरा० ॥ ३ ॥ संजम देना था बहुत कठिन; अरे ! चौथमल को सुनो सज्जन । डर दूर किया संजम जो दिया गरु हीरालाल सा और नहीं ॥ मेरा० ॥ ४ ॥

२५८ उपमित विश्व.

(तर्ज-ठुमरी-रथ चढ़ रघुनंदन आवत है)

कैसा विश्व की रेल बनी, एक आवत है एक जावत है ॥ टेर ॥ चारों गति के लम्बे चाले । चारों दग बिछावत है ॥ कैसी० ॥ १ ॥ चौरासी लक्ष योनिसे फिर, कोई छोटे बड़े कहावत है ॥ कैसी० ॥ २ ॥ कई सवारी आकर उतरी, वहां बाजा कई बजावत है ॥ कैसी० ॥ ॥ ३ ॥ कहीं सवारी लदी पड़ी है, वहां पर रुदन मचावत

है ॥ कैसी० ॥ ४ ॥ रीति भरी भरी की रीति, इम गाडी चक्कर खावत है ॥ कैसी० ॥ ५ ॥ ऐसा तार लगा कुदरत का, गाड़ी नहीं टकरावत है ॥ कैसी० ॥ ६ ॥ ठौर २ पर है स्टेशन, नहीं आगा पीछा पहुंचावत है कैसी० ॥ ७ ॥ सिद्धपुर है एक शहर अनोखा, वहां गये बाद नहीं आवत है ॥ कैसी० ॥ ८ ॥ पाप पुण्य धर्म ये तीनों, कुल्ल य यू टिकिट बटावत है ॥ कैसी० ॥९॥ नरक तिर्यंच मनुष्य देवता, न्यारे न्यारे पठावत है कैसी० ॥१०॥ चौथमल कहे काल है इञ्जन, दिन रात यह धूम मचावत है ॥ कैसी० ॥११॥
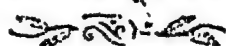
२५९ राजुल प्रार्थना.

(तर्ज-ऐसी चतुर सखी न मिली)

मेरा पिउ गिरनारी पर जाय बसे, मैं किसको कहूं मेरी कौन सुने। आप विराजते हमसे निकट तो वहां की खबरिया मंगालेती ॥१॥ मेरे दिल में आवे जोगनिया बनूं, मैं तो छोड़ शहर उसी वन में चलूं। ऐसी प्रभुजी की वानी जबर, मेरी नींद अनादि की उड़ादेती ॥ २ ॥ मैं तो पिया तेरे दर्शन की प्यासी, मुझे सांवरी सूरत दिखाओगे कब। जो नेम पिया मिलते वहां तो चरणों में शीश झुकादेती ॥ ३ ॥ सती राजिमति भेटे नेम जती, गई मोक्ष गती नहीं झूठी कथी। चौथमल की रती बधे नित्त अति, लगी प्रीत मेरी नेम जिन सेती ॥ ४ ॥

२६० कृष्ण महिमा.

(तर्ज—घनश्याम की महिमा अपार है)

पावे न कोई पार श्री कृष्ण की महिमा अपार है ।।टेर।। वसुदेव देवकी रानी । जिनके जनमें सारंग प्राणी । भाद्रव जन्माष्टमी सार ।। श्री० ।। १ ।। वसुदेवजी फौरन आया, कोमल हाथ से नन्द उठाया । निकल भवन से बाहार ।।श्री०।। ।। २ ।। लगे कंस का पहरा भारी । सिंह शूरमा विविध प्रकारी । लेवे नींद रखवार ।। श्री० ।। ३ ।। श्रे कृष्ण का अंगुठ अड़िया । ताला टूट तुरंत सब पड़िया । आये यमुना तट पे तिहि बार ।। श्री० ।। ४ ।। गाज बीज ने बरसे पानी, करी सहाय देवता आनी । पहुंचा है मथुरा के द्वार ।। श्री० ।। ५ ।। उलट पूर यमुना को जावे । मार्ग नहीं निकलवा पावे । करे वसुदेवजी विचार श्री० ।। ६ ।। कृष्ण पांव गया जल के लाग, यमुना जल का हुआ दो भाग । पैठा गोकुल के मंझार ।। श्री० ।। ७ ।। नन्द अहीर यशोदा रानी । जिनको सोंपा सारंग प्राणी । लियो धर हर्ष अपार ।। श्री० ।। ८ ।। वसुदेवजी पीछे आए । इस भेद को कोई न पाए । किया नन्दने महोत्सव श्रीकार ।। श्री० ।। ९।। द्वितीय चन्द्रवत बढ़े गोपाल । निरख यशोदा रहे खुश हाल । करे देवकी दर्शन वारंवार ।। श्री० ।। १० ।। गिरिराज पर्वत को धारा । काली नाग को नाथी डारा । धेनु चरावे मुरार ।।श्री०।। ।। ११ ।। वंशी राग अलापे टेर । गोपियां फिरे हरि के लेर ।

वर्ष सोलहका अधिकार ॥ श्री० ॥१२॥ देखो उनके पुण्य सवाया। तीन खंड का नाथ कहाया। शोभा करे नरनार ॥ श्री० ॥१३॥ धर्म साज दे अधिक मुरारी। गोत्र तिर्थंकर के अधिकारी। यह आगम में अधिकार ॥श्री०॥१४॥ गुरु प्रसाद चौथमल गावे। उन्नीसे साल सत्तर आवे। जोधाणे जोर्डा जिवार ॥श्री० ॥ १५ ॥

---

२६१ राजुल उपदेश.

(तर्ज—अरे रावण तू धमकी बताता किसे)

अरे रह नेमी! क्यों मन को बिगाड़े, तेरे झांसे में आने की हूं ही नहीं। तेरा रूप इंद्र पुरिंद्र बन, तो भी मैं ललचानेकी हूं भी नहीं ॥ टेर ॥ तेने सीस मूंडा लेकिन मन न मूंडा, कह दिया वाक्य सोचा नहीं ऊंडा। पर लोक बिगड़े यह लोक भूंडा, और मैं तुझे पानेकी हूं भी नहीं ॥ अरे० ॥ १ ॥ क्यों गज चढ़ खर पर सुरत धरे, तुझे बार २ धिक्कार पड़े। इस जीनेसे तो मरना ही सरे, फिर और तो कहने की हूं भी नहीं ॥ अरे ॥ २ ॥ कहीं गांव नगर पुर शहर फिरे, खूब सूरत नार पे नैन धरे। ऐसे जो नियत तेरी बिगड़े, तो संजम पलने का है भी नहीं ॥ अरे० ॥३॥ सती राजिमतीजी के बैन सुनी, आए ठिकाने रह नेम मुनि। कहे चौथमल दोनों हुए हैं गुनी, गये मोक्ष फिर आने के है भी नहीं ॥अरे० ॥ ४ ॥
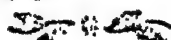
२६२ राम सेना.

(तर्ज—ख्याल)

आया रामचंद्र महाराज लंका गढ़ ऊपरे ॥ टेर ॥ राम लखन सुग्रीवजी सरे, अंगद और हनुमान । भामण्लादिक शूरमा सरे, फौजों संग बलवान ॥ आया० ॥ १ ॥ मार्ग बीच कई नृपति जीती, उनको भी संग लीना । सेतू बांध समुद्र उतर डेरा, हंस द्वीप में दीना ॥ आया० ॥ २ ॥ रावन सुन कर कोपियो सरे, सेना पे हुक्म चढ़ाया । मारो ताड़ो फर्ज बजाओ, जो नमक हमारा खाया ॥ आया० ॥ ३ ॥ आय बिभीषण कहे भ्रात को, जल्दी से बिनशे काज । बिना सोचे कर्म कमाया, तूंने खोई कुल की लाज ॥ आया० ॥ ४ ॥ जिनकी लाया कामिनी सरे, लेवा आसी न्याय । दियां से पीछा फिरे स थारी, इज्जत सब रह जाय ॥ आया० ॥ ५ ॥ इंद्रपुरी सी लंका नगरी, क्यों खोवे खुद हाथ । इंद्रजीत कहे काका डरकन, मत कर ऐसी बात ॥ आया० ॥ ६ ॥ प्रथम भ्रात से कपट करी, दशरथ के तांई बचाया । अब भी उबार्यो चाह, भेद तेरे मनका हमने पाया ॥ आया० ॥ ७ ॥ इंद्रजीतलूं सो बल मेरा, राम लखन क्या चीज । अब नहीं छोड़ो साबता सरे, नहीं होवे बीज की तीज ॥ आया० ॥ ८ ॥ नहीं अरि से हेत हमारे, सुन बेटा नादान । देखुं जैसी मैं कहुं सरे, होने वाली हान ॥आया०॥९॥ काम अंध है पिता तुम्हारा, तूं जन्मान्ध समान । पुत्र नहिं तूं अरि बराबर, अब जाती लंक पहचान ॥ आया० ॥ १० ॥ रावन

सुन कर कोपियो सरे, मांडयो भ्रात से जंग। दोनों वीर जब अड़गया सरे, लंग होगया दंग ॥ आया० ॥ ११ ॥ इंद्रजीत और कुंभकर्ण मिल, दोनों के तांई छुड़ाया। मन मोती गया टूट फेर, अब मिलता नहीं मिलाया ॥ आया० ॥ १२ ॥ रावन कहे मत रहे नगर में, जा तूं राम के पास। पगे लाग ने चले अक्षौणी तीस संग है खास ॥ आया० ॥ १३ ॥ देखो राम का पुण्य सवाया, शरण बिभीषण आयो। अवसर पर सेवक बने सरे, मिलियो मान सवायो ॥ आया० ॥ १४ ॥ हंसा को मोती घणा सरे, भंवरा ने बहु फूल। सच्चे को सच्चा नहीं जाने, है उसके मुख धूल ॥ आया० ॥ १५ ॥ गुरु प्रसादे चौथमल कहे रक्खो भ्रात से प्रेम। जहां संप तहं संपत्ति नाना, वरते कुशल और क्षेम ॥ आया० ॥ १६ ॥

२६३ आयुअंचलता
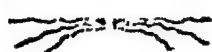
(कव्वाली)

अरे जाती है बीती यह तेरी ऊमर, जिसकी तो तुझको खबर ही नहीं। क्यों बांका घमंडी हो भूला फिरे, तेने ज्ञान की सीखी सतर ही नहीं ॥टेर॥ तूं ने जुल्मों पे बांधी है अपनी कमर, जरा नर्क निगोद का डरही नहीं। जहां पे गुर्जोंसे पीटे फरिस्ते तुझे, कुछ नानी, दादी का तो घर ही नहीं ॥अरे०॥१॥ खाली ऐशों में दी तेने उम्र बिता, और आगे का किया फिकर ही नहीं।

नहीं खाने का साथ सामान लिया, खुद देश की वह तो सफर ही नहीं ॥ अरे० ॥२॥ न तो तीन में है न तूं तेरह में है न तूं सत्तर और बहत्तर में नहीं । चाहे दिलसे तूं अपने उमराव बने, तेरी दुनियांमें कुछ भी कदर ही नहीं ॥ अरे० ॥ ३ ॥ जो तूं माल खजाने को अपना कहे, सच कहूं तूं उसका अफसर ही नहीं । न मकान दुकान न होगी तेरी, तेरा खास तो इस पे उजर ही नहीं ॥ अरे० ॥ ४ ॥ तुझे है भी खबर कैसे हुए जबर, जो नूर नूरानी कसर ही नहीं । जिनके पांव से जमीं करे थरथर, वो कहां गए उनका बशर ही नहीं ॥ अरे०॥ ५ ॥ मत किसी को सता कहां हुक्म बता, खूब गुनाह किया तो भी सबर ही नहीं । और बातें तो लाखों करोड़ों करो, खास मतलब है जिसका जिकर ही नहीं ॥ अरे० ॥६॥ यह तो योवन है चार दिनों का सनम, इस पे करना तुझे है अकड़ ही नहीं । कहे चौथमल जिनराज भजो, अभिमान तजो फिर खतर ही नहीं अरे० ॥ ७ ॥

२६४ मोह महत्वता.

(तर्ज--शरद पुनम की रातरे कांई जां दिन जनमिया नागजी)

हंसजी, आठ करम के मांयनेरे कोई, मोह कर्म मोठो महिपति, हो हंसजी । हंसजी सब पापन को सेवरारे कोई है इनकी मोठीथिति हो हंसजी ॥ १ ॥ हंसजी, एकादश

गुण स्थान सेरे कोई, पहले पटके आन के हो हंसजी । हंसजी चौरासी लक्ष योनिमेरे कोई, यही रुलावे तानके हो हंसजी ॥ २ ॥ हंसजी, पाटलीपुर एक नगर मेरे कोई, सेठ धनाढ है सेर हो हंसजी । हंसजी, दो गोरी को साहबोरे कोई, छोटी से मोह अति करे हो हंसजी ॥ ३ ॥ हंसजी, सेठ के पाप संयोग सेरे कोई; वेदना होगई एकदा हो हंसजी । हंसजी, औषधी लेवा काजरे कोई, घर में गई लघु परमदा हो हंसजी ॥ ४ ॥ हंसजी, नारी के लगी शिर चोटरे कोई, जीव उणरो चला गयो हो हंसजी । हंसजी, वात सुनी ने सेठजी कोई, मोह वश में हो मर गया हो हंसजी ॥ ५ ॥ हंसजी, तस प्यारी के शीश मेरे कोई, कीट पणे हुओ सेठजी हो हंसजी । हंसजी ऐसे अमे संसार मेरे कोई, मोह वश में वो सेठजी हो हंसजी ॥ ६ ॥ हंसजी, मोह कर्म लेलो जीतरे कोई तो मिल जावे शिवपुरी हो हंसजी । हंसजी, गुरु हीरा-लाल प्रसाद सेरे कोई, चौथमल शिक्षा करी हो हंसजी ॥७॥
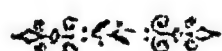
२६५ योवन की अस्थिरता.

(तर्ज-पच्याली)

क्यों तू इतना अकड़ के फिरे, तेरा हुस्न तो रहने का है ही नहीं । जैसे दरिया का पूर सा जाता चला, यह तो किसी के कहने में है ही नहीं ॥ टेर ॥ पोशाक

सजी तेने गुलवदन, करे सेर बजार औ बाग चमन । एक रोज जावे कर तर्क वतन, इस जहां में तो रहने का है ही नहीं ॥ क्यों० ॥ १ ॥ कुछ है खबर आये कहां से इधर, और जाओगे अब तुम यहां से किधर । आवे अजल ले जाव पकड़, वह तो रिश्वत खाने का है ही नहीं ॥ क्यों० ॥ ॥ २ ॥ क्यों माया के नशे में बहका फिरे, क्षण भंगुर देह मिजाज करे । कर जुल्म खजाने धन के भरे, वे साथ में आने के है ही नहीं ॥ क्यों० ॥ ३ ॥ चौथमल कहे जरा गोर करो, हिंसा झूठ कुचालों से दूर टरो । फिर वीर प्रभु भज मोक्ष वरो, फिर वहां से तो आने के है ही नहीं ॥ क्यों० ॥ ४ ॥

२६६ मृगा पुत्र का कहन.

(तर्ज-काफी की होली)

मैं कैसे करूं अररररर, यह नरकन की सुन पीर ॥ टेर ॥ कई यमदूत गृही मजबूत, चाम को खेंच्चो जैसे चीर, फाड्योरी वह तो चररररर ॥ मैं० ॥ १ ॥ वह शामली वृक्षके तले बिठाई, वैतरणी को छांट्या नीर, कांप्योरी मैं तो थररररर ॥ मैं० ॥ २ ॥ दोड़ झपट पापी बहियां मरोड़ी, नैनों से चल्यो म्हारे नीर, रोयोरी मैं तो धररररर ॥ यह० ॥ ३ ॥ चौथमल कहे मृगा पुत्रजी, मांगे आज्ञा माता तीर, सो तो चरणों में पररररर ॥ यह० ॥ ४ ॥

२६७ हित शिक्षा.

(तर्ज-कव्वाली)

क्यों बुराई पे तेनें बांधी कमर, मेरी बातों पे नेकसा ध्यान तो धर। तूं तो सोता है मोह की नींद मगर, आखिर होने वाली यह तो फजर ॥ टेर ॥ जो हैं जंगल के बीच हैवान अगर, घास पानी पे जिन्दगी करते बशर। उन दीनों पे रखता क्यों बांकी नजर, क्यों निर्दय उनपे उठाता खंजर ॥ क्यों० ॥ १ ॥ जो आता गरीब तेरे दर पर, क्यों हटाता उसे गाली देकर। जो तूं माल खजाने का है अफसर, दया दिल में तो ला ज़रा ध्यान तो धर ॥ क्यों० ॥३॥ कहां बादशा दारा सिकन्दर अकबर, कहां पैगम्बर और अली अजगर। उनने जमीं के परदे से किया सफर, तूं तो कौन से बाग की मूली है नर ॥ क्यों० ॥ ४ ॥ उनकी उलफत का प्याला पी भर भर, जो तूं चाहता है अपना मोक्ष नगर कहे चौथमल महावीर सुमर, जिससे मिट जावे चौरासी के चक्कर ॥ क्यों० ॥ ५ ॥

२६८ काल की गति.

(तर्ज-दादरा)

अजल का क्या भरोसा है, जरा सोच वो जिगर, आखरत का ले सामान जो, चाहे आराम अगर ॥ टेर ॥

बालक बुड्ढा ना गिने, फकीर अमीर को । तीतर को दबाता है बाज, मिशाल यही धर ॥ अजल० ॥ १ ॥ तलवार ढाल बांध के, फिरता है शूरमा । उसके मुकाबले में वो, डरता है सरासर ॥ अजल० ॥ २ ॥ गढ, कोट, किल्ला बीच, भुंवारे में उतरजा । नहीं छोड़ता है एक मिनट, उपाय क्रोड़ कर ॥ अजल० ॥ ३ ॥ क्यों न बादशाह हो सरदार सबों का । चलता न उसके सामने, किसी का भी उजर ॥ अजल० ॥ ४ ॥ गुरु हीरालाल परसाद, चौथमल कहे तुझे । कर जाप वर्धमान का तो, पावे मोक्ष घर ॥ अजल० ॥ ५ ॥

२६६ राजुल का कहना.

(तर्ज—फाकी की होली)

मैं कैसे करूं अररररर, सांवालियो न जानें मेरी पीर ॥ टेर ॥ तोरन से फिरे सुन मुर्छानी, तब तनसे उघाड़ियो चीर । फटयो री वह तो चर ररर ॥ सांवरियो० ॥ १ ॥ यादव की सब जान हुई लज्जित, मैं तो बनी अधीर । कांपीरी मैं तो थर ररर ॥ सांव० ॥ २ ॥ लोकन में सुन कर बदनामी, नैनों से चाल्यो मेरे नीर । रोई री मैं तो धर ररर ॥ सांव० ॥ ३ ॥ चौथमल कहे राजुल दे बोले, प्रभु हरो मारी पीर । कहूं री मैं तो चरणो में पर ररर ॥ सांव० ॥ ४ ॥

२७० उम्र.

(तर्ज--गजल दादरा)

दुनियां से चलना है तुझे, चाहे आज चल या कल। अनमोल वक्त हाथ से, जाता है पल पे पल ॥ टेर ॥ आता है श्वांस जिस में, प्रभु रटना हो तो रट । चेत चेत उमंदा आई, वाहार की फसल ॥ दुनियां० ॥ १ ॥ हुआ दिवाना ऐश में, आखिर का डर नहीं। सर पर तेरे हमेशा रहे, घूमता अजल ॥ दुनियां ॥ २ ॥ नेकी बदी सामान को, उठाके पीठ पर। खुद को ही चलना होगा, बड़ी दूर की मजल ॥ दुनियां० ॥ ३ ॥ आब कफे दस्त ज्यूं जाती है जिन्दगी। बदकार की बदी में गई, शखीनें की सफल ॥ दुनियां० ॥४॥ कहे चौथमल गुरु वकील, आगाई दे तुझे। करले अपील जीव और, हाथ में मिसल ॥ दुनियां० ॥

---

२७१ परस्त्री परिणाम.

(तर्ज-कहीं मुश्किल जैन फकीरी राग पंजाबी।)

यह इश्क बुरा परनार का, कभी भूल संग मत करना ॥ टेर ॥ जो परनार के फन्दे में आया, तन धन यश उसने गंवाया, फिरतो वह बहुत पछताया, न घर का रहा न बहार का। जरा दिल में ध्यान तो धरना ॥ यह० ॥ १ ॥ राजा रावन था बलकारी। रघुवर की लायो वह नारी। बड़े

राम ले फौजों भारी । रहा गर्व धरा परिवार का । हुआ क्षण में उसका मरना ॥ यह० ॥ २ ॥ पद्मोत्तर ने कुमति कमाई, सती द्रोपदी को मंगवाई । पीछे तो वह गया घबराई । देखा तेज मुरारका, जब लिया सती का शरना ॥ यह० ॥ ३ ॥ देख कुरान शरीफ मांही, खोल सिपारा अठारवां भाई । गैर औरत से लो सर्म बचाई । है फरमान परवर दिगार का, जरा आकबत से डरना ॥ यह० ॥ ४ ॥ तिनो न्याय दिये सुनाई, चातुर का दिल रहा हुलसाई । मूर्ख के दिल जरा नहीं भाई, वह वासी नर्क द्वार का, उसे है चौरासी फिरना ॥ यह० ॥ ५ ॥ चौथमल तुझको समझावे, नाहक पर नारी के जावे, फिर इसमें क्या नफा उठावे । मत बने पात्र धिक्कार का, गुरु कहा मान हो तिरना ॥ यह० ॥ ६ ॥

२७२ मनुष्य भव.

(तर्ज—गजल दादरा)

अब पाके मानुष भव रत्न यत्न तो करो । सद्गुरु से सुन के बेन हिये ज्ञान तो धरो ॥ टेर ॥ यह राग द्वेष जाल बीच, मत कोई परो, यह सात व्यसन बहुत बुरे, तर्क तो करो । अब० ॥ १ ॥ अब बांध बांध पाप पोट, सिर पे क्यों धरो । होगा हिसाब फेर, आकबत से डरो ॥ अब० ॥ २ ॥ यह हिंसा झूंठ चोरी, मैथुन परिग्रहो । बिन त्यागे मिजमान, तू दोजख को खरो ॥ अब० ॥

॥ ३ ॥ यह कर भलाई सब के साथ, न कीजिये बुरो । नहीं आवे साथ धन माल, कुटुम्ब रहे घरो ॥ अब० ॥ ४ ॥ यह जैन धर्म दान तप की, नाव पे चढ़ो । कहता है चौथमल चार, गत से टरो ॥ अब० ॥ ५ ॥

---

२७३ सखियों की वार्ता.

(तर्ज-लावणी लंगड़ी)

व्यसन बाज सातों की पदमन, पनघट पे गई नीर भरन । सातों के पति हैं, व्यसनी आपस में गुफ्तगु लगी करन ॥ टेर ॥ पहली सखी कहे सुनोरी सजनी, मेरा पिया जुँवारी है । सब घर की पूँजी, लेजाके जुआ बीच में हारी है । लंका चौक लीलाम फाटका में, उमर बिताई सारी है । कहां तन पर गहना, फट रहा लहंगा या रही सारी है । मैंने समझाया अति उनको राजा नल का करा सुमरन ॥ सातों० ॥ १ ॥ दूजी सखी कहे सुनोरी सजनी, मेरा पिया पीता है शराब । तन धन दोनों, इसी के बीच करता है सारा खराब । बेहोश हो गिरे जमीं पर कुत्ते भी करते पेशाब । मैं शरमाऊ मगर नहीं प्रीतम छोड़े गंधा आब । भारत दो भारत इसी में, यादव का होगया मरन ॥ सातों० ॥ २ ॥ तीजी सखी कहे सुनोरी सजनी, मेरे पिया खाता है मांस । सख्त दिल है, दया देवी नहीं करती हृदय निवास । जिसका करे मास अरी ! वो मनु ऋषि लिखते हैं खास । जावे नरक में, और वहां पर वो पावे अति त्रास । जप तप तीर्थ दान पुन्य फल,

सुकृत करनी करे हरन ॥ सातों० ॥ ३ ॥ चौथी सखी कहे सुनोरी सजनी, वैश्या से पिया की लगी लगन । कहा न माने, रात दिन उसके इश्क में रहे मगन । बड़ी गजब की बात माल योवन दोनों का करे हवन । दुनियां कहती, आज कल इनके बिगड़ गये चाल चलन । आगे नरक यहां बे मतलब वो नहीं रखने दे घर में चरन ॥ सातों० ॥ ४ ॥ सखी पांचवी कहती पिया मेरे तो बड़े शिकारी हैं । हथियार बांध के, रात दिन घूमे विपिन मुझारी है । हिरन, सिंह, खरगोश को मारे, करुणा दिल से बिसारी है । जो मरे हाथ से,बदला वह लेने खड़ा तैयारी है । मैंने सुना ऐसे पापी को, ईश्वर भी नहीं रक्खे शरण ॥ सातों० ॥ ५ ॥ छटी सखी कहे मेरे पिया की बुरी आदत चोरी की पड़ी । वो छुप छुप रेवे, रात दिन घर में रहे नहीं एक घड़ी । नहीं ख्याल जरा भी उनको, इस में त्रात है बहुत बड़ी मैं तो हार गई सखीरी ! शिक्षा देती कड़ी कड़ी । ऐसे वज्र कर्मों से सजनी एक रोज वह बैठे घरन ॥ सातों० ॥ ६ ॥ कहे सखी सातवीं सुनोरी सजनी, मेरा पिया ताके परनार । भूल कमाई, सदा रहे चन्द्र बारवां बड़ा विचार । यहां तो फर्क इज्जत में आवे, आगे खुला है नरक द्वार । चौथमल कहे व्यसनों से बचो, जिसे होना हो पार । उन्नीसे सत्तत्तर माधुपुर में, कथा जिकर सुनो चारों वरन ॥ सातों० ॥ ७ ॥
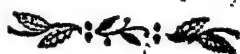
२७४ सेवा फल.

(तर्ज—दादरा)

अब खोल दिल के चश्म जरा गौर कीजिये। चाहे भला तो सत्गुरु की, सेवा कीजिये ॥ टेर ॥ मिला मनुष्य जन्म, नेक काम कीजिये। मात तात कुटुम्ब बीच चित्त न दीजिये ॥ अब० ॥ १ ॥ जेवर खजाना देखके, मत इसमें रीझिये। गुल बदन हुस्न पायके, मत गर्व कीजिये ॥अब॥ ॥ २ ॥ इस खल्क बीच आय के, पर दुख हरीजिये। आता साथ धर्म माल, सो भरीजिये ॥ अब ॥ ३ ॥ मद मांस और परनार के, संग से टरीजिये। जुल्मों जहर के प्याले को न, भूल पीजिये ॥ अब ॥ ४ ॥ सत शील शुद्धाचार जिगर में रूचीजिये। कहे चौथमल जिनेन्द्र चरण, चित्त धरीजिये ॥ अब ॥ ५ ॥

—※—
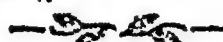
२७५ रात्रि भोजन निषेध.

(तर्ज-शेरखानी दादर)

मना रात का खाना सरासर है ॥ टेर ॥ चिड़ियां कपोत, कौआ, नहीं रात चुगन जाय। इन्सान होकर बेहया, तू रात को क्यों खाय। क्या मनुष्य पशु बराबर है ॥ मना० ॥ १ ॥ पतंग, कीट, कुन्थुआ, भोजन में पड़े आग। दीपक की लो पर घूमते, देखो निगाह लगाय। अरे जीव असंख्य चराचर है ॥ मना० ॥ २ ॥ करुणा को तो की विदा, जीवों

को भन्न कर । वह पापी यहां से मरकर, पैदा हो जम के घर । जहां गुर्जों की मार धड़ाधड़ है ॥ मना० ॥ ३ ॥ कहे चौथमल रात का, तू खाना छोड़दे । रोगों की खान जान के, दिल इससे मोड़दे । नहीं तो लक्ष चौरासी का बड़ा घर है ॥ मना० ॥ ४ ॥

---

२७६ ज्ञान.

(तर्ज—दादरा)

सब से बड़ा ज्ञान है तूं इसके ताई पढ़ । ज्ञान के बिना न मोक्ष, उपाय क्रोड़ कर ॥ टेर ॥ पानी में मच्छ नित्य रहे नारी के जटा शीश । नाखून लंबे देखले, सिंहो के पांव पर ॥ सब० ॥ १ ॥ बुक ध्यान राम शुक, गाडर मुंडात है । ये नाचे हिंज राख तन, लपेटता है खर ॥ सब० ॥ २ ॥ ऐसे करेसे मोक्ष हो, तो इनको देखले । बेकौ न वद सख्शों के झांसे में आनकर ॥ अब० ॥ ३ ॥ हैवान और इन्सान में, क्या फर्क है बता । ज्ञान की विशेषता, जुल्मों से जावे टर ॥ सब० ॥ ४ ॥ पाकीजा दिल को कीजिये, कर रहिम जान पर । जिन बैन का ऐनक लगा, चल राह नेक पर ॥ सब० ॥ ५ ॥ गुरु हीरालाल परसाद, चौथमल कहे तुझे । बेशक मिलेगा मोक्ष तुझे वे किये उजर ॥ ६ ॥

२७७ सत्य उपदेश.

(तर्ज-माड—मीरा थारे कांई लागे गोपाल)

मना तूं भजलेरे भगवान। थाने देवे सद्गुरु ज्ञान ॥ टेर ॥ छः खंड केरो साहबोरे, सुन्दर रतन निदान। हुआ निवाला कालकोरे, चक्रवर्त-सा जान ॥ थाने० ॥ १ ॥ रावण भी चल्यो गयोरे, जो रखतो अभिमान। उसका मारन हार रामचन्द्र, छोड़ गये दश प्राण ॥ थाने० ॥ २ ॥ कहां गये विख्यात जगत में, पाण्डव-से बलवान। हाग दाम ठाम के मालिक, कौरव से सुलतान ॥ थाने० ॥ ३ ॥ काल के पंजे पड़ारे, पृथ्वीपतिराजान। जन्मे अजन्मे हो गयेरे, कई पामर का प्रमान ॥ थाने० ॥ ४ ॥ उत्तम नर तन पायकेरे, करले अब धर्म ध्यान। गुरु प्रसादे चौथमल कहे, हो तेरा कल्यान ॥ थाने० ॥ ५ ॥

२७८ क्या करा ?

[तर्ज-दादरा]

दुनियां के बीच आय तैनें, क्या भला किया। क्या भला कियारे, तने क्या नफा लिया ॥ टेर ॥ यह मात तात कुटुम्ब बीच, तूं लुभा रहा। जुल्मों जहर का प्याला तैनें हाथों से पिया ॥ दुनियां० ॥ १ ॥ अफसोस तेरी तकदीर पे, नर भव गमा दिया। इस दुनियां से ऐसा गया,

न पैदा भया भया ॥ दुनियां० ॥ २ ॥ लीलम की खान पाय के, मोताज तूं रहा । दरियाव में रहे प्यासा, वह पछतायगा जिया ॥ दु० ॥ ३ ॥ लाया था माल बांध के, वह यहां खरच किया । अब आगे का सामान तेने, साथ क्या लिया ॥ दु० ॥ ४ ॥ गुरु हीरालाल प्रसाद, चौथमल जिता रहा । कर दया दान पावे मोक्ष, दुख नहीं लिया ॥ ५ ॥
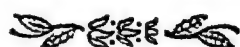
२७६ काल का जासूस.

(तर्ज-रजवाड़ी माडः-सरदार थांको पचरंग पेचो)

अयोध्या को अधिपतिरे, हिरण गर्भ है खास । एक दिन बैठा शयनमेंरे, करता हांस विलास । हो महाराज निज की रानी से करे वाता म्हांका राज ॥ १ ॥ दीवार पर शीशो लग्योरे, ता बिच भूप निहार । अचानक चेहरो ऊतर गयोरे, चिन्ता का नहीं पार । हो महाराज देखी रानीजी घबरानी म्हांका राज ॥ २ ॥ विलास जगह उदासीनतारे, रंग में पड़ गयो भंग । गलानी छाई गईरे, यह क्या होगया, ढंग हो महाराज रानी दीन वचन ऊचारे म्हांका राज ॥ ३ ॥ कंचन थाल भोजन भलारे, पान का बीड़ा हाथ । ज्योति जगमग आपकीरे, कहो वितक बात । हो अन्नदाता आपकी सूरत क्यों कुम्हलानी म्हांकाराज ॥ ४ ॥ हुक्म लेयने आवीयोरे, यम को दूत इस वार,

दुश्मन यहां जाननारे, ले जासी यम द्वार। हे सुन सुन्दर! चिन्ता लागी यह अति भारी म्हांका राज ॥ ५ ॥ दे दूं रिस्वत यम ने रे, दे दूं नवसर हार। दे दूं हाथ की मुद्‌डी रे, राखूं कर मनवार। हो अन्नदाता रंग रस की करिये बातां म्हांका राज ॥ ६ ॥ गेली सुन्दर बावरीरे, गेला वैन यह होय। यम रिस्वत जो आदरे तो जग में मरे न कोय हे सुन्दर! थांका वोल पे हंसी आवे म्हाका राज ॥ ७ ॥ हाल अभी आया नहींरे, आसी जबकी बात। हंसो रमो आनंदमेंरे, मोजां करो दिन रात। हो अन्नदाता म्हाकी अर्जी पर चित्त दीजे म्हांका राज ॥ ८ ॥ दूत तो अब आ गयोरे. मैं तो देखां नाय। बाल उखेड़ी सीससेरे, धोला नजर देखाय। हे सुन्दर यम को जासूस अगवानी म्हांका राज ॥ ९ ॥ काल भूप अब आवसीरे प्रत्यक्ष रहा चेताय। तेरा मेरा प्रेम यह अब रहेने का नाय। हे सुन सुन्दर! खान पान ऐश सब त्यागा म्हांका राज ॥ १० ॥ मृगावती रानी तजीरे दियो कुंवर ने राज। सद्‌गुरु से संयम लईरे नृप साध्या सब काज। हे सुन चेतनजी थें या विधि ज्ञान विचारो म्हांका राज ॥ ११ ॥ गुरु हीरालाल प्रसाद सुं रे चौथमल यूं गाय। उन्नीसे सत्तचर चौमासो जोधपुर के मांय हो जीवराज थाने देई ज्ञान समझाना म्हांका राज ॥ १२ ॥

२८० मोह नींद.

(तर्ज—दादरा)

क्या अमोल जिन्दगी का यत्न नहीं करे । सोता है मोह नींद में, जगाऊं किस तरे ॥ टेर ॥ कंचन के पलंग पर, सुन्दर से स्नेह धरे । लगा भोग का तेरे रोग, नसीहत क्या करे ॥ क्या० ॥ १ ॥ ले मुखत्यार नामा और का वकील हो फिरे । निज मिस्ल का पता नहीं, समझ यह धरे ॥ क्या० ॥ २ ॥ माया के बीच अंध तुझे सूझ ना परे करता मजाक और का जुल्मो से ना डरे ॥ क्या० ॥ ३ ॥ न किया न लिया साथ, रहे खजाने सब भरे । देगा जबां से क्या जबाव, पूछे उस घरे ॥ क्या० ॥ ४ ॥ गुरु हीरालाल प्रसादे, चौथमल कहे सरे । कर कब्जे माल धर्म का संसार से तरे ॥ क्या० ॥ ५ ॥

२८१ भाग्य.

(तर्ज—मेरे काजी साहिब आज सवक नहीं याद किया)

चाहे जाओ दिल्ली कोटा, फल खोटा का खोटा ॥टेर॥ जो बोए पेड बंबूल का, आम कहां से खाय । वचन बदल विश्वास घाती, सीधा नरक में जाय । पड़े यम का सोटा ॥ चाहे० ॥१॥ रोजी में लात मारो गरीब के, चुगली पर की खाओ । पर नारी के रसिया बन के, मदिरा पान उड़ाओ । कह

लाओ फिर मोटा ॥ चाहे०॥२॥ पक्षपात का लिखा फैसला सच को करे झूठा। कपट कमाई करी दीन, दुखियों को लूटे लूटा। पड़े क्यों नहीं टोटा ॥ चाहे० ॥ ३ ॥ दान-दया, पापी नहीं समझे, सत्संग लागे खारी। चौथमल कहे घाणी बैल ज्यूं, फिरे संसार मुझारी। मिले नहीं थाली लोटा ॥ चाहे० ॥ ४ ॥

२८२ प्रभु उपकार.

(तर्ज—दादरा)

स्वामी मेरा कैसा जबर, उपकार कर गया। सोते हुए मोह नींद में, सबको जगा गया ॥ टेर ॥ आर्य खेत्र बीच में मानिंद गुलाब के। धर्म जैन का प्रभुजी फैला गया ॥ स्वा० ॥ १ ॥ अर्ध मागधी भाषा में, द्वादश अंग को। शीघ्र बोध के लिए, अच्छा रचा गया ॥ स्वा० ॥ २ ॥ गृहस्थ मुनिराज का, तिरना हो किस तरह। यह दोनों धर्म भिन्न भिन्न, कर बता गया ॥ स्वा० ॥ ३ ॥ भूला हुआ अनादि का, रास्ता वह मोक्ष का। ज्ञान का उद्योत करके आप दिखा गया ॥ स्वा० ॥ ४ ॥ जो वीर प्रभु को जपे, शुद्ध भाव लायके। तो नर्क तिर्यंच के, ताला ही लग गया ॥ स्वामी ॥ ५ ॥ कहां तक तारीफ हम करें, चारों ही संघ की। मानों लगा के बाग आप, सींच के गया

॥ स्वामी ॥ ६ ॥ त्रशला के लाल आप मुझे तार दीजिए। अब चौथमल चरण शरण, बाच आगया ॥ ७ ॥

२८३ सद्गुरु वाणी.

(तर्ज--थारो नरभव निष्फल जाय जगत का खेल में)

तुझे देवे सद्गुरु ज्ञान चलो अब मोक्ष में ॥ टेर ॥ पुण्य प्रभावे सम्पति पायो, आयो मानिक चोक में । दया दान तप जप करले, मत रहे खाली शोक में ॥ तुझे० ॥ १ ॥ गर्व करे मत धन योवन को, मत राचे घर थोक में । राजा राणा छत्रपति कई, हुआ हजारों लोक में ॥ तुझे० ॥ २ ॥ धीरज धार तार निज आतम, सार कछु नहीं तोप में । क्षम्या करे पवित्र होजावे, समझ एक श्लोक में ॥ तुझ० ॥ ३ ॥ रतलाम शहर योग मुनिवर को; मत खो नरभव फोंक में । चौथमल उपदेश सुनावे, सदर चांदनी चौक में ॥ तुझ० ॥ ४ ॥

२८४ इर्ष्या त्याज्य.

[तर्ज-दादरा]

देखी सुखूबी औरकी, तूं दिलमें क्यों जले। रख रख दिलको साफ तो, साहब तुझे मिले ॥ टेर ॥ पैदा होना इन्सान का, हर वख्त कहां मिले । फिर फंसके गुनाह

बीच में क्यों बैठता तले ॥ देखो० ॥ १ ॥ करले तो जरा गौर लाया, क्या बांध के पले। कुल ठाठ पड़ा रह गया अकेले आप चले ॥ देखो० ॥ २ ॥ पहनी पोशाक हीर चीर, महंगी मलमलें। फिरता है किस गरूर में, ये काल तुझे छले ॥ देखो० ॥ ३ ॥ जो हुक्म है मालिक का, ला ईमान मत टले। जान का अंजान हो, नसीहत को क्यों गले ॥ देखो० ॥ ४ ॥ इस खल्क में जिन धर्म का, दर्जा जो है अले। कहे चोथमल गुरु प्रसाद, आशा सब फले ॥ देखो० ॥ ५ ॥

—ऽ+ॐ×ऽ—

२८५ भोगोंसे अतृप्त.

[तर्ज--कव्वाली]

कभी भोगों से इस दिलको सबर हरगिज नहीं आता। चाहे हो बादशाह क्यों नहीं, सबर हरगिज नहीं आता ॥ टेर ॥ चाहे हो महल रत्नों का, सजी हो सेज फूलों की। मिले अप्सरा अजब सुंदर, सबर हरगिज नहीं आता ॥ कभी० ॥ १ ॥ होके चक्रवर्ती राजा, रखा सर ताज भारत का। चले है हुक्म लाखों पर, सबर हरगिज नहीं आता। कभी० ॥ २ ॥ सजी पोशाक लगा इत्तर, बैठ कुर्सी पे सुंदर संग। गले हो हार मोत्यों का, सबर हरगिज नहीं आता ॥ कभी० ॥ ३ ॥ चाहे गुलशन की करलो बहार, अजबघर की हवा खालो। सवारी रेल मोटर की, सबर हरगिज नहीं

आता ॥ कभी० ॥ ४ ॥ दुल्हा दुलहनके संग, मिला के दस्त आपस में। घूमें कल्प वृक्ष की छाया, सबर हरगिज नहीं आता ॥ कभी० ॥ ५ ॥ त्रिखण्डी नाथ भी कहला, हो मण्डल का अधिकारी। स्वर्ग के भोग भी भोगे, सबर हरगिज नहीं आता ॥ कभी० ॥ ६ ॥ चौथमल कहे भोगों से, गया नहीं तृप्त हो कोई। निजात्म ज्ञान के पाये, सबर हरगिज नहीं आता ॥ ७ ॥

२८६ हमारा फर्ज.

(तर्ज—दादरा)

चेतो तो जल्दी चेतलो, चताते हैं जी हम। मोक्षका जो रास्ता दिखाते है जी हम ॥ टेर ॥ लेना है क्या आपसे दिलमें करो तो गौर। फक्त नर्क पड़ते को बचाते हैं जी हम ॥ चेतो० ॥ १ ॥ धर्मोपदेश परोपकार, करना है मेरा। अपने फर्ज को अदा अब, करते हैं जो हम ॥ चेतो० ॥ २ ॥ जुल्म छोड़ प्रीत जोड़, सद्गुरुसे अब। जाहिल की सौबत तर्क कर, कहते है जी हम ॥ चेतो० ॥ ३ ॥ यह राग द्वेष की अगन, अनंत काल से लगी। छांट छांट ज्ञान जल, बुझाते है जी हम ॥ चेतो ॥ ४ ॥ गुरु हीरालाल प्रसाद चौथमल कहे सुनो। दया धर्म साफ तोर से, जिताते है जी हम ॥ चेतो० ॥ ५ ॥

२८७ रसना सीधी बोल.

(तर्ज-पनजी मूंडे बोल)

रसना सीधी बोल । तेरे ही कारण से जीवने दुखड़ा ऊपजे ए ॥ रसना० ॥टेर॥ पांचो माही तूंहीज मुखिया, अजब गजब नखराारीए । ऊंच नीच नहीं सोचे बोले, मीठी खारी ए ॥रसना०॥१॥ माधव से सीधी नहीं बोली, संक जरा नहीं राखीए । कौरव पाण्डव का युद्ध कराया महाभारत साखी ए॥ रसना०॥२॥ वसु राजवी झूठ बोलने, नर्क बीच में जावेए । तुझ कारण से जल की मच्छी प्राण गंवावे ए ॥ रसना ॥ ३ ॥ एक एक अवगुण सर्व इंद्रियां में, चौड़े ही दर्शावेए । खाय बिगाड़े बोल बिगाड़े, तुझ में दोय रहावे ए । रसना० ॥ ४ ॥ ख्याल राग तो बिना सिखाया, तुझ ने केई आवेए । धर्म तणा अचर की कहे तो तूं नट जावे ए । रसना० ॥ ५ ॥ लपर २ बोल क्षण पल में, दे तू राड़ कराई ए । पंचों में तूं काज बिगाड़े, गांव में फूट पडाई ए । रसना ॥ ६ ॥ लाल बाई और फूल बाई, यह दो नाम है थारा ए । मान बड़ाई की बात करीने जन्म बिगाड़ा ए । रसना ॥ ७ ॥ पर का मर्म प्रकाशे तूं तो, अहोनिशि करे लपराई ए । साधु संतियों से तूं नहीं चूके, करे बुराई ए ॥ रसना० ॥ ८ ॥ मत बोले बोले तो मोके, मन में खूब विचारी ए । प्रिय बोले मर्म रहित तूं, मान निवारी ए । रसना० ॥ ९ ॥ सूत्र के अनुसार बोल्या, सर्व जीव सुख पावे ए । महावीर

भगवान कहे वह मोक्ष सिधावे ए ॥ रसना ॥ १० ॥ असत्य और मिश्र भाषा, वीर प्रभु ने वरजी ए। चौथमल कहे सत्य व्यवहार भाषे मुनिवरजी ए ॥ रसना० ॥ ११ ॥
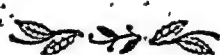
२८८ शिक्षा.

(तर्ज—दादरा)

इस हराम काम बीच नफा क्या उठायगा, बदनामी के सिवाय और क्या ले जायगा ॥ टेर ॥ नहीं बसीला वहां तेरा, जरा दिलमें सोचले ! करले जो बन्दोवस्त तो बरी हो जायगा ॥ इस ॥१॥ जिसको सताया तैंने वहां वो सतायगा। जिसको जलाया तेने यहां, वहां वो जलायगा ॥ इस ॥ २ ॥ जिसको फँसाया तेने यहां, वो वहां फँसायगा। जिसको दबाया तैंने यहां, वहां वो दबायगा ॥ इस ॥ ३ ॥ जिसको रुलाया तैंने यहां, वो वहां रुलायगा। जिसका दुखाया दिल यहां, वो वहां दुखायगा ॥ इस० ॥ ४ ॥ दिन चार की है चांदनी, फिर वोही रात है। किया जो काम नेक बद, वो पेश आयगा ॥ इस० ॥ ५ ॥ खोलकर दृष्टि जरा, मेरी बात को सुनो। ये चौथमल हरबार कब, कहने को आयगा ॥ इस० ॥ ६ ॥

२८९ गफलत छोड़

(तर्ज—बनजारा)

क्यों गफलत में रहत दिवाना। इस तन का क्या है

ठिकाना ॥ टेर ॥ जिया दम आवे या नहीं आवे, उठ चला एकदम जावेजी, ना रहत किसीका रखाना ॥ इस ॥ ॥ १ ॥ गुलबदन देख घुमरावे, तूं अत्तर फुलेल लगावेजी टेढी पगड़ी बांध अकड़ाना इस० ॥ २ ॥ मुनि हितकर वचन सुनावे, तूं जरा खौफ नहीं लावेजी, रहे कुटुम्ब बीच लिपटाना ॥ इस० ॥ ३ ॥ देखो हीरा कञ्चन मोती, सन्मुख कई अबला जोतीजी, सब धरा रहत खजाना ॥ इस० ॥ ४ ॥ जिया जैसे मिट्टी का मटका, जब तक नहीं लगता टपकाजी, तेरे मरना होसो मराना ॥ इस० ॥ ५ ॥ मुनि चौथमल का कहना, जिया नाम प्रभु का लेनाजी, मत पुद्गल में ललचाना ॥ इस० ॥ ६ ॥

---

२६० लोभ जबर.

(तर्ज—दादरा)

लोभ जबर जगत में सबको डुबो दिया। मात तात पुत्र का, नाता तुड़ा दिया ॥ टेर ॥ इस लोभ की लगन में, कुछ सूझता नहीं। निजदेश छोड़ के कई, परदेश में गया ॥ लोभ० ॥ १ ॥ करते हैं कई चाकरी, हथियार बांध के। बड़े बड़े अमीर को, गुलाम कर दिया ॥ लोभ० ॥ २ ॥ लोभ से तो क्रोध होय, क्रोध से फिर द्रोह। द्रोह से तो नर्क होय, शास्त्र में कया ॥ लोभ० ॥ ३ ॥ दो राज में

गलतान, काका भोज के लिए । बे रहम होके कत्ल का हुक्म लगा दिया ॥ लोभ० ॥ ४ ॥ कई भूप छोड़ गये जभी, क्या तूं लेजायगा । सुन काका ने फिर भोज को पीछा बुला लिया ॥ लोभ० ॥ ५ ॥ कहे चौथमल पुकार, गुरु कहना मानलो । अब धार के संतोष लोभ टालरे जिया ॥ लोभ० ॥ ६ ॥

२६१ चेतनाभिमान.

(तर्ज—बनजारा)

ऐसे चेतन को समझाना, मत रख तनका अभिमाना ॥ टेर ॥ देखो सन्त कुमार था चक्री, गुल बदन देख रहा अकड़ी जी । दुख इन्द्र ने जिसको बखाना ॥ मत रख० ॥ १ ॥ पुनः सूरन ख्याल नहीं कीना । कर रूप विप्र का लीनाजी । यह देख बहुत हुलसाना ॥ मत० ॥ २ ॥ सुनी राय मान बीच छाया, अधिक श्रृंगार सजाया जी । बैठ सभा में छत्र धराना ॥ मत० ॥ ३ ॥ गले मणी मोतियन के-हारा, सिर ढूले चँवर न्याराजी ॥ अब निरखो कहे महाराना ॥ मत० ॥ ४ ॥ अहो मन मोहन भूपाला, खूबसूरत हुश्न रसालाजी, सो देखत ही पलटाना ॥ मत० ॥ ५ ॥ नृपति भेद सब पाई । तुरत अशुचि भावना भाई जी । सुन रानियो का दिल घबराना ॥ मत ॥ ६ ॥ रमझम से चली झट दोड़ी, कहे मधुर बेन कर जोड़ी जी, मत म्हाने

छोड़ो सुलताना ॥ मत० ॥ ७ ॥ प्रिया धन दौलत राज-धानी, नहीं आती संग दिवानीजी, अल्प सुखों पे नाहक बेखाना ॥ मत० ॥ ८ ॥ मुनि चौथमल यूं कहवे, नृप संयम मारग लेवेजी, पा केवल मोक्ष सिधाना ॥ मत० ॥ ९ ॥

२९२ विश्व मोह.

(तर्ज—दादरा)

संसार है असार तू किस पे लुभा रहा, दिन चार की बहार तूं. किस पै लुभा रहा ॥ टेर ॥ टेढ़ा दुपट्टा बांधके, मिजाज छा रहा । मेरे समान और ना, ऐसा दिखा रहा ॥ संसार० ॥ १ ॥ मालो-औलाद देखना, फिसाद की है जड़ । इसको किया है तर्क, मजा वही पारहा ॥ संसार० ॥ २ ॥ ए दिल ! तूं किसकी याद में दिवाना बन गया । क्या कौल करके आया था, उसको बिसर रहा ॥ संसार० ॥ ३ ॥ गफार ने हुक्म कया, कुरान में दिया । जुल्मों से आ तूं बाज, अब किसको सता रहा । ॥ संसार० ॥ ४ ॥ गुरु हीरालालजी का शिष्य चौथमल भया । गा 'दादरे' के बीच में, तुझको जिता रहा ॥ संसार० ॥ ५ ॥
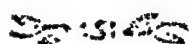
२६३ शरीर नाशवान्

(तर्ज--पनजी मूंडे बोल)

काया काचीरे, २ कर धर्म ध्यान में कहूं छूं सांचीरे ॥ टेर ॥ देखी सुन्दर काया काची, जामें जीव रह्यो राचीरे। भीतर भगार है बहार कलि,या लिजे जांचीरे ॥ काया० ॥१॥ इस काया का लाड़ लड़ावे, मल मल स्नान करावेरे। निरख काच में पेच झुका, पोशाक सजावेरे ॥ काया० ॥ २ ॥ गुलाब मोगरा को अत्तर डारी, मूंछो वंट लगावेरे। केशर चंदन को तिलक लगा, सेलों में जावेरे ॥ काया० ॥ ३ ॥ कंठी डोरा गोप गला में, काना मोती सोहेरे। तन छाया निरखतो चाले, पर गोरी से मोहेरे ॥ काया० ॥ ४ ॥ सीयाला में बिदाम का सीरा, ग्रीष्म भांग ठंडाईरे। चौमासा में खावे मिठाई, बाग में जाईरे ॥ काया० ॥५॥ इष्ट कन्त रत्न करिन्डिया ज्यूं, रखे ! शीत लग जावेरे। चाहे जितना करो यतन यह नहीं रहावेरे ॥ काया० ॥ ६ ॥ सन्त कुमार चक्रवर्ती की प्यारी देह पलटावेरे। काया के वश वन का हाथी, दुःख उठावेरे ॥ काया० ॥ ७ ॥ इस काया का क्या विश्वास पानी बीच पताशारे। होली जैसे देवे फूंक,जावे जब श्वासारे ॥ काया० ॥ ८ ॥ उत्तम मनुष्य की काया ऐसी, फिर मिले कब पाछीरे। दया दान तप करणी करले, या ही आच्छीरे ॥ काया० ॥ ६ ॥ उन्नीसे बहोत्तर वसन्त पञ्चमी,

बालोतरा के मांहीरे। गुरु प्रसादे चौथमल यह, जोड़ बनाईरे ॥ काया० ॥ १० ॥

२६४ सप्त व्यसन निषेध.

(तर्ज—दादरा)

यह सातों व्यसन बहुत बुरे, तर्क तो करो। ए अमोल जन्म जरा ध्यान तो धरो० ॥ टेर ॥ जुआ का ख्याल टाल मान कहन तो खरो। शराब है खराब प्याला भूल न भरो ॥ सातों० ॥ १ ॥ मांस को अभक्ष जान शीघ्र पर हरो। वेश्या जो नार धनकी यार दूर से टरो ॥ सातों० ॥ ॥ २ ॥ प्राणी को समझ प्राण सम शिकार पर हरो। कर्म चोर को कठोर समझ के टरो ॥ सातों० ॥ ३ ॥ पर नार त्याग वीतराग भाव ने वरो। गुरु हीरालाल प्रसाद चौथमल कहे तिरो ॥ ४ ॥

---

२६५ बाल्यावस्था.

(तर्ज—जसोदा मैया अब ना चराऊं तेरी गैया)

मोरा दे गैया, प्यारा लगे तेरा ऐया ॥ टेर ॥ मस्तक मुकुट कानों युग कुण्डल। तिलक ललाट लगैया। रतन आंगनिए रम झम खेले। त्रिलोकी के रिझैया ॥ रिझैया

भैया वाला लगे तेरा जैया ॥ मोरा ॥ १ ॥ कोई इंद्राणी प्रभु को खिलावे । कोई एक ताल बजैया । कोईक नृत्य करे प्रभु आगल, नाचे ताता थैया ॥ मोरादे० ॥ २ ॥ छुम छुम छुम छुम बाजे घूंघरा, ठुम ठुम पांव धरैया । द्रव्य खेल खेली ने होगये, आतम खेल खिलैया ॥ मोरा० ॥ ३ ॥ सबसे पहिले निज जननी को, शिवपुर बीच पठैया । चौथमल कहे नित्य उठ ध्यावो । ऐसे अनूपम कन्हैया ॥ कन्हैया भैया प्यारा० ॥ मोरादे० ॥ ४ ॥

---

२९६ नींद छोड़ो.

(तर्ज—दादरा)

सोए हो किस नींद में, उठो होंस सम्हारो ॥ टेर ॥ कहां राम और लछमण, कहां लंका के सिरदारो । कहां गर्वी है सह कंश, कहां कृष्ण अवतारो ॥ सोए० ॥ १ ॥ ख्वाब के मानिंद जहां, झूठ पसारो । सब ठाट पड़ा रह जायगा, जरा चश्म उघारो ॥ सोए० ॥ २ ॥ कोई गरीब जीव की मत जान को मारो । वो मालिक है जुल जलाल, जरा दिल में विचारो ॥ सोए० ॥ ३ ॥ चलना है तुमको यहां से सोचलो पियारो । वहां मुल्क है बेगाना जहां कौन तुम्हारो ॥ सोए० ॥ ४ ॥ पूछेगा सभी हाल, क्या कहोगे विचारो । चुप चाप ही बनोगे वहां कौन को

सहारो। इसलिये कर दया धर्म, आत्मा तारो। कहे चौथमल जिन्दगी को, अब तो सुधारो ॥ ५ ॥

---

२६७ हंस काया संवाद.

(तर्ज-हो उमराव थांरी सूरत प्यारी लागे म्हांराराज)

काया कर जोड़ी कहेरे, सुन म्हाला सुगन-नाथ। बाल पना की प्रीतडीरे, मत छोड़ो मुझ साथ॥ हो हंसराज। थांसु न्यारी मैं नहीं रहसा म्हारा राज ॥ हंसराजजी हो प्याराजी ॥ १ ॥ दूध मांही जैसे घी बसेरे, फूल में बसे सुगन्ध। ज्यूं म्हारा तन में बसोरे, तिल में तेल सम्बन्ध ॥ हो हंसराज वर जोड़ी को न्याय विचारो म्हारा राज ॥ हंसराजजी हो० ॥ २ ॥ बिन प्यारा, प्यारी किसीरे, चंद्र बिना ज्यूं रेन। आप विना आदर नहींरे, कोई न राखे सेन, हो हंसराज मेरी विनतडी अवधारो म्हारा राज ॥ हंसराजजी हो म्हारा राज ॥ ३ ॥ सुन्दर सेजां बीचमेंरे, की थी बहुत किलोल। नैनों से आंसु गिरेरे मुख से सको न बोल। हो जीवराज तुमने मुझसे मरजी उतारी म्हारा राज ॥ हंस-राजजी हो० ॥ ४ ॥ चेतन कहे सुन सुन्दरी रे, मेरे तुमसे प्रीत। स्वप्नां में छोड़ूं नहींरे मनमें बात खचीत। हे सुन प्यारी काल के आगे न जोर हमारो म्हारा राज ॥ हंसराजजी० ॥ ५ ॥ काल वैरी माने नहींरे खानी में नहीं तन्त।

चिन्ता है इस बात कीरे, पर भव मोटो पंथ ॥ हो सुन सुन्दर इसमें सलाह कहो क्या थारी म्हांका राज ॥हंसराजजी० ॥६॥ इस तन से सुन साहिबारे तिरिया जीव अनन्त । जप तप करनी तुम करोरे, सेवो गुरु निर्ग्रंथ ॥ हो हंसराज यह नर कर्त्तव्य मैं बतलायो म्हांका राज ॥ हंसराजजी हो० ॥ ७ ॥ पहले तो सुध थी नहींरे, तेरे मोह में लाग । भोगों में फंसियो हुओरे देखा ख्याल सुना राग । हो सुन्दर थारी मनकी मौजां किनी म्हांका राज ॥ हंसराजजी० ॥ ८ ॥ धर्म करंता नहीं नटीरे, फिर भी कहूं हजूर । पीछे खेती नीपजेरे तबभी दारिद्र दूर । हो हंसराज प्यारा वृथा दोष मत दीजे म्हाका राज ॥ हंसराजजी हो० ॥६॥ आप हैं जहां तक मैं रहूंरे फिर बल जल होती खाक । झूठी जो इसमें हुए तो लोक भरे मेरी साख ॥ हो हंसराज यो सती को धर्म्म बतायो म्हांका राज ॥ हंसराजजी ॥१०॥ जीव तणा संकल्प समीरे, काया बोले नाथ । चौथमल या चोच लगाई दीवी सभामें गाय । हो हंसराज तुझको ज्यूं त्यूं कर समझावा म्हांका राज ॥ हंसराज जी० ॥ ११ ॥

२६८ क्षमा याचना.

(तर्ज-दादरा)

कसूर मेरा माफ, करो गुनहगार हूं ॥ टेर ॥ छाया है जोश मोह का, कुछ दिखता नहीं । दरदी को खबर नाह

रहे, करती पुकार हूं ॥ कसूर० ॥ १ ॥ जोर मेरा नहीं चले, दिल मानता नहीं । जो कुछ कहे तो यह कहे, मैं तो लाचार हूं ॥ कसूर० ॥ २ ॥ हाजिर है सर्व धन सेज हूरन आप के। चाहे मान चाहे तान मैं अबला नार हूं ॥ कसूर ॥३॥ करके महरबानी मेरी बात को सुनो । चरन गिरूं हाथ जोड़ ताबेदार हूं ॥ कसूर० ॥ ४ ॥ कहे चौथमल जम्बूसे प्यारी अर्ज यह करे । घर रहो चाहे बन रहो संग में तैयार हूं ॥ कसूर० ॥ ५ ॥

---

२६६ ब्रह्मचर्य पालने का उपाय.

(तर्ज-बड़ी मुश्किल कठिन फकीरी)

जो ब्रह्मचर्य धरता है, तो उसका बेड़ा पार है ॥ टेर ॥ महावीर स्वामी फरमावे, शील तणी रक्षा बतलावे, स्त्री पशु पंडग जहां रहावे, वहां बसे नहीं ब्रह्मचारी, बिल्ली से चूहा डरता है ॥ जो० ॥ १ ॥ कथा करे नहीं नार की प्यारी, निग्रन्थ इमली न्याय विचारी, बैठे स्त्री भूं दे टारी, घृत अग्नि के अनुसार है, नहीं फर्क जरा पड़ना है ॥ जो० ॥ २ ॥ त्रिया तन को नहीं निहारे, कच्चे नैन ज्यूं सूर्य से टारे, पेचान्तर सोवे नर नारे, मानु जैसे मेघ गुञ्जार है, सुन मयूर नृत्य करता है ॥ जो० ॥ ६ ॥ पूर्व काम नहीं चिन्ते लगारी । बटाउ छाछ न्याय उरधारी । बत्तीस भक्ष

नित्य देत निवारी, ज्यूं रोगी का करत विनाश है, नहीं नफ्स कभी मरता है ॥ जो० ॥ ४ ॥ शीत भोजन अति न खावे, ज्यूं छोटी हंडी फटजावे, तन स्नान शोभा नहीं चावे, नहीं सजता तन श्रृङ्गार है, रंक रत्न न्याय वरता है । जो० ॥५॥ प्रश्न व्याकरण सम्वर जाहरी, वत्तीस उपमा हैगी भारी, व्रत में दुश्कर दुश्कर कारी, वह स्वयंभूरमण से पार है, रही गंगा तुरत तिरता है ॥ जो० ॥ ६ ॥ उन्नीसे बहत्तर का साल है, पालनपुर चौमासा रसाल है, गुरु मेरे हीरालाल है, कहे चौथमल श्रेयकार है, तो सर्व कार्य सरता है ॥ जो० ॥ ७ ॥

२०० सुअवसर.

(तर्ज-दादरा)

यह मनुष्य जन्म पुन्य योग से मिला सरे । तप संयम को आराध क्यों नहीं मोक्ष को वरे ॥टेर॥ जो स्वर्ग बीच देव सो विषियों में मग्न है । न त्याग धर्म उनसे हो चित्त, अप्पसरा हरे ॥ मनुष्य० ॥ १ ॥ हैवान तो विवेक हीन, दीन से फिरे । घास पानी के लिये वो घूमते फिरे ॥ मनुष्य० ॥२॥ कर कर के जुल्म खूब, जाय नर्क में परे । भोगे सदैव दुख वो धर्म क्या करे ॥ मनुष्य० ॥ ३ ॥ ऐसा अमोल वख्त पा जो भोग में फंसे । कञ्चन की थाल बीच जैसे, धूल शठ भरे ॥ मनु० ॥ ४ ॥ जिगर के चश्म खोल, तोल बात सही को ।

कहे चौथमल इस देह से, अनन्त जी तरे ॥ मनुष्य० ॥५॥
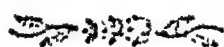
२०१ दया दिग्दर्शन.

(तर्ज-लावनी अष्टपदी)

दया को पाले हैं बुद्धिवान, दया में क्या समझे हैवान ॥ टेक ॥ प्रथम तो जैन धर्म मांही, चौवीस जिनराज हुए भाई, मुख्य जिन दया ही बतलाई, दया बिन धर्म कहो नाई ॥दोहा॥ धर्म रुची करुणा करी, नेमनाथ महाराज । मेघरथ राजा परेवो शरणे, रख कर साम्या काज ॥ हुए श्री शांतिनाथ भगवान । दया पाले हैं ॥ १ ॥ दूसरा विष्णु मत सुंभार, हुए श्रीकृष्णादिक अवतार, गीता और भागवत कीनी और वेदों में दया लीनी ॥ दोहा ॥ दया सरीखो पुन्य नहीं, अहिंसा परमोधर्म । सर्व मत और सर्व ग्रंथ में, यही धर्म का मर्म ॥ देखलो निज शास्त्र धर ध्यान, दया को पाले ॥ २ ॥ तीसरा मत है मुसलमान । खोल के देखो उनकी कुरान, रहम नहीं हो जिसके दिल दरम्यान उसीको बेरहीम लो जान ॥ दोहा ॥ कहते महमद मुस्तफा, सुन लेना इन्सान । दुख देवेगा किसी जीव को, बांही दोजख की खान । मार जहां मुद्गल की पहचान ॥ दया० ॥ ३ ॥ कानन है उसी मत तांई, कि जिस में जीव दया नाहीं । जीव रक्षा में पाप कहवे, दुख दुर्गति का वह सहवे ॥ दोहा ॥ ना हणा रे वचन है, देखो आंख्या खोल । सूत्र रहस्य जाने नहीं मूरख,

खाली करे झकझोल ॥ कहो चातुर कहें के अज्ञान, दया को पाले है बुद्धिवान ॥ ४ ॥ तीनों मजहब के कह दिये हाल, इसी पै करलेना तुम ख्याल । दो अब कुगुरु का संग टाल, बनो तुम षट् काया प्रतिपाल ॥ दोहा ॥ गुरु हीरालालजी हुक्म से, नाथदुआरा मांय, किया चौमासा चौथमल, उन्नीसे साठ में आय । सुन के जीवरक्षा करो गुणवान ॥ दया० ॥ ५ ॥

३०२ वीर कर्तव्य.

(तर्ज—दादरा)

जो धर्म वीर पुरुष है, वह धर्म को करे । उठाके पैर आगे को, पीछे नहीं फिरे ॥ टेक ॥ तन धन इज्जत सर्व एक, धर्म के लिये । करते रहे प्रचार न, किसी से वे डरे ॥ जो० ॥ १ ॥ आर्य के जो हीरे वह, पत्थर से कब दबे । न हटते रण के बीच हो शूरमा लरे ॥ जो० ॥ २ ॥ दुश्मन को पीठ दृष्टि परनारी को न दे । ये वस्तु देते नहीं, और दातार में खरे ॥ जो० ॥ ३ ॥ मर्द दद न गिने परोपकार को । नामर्द से उम्मेद, कहो कौन तो करे ॥ जो० ॥ ४ ॥ गर गंगा जा उलट, आग शीत उर धरे । ऐसा न होय होय, तो भी सत्य नहीं टरे ॥ जो० ॥ ५ ॥ महाराज हरिश्चन्द्र वा, अर्णक को देखलो । धर्म ग्रंथ बीच नाम, उनका है सरे ॥ जो० ॥ ॥ ६ ॥ कहे चौथमल जन्म लेना, उनका श्रेष्ठ है । बाकी तो भूमि भार, मनुष्य मृगसा चरे ॥ जो० ॥ ७ ॥

३०२ सुयोग.

(तर्ज—अष्टपदी लावनी)

सुगुरु संग धार धारे धार, कुगुरु संग टार टारे टार ॥ टेक ॥ मनुष्य को जन्म अमोलक पाय, अरे चातुर मत अहल गमाय । हाथ से बाजी तेरी जाय, जिनन्द गुण गाना हो तो अब गाय ॥ दोहा ॥ नरभव अमोलक पायके, मत हो मित्र अचेत । गफलत में मत रहो रात दिन, काल झपटा देत ॥ मोह की नींद निवार निवार ॥ सुगुरु० ॥ ॥ १ ॥ मति तेरी कुगुरु दिनी बिगाड़, करे तूं हिंसा झूठ का लाड़ । दीनी तेने शिव सुन्दर को ताड़, खोलया तेने दुर्गति के किवाड़ ॥ दोहा ॥ अनन्त काल तो खोया इस विधि, फेर गंवावे एम । अमृत छोड़ जहर को खावे, कैसे उपजे खेम ॥ खबर नहीं पड़ती तुझे लगार ॥ सुगुरु० ॥ २ ॥ मगर मस्त होके तूं फिरता, जुल्म करने से नहीं डरता, गरीबों की ठट्ठा करता, सत्य उपदेश नहीं धरता ॥ दोहा ॥ तूं जानें मैं बड़ा चतुर हूं, मेरे सिवाय नहीं और । जैन धर्म का मर्म न पायो, रह्यो ढोर को ढोर ॥ तज्यो नहीं क्रोध मान अहंकार ॥ सुगुरु ॥ ३ ॥ धर्म को नहीं पहचाने है, मूर्ख नर अपनी ताने है । जैन की रहस्य न जाने है, मिथ्या मत में भरमाने है ॥ दोहा ॥ तत्त्व ज्ञान खोजे से पावे, बिन खोजे नहीं पाय । मक्खन तो कोई बिरला लेगए, छाछ जगत भरमाय । ममत में खोगये सुमत

॥ सुगुरु० ॥ ४ ॥ मेरे आनन्द का दिन आया, दर्श जिनवर का मैं पाया, हुआ सब कार्य मन चाया, मिली मुझे समकित की माया ॥ दोहा ॥ उन्नीसे त्रेसट साल में, कानोड़ चौमासो ठाय, गुरु हीरालाल प्रसादे चौथमल, जोड़ सभा में गाय खोजना करो अरे नर नार ॥ सुगुरु० ॥ ५ ॥

३०४ कर्म
(तर्ज—दादरा)

अजब तमाशा कर्म संग, जीव यह करे । नशेके बीच होके, जैसे सूझ ना परे ॥ टेक ॥ कभी तो राजा होके, शीश छत्र यह धरे । कभी मुहताज होय दर, मांगता फिरे ॥ अजब० ॥ १ ॥ जो देव हुआ सामने, नृत अप्सरा करे । कभी हार बनी पुष्पका, सुन्दर के मन हरे ॥ अजब ॥ २ ॥ कभी तो हीरा होके, कनक बीच में जड़े । कभी तो बैर होके दबा, जूतों के तले ॥ अजब ॥ ३ ॥ सेठ होके नाम किया मुल्क में सरे । कभी गुलाम होय, देखो नीर यह भरे ॥ अजब० ॥ ४ ॥ कभी हुआ बलवान, कभी हो निबल डरें । कहे चौथमल निजरूप, सुमरने से दुख टरे ॥ अजब ॥ ५ ॥

३०५ सखा.
(तर्ज—भर भर जाम पिलाओ गुल लाला बना के मतवाला)

एक धर्म साथ में आवेरे चेतन, धर्म साथ में आय

॥ टेर ॥ राज तख्त और भरा खजाना, सभी धरा रहजाय। घर की नारी प्रान से प्यारी, वह भी साथ नहीं आय ॥ एक० ॥ १ ॥ दर्पन में मुख निरख २ के, फूल रहो मन मांय। हाड़ मांस मल मूत्र को थैलो, आखिर विनशी जाय ॥ एक धर्म० ॥ २ ॥ भाई बंध और कुटुम्ब के खातिर, क्यों तूं कर्म कमाय। शमशान भूमि तक छोड़े, परब मित्र के न्याय ॥ एक० ॥ ३ ॥ हीर पन्न के कंठ पहन के, बैठे मोटर मांय। आगे पीछे मरना तुमको, मोहन भोग छिट-काय ॥ एक० ॥४॥ राजा राना छत्रपति के, कोई साथ नहीं आय। सच्चा मित्र धर्म है जीया, परभव में सुखदाय ॥ एक० ॥ ५ ॥ उज्जैन शहर में साल गुणयासी। किया चौमासो आय। चौथमल उपदेश सुनावे, लूणमण्डी के मांय ॥ एक० ॥ ६ ॥

---

२०६ कलियुग की करतूत.

(तर्ज-सहमें यह सब को सुनाय जायेंगे)

कैसा आया यह कलियुग भारीरे ॥ टेर ॥ खाविंद को जोरु, घर मे धमकावें। खाविंद धमकावे महतारीरे ॥ कैसा० ॥ १ ॥ लड़की के धन से, थैली भरावे जहूर उडावे, जाति सारीरे ॥ कैसा० ॥ २ ॥ लुच्चे लफंगों मे बोले है हंस हंस, संतो की भक्ति बिसारीरे ॥ कैसा० ॥ ॥ ३ ॥ दया दान से दूर भगे है, झूट अनीति लगे प्यारी

र ॥ कैसा ॥ ४ ॥ निज कुटुम्ब से रक्खे लड़ाई, करे वेश्या परनारी से यारीरे ॥ कैसा० ॥ ५ ॥ कोट पतलून पहन, सिगरेट पीवे । संग कुत्ते ले खेले शिकारीरे ॥ कैसा० ॥ ६ ॥ अधर्मी तो तप जप माला को फेरे, ऊंच बने अनाचारीरे ॥ कैसा० ॥ ७ ॥ शेर का गीदड़, गीदड़ का शेर बन, वीर अधीयता धारीरे ॥ कैसा० ॥ ८ ॥ चौथ मल कहे पापियों के कलियुग, ज्ञानियों के सतयुग त्रिकारीरे ॥ कैसा० ॥ ९ ॥

३०७ कंजूस

(तर्ज-मैं तो मारवाड़ को बनियो)

मैं तो मूंजी साहुकार, पैसा खरचु नहीं लगार ॥टेर॥ साधु संत के कबहूं न जाऊं, वे कहे बारंबार । सुकृत करलो लाभ लूटलो, सुनतां जागे खार ॥ मैं० ॥ १ ॥ दूध दही कबहूं नहीं खाऊं, जो खाऊं तो छछ । एक वस्त्र जो वस्त्र पहनूं, वर्ष चलाऊ पांच ॥ मैं० ॥ २ ॥ मूंजी के घर व्याह रच्यो जब, त्रिया को समझावे । घर की मिल सब गीत गायलो, सोपारियां बच जावे ॥ मैं० ॥ ३ ॥ मरूं तो सिखला जाऊं कुटुम्ब को, दान पुण्य नहीं करना । नहीं खाना और नहीं खिलाना, जोड़ जमीं बीच धरना ॥ मैं ॥ ४ ॥ कौड़ी २ संचय कर सब, पर भव में लूं लार गुरु प्रसादे चौथमल कहे, ऐसी लीधी धार ॥ मैं० ॥ ५ ॥

३०८ पाप से छुटका.

(तर्ज-तरकारी लेलो मालन आई रे बीकानेर की)

इस पाप कर्म से, किस विध होसीरे थारो छुटको ॥ टेर ॥ शिकार खेलतो फिरे रात दिन, रंच दया नहीं लावे । बोले झूठ जहां पानी बतावे, कादो भी नहीं पावे ॥ इस० ॥ १ ॥ चोरी कर हरे पर धन को, नहीं खौफ राग को लावे । परनारी का रूप देख, थारी नीत भ्रष्ट होजावे ॥ इस० ॥ २ ॥ करे परिग्रह संचय तूं तो, करी क्रोध अभिमान । छल से छले लोभ के कारण, सुने न शिक्षा कान ॥ इस० ॥ ३ ॥ राग द्वेष के वश हो प्राणी, नित्य को कलह मचावे । तोमत धरे गैर के शिर पे, चुगली पर की खावे ॥ इस० ॥ ४ ॥ पर अपवाद वदे तूं निश दिन, हो अधरम में राजी । अरति धर्म में माया मृषा, बने मिथ्यात में माजी ॥ इस० ॥ ५ ॥ सुन्दर रसोई बनाके भाई, जैसे जहर मिलावे । जिमे बाद परगमें तन में, फेर वही पछतावे ॥ इस० ॥ ६ ॥ मारवाड़ में शहर सादड़ी, साल इकयासी आवे । गुरु प्रसादे चौथमल कहे पाप, तजे तिर जावे ॥ इस० ॥ ७ ॥

३०९ यहीं की सब बातें.

(तर्ज-पहर तवील)

चांदी की चांदी की बातें करे सब, आगे का करो

जिकर ही नहीं । आगे का सामां विना ए दिला ! तेरा होने का हरगिज गुजर ही नहीं ॥ टेर ॥ मैंने लाखों का माल कमाय लिया, मैंने बाग में महल झुकाय दिया । मैंने क्रोड़पति घर व्याह किया, मेरे जैसा जहां में बशर ही नहीं ॥ यांही० ॥ १ ॥ मैंने कैसा सजा है यह गुल बदन, मैं तो देखुं जिसदम ले दरपन । मेरा दिल होजाता है भरके चमन, मेरे सामने तू किस कदर ही नहीं ॥ यांही० ॥ ॥ २ ॥ मैं जो कुछ कहूं मेरा मानें वचन, मेरे कितने ही न्याती और कितने सज्जन । मैं आलिम मैं फाजिल मैं जानूं हरफन, मेरे बिन किसकी होती कदर ही नहीं ॥ यांही ॥ ३ ॥ मैं बहादुर हाकिम मैं राजा सही । मेरे धन है जितना किसी के नहीं । मैंने जीते हैं जहां तहा युद्ध कई, मेरा जाता निशाना टल ही नहीं ॥ यांही० ॥ ॥ ४ ॥ ए गाफिल तू गफलत में सोता पड़ा, खाली बातों में लो क्या हेगा धरा । तैंने अपना फरज अदा न किया चौथमल कहे वहां चाची का घर ही नहीं ॥ यहां ॥ ५ ॥

---

२१० मत्सरता त्याज्य.

(तर्ज-पंजी मूंडे बोल)

दूर हटाओ जी २ मत्सरता दिल से जो सुख चाहो जी ॥ टेर ॥ मत्सरता कर आपस में, मत वैर विरोध

चढ़ाओ जी। मत्सरता को देश बटो दे प्रेम बढ़ाओ जी ॥ दूर० ॥ १ ॥ देखी सुखी और के तांई, तुम प्रसन्न हो जावोजी। गुण ग्राही हो गुणी पुरुप का, तुम गुण गाओजी ॥ दूर० ॥ २ ॥ दया धर्म जो कोई दीपावे, तुम सामिल हो जाओजी। उत्तम कार्य का विरोधी बन मत धक्का लगाओ जी ॥ दूर० ॥ ३ ॥ मत्सर धरियो कौरव पाण्डव से, चायो राज्य छुड़ावो जी । जीत हुई पाण्डव की पछ्यो, कौरव पछतावोजी ॥ दूर० ॥ ४ ॥ पीठ महापीठ मुनि हृदय में, लाये मत्सर भावेजी । ब्राह्मी सुन्दरी बनी ध्यान, इन ऊपर लाओजी ॥ दूर० ॥ ५ ॥ मारवाड़ में शहर मादड़ी, हुओ इकपासी आवोजी । गुरु प्रसादे चौथमल कहे, पाप हटावोजी ॥ दूर० ॥ ६ ॥

३११ ध्यानादर्श.

(तर्ज—तरकारी ले लो मालन)

सुन मनुआ मेरा, ध्यान लगाओ ऐसा ईश से ॥टेर॥ ज्यूं पनिहारी सर जल लावे, करे बात हुलसाई । ताली लगावे दोनों करसे, ध्यान गगरिया मांही ॥ सुन० ॥ १ ॥ जैसे गैया चरे विपिन में, लगन बछरिया मांही । पतिव्रता का चित पति में, कभी विसरती नांहीरे ॥ सुन० ॥ २ ॥ ज्ञानी का नित रहे ज्ञान में, रोगी चित्त निरोग । लोभी

के मन धन धान्य ज्यूं, भोगी के मन भोगरे ॥ सुन० ॥ ॥ ३ ॥ कम्पित काच बीच में देखो, सूरत नजर नहीं आवे। ऐसे मन चंचल भोगों में, प्रभु नजर नहीं आवेरे ॥ सुन० ॥ ४ ॥ पद्मासन कर हाथ मिला, नासाग्र दृष्टि लगावे। ओष्ठ बन्ध कर मन में बोले, निजानन्द मिल जावेरे ॥ सुन० ॥ ५ ॥ मारवाड़ में शहर सादड़ी, साल इक्यासी आवे। गुरु प्रसादे चौथमल कहे, ज्योति में ज्योति समावेरे ॥ सुन० ॥ ६ ॥

३१२ राजुल का सखी से कहना.

(तर्ज—अम्मा मुझे छोटी सी टोपी दिलादे)

सखी गिरनारी की राह बतादे, राह बतादे, चलके दिखादे। एरी मेरे बालम से मुझको मिलादे ॥टेर॥ मैं नव भव की रानी, प्रीत पुरानी, फिर गये क्यों उनको जितादे ॥सखी०॥१॥ पशु की बानी पे करुणा जो आनी, उस श्याम को यहां पे बुलादे ॥ सखी० ॥ २ ॥ आर्जका बनूंगी, दर्शन करुंगी, और बातों को दूर हटादे ॥ सखी० ॥ ३ ॥ राजुल को तारी, वरी शीव नारी, चौथमल को भी मोक्ष दिखादे ॥सखी० ॥ ४ ॥

३१३ विषय परिणाम.

(तर्ज-यह कैसे बाल बिखरे हैं, क्यों सूरत बनी गम की)

फंसा जो ऐश के फन्दे, नहीं आराम पाया है। मगर

आराम के बदले, तड़फते दिन बिताया है ॥ टेर ॥ बुला ललितांग को रानी, बिठाया सेज के अन्दर। बड़ी मुहब्बत से आई पेश, किया जो दिल में चाया है ॥ फंसा० ॥ १ ॥ आया नृपति उसदम, उड़ा जी होश दोनों का। छिपाने का कहीं प्यारी, सण्डासे में गिराया है ॥ फंसा० ॥२॥ ऊंचे पांव नीचा सर, फंसा वह बेतरह उसमें। बहा सीने पे मल मूत्र, फक़ उच्छिष्ट खाया है ॥ फंसा० ॥३॥ रहा नौ मास वहां पे, हुस्न सारा मुरझाया है। हुई बरसाद पानी की, निकल नाली में आया है॥ फंसा ॥४॥ पिता सुन लेगया उसको, तनुज वह जानके अपना। करी फिर परवरिश उसको, बदन सुन्दर बनाया है ॥ फंसा ॥ ५ ॥ बैठ वही अश्व पे निकला, पुनः रानी बुलाया है। मगर जाता नहीं क्योंकि, रंज वहां पर उठाया है ॥ फंसा० ॥ ६ ॥ लिया यूं गर्भ में वासा, तजो तुम भोग की आशा, चौथमल कहे कंवर ज्यूं ने नारी को सुनाया है ॥ ७ ॥

---

३१४ संबोधन परदेशीको.

(तर्ज—पनिहारी)

विषम वाट उलंघ ने परदेशी जो। पायो नर तन शहर परदेशी। योग मिल्यो सत्संग को परदेशी जो। विलम्ब करे मत फेर परदेशी ॥ १ ॥ नर धन धनवंता

कई परदेशी लो । नर तन शहर में आय परदेशी । उलट पुलट कई होगया परदेशी लो, तूं मत जाना ठगाय परदेशी ॥ २ ॥ मंहगी मानव कोटड़ी, परदेशी लो । लीवी मदग बाजार परदेशी । समय कमाई को खिल्यो परदेशी लो । तूं सोया टांग पसार परदेशी ॥ ३ ॥ मत खो पूंजी मूलकी परदेशी लो, लेखो लेगा सेट परदेशी । धर्म धन करो चौगुना परदेशी लो । जमें सवाई पेठ परदेशी ॥ ४ ॥ चौथमल शिक्षा करे परदेशी लो । साल इक्यासी माय परदेशी । मारवाड़ में सादड़ी परदेशी लो । किधो चौमासो आय परदेशी ॥ ५ ॥

३१५ मोहफन्द से बचना.

(तर्ज-ना छेड़ो, गाली दूंगारे भरवादो मोय नीर)

मत पड़ मोहनी के फन्द मेरे, तूं मान मान टेर॥ जो मोहनी के फन्द में आया । वह पूरा फिर पछताया । रावण ने राज्य गंवायारे ॥ तूं० ॥ १ ॥ जाने माया भेरी । की कमा कमा कर भेरी । पर साथ चले नहीं तेरीरे तूं मान० ॥ २ ॥ सुन्दर देखी काया । तेने इतर फूलेल लगाया । पर है बादल ज्यूं छायारे तूं० ॥ ३ ॥ सज सोलह शृंगारा । फिर नार करे नखरारा । तूं मत लागो इस चारारे तूं० ॥ ४ ॥ जो मोह के फन्द में आसी । तुझे

चन्दर तरह नचासी । फिर लोग करे तेरी हांसीरे तू०
॥ ५ ॥ यह चौथमल जितलावे । तज मोह प्रभु गुण गावे,
तो आवागमन मिट जावेरे ॥ तू० ॥ ६ ॥ यह मारवाड़ के
मांई । सादड़ी में जोड़ बनाई, इक्यासी साल सुनाईरे
तू० ॥ ७ ॥
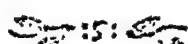
३१६ कृतयुगादर्श.

(तर्ज—क्यांथी यह संभलाय, मधुर स्वर)

कैसा आया यह काल, सज्जन कैसा आया यह काल
॥ टेर ॥ बेटा बहु बहिन भानजी । पाप धरे निहाल
॥ सज्जन० ॥ १ ॥ हाथ उधार लई नट जावे । उलटी देवे
गाल ॥ सज्जन० ॥ २ ॥ धर्म हेत पैसा नहीं खरचे,
दुष्कृत में दे माल ॥ सज्जन० ॥ ३ ॥ उत्तम घर नारी से
नाखुश । वेश्या से खुश हाल ॥ सज्जन० ॥ ४ ॥ बेटी
का पैसा ले ले कर बनते कुण्डीवाल ॥ सज्जन ॥ ५ ॥
चौथमल उपदेश सुनावे । देखी जग की चाल ॥सज्जन०॥
॥ ६ ॥ मारवाड़ में शहर सादड़ी । आया इक्यासी साल
॥ सज्जन० ॥ ७ ॥

३१७ जीवात्मा को ज्ञान.

(तर्ज-तरवारी लेता मालिन आई रे पोंकानर को)

सेलानी जीवड़ा,क्यों तूं लुभाया माया जाल मेंटेर॥

देखी गेरी फूल गुलाबी, जिस पे तूं ललचावे। मगर युवानी कल ढल जावे, जैसे फूल कुम्हलावेरे ॥ सेलानी० ॥ ॥ १ ॥ झूठ कपट कर माल कमाई, ऊंचा महल झुकाया। ओढ़ दुशाला सोवे सेज में, मान वदन में छायारे ॥ सेलानी० ॥ २ ॥ मुख में पान गले विच गहना, जब घड़ी लटकावे । शिर टेढ़ी पघड़ी चाले अकड़ी, फूला अंग नहीं मावेरे ॥ सेलानी० ॥ ३ ॥ सज श्रृंगारी सुन्दर नारी तेरे आज्ञाकारी । सम्पति देखी करे तू सेखी, ताके पर को नारीरे ॥सेलानी०॥४॥ हुए भर हजारी छत्र धारी, पाण्डव से तपकारी । बाद्ल छाया ज्यूं विरलाया, रावण सा वल-कारीरे ॥ सेलानी० ॥ ५ ॥ निकले श्वासा हो वनवासा, चले साथ नहीं कौरी । छीने भूषण बना नगन तन, फूंकगा ज्यूं होरीरे ॥ सेलानी० ॥ ६ ॥ एम विमासी, तज मोह फासी, भजले तू शिव वासी । गुरु प्रसाद चौथमल ये सत् शिक्षा प्रकाशीरे ॥ सेलानी० ॥ ७ ॥

---

२१८ भक्त प्रार्थना.

(अम्मा मुझे छोटीसी टोपी दिलादे)

प्रभु मुझे मुक्ति के मार्ग लगादो । मार्ग लगादो पाप हटादो हां मुझे आपकी राह वतादो ॥ टेर ॥ अर्ज करूं मैं पैया परूं मैं, भव सागर से जल्दी तिरादो ॥ प्रभु० ॥ १ ॥

मोह का फन्दा, काट जिनन्दा, जालीम कर्मों से मुझ को बचादो ॥ प्रभु० ॥ २ ॥ त्रशला का जाया, पकड़के बैंया. खास शिवपुर में मुझको पहुंचादो ॥ प्रभु० ॥ ३ ॥ तू तारन तिरन है, तेरी शरन हूँ। हां चौथमल को सुखी बनादो। प्रभु० ॥ ४ ॥

---

३१६ महावीर प्रभु से अर्जी.

(तर्ज—ना छेड़ो गाली दूंगी रे भरवादे मोय नीर)

पापों से मुझे छुड़ादोरे, त्रशला का लाडला ॥ टेर ॥ तूं ही स्वामी अन्तरयामी, सारे जगत में नामी । नहीं किंचित तुझ में खामीरे त्रशला का० ॥ १ ॥ तूं ही ब्रह्मा शिव मुरारी, तूं ही जगदीश्वर जयकारी । तेरी सूरत मोहन गारीरे त्रशला० ॥२॥ तूं ही अधम उधारन पावन, मैंने पकड़ा तेरा दामन । तूं ही शिला मोक्ष पहुंचावनरे त्रशला० ॥ ३ ॥ यूं चौथमल गुण गावे, नित मन वंछित सुख पावे, मेरे दिल में तूं ही समावेरे ॥ त्रशला० ॥ ४ ॥

---

३२० देश सुधार.

(तर्ज-कयांगी ना० सेभातागा मधुर स्वर)

लीजे देश सुधार, मिल सब लीजे देश सुधार ॥टेर॥ अनाथों की रक्षा करके, कर विद्या प्रचार ॥ मिल० ॥ १ ॥

वैर विरोध तजी आपस में, सम्प करो हितकार ॥ मिल० ॥ २ ॥ गिन्ती वढ़ी विधवा की ज्यादा, कन्या विक्रय निवार ॥ मिल० ॥ ३ ॥ बेटी घर पानी नहीं पीते । अब ले वीस हजार ॥ मिल० ॥ ४ ॥ गर्भ पात से दुष्कृत होवे, फैल गया व्यभिचार ॥ मिल० ॥ ५ ॥ चौथमल कहे अब नहीं चेतो, तो डूबो मंझधार ॥ मिल० ॥ ६ ॥

---

२२१ अभिमान त्याज्य.

[तर्ज-तरकारी ले लो मालिन आई है बीकानेर की]

अभिमानी प्रानी, डरतो लाओरे जरा राम को ॥टेर॥ योवन धन में हो मदमादा, कणगट ज्यूं रंग आणे । तेरे हित की बात कहे तो, क्यों तू उलटी तानेरे ॥ अभिमानी ॥ १ ॥ कन्या बेची, धन लियो एंची, बात करे तूं पेची । मुरदा को ले कफन खेंची, हृदे कपट की कैंचीरे ॥ अभिमानी० ॥ ॥ २ ॥ घर का टंटा डाल न्याति में, तूं तो धड़ा नखावे । आपस बीच लड़ा लोगों ने,सदर पंच बन जावेरे॥अभिमानी०॥ ॥ ३ ॥ धर्म ध्यान की कहे बतावे, हम को फुरसत नाहीं । नाटक गोठ व्याह शादी में, दे तूं दिवस बिताईरे॥अभिमानी० ॥४॥ उपकार कियो नहीं किशी के ऊपर, खा खा तन फुलावे । हीरा जैसा मनुष्य जन्म ने, क्यों तूं वृथा गंवावेरे ॥ अभिमा- नी० ॥ ४ ॥ मारवाड़ में शहर सादड़ी, साल इक्यासी

मांही। गुरु प्रसादे चौथमल, श्रावण में जोड़ बनाईरे ॥ आग-मानी० ॥ ६ ॥

२२२ मान निषेध.

[तर्ज-ख्याल की]

मान मत करना कोई इन्सान, मान से होता है नुक-सान ॥ टेर ॥ किया मान दशारणभद्र, इन्द्र उतारा आन। मुनि बने इन्द्र बदी फिर, नमा चरण दरम्यान ॥ मान० ॥ ॥ २ ॥ आण न मानी बाहुबलीजी, निज भ्रात की जान। आपि होय अहंकार तजा जब, लीना केवल ज्ञान ॥ मान० ॥२॥ कोनिक शुभूम चक्रवर्ती ने, कीना था अभिमान०। छठी सातवीं गये नर्क में, छत्रधारी मान ॥ मान० ॥३॥ मान न ज्ञान, ज्ञान बिन ध्यान, ध्यान बिना शिव स्थान। हरगिज मिलने का है नाहीं, सुन जो चतुर सुजान ॥ मान० ॥४॥ मान से कोप, कोप से द्रोह, द्रोह नरक की खान। वहां से निकली हीन दीन हो, आगम का परमाण ॥ मान० ॥ ५ ॥ सदा हरा रह गुल गुलशन में, कभी सुना नहीं कान। दिवस तीन हो तीन अवस्था, प्रगट देखलो भान ॥ मान० ॥ ६ ॥ गुरु प्रसादे चौथमल कह, की शिक्षा प्रदान। अभिमान तज धार नम्रता, हो तेरा कल्यान ॥ मान० ॥७॥

३२३ ज़ालिमों का जीवन.

(तर्ज—गजल, इलाजे दर्द गर तुमसे मसीहा हो नहीं सकता)

कभी ज़ालिम फला फूला, कहीं हमने न पाया है। मगर मुश्किल से मरते तो, निगाह में बहुत आया है ॥टेर॥ कल गुल ने दुल्हा सर पे, जो शासन जमाया है। देखलो आज पेरों के, तले जाकर दबाया है ॥ कभी० ॥ १ ॥ करके कैद गैरों को, खूब जिनको सताया है। वही कैदी बनी जहां में, खास दण्डा हिलाया है ॥ कभी० ॥ २ ॥ देने और को फांसी, समां जिसने मंगाया है ॥ उसी फांसी से खुद उसने, प्रान देखो गंवाया है ॥ कभी० ॥ ३ ॥ टिकाते पैर न भू पे, जो ऐसा मान छाया है। मिले मिट्टी में जाकर वे, निशां बाकी न रहाया है ॥ कभी० ॥ ४ ॥ शूल के शूल, फूल के फूल, यह प्रभु ने बताया है। चौथमल कहे वो बंबूल, आम किसने न खाया है। कभी० ॥ ५ ॥

—S×❀+S—

३२४ ज्ञान उद्योत.

[तर्ज—दादरा]

करो कोशिश, ज्ञान पढ़ाने को ॥ टेर ॥ छोटे २ बच्चों को, ज्ञान नहीं देते। खाली रखते हो मूर्ख कहाने को ॥ करो० ॥ १ ॥ गफलत की नींद में, सोते पड़े हो। सिर उठा के तो देखो ज़माने को ॥ करो० ॥ २ ॥ ज्ञान

बिना विद्या को सिखाते । क्या नास्तिक उन्हें बनाने को ॥ करो० ॥ ३ ॥ कोट पतलून बूंट पहन के चाले । सिगरेट का धुंआ उड़ाने को ॥ करो० ॥ ४ ॥ ऐसे गुधरंगी संतान तुम्हारी । खुद अगवा हुए रहा दिखाने को ॥ करो ॥ ५ ॥ धार्मिक ज्ञान बिन विद्या फजूल सब । है खाली पेट भराने को ॥ करो० ॥ ६ ॥ नवतत्त्व षट्द्रव्य न्याय सिखाओ । शुद्ध श्रद्धा उनकी रखाने को ॥ करो० ॥ ७ ॥ चौथमल कहे जिन वानी सुजानी । यही तिरने तिराने को ॥ करो० ॥ ८ ॥

---

३२५ कर्म गति.

[तर्ज—पंजाबी]

कर्म गति भारीरे २ नहीं टले कभी सुनजो नरनारी रे ॥ टेर ॥ कर्मरेख पर मेख धरे नहीं, देखा कोई बल धारीरे । शाह को रङ्क, रङ्क को करदे छत्तर धारीरे ॥ नहीं० ॥ १ ॥ राजा राम को राज्य तिलक, मिलने की हो रही त्यारीरे । कर्मों ने ऐसी करी, भेजे विपिन मुरारीरे ॥ कर्म० ॥ २ ॥ शीलवती थी सीता माता, जनक राज दुलारीरे । कर्मों ने बनवास दिया, फिरी मारी मारीरे ॥ कर्म० ॥ ३ ॥ सत्यधारी हरिश्चन्द्र राजा से, बेची तारा नारीरे । आप रहे भंगी के घर पर, भरे नित वारीरे ॥ कर्म० ॥ ४ ॥ नगी

अंजना को पीहर में, राखी नहीं लगारीरे । हनुमान-सा पुत्र हुआ, जिनके वलकारीरे ॥ कर्म० ॥ ५ ॥ खन्दक जैसे मुनिराज की, देखो खाल उतारीरे । गजसुकुमाल सिर झार सही, समता उर धारीरे ॥ कर्म० ॥ ६ ॥ सम्वत् उन्नीसे अस्सी साल, धम्मोत्तर सेखे कारीरे । गुरु प्रसादे चौथमल कहे, दया सुख कारीरे ॥ कर्म० ॥ ७ ॥

३२६ बाग से उपमित संसार.

(तर्ज—दादरा)

मत पक्षी तूं बाग में, ललचानारे ॥ टेर ॥ संसार मानो यह बाग लगा है, जिसमें गर्भ गुलाब महकानारे ॥ मत० ॥ ॥ १ ॥ ममता की मेंहदी, और मान मोगरा । फिर अधर्म का आम लगानारे ॥ मत० ॥ २ ॥ कर्म के केले और दर्द की दाड़म । क्रोध केवड़ा चुवानारे ॥ मत० ॥ ३ ॥ इस बाग के अन्दर, काल शिकारी । तक तक के मारे निशानारे ॥ मत० ॥ ४ ॥ चारों गति के चारों दरवाजे । जिसमें आते कई राणारे ॥ मत० ॥ ५ ॥ अय भोला हंस ! आया तूं कहां से । कहां तेरा असल ठिकानारे ॥ मत० ॥ ॥ ६ ॥ चौरासी लक्ष जीवा योनी का लंबा । मोह माली है इसका पुरानारे ॥ मत० ॥७॥ काम भोग फल फूल खिले हैं । जिससे इस दिल को हटानारे ॥ मत० ॥ ८ ॥ राग द्वेष दो बीज पड़े हैं । जरा रूपी यह बिल्ली का आनारे

॥ मत० ॥ ९ ॥ इस बाग अंदर एक धर्म वृक्ष है । यहीं विराम का टिकानारे ॥ मत० ॥ १० ॥ ज्ञान दर्शन चारित्र तप फल है । बेशक तूं इनको खानारे ॥ मत०॥ ११ ॥ यह फल खा खा, अमर होजाना । आवागमन को मिटानारे ॥ मत० ॥ १२ ॥ चौथमल कहे ए मन पक्षी ! गुरु हीरा-लाल गुण गानारे ॥ मत० ॥ १३ ॥

२२७ अनिवार्य गमन.

(तर्ज--योलो न चाहे योलो दिल जान से फिदा हैं)

करना जो चाहे करले, जाना जरूर होगा । कहां तक रहोगे बैठे, जाना जरूर होगा ॥ टेर ॥ कहां राम और लक्ष्मन, गये भीम और अर्जुन । एक दिन तो तुमको यहां से, जाना जरूर होगा ॥ करना० ॥ १ ॥ हंस हंस के जुल्म करते, नहीं आकबत से डरते । आखिर नतीजा इनका पाना जरूर होगा ॥ करना० ॥ २ ॥ गुलशन की बहार देखी, बुल बुल रही है बेखी । आते ही बाज फौरन, जाना जरूर होगा ॥ करना० ॥ ३ ॥ यह कोठी बाग बाड़ी, नारी जो प्राण-प्यारी । सब छोड़ के सवारी, जाना जरूर होगा ॥ करना० ॥ ४ ॥ यूं चौथमल सुनावे, एक धर्म साथ आवे । चाहे मानो या न मानो, जाना जरूर होगा ॥ करना० ॥ ५ ॥

३२८ जुंआ त्याज्य.

(तर्ज--दादरा)

जुंआ खेलो न शिक्षा हमारीरे ॥ टेर ॥ जुंआ ही इज्जतमें, धब्बा लगावे । दौलत की होती है ख्वारीरे ॥ जुंआ० ॥ १ ॥ जुंआ ही चोरी करना सिखावे । सर्व व्य-सनों में यह सरदारीरे ॥ जुंआ० ॥ २ ॥ जीता जुंआरी बन जावे लाला । हारे से होता भिकारीरे ॥ जुंआ० ॥३॥ राजा नल और पांडव पाचों । जब जुंआ ने विपदा डारीरे ॥ जुंआ० ॥ ४ ॥ चौथमल कहे जूंआ को छोड़ो । है इससे भली साहुकारीरे ॥ जुंआ० ॥ ५ ॥

---

३२९ आधुनिक अधार्मिकता.

[तर्ज--हिवेरे हिन्दू पणो जाय हालियो]

प्राणिया कैसे होवेगा निस्तारो, जरा हृदय तो ज्ञान विचारोरे ॥ टेर ॥ मनुष्य तन चिन्तामणि पाया, फिर विषयों में क्यों ललचाया । जग समझो सुपना–सी मायारे ॥ प्राणिया० ॥ १ ॥ तूं रात्री भोजन खावे । कन्द मूल पे करुणा न लावे । बीड़ी सिगरेट का धूंवा उड़ावेरे ॥ प्राणि-या० ॥ २ ॥ पर नारी पे दृष्टि धरेहै, कईके जुतियों की मार पड़े है, तो भी निर्लज्ज होयके फिरे है रे ॥ प्राणिया० ॥३॥ दारु पीवे व मांस को खावे । फिर हिन्दू का नाम धरावे ।

चलि वैकुंठ में जाना चावेरे ॥ प्राणिया० ॥ ४ ॥ तोल माप में कम ज्यादा करावे। अच्छे के अंदर खोटा मिलावे। फिर जाली कागज बनावेरे ॥ प्राणिया० ॥ ५ ॥ वर्ष अठारह की कन्या बनावे। देवे पांच हजार तो ब्यावे, लौकिक लाज सभी विसरावेरे ॥ प्राणिया० ॥ ६ ॥ दौलत से खजाना भरूंगा। चौगुना आठ गुना तो करूंगा, यूं नहीं जाने के मैं भी मरूंगारे ॥ प्राणिया० ॥ ७ ॥ सारा जन्म अमोलक खोया। खरा खोटा पंथ नहीं जोया। अब कांई होवे जोर सु रोयारे ॥ प्राणिया० ॥ ८ ॥ विना धर्म घणा पछतासो, जैसा किया वैसा फल पासो। मनुष्य जन्म में फेर कब आसोरे ॥ प्राणिया० ॥ ९ ॥ सेठ सेवारामजी के बाग के मांही। चौथमल ने यह शिक्षा सुनाई। कर धर्म जो सुधरे कमाईरे ॥ प्राणिया० ॥ १० ॥

३३० नशा निषेध.

[तर्ज-दादरा]

मत कीजो नशा, दुख पाओगे ॥ टेर ॥ तम्बाखू का पीना बुरा, पहिले मंगाती भीख। ऊंच नीच एक होय, रहती जरा न ठीक। हाथ मुंह में बदबू फैलाओगे ॥ मत० ॥ १ ॥ पीने से गांजा तन पर, रहता कभी न नूर। फिर जाय रंग नेत्र का, गुस्सा चढ़े जरूर। कभी पीने पागल हो जाओगे ॥ मत० ॥ २ ॥ चरस और चंडू को, दूर से

दो छोड़ । उत्तम को नहीं पीना, कुल में लगे है खोड़ । लगे इश्क फिर पछताओगे ॥ मत० ॥ ३ ॥ लगाते रगड़ा भंग का, रहते नशे में गर्क । बिगड़े हैं कई साहूकार इसमें न जरा फर्क । अति भोजन कर रोग बढ़ाओगे ॥ मत० ॥ ४ ॥ छोटे मोटे आदमी, कैसे हुए निडर । सिगरेट को पीते शोक से. शुद्ध अशुद्ध की नहीं खबर । क्या फायदा इस में उठावोगे ॥ मत० ॥ ५ ॥ महुआ और कीडों का, शराब है अर्क । आंखों से खुद देखलो, करके ठकि तर्क । कम उम्र में जान गंवाओगे ॥ मत० ॥ ६ ॥ अफीम का खाना खराब, बे वख्त नींद आय । कहे चौथमल नशे को तज, आराम गर तूं चाय । मेरी नसीहत पे ध्यान लगाओगे ॥ मत० ॥ ७ ॥
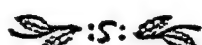
३३१ भावी भविष्य.

(तर्ज-पंजो की)

सुमति जब आवेगा, सत्संग में तेरो जीव रमावेगा ॥ टेर ॥ सुमति के आया बिन प्रानी, लक्ष चौरासी गोता खावेगा । बार २ मनुष्य देह उत्तम, कब तुं पावेगा । सुमति ॥ १ ॥ बालपना गया आई जवानी, यह भी कल ढ़ल जावेगा । आगे बुढ़ापा बीच में, कुछ नहीं बन आवेगा ॥ सुमति० ॥ २ ॥ खावे सो निर्बीज हुए, और लूणगाजो

घोवेगा । कौन बेटा कौन बाप है । करनी फल पावेगा ॥ सुमति ॥ ३ ॥ चोरी करी चोर धन लावे, कुटुम्ब मीली खाजा वेगा । भुगतण समय एकलो, नहीं कोई छुडावेगा । सुमति ॥ ४ ॥ पापी की सोबत मत कीजे, उल्टो पाट चढ़ावेगा । इतना को होसी ज्यूं होसी, यूं समझावेगा ॥ सुमति० ॥ ॥ ५ ॥ पापी जो वैकुण्ठ जावतो, धर्मी नरकां जावेगा । नहीं हुई नहीं होने की, पापी पछतावेगा ॥ सुमति० ॥ ६ ॥ धर्मी ने नहीं देवे सहायता, पापी ने चढ़ावेगा ॥ बैठ पत्थर की नाव में, वो डूबो जावेगा ॥ सुमति० ॥ ७ ॥ गुरु प्रसादे चौथमल कहे, धर्म कियां तिरजावेगा । अस्सी साल नीमच के मांही, जोड़ सुनावेगा ॥ सुमति० ॥ ८ ॥

---

३३२ रण्डीबाजी निषेध.

(तर्ज—दादरा)

पिया रंडी के जाना मना है रे ॥ टेर ॥ जाते हो रंडी के घर, तुमको शर्म नहीं । फिजूल इज्जत को खोने, रहता धर्म नहीं । शास्त्र में बहुत गुनाह है रे ॥ पिया० ॥ १ ॥ रंडी जो पिया तुम से, करती है खूब प्यार । लूटती है धन, और योवन की बहार । इस सोबत में नुकसान घना है रे ॥ पिया० ॥ २ ॥ पोशाक उसके लिये, महंगी लेजाते हो । कर्जा बजार से ले, शिरपे चढ़ाते हो । सच कहूं कानों से सुना है रे ॥ पिया० ॥ ३ ॥ यहां पर तो वह सुर्खरू के, फिर

आगे को नर्क है । कहे चौथमल इसमें, कुछ भी न फर्क है । अरे जुल्मी ! क्यों आरामी बनाहै रे ॥ ४ ॥

३३३ धार्मिक अस्पताल.

(तर्ज-मालिन आई है विकानेरकी)

आए वैद्य गुरुजी, लेलो दवाई विना फीसकी ॥ टेर ॥ लेलो दवाई है सुखदाई, देर करो मत भाई । नब्ज दिखाओ रोग वताओ, दो सब हाल सुनाईरे ॥ आए० ॥ १ ॥ सत्संग की शीशी अन्दर, दवा ज्ञान गुण कारी । एक चित्त से पियो कान से, सकल मिटे विमारीरे ॥ आए० ॥ २ ॥ टिटिसकोप और थर्मामेटर, मति श्रुति ज्ञान लगाओ ॥ साध्य असाध्य भवी अभवी, भेद रोगका पाओरे ॥आए॥ ॥ ३ ॥ दया सत्य दत्त ब्रह्मचर्य्य है, निर्ममत्व फिर खास । शम दम उपशम कई किसमकी, दवा हमारे पास ॥आए॥ ॥ ४ ॥ रावण कंश मरे इस कारण, रोग हुआ अभिमान। लोभ रोग ने भी पहुंचाई अनन्त जीव की हानरे ॥ आए० ॥ ५ ॥ जुंआ मांस मदिरा है वेश्या, चोरी बुरी शिकार । परनारी यह सब वद परेहजी, बचे रहो हुशियाररे ॥ आए० ॥ ६ ॥ त्याग तप से ताव तिजारी, रोग शोक मिटजावे । हो निरोग शिव महल सिधावे, मन इच्छित फल पावेरे ॥ आए० ॥ ७ ॥ चर्चा चूरण बड़ा तेज है, जो कोई इसको

जावे। यह हाजमा संशयरूपी, तुरत फुरत मिट जावेरे ॥ आए० ॥ ८ ॥ सम्वत उन्नीसे अस्सी साल में, देवास शहर सुभाग। गुरु प्रसादे चौथमल यह, दवाखाना किया जहांरे ॥ आए० ॥ ६ ॥

---

३३४ विषय वासना.

(तर्ज—ओ फिरनगारी का ढोला,दालो रहला म्हारो मेरे राज)

विषय अनर्थकारी, तजो नरनारी, गुरु सीख भारी जी आज ॥ टेर ॥ सुन्दर शहर को अधिपतिरे, विजयसेन भूपाल। भोग गवेषी पूरो ऐयाशी, लागो यह जंजाल हो ॥ विषय० ॥ १ ॥ सहल करन को निकल्योरे, गज पर हो असवार। रस्ते में एक नारी देखी, अप्सर के उनिहार हो ॥ विषय० ॥ २ ॥ बलात्कार लेने ग्रहीरे, रानी ली है बनाय। मणि मोती का भूषण वस्त्र, तन पर दिया सजाय हो ॥ विषय० ॥ ३ ॥ एक रूप दूजा तन भूषण, तीजो नखरो चाव। क्यों नहि कामी मूगखोर, पड़े फांसमें पाव हो ॥ विषय० ॥ ४ ॥ राज्य कार्य मंत्री करेरे, आप हुआ मस्तान। प्रजा भी निन्दा करेरे, राजा धरे नहीं ध्यान हो ॥ विषय० ॥ ५ ॥ रानियां अर्ज करे सुन साहिब ! फिर न आवे पास। रोते मून्हे फूंक देवे ज्यूं, पड़ कर हुई निराशहो ॥ विषय० ॥ ६ ॥ पर सब मिल मिसलत करीरे,

कैसा बना कुसंग । सिंह होय शुनि से राचे, बिगड़ गयो सब ढंग हो ॥ विषय० ॥ ७ ॥ इस पापिन ने आयकेरे, दिदा मान उतार । सुध न लेवे बालमारे, यही दुःख अपार हो ॥ विषय० ॥ ६ ॥ निर्दय हो ऐसी करीरे, मति एक मिलाय । कामिनी को विष खिलाई, दी यमलोक पहुंचाय हो ॥ विषय० ॥ १० ॥ दग्ध क्रिया करने नहीं देरे मोह वश महाराज । अन बोला मुझसे लियोरे, रुठ गई है आज हो ॥ विषय० ॥ ११ ॥ चौथे दिन खुद राजवीरे, देखी घूंघट हटाय । दुर्गन्ध सही जावे नहींरे, दी फिर तुरत जलाय हो ॥ विषय० ॥ १२ ॥ अनित्य पणो विचारनेरे, पुत्रको राज भोलाय । संयम ले करणी करीरे, गया स्वर्ग के मांय हो ॥ विषय० ॥ १३ ॥ साल इक्यासी सांयनेरे, चार भुजा के माय । गुरु प्रसादे चौथमल तो, सब ने रहा चेताय हो ॥ विषय० ॥ १४ ॥

---

३३५ अहिंसा.

(तर्ज—दादरा)

क्यों प्राणियां के प्रान सताओरे ॥ टेर ॥ आठों जाम तृण लिए रहें मुंह में, उस पे क्यों तेग उठाओरे ॥ क्यों० ॥ १ ॥ खा खा के गोश्त तुम अपने जिस्म पै, क्यों हिंसा का बोझ उठाओरे ॥ क्यों० ॥ २ ॥ पढ़ पढ़ के मंत्र पशु

को विनाशो, नाम जुल्मों में दर्ज कराओरे ॥ क्यों० ॥ ॥ ३ ॥ लड़ो उससे जो बल में सम हो, मत दीनों पर जोर जिताओरे ॥ क्यों० ॥ ४ ॥ मरने के बाद सब गम- झेंगे तुमको, जिसको तुम यहां पर दबाओरे ॥ क्यों० ॥ ॥ ५ ॥ चौथमल कहे दया को धारो, हिंसा को दूर हटाओरे ॥ क्यों० ॥ ६ ॥
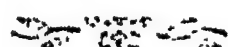
२३६ अवसर.

(तर्ज—भर भर जाम पिलाओ गुलाला बनाके मतवाला)

मनुष्य जन्म अनमोल पायकर, मत अब वृथा गंवाय ॥ मत अब वृथा गंवायरे चेतन० ॥ टेर ॥ उत्तम कुल आर्य भूमि की, को देवता चहाय । कौड़ी बदले देख रतन यह तेरे हाथ से जाय ॥ अब मत० ॥ १ ॥ गोरे अंग को देख देख कर, फूला अंग न माय । चार दिनों की है यह जवानी नदी पूर ज्यूं जाय ॥ मत अब० ॥ २ ॥ मात पिता की मोह माया में, प्राणी रहो लुभाय । राजा बादशाह और दिवान से, पीछे मिटना जाय । मत अब० ॥ ३ ॥ जर जेवर का भरा खजाना, नहीं खरचे सुकृत मांय ॥ नर्क कुण्ड में पड़ते तुमको, रखने वाला नांय ॥ मत० ॥ ४ ॥ चेत चेतरे चेत अज्ञानी, ज्ञानी यह फरमाय । भंग तमाखू रात्रि भोजन, देही पीनने त्याग ॥ मत० ॥ ५ ॥ मारे

जग का नाज मिलाके, भिन्न भिन्न करना चाय । मेले बीच में रतन बेच के, फेर कभी नहीं पाय ॥ मत० ॥ ६ ॥ दुर्लभ है पर दैवयोग से, यह भी गर मिल जाय । क्रोड़ यतन कर नर तन खोया, नहीं मिले फेर आय ॥ मत० ॥ ॥ ७ ॥ गुणयांसी के साल चौमासो, उज्जैनसे गये उठाय । चौथमल कहे आए बागसे, दोलतगञ्जक मांय ॥ मत० ८ ॥

---

३३७ चोरी निषेध.

(तर्ज—दादरा)

मत कीजो चोरी कहे ज्ञातारे ॥ टेर ॥ चोरी जो करते पर द्रव्य हरते, कोई जेल के बीच मरजातारे ॥ मत० ॥ ॥ १ ॥ लेने में चोरी देने में चोरी, कोई गुप चुप से माल को खातारे ॥ मत० ॥ २ ॥ जेबों को कतरे, थैलियों उड़ावे, जाल का कागज बनातारे ॥ मत० ॥ ३ ॥ चोर पुरूष कभी, सुख से न रहवे, छुर के दिन को बितातारे ॥ मत० ॥ ४ ॥ चौथमल कहे चोरी को छोड़ो, जो तुम चाहो कुशलतारे ॥ मत० ॥ ५ ॥

---

३३८ आयु गति.

(तर्ज—पंजी की)

वय पलटावेरे, या सदा एक सी नहीं रहावेरे ॥टेर॥

सूरज की भी तीन अवस्था, दिवस बीच होजावेरे । बाल युवानी वृद्धा अवस्था, यूं पलटा खावेरे ॥ जग० ॥ १ ॥ करकण्डू नृप चम्पा नगरी को, नीति से राज चलावेरे । रवि से तेज पुञ्ज, भूप कई हुजर आवेरे ॥ जग० ॥ २ ॥ एक दिन वन जाता मार्ग में, गौ वत्स दरशावेरे । खूब पिलाओ दूध इसे यूं, हुकम सुनावेरे ॥ जग० ॥ ३ ॥ योवन में हुओ मस्त दूध मल, सांड नाम ठेरावेरे । कालान्तर के योग, बुढ़ापा उसे दबावेरे ॥ जग० ॥ ४ ॥ पड़ा पथ के बीच, उठाया नहीं किसी से जावेरे । देख व्यवस्था सांड की, नृप चिन्ता लावेरे ॥ ५ ॥ निर्णय कियो भूप मंत्री से, भेद सकल जद पावेरे । निज व्यवस्था सोच नृप, वैदों को बुलावेरे ॥ जग० ॥ ॥ ६ ॥ हम नहीं मरें अमर रहें जग में, नहीं बुढ़ापो आवेरे । जागिरी बक्षीस करूं, जो दवा खिलावेरे ॥ जग० ॥ ७ ॥ नहीं हुई नहीं होने की, यह मंत्री भिन्न समझावेरे । काल रूप वायु के आगे, सब बिरलावेरे ॥ जग० ॥ ८ ॥ होय वैरागी राज कुंवर ने, गद्दी तुरत बिठावेरे । प्रत्येक बुद्धि संयम ले फिर, मोक्ष सिधावेरे ॥ जग० ॥ ९ ॥ शहर भिलाड़ ठाणा, इक्यासी साल में आवेरे । गुरु प्रसाद चौथमल सुख सम्पति पावेरे ॥ जग० ॥ १० ॥

३३९ प्रियां का उपदेश.

(तर्ज—दादरा)

पिया मेरो से सुइरूपन लगाने हो । होरा पोशाक पर्सो

जिस्म पै, कूचे में घूमते हो। खूब सूरत देखके, अकल को भूलते हो। धन योवन की बहार लूटाते हो॥ पिया०॥ १॥ घर की औरत बक रही, जिसका न ध्यान है। घर में न टिके पांव, फंसी उसमें जान है॥ नहीं मजा क्यों इज्जत घटाते हो॥ पिया०॥ २॥ हुश्न भद्दा पड़ गया, नहीं मुंह पर नूर है। बुड्ढे सी भड़क दीखे, जवानी जरूर है!! बना नुक्सा दवा तुम खाते हो॥ पिया०॥ ३॥ थोड़े दिनों में बद चलन, बावा बनायेगा। देकर के तुम्बी हाथ में, यहां से भगायगा॥ इन बातों पे ध्यान न लाते हो॥ पिया०॥ ४॥ मेरी कहन पे पिया कुछ भी ध्यान दो। परनार को पिया जी, जल्दी से त्याग दो। उर चौथमल की शिक्षा न लाते हो॥ पिया०॥ ५॥

---

३४० प्रमाद त्याज्य.

(तर्ज—बनजारा)

तुम रहना यहां हुशियारा, जीवराज मुसाफिर प्यारा॥ टेर॥ ऐ भोले परदेशी! दिन कितना यहां पर रहसी जी कुछ दम का समझ गुजारा॥ जीव०॥ १॥ इस शहर में कुमता नारी। कई राजा दिए फंद डारीजी॥ जिसका है अजब नखरारा॥ जीव०॥ २॥ धर्म कही हिंसा करावे, तुझे भोग बीच ललचावेजी। छल बल की

भरी अपारा ॥ जीव० ॥ ३ ॥ तूं इससे बचना रहियो । निज माल जावते रखियोजी । उपकारी देत पुकारा ॥ जीव० ॥ ४ ॥ यह दुनिया बाग यों जानो । हरबार होय कहां आनोजी । ले नेकी-फूल दो चारा ॥ जीव० ॥ ५ ॥ जब बख्त कजा की आवे । ये टेम चला तूं जावेजी । सब पड़ा रहे यह पसारा ॥ जीव० ॥ ६ ॥ कहीं जल में महल बनाया । कहीं थल पर बाग लगायाजी । चौथमल कहे ऐसे हुए हजारा ॥ जीव० ॥ ७ ॥

---

३४१ विद्या.

(तर्ज—शहरा)

विद्या पढ़ने में जिया लगाया करो ॥ टेर ॥ विद्या ही नर और नारी का भूषण । आलस को दूर भगाया करो ॥ विद्या० ॥ १ ॥ विद्या से इज्जत विद्या से कीर्ति, सदा इसका अभ्यास बढ़ाया करो ॥ विद्या० ॥ २ ॥ अमोल वक्त को हंसी मजाक में । यों भूल के मत तुम गंवाया करो ॥ विद्या० ॥ ३ ॥ हंसना लड़ना गाली का देना । ऐसी बातों जबां पे न लाया करो ॥ विद्या० ॥ ४ ॥ चौथमल कहे सुनो सब पाठक । नशेबाजों के पास न जाया करो ॥ विद्या० ॥ ५ ॥

---

३४२ मन शुद्धि.

(तर्ज—वनजारा)

क्यों पानी में मल मल न्हावे। नहीं मन का मैल हटावे ॥टेर॥ तन मल मूत्र का भंडारा। नित झरते हैं नव २ द्वारजी। हाड़ मांस का थैला कहावे ॥ नहीं० ॥ १ ॥ नहीं तजा क्रोध अहंकारा, कैसे होगा निस्ताराजी। क्यों इधर उधर भटकावे ॥ नहीं० ॥ २ ॥ ज्ञान रूप है निर्मल पानी। इस में लगाले गोता प्रानीजी। शुद्ध क्षण में तूं हो जावे ॥ नहीं० ॥ ३ ॥ कहे चौथमल हितकारी। प्रभु सुमरन कर हो पारीजी। नहीं आवागमन में आवे ॥नहीं॥४॥

३४३ पति को उपदेश.

(तर्ज—अनोखा कुंवरजी हो साहिबा झालो दूं घर आय)

अर्ज म्हारी सांभलो हो साहिबा ! मत निरखो पर नार ॥ टेर ॥ सोना रूपा मिट्टी तणा हो साहिबा, प्याले दूध भराय। रूप तणो तो फेर है, हो साहिबा, भेद स्वाद में नांय ॥ अरज० ॥ १ ॥ धन घटे योवन हटे हो साहिबा, तन से होय खराब। दण्ड भरे फिर रावले हो साहिबा, रहे कैसे सुख आब ॥ अरज० ॥ २ ॥ दंभ करे निज कंथ से, हो साहिबा, सो थारी किम होय। चोर कर्म दुनियां कहे हो साहिबा, प्राण देवोगा खोय ॥ ३ ॥ रावण पद्मोत्तर

ऐसा, हो साहिबा, कीनी पर घर प्रीत। इसी अनीति योग से. हो साहिबा, पूरा हुआ फजीत ॥ अर्ज० ॥ ४ ॥ पर नारी रत मानवी हो साहिबा, जाति में होवे खवार। चाल चाल होती घणी, हो साहिबा जावे नर्क द्वार ॥ अर्ज० ॥ ॥ ५ ॥ मोटा कुल का ऊपन्या, हो साहिबा चालो चाल विचार। पर नारी माता गिनो, हो साहिबा शोभा हो संसार ॥ अर्ज० ॥ ६ ॥ उन्नीसे इकचासी साल में, हो साहिबा आया सेखे काल। गुरु कृपा कहे चौथमल हो साहिबा, या मदारिया में ताल ॥ अर्ज० ॥ ७ ॥

२४४ अमोल घड़ी.

(तर्ज-पिछली गोखां राजकुंवर ऊभी जोय र्स रुर।)

चेतो चेतोरे चेतन निती अमोल घड़ी। अच्छी सुगुरु लगाई आज ज्ञान की झड़ी ॥ टेर ॥ मुनि कहे नर सांभलोरे, यो संसार असार। आतम विचार न कीजिएरे, जावन लागे वार ॥ चेतो० ॥ १ ॥ उमर नदी पूर ज्यूंरे, छिण में चलियो जाय। काया कागज कोपलीरे, पल में विनशी जाय ॥ चेतो० ॥ २ ॥ जैसा फूल गुलाब कारे, आखिर पड़ कुम्हलाय। ऐसे चुराना चार दिन केरे, जल हो या दूर जाय ॥ चेतो० ॥ ३ ॥ सोता मांता पग फसारे, सोता आवे नींद। काल सिराणे यूं खड़ोरे, ज्यूं तोरण

आवे नींद ॥ चेतो० ॥ ४ ॥ मौत हवा ऐसी चलेरे, ठहरे नहीं सुलतान । जैसे वायु योगसेरे, झड़े वृक्ष का पान ॥ चेतो० ॥ ५ ॥ गज सुखमाल सुन कर वानी, लियो संयम भार । सौ सुन्दर जैसी तजीरे, अप्सरा के उनिहार ॥ चेतो० ॥ ६ ॥ गुरु प्रसादे चौथमल यूं, बार बार चेताय प्रमाद तजो संवर ग्रहोरे, जावो मोक्ष के मांय ॥चेतो०॥७॥

---

३४५ परस्त्री त्याज्य.

(तर्ज-अनोखा भंवरजी हो साहिबा झालो दूं घर आय)

सुगड़ां मानवी हो चतुरां मत ताको परनार ॥ टेर ॥ वीर पुरुष की कामिनी हो चतुरां, जल भरवाने जाय । दणिक सुत बैठो हाटे, हो चतुरां देखी रूप लुभाय । सुगड़ ॥ १ ॥ आता जाता छेड़ करे हो चतुरां, नारी करे विचार । मन करने इच्छूं नहीं, हो चतुरां भर्म धरे संसार ॥ सुगड़ ॥ ॥ २ ॥ पानी ला मल्यो घरे हो चतुरां, पति आयो उस बार । सा कहे छेड़ करे मेरी, हो चतुरां पुरुष एक गंवार ॥ सुगड़० ॥ ३ ॥ खड्ग निकाल्यो म्यान से, हो चतुरां नाम बता इस वार । सा कहे इम कीजे नहीं, हो चतुरां कीजे काम विचार ॥ सुगड़० ॥ ४ ॥ मैं लाऊं उसको घरे हो चतुरां, दीजो फिर समझाय । पति गयो फिर बारणे, हो चतुरां, सा जल भरवा जाय ॥ सुगड़० ॥ ५ ॥ आती देख

खांसी करे, हो चतुरां ऊभी घूंघट हटाय। आज रजनी घर आवजो हो चतुरां, सुन मुख दिया पुलकाय। सुगड़०॥६॥ रजनी हुई आया घरे हो चतुरां, पुनः आयो पति खास। लम्पट नारी रूप करी, हो चतुरां, बैठो चक्की पास। सुगड़ ॥ ७ ॥ पति कहे सुन सुन्दरी हो चतुरां, या कौन बैठो आज। सा कहे दासी दाणा दले हो चतुरां, निज घाड़ो के काज ॥ सुगड़० ॥ ८ ॥ नींद आवा देव नहीं हो चतुरां उठी ने मागी लात। पांव पोस से पीटियो, हो चतुरां निकल रांड बदजात ॥ सुगड़ ॥ ९ ॥ आयो जावतो निज घरे हो चतुरां, नारी यूं समझाय। अब पर घर मत जावजो, हो चतुरां सोगन दिया घलाय ॥ सुगड़ ॥ १० ॥ बैन करी सा नार ने, हो चतुरां यूं त्यागो पर नार। गुरु प्रसादे चौथमल कहे हो चतुरां शिक्षा दे हितकार ॥सुगड़०॥११॥

२४६ जिन स्तुति।

(छोटी बड़ी सईयांए)

श्री चौवीस जिनराज के नित्य गुण गावना ॥ टेर ॥ ऋषभ अजित संभव अभिनन्दन, संभव अभिनन्दन। सुमति पदम सुपास, चन्दा प्रभु ध्यावना ॥ १ ॥ सुविधि शीतल श्रीयांस वासपूज्य, श्रीयांस वासुपूज्य। विमल अनन्त धर्म नाथ, शान्ति तो वर्तावना ॥ २ ॥ कुंथु अरह मल्लो मुनि–

सुव्रतजी, मुनिसुव्रतजी । नमी नेम पार्श्वनाथ महावीर लागे सुहावना ॥ ३ ॥ ग्यारह तो गणधर बीस वेहरमान, बीस वेहरमान, सकल साधु अनगार, चरणों में शीश नमावना ॥ ४ ॥ गुरु प्रसादे चौथमल कहे, चौथमल कहे । जन्म मरण दुख टाल, परम सुख पावना ॥ ५ ॥

३४७ यश ही एक जीवन है.

(तर्ज-पंजी मूंड बोल)

सुयश लीजेरे २ मनुष्य की उत्तम काया पाईरे ।टेर। सुयश लीनो राम भरत ने, राजऋद्धी भोलाईरे । पिता वचन सिर धार गये, विपिन सिधाईरे ॥ १ ॥ सुयश लीनो भूप विभीषण, राम शरण में आईरे । असत्य पक्ष नहीं कियो नहीं, नीति विसराईरे ॥ २ ॥ भामा शाह जो धन देईने, लीनी आप भलाईरे । जाता धनी ने रोक धर्म की, विजय कराईरे ॥ ३ ॥ निश्चल नहीं है तन धन योवन, देखो निगाह लगाईरे । यश जीवन अपयश मरण, समझो मन मांईरे ॥ ४ ॥ भले भलाई बुरे बुराई, प्रत्यक्ष रही दिखाईरे । फूल से फूल शूल से शूल है, संशय नाईरे ॥ ५ ॥ पश्चिम खान देश में धुलिये, साल पिचासी मांईरे । गुरु प्रसादे चौथमल या, जोड़ बनाईरे ॥ ६ ॥

३४८ स्वप्न सम संसार

(तर्ज—किस से करिये प्यार यार खुद)

क्यों भूला संसार यार, स्वप्ने की माया है ॥ टेर ॥
स्वप्ने में राजा बना, शिर पर छत्र धराय। लाखों फौजां लार है, बैठा गज पै जाय, खुशी का पार न पाया है ॥ १ ॥ स्वप्ने में शादी करी, निरखी सुन्दर नार। सोया पलंग बिछाय के, गले गुलाब का हार। पान मुख बीच दबाया है ॥ २ ॥ वन्ध्या ने पुत्र जना, स्वप्ना कैरे मंझार नारियां गावे गीत मिली। बाजा बजे दुवार, अङ्गी टोपी कई लाया है ॥ ३ ॥ दीन बना स्वप्ना विषे, क्रोडी ध्वज साहुकार। लाखों की हुण्डियां लिखे, मोटर बग्घी तैयार, नाम मुल्कों में कमाया है ॥ ४ ॥ चारों की निद्रा खुली, मन ही मन पछताय। गुरु प्रसादे चौथमल कहे, देखो ज्ञान लगाय, मूर्ख तूं क्यों ललचाया है ॥ ५ ॥

३४९ ऋषभ देव से प्रार्थना.

(तर्ज—छोटी बड़ी सैयाएं)

श्रीऋषभ देव भगवान् करो तो मेरी पालना ॥टेक॥
मैं चाकर हूं तुम चरणन को, हां तुम चरणन को। सहाय करो महाराज, दुखी को दुख से टालना ॥ १ ॥ भवसागर में, मेरी नौका, हां मेरी नौका। आन पड़ी मझधार, जल्दी

से संभालना ॥ २ ॥ संकट मोचन, बिरद आपको, हां बिरद आपको । निराधार आधार, कर्म रिपु गालना ॥ ३ ॥ ओम् उषभ, तूंही मम रक्षक, तूं ही मम रक्षक । तूं ही मेरे शीरताज, फन्दे से निकालना ॥ ४ ॥ गुरु प्रसादे, चौथमल यूं, चौथमल यूं, अर्ज करे हरबार, जरा तो निहालना ॥ ५ ॥

३५० मनुष्य की विशेषता.

(तर्ज—किस से करिये प्यार यार खुद गरज जमाना है)

मनुष्य पशु से श्रेष्ठ, धर्म से ही बतलाया है ॥ टेर ॥ आहार, निन्द्रा, भय, भोग में, दोनों एक समान । है अधिकता मनुष्य में, एक धर्म पहचान, इसीसे बड़ा कहाया है ॥ १ ॥ पशु सदा खाता रहे, नहीं भक्षाभक्ष विचार । मनुष्य अभक्ष आहार का, तुरत करे परिहार, नीति में यह बतलाया है ॥ २ ॥ पशु को निन्द लेने का मित्रों, किञ्चित् नहीं परमान । मनुष्य निन्द को छोड़ के, धरे प्रभु का ध्यान, जान झूठी मोह माया है ॥ ३ ॥ पशु के भय बना रहे, हरदम दिल के म्यान । इज्जत और परलोक को, नर रखता औसान, पाप से दिल को मुड़ाया है ॥ ४ ॥ नहीं मान मां बहिन का, सेवे पशु व्यभिचार, मनुष्य रहे मर्यादा में, त्याग करे परनार, धार के शील सवाया है ॥ ५ ॥ असरफ़ुल मखलुकात है, इसी लिये इन्सान, श्रवण मनन,

निधि भ्यासन, दृढ़ प्रतिज्ञावान्, ज्ञान से अज्ञान हटाया है ॥ ६ ॥ धर्म हीन जो जगत में, पशु से मनुष्य खराब । गुरु प्रसादें चौथमल कहे, समझो आप जनाब, मिली यह नर की काया है ॥ ७ ॥

३५१ सदुपदेश.

(तर्ज—छोटी बड़ी सइयांए)

संयमधारी महाराज, संयम में चित्त लगावना ॥टेर॥ पगड़ी ने दुपट्टा, कोट रुमाल में, हां कोट रुमाल में । एनक बूंट पटलून, में नहीं ललचावना ॥ १ ॥ इत्तर फुलेल जुई, मोगरा गुलाब में, हां मोगरा गुलाब में । खस खस हीना के मांय, नहीं लोभावना ॥ २ ॥ कण्ठी जनेव झेला मोत्यों के देख देख, मोत्यों के देख देख । पौंची जड़ाऊ की ओर मन नहीं चलावना ॥ ३ ॥ सोले श्रृङ्गार, सजी तन सुन्दर सजी तन सुन्दर । मत देखो नयन पसार, धर्म को बचावना ॥ ४ ॥ मखमल की गादी ने, रेशम के तकिये, हां रेशम के तकिये । स्वप्न के भी संस्कार, करो तो मत चावना ॥ ५ ॥ चौथमल कहे संयम शुद्ध पालो, संयम शुद्ध पालो । सफल करो अवतार, यही तो मेरी भावना ॥ ६ ॥

३५२ वीर अभिग्रह.

(तर्ज—सीता है सतवन्ती नार सदा गुण गावनारे)

श्री श्री महावीर गुणधीर, कठिन अभिग्रह कियोजी। तारी चन्दन बाला सती, साज तुमने दियोजी ॥ टेक ॥ करके तपस्या श्रीमहावीर, घर घर जावे धरके धीर, सब जन कहे धन्य तकदीर, जिस घर मिले बोल ये तेरा, प्रण ऐसो कियोजी ॥ १ ॥ विक्रीत नृप सुता हो खास, कारागार में बन्ध निवास, पग में बेड़ी होवे तास, हथकड़ी हाथबीच में होय, शीष मुण्डन कियोजी ॥ २ ॥ चढ़ाई लांग लहंगा की होय, तप तेला को धरियो सोय, बाकला सूप खुणा में जोय, बैठी डेली एक पग बाहिर, एक भितर कियोजी ॥ ३ ॥ आंसूपात करतीं हो नैना, तो मुझे कल्पे अन्न जल लेना, वरना षट्र मासी कर देना, ऐसा लिना प्रभु प्रण धार, सुनी हुलसे हियोजी ॥ ४ ॥ जहाज चंदन वाला घर आई, जिनवर देख सती हुलसाई, भाग्य धन्य इस विरिया के मांई, दिना दर्शन प्रभु कर महर, मन हुलसी रयोजी ॥ ५ ॥ देखा अवधिज्ञान लगाई, नीर नहीं देखा नयन के मांई, फिर गये प्रभु सती पछताई, आयो तुरत नयन में नीर, मेघ सम बरह्योजी ॥ ६ ॥ पारनो कियो सती के हाथ, तब रत्नों की हुई वर्षात, दुन्दुभि देव करे सुर नाद, बोले सब जन जय जय कार, अति आनन्द भयोजी ॥ ७ ॥ मैं तो रहकर अखण्ड कुंवारी, लूंगा संयम

व्रत को धारी, प्रभु जब हो केवल अधिकारी, सती चन्दन बाला उसवार, प्रण ऐसो लियोजी ॥ ८ ॥ ठाढ़े रजुबाला तट आन, सुमेरु सम धरयो प्रभु ध्यान, उपना निर्मल केवल ज्ञान, सती लिनो है संयम भार, वीर खुदने दियोजी ॥ ९ ॥ बढ़े बढ़े कई भूप की नार, आर्यिका हुई छत्तीस हजार, शम दम तप आदि गुणधार, तज के राज महल प्रभु वाणी, को अमृत पियोजी ॥ १० ॥ संवत् उन्नीसे छियांसी साल, आया धुले सेखेकाल, मम गुरु हीरालाल दयाल, चौथमल वहे मनुष्य का जन्म, तुम्हें दुर्लभ मिल्यो जी ॥ ११ ॥
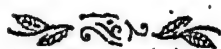
३५३ मानव देह दुर्लभ.

(छोटी बड़ी सईयांए)

चेतन यह नर तन, हरबार मुश्किल पावना ॥ टेक ॥ पुण्य योग से, मिला यह अवसर मिला यह अवसर । सोच समझ नादान, पापों से दिल हटावना ॥ १ ॥ यह संसार है, मतलब का गर्जी, मतलब का गर्जी । पुरा है दगाबाज, जाल में मत आवना ॥ २ ॥ कानों से सुन, सार सूत्र का, हां सार सूत्र का । नैनों से निगाह लगाय, जीवों को बचावना ॥ ३ ॥ जीह्वा से रट, नाम प्रभु का, हां नाम प्रभु का । तन से शील धर्म, पाली ने तिरजावना ॥ ४ ॥ हाथों से दे, दान सुपात्र, हां दान सुपात्र ।

धन से कर उपकार, दुखी के दुख मिटावना ॥ ५ ॥ गुरु प्रसादे, चौथमल कहे । हां चौथमल कहे, पावोगे केवल ज्ञान, राखो तो शुद्ध भावना ॥ ६ ॥

३५४ तीन मनोरथ.

(तर्ज-सांभल हो श्रोता शूराने लागे श्रो वचन जो ताजणा)

सांभल हो श्रावक, तीन मनोरथ शुद्ध मन चिंतवो ॥ टेक ॥ आरंभ परिग्रह से कब निवृतूं, दुर्गति को यो दातार । विषय कषाय को यो मूल है, भमावे अनन्त संसार ॥ १ ॥ अतरण अशरण अनित्य अशाश्वता, निर्ग्रंथ के निन्दनीक स्थान । जिस दिन इसको मैं त्यागन करूं, सो दिन मारे परम कल्याण ॥ २ ॥ द्रव्य भाव कब मैं मुण्डन होऊं, दश विध यति धर्म धार । तप जप संयम मार्ग आदरी, करूं अप्रतिबन्ध विहार ॥ ३ ॥ आज्ञा प्रमाणे श्रीवीतराग की, चालूं यथार्थ धर ध्यान । जिस दिन निर्ग्रन्थ पथ मे विचरूं, वह दिन मारे परम कल्यान ॥ ४ ॥ कब सब पाप स्थानक छोड़ने, करी आलोचना जीव खमाय । जिस शरीर ने पाल्यो प्रेम से, उससे ममता मिटाय ॥ ५ ॥ चारों ही आहार को त्यागन करी, मृत्यु पण्डित परधान । चारों ही शरणा मैं धारण करूं, वह दिन है परम कल्यान ॥ ६ ॥ धार काण्ठे में प्रसिद्ध नागदो,

आया पिचासी सेखेकाल । गुरु प्रसादे चौथमल कहे, पौष दशमी मंगलवार ॥ ७ ॥

३५५ राजमति की विनंती.

(तर्ज--छोटी बड़ी सईयांए)

श्री जादुपति महाराज, तोरण से तुम मत जावना ॥ टेक ॥ बिन्द बनी जब आप पधारे, हां आप पधारे ॥ हो गज पै असवार, लागो तो तुम सुहावना ॥ १ ॥ पशुओं की तुम टेर सुनीने, हां टेर सुनीने । पलट गये उसवार, कोई तो समझावना ॥ २ ॥ छोटी बड़ी सैयाएं, नेम को मनावना, हां नेम को मनावना । नेम गये गिर-नार, यही तो पछतावना ॥ ३ ॥ राजीमति कहे, संयम लूंगा, हां संयम लूंगा । छोड़ सभी परिवार, यही है मेरी भावना ॥ ४ ॥ चौथमल कहे संयम लेकर, हां संयम लेकर । किना आतम कल्याण, मुक्ति का फिर पावना ॥ ५ ॥

३५६ दया की महत्वता.

[तर्ज—मेरे स्वामी बुलालो मुगत में मुझे]

गुरु तिरने का मार्ग बताया हमें, मिलती मुक्ति दया से जिताया हमें ॥ टेक ॥ दया ही संसार में, भवसिंधु

तारणहार है। पापियों का शीघ्र ही, करती या बेड़ा पार है, कुपंथ में जाते बचाया हमें ॥ १ ॥ पाप हजारों हो चुके, परदेशी नामा भूप से। जब दया धारण करी, वह बच गया भव कूप से। उनका देकर के न्याय सुनाया हमें ॥ २ ॥ राजा मेघरथ ने बचाई, फाक्ता की जान है। उसी दया के योग से हुए शांतिनाथ भगवान है, उन्ह ने शांति का पाठ पढ़ाया हमें ॥ ३ ॥ सख्त दिल को जो बना के, पाप करते लापता। आकबत के बीच में होगा सजा वह आफता। नहीं फर्क इसी में दिखाया हमें ॥ ४ ॥ प्रभु नाम का आधार है, भवसिंधु रूपी पूर में। साल पिच्चासी पौष का, कहे चौथमल केसूर में, पालो दया शखुन यह सिखाया हमें ॥ ५ ॥
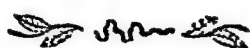
३५७ शान्ति स्तुति.

(तर्ज—छोटी वड़ी सईयांर)

शान्ति जिनन्दजी ओ, शान्ति तो वरतावना ॥टेक॥ विश्वसेन, राजा के नन्दन, राजा के नन्दन। हुए अचला के कूंख, स्वार्थसिद्ध से आवना ॥ १ ॥ जन्म लेते ही, मृगी निवारी, हां मृगी निवारी। घर घर मंगलाचार, गावे तो बधावना ॥ २ ॥ षट् खण्ड केरी, विभूति जो त्यागी, विभूति जो त्यागी। लेकर संयम भार, केवल का

हुआ पावना ॥ ३ ॥ शान्ति नाम है,-परम जगत में, हां परम जगत में। सुख सम्पत दातार, विघन विरलावना ॥४॥ शान्ति जाप से, जहर हो अमृत, हां जहर हो अमृत। निर्धन हो धनवान्,फलेगा सब ही भावना ॥ ५ ॥ प्रातः उठ ओम, शांति जपे तो, हां शांति जपे तो। रोग शोक मिटजाय, मुक्ति में फिर जावना ॥ ६ ॥ गुरु प्रसादे, चौथमल कहे, हां चौथमल कहे। मनका मनोरथ पूर, दर्शन की मेरे चावना ॥७॥

३५८ पर्यूषण पर्व.

(तर्ज–गुरुजी ने ज्ञान दियो भारी)

पर्यूपण पर्व आज आया के, सज्जनों! पर्व आज, आया, के, मित्रों! पर्व आज आया। सर्व जीवों की करो दया, यह संदेशा लाया ॥टेक॥ आठों दिन तुम प्रेम धरीने बांयां और भायां। खूब करो धर्म ध्यान, खास सद्गुरु ने फरमाया ॥१॥ त्यौहार शिरोमणि यही जगत में, तज दीजे परमाद। देव गुरु और धर्म आराधो, अनुभव रस आस्वाद ॥२॥ ज्ञान दर्शन चारित्र पोपवा, पोषा करो जरूर। षट् आवश्यक,संवर समाई,करे पाप हुवे दूर॥ ३॥ रात्रि भोजन और नशा सब, छोड़ो वणज व्योपार। हरी लिलोती मिथ्या त्यागी, शील रतन लो धार ॥ ४॥ उत्तम करणी कीजे पुण्य से, मनुष्य जन्म पाया। बेला तेला करो पचोला, पचखो

अट्ठाया ।। ५ ।। रतलाम शहर में पूज्य समीपे, चौमासा ठाया । साल पिच्चासी सभा बांच में, चौथमल गाया ।।६।।

३५६ पार्श्वनाथ स्तुति.

[तर्ज—छोटी बड़ी सईयांए]

हे प्रभु पार्श्व जिनन्द, भव सिंधु तिरावना ।। टेक ।। काशी देश बनारस नगरी, बनारस नगरी । वामा रानी के कूंख, जन्म हुआ पावना ।। १ ।। चौसठ इंद्र मिल, मेरु गिरि पै, हां मेरु गिरि पै । कियो महोत्सव धर प्रेम गावत वधावना ।। २ ।। नील वर्ण नव, हस्त है काया, हस्त है काया । एक सहस्र अरु आठ, लक्षण शोभावना ।। ३ ।। मस्तक मुकुट, काना युग कुण्डल, काना युग कुण्डल । हृदे अमोलक हार लटक लोभावना ।। ४ ।। जलता नागन, नाग बचाया, हां नाग बचाया । बालपना के मांय, किया तो 'सुर' सुहावना ।। ५ ।। इतना उपकार, मुझ पर कीजे, हां मुझ पर कीजे । दीजे आशा अब पूर, फलेगी सारी कामना ।। ६ ।। गुरु प्रसादे चौथमल कहे, हां चौथमल कहे । साल पिच्चासी के मांय, आनन्द वर्तावना ।। ७ ।।

३६० तीर्थंकर गोत्र के कारण.

[तर्ज-सांभल हो भवियन श्रोता ने लागेओ वचन जो ताजणा]

सांभल हो गौतम, बीस बोलां से तीर्थंकर हुवे

॥ टेर ॥ अरिहंत सिद्ध सूत्र सिद्धान्त को, गुणवंत गुरु चौथा जान। स्थविर बहु सूत्री तपसी तणा, करे स्तुति हित आन ॥ १ ॥ वार वार उपयोग देतो ज्ञान में, शुद्ध समकित लेवे पाल। विनय करे जो गुरु देव को, आवश्यक करे दोई काल ॥२॥ व्रत पचखाण पाले निर्मला, परमाद टालो ध्यावे शुभ ध्यान। तपस्या जो करे बारे प्रकारनी, देवे अभय सुपातर दान ॥ ३ ॥ व्यावच करे गुण कुल संघ की, सर्व जीवां ने सुख उपजाय। अपूर्व ज्ञान नित पढ़तो थको, सूत्र की भक्ति करे चित्त लाय ॥ ४ ॥ जिन मारग ने खूब दिपावतो, बांधे तीर्थंकर जीव गोत, चारों ही संघ में होय शिरोमणि, तीनों ही लोक में करे उद्योत ॥ ५ ॥ सम्मत उन्नीसे चौरासी साल में, नाथद्वारे सेखे काल। गुरु प्रसादे चौथमल कहे, लागो है नवो यो साल ॥ ६ ॥

---

३६१ सदुपदेश.

(तर्ज---मारो मन सुधर्म सेवामें)

आठों पहर धंधा में फंसियो, विषय भोग को होकर रसियो। लाग रयो तूं बढ़पन में, घणो मजो प्रभु स्मरण में ॥ टेर ॥ १ ॥ न्हाय धोय पोशाक सजावे, इतर लगा बागा में जावे। देखे मुख तूं दर्पण में, घणो मजो प्रभु स्मरण में ॥ २ ॥ लखों रुपे का माल कमाया, दया

दान में नहीं लगाया । नाम लिखायो कर्पण में, घणो मजो प्रभु सरण में ॥ ३ ॥ घर की तज के उत्तम नारी, अपयश ले ताके परनारी । देखो रावण नर्कन में, घणो मजो प्रभु सरण में ॥ ४ ॥ दुर्लभ पा नर की जिन्दगानी, तिरना सीख भव सागर प्रानी । लगा ध्यान गुरु चरणन में, घणो मजो प्रभु स्मरण में ॥ ५ ॥ तियांसी साल सैलाने आया, चौथमल उपदेश सुनाया । क्या करेगा गढ़पन में, घणो मजो प्रभु स्मरण में ॥ ६ ॥

३६२ दया की महत्वता.

(तर्ज--गौओं की सुनलो पुकार)

प्यारे दया को हृदये लो धार, धाररे सुखी बनोगे तुम बन्दे ॥ टेर ॥ दया धर्म को जिन जिन ने धारा, पाप कलिमल उसने निवारा, पहुंचे वो मोक्ष मंझार, झाररे ॥ १ ॥ पशु पक्षि को मत ना सतावो, प्रेम धरी सब को अपनावो, तो पावोगे भव जल से पार पाररे ॥ २ ॥ हिरे पन्ने, रत्न, जवाहिर से, कण्ठी डोरा हीर चीर से, करुणा है अमूल्य अपार, पाररे ॥ ३ ॥ रंक को छिन में धनवान बनादे, राजा महाराजा के पद पै बिठादे, बनादे सब का सरदार, दाररे ॥ ४ ॥ उन्नीसे साल तियांसी खासा, उदयपुर में किया चौमासा, कहे चौथमल हरवार, वाररे ॥ ५ ॥

३६२ प्रभु से प्रार्थना.

(तर्ज-अनोखा कुंवरजी हो के)

अर्ज मारी सांभलो हो के प्रभुजी, महावीर भगवन् ॥ टेर ॥ अर्जी पर मर्जी करो, हो प्रभुजी, गर्जी करे पुकार । महर नजर अब कीजिए, हो प्रभुजी, करुणा के भण्डार ॥ १ ॥ सेवक खड़ो दरबार में, हो प्रभुजी, टुक एक मुजरो झेल । धन माल मांगू नहीं, हो प्रभुजी, मांगू मोक्ष की सैल ॥ २ ॥ अनन्त ज्ञान दर्शन धनी, हो प्रभुजी, अनन्त शक्ति के धार । तुम सम देव दूजा नहीं, हो प्रभुजी, अधम उधारण हार ॥ ३ ॥ शरणे आयो आपके, हो प्रभुजी, तारक विरद विचार । हुकम होय मुझ मिसल पे, हो प्रभुजी, वरते मंगलाचार ॥ ४ ॥ जो सेवे शुद्ध भाव से, हो प्रभुजी, पग पग सुख प्रगटाय । ग्रह गोचर पीड़ा टले, हो प्रभुजी, रोग शोग मिट जाय ॥ ५ ॥ पिच्चासी साल सोले ठाणा, हो प्रभुजी, मेड़ते सेखे काल । गुरु प्रसादे चौथमल कहे, हो प्रभुजी, आप मेरे रिच्छपाल ॥ ६ ॥
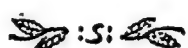
३६४ ओलंबा.

(तर्ज—चिड़ी थने चांवलियां भावे)

सासुजी थांकी बड़ी बजर छाती ओ, सासुजी थांकी बड़ी बजर छाती, कंवरा ने तो संयम दिलायो म्हाने वरज

राखी ॥ टेर ॥ मन की तो मन में रही सरे, कहां कणीने वात । विश्वासघात म्हांसु कर गया सो कांई आप तणा अंग जात ॥ १ ॥ खाना पीना पहरना सो, म्हाने सूना लागे महेल । प्रीतम ऐसी कर गया स जूं, बादीगर का खेल ॥ २ ॥ कागद होतो वांचला स कांई, कर्म न व च्या जाय । कांई कांई लिख्यो अणी कर्म में सरे, ज्ञानी बिना कुण फरमाय ॥ ३ ॥ बहुचां कहे अब कंई करा स म्हाने, हुक्म देवो फरमाय । चौथमल कहे धर्म आराधो, जन्म सफल होजाय ॥ ४ ॥

---

३६५ गौतम स्नेह.

[तर्ज-कांटो लागोरे देवरिया]

मारा वीर प्रभु का दर्शन की, म्हारे मन में रेगईरे २ म्हारे दिल में रहगईरे ॥ टेर ॥ देव समण को प्रति बोधवा, आज्ञा दीनीरे । पिछे से गए आप मोक्ष, या कैसी किनीरे ॥ १ ॥ रात दिवस मैं सेवा करतो, थी मुझपे अति महेर । तदपि स्वामी आप मुझे कहो, क्यों नी लेगए लेर ॥ २ ॥ गोयम गोयम कौन कहेगा, कौन लड़ावे लाड़ । किसको जाय कहुंगा स्वामी, आड़ा पड़ गया पहाड़ ॥३॥ अद्भुत छटा आपकी समरी, उठे हृदय में लहेर । कहां गई वह मोहन मूरत, लाऊं कहां से हेर ॥ ४ ॥ जो जो संशय

मेरे हाते, तत्त्वण लेता पूछी, कौन बतावेगा आगम की, भिन्न २ करके कुंची ॥ ५ ॥ मैं तो ऐसी नहीं जानतो छुटगा गुरु साथ । अबतो स्वप्न की हुई माया, देखो दीनानाथ ॥ ६ ॥ वृथा मोह करे तूं चेतन, प्रभुजी हुवा निर्वाण । चौथमल कहे इन्द्रभूतिजी पाये केवल नाण ॥७॥ संवत् उन्नीसे साल चौरासी, जोधपुर के मांई, दीपमालिका के दूज दिन, जोड़ सभा में गाई ॥ ८ ॥

२६६ शिकार निषेध.

(तर्ज-पंजी मुंडे बोल.)

दया नहीं लावेरे २ पापी नित उठके पाप कमावेरे ॥ टेर ॥ तृण भक्षी पे खड्ग चलाके, बहादुरी बतलावेरे । बराबरी से अड़े जदी, मालुम होजावेरे ॥ १ ॥ निर अपराधी पशु बिचारे, कहां पुकारूं जावेरे । उन अनाथ पे छलसे ताक, बन्दूक चलावेरे ॥ २ ॥ थर थर कम्पे जीव बिचारे, जिम तिम प्राण बचावेरे । पत्थर जैसा करके हृदय उन्हें मार गिरावेरे ॥ ३ ॥ मादा मरे पे बच्चे उनके, तड़फ तड़फ मर जावेरे । इसी पाप से श्रेणिक राजा, नर्क सिधावेरे ॥ ४ ॥ जोवे बाट जमराज वहां पर, कदी पामणा आवेरे । पापी जीव को पाप का बदला, वो भुगतावेरे ॥५॥ आठ तरह के घातिक परकट, मनुऋषि जितलावेरे । पीछा

बदला लेवे भागवत, भी दशोवेरे ॥ ६ ॥ गुरु प्रसादे चौथमल तो, साफ साफ जितलावेरे । बिना दया नहीं तिरे, चाहे तीर्थ कर आवरे ॥ ७ ॥

३६७ संयति राजा को उपदेश.

(तर्ज-पन्नजी की)

राजन् मानरे, मान मान तूं छत्रधारी, मुनि समझावेरे ॥ टेर ॥ पञ्चालदेश कम्पिल पुर को, यो संयति भूप कहावेरे । अरि कण्टक को दूर करी, आणा वरतावेरे ॥ १ ॥ एक दिवस कौसुम्बी वन में, सेना के संग आवेरे । मारा हिरण के तीर, तीर खा मृग भग जावेरे ॥ २ ॥ वन के बीच द्राक्ष मण्डप, जहां मुनिवर ध्यान लगावेरे । वह मृग आ तज प्राण सामने मुनिके गिरजावेरे ॥ ३ ॥ भूप आय तुरत वहां देखे, मुनि ध्यानारूढ पावेरे । मुनि का पाला जान मृग राजा घबरावेरे ॥ ४ ॥ शीघ्र उतर घोड़े से राजा, निज अपराध खमावेरे । रसना के वश हना आप, माफी बक्सावेरे ॥ ५ ॥ ध्यान खोल मुनि गृद्ध भाली, राजा से यूं फरमावेरे । मैंने दिया अभय दान तूं मत डर लावेरे ॥ ६ ॥ मुझे देख तूं डरा, तुझे देखी वनचर कम्पावेरे । दे जीवों को अभयदान, पर भव सुख पावेरे ॥ ७ ॥ तृण भक्षी मशकीन दीन को, क्यों तूं भूप सतावेरे । करे कर्म

वही भंर, नहीं कोई आन बचावेरे ॥ ८ ॥ रूप यौवन विज्जू को झलको, देखत ही पलटावेरे । स्वार्थी यो संसार साथ, पर भव नहीं आवेरे ॥ ९ ॥ सुन उपदेश मुनि को राजा, वैराग्य बीच में छावेरे । राज्य तख्त को त्याग करी, फिर तपस्या ठावेरे ॥ १० ॥ करणी कर केवल पद पाई, संयति मोक्ष सिधावेरे । गुरु प्रसादे चौथमल, गुणी का गुण गावेरे ॥ ११ ॥ पन्द्रे ठाणा साल त्रियांसी, उदयपुर में आवेरे । दिल्ली दरवाजे धानमण्डी में, ज्ञान सुनावेरे ॥१२॥

३६८ त्रुटि की पूर्ति.

(तर्ज—मनाऊं महावीर भगवान)

पाय अब मनुष्य को अवतार, करो शुभ काम सदा नर नार ॥ टेर ॥ करनी बीच में रहगई त्रुटि, पूर्व जन्म मंझार । जिस की पूर्तिकाज आज यह, मिला है अवसर सार ॥ १ ॥ क्यों राचे परमाद बीच तूं, आयो मोक्ष के द्वार । मानो कल्पवृक्ष को काटी, बोवे आक गंवार ॥ २ ॥ मत पड़ मोह के फन्द मान तूं, है झूठो संसार । हरगिज जावे नहीं साथ में, देखो किस के लार ॥ ३ ॥ बड़े बड़े रईस के संगमें, एक न गयो सवार । ऐसी जान सुयश ले प्राणी, करके पर उपकार ॥ ४ ॥ संवत् उन्नीसे साल चौरासी, लसानी ग्राम मंझार । चौथमल उपदेश सुनावे, भव जीवां हितकार ॥ ५ ॥

३६९ कुटिल नर.

(तर्ज—दया करने में जिया लगाया करो)

इन्हीं पापियों ने देश डुबायारे ॥ टेर ॥ मात पिता से करते लड़ाई, नारी के मोह में मोवायारे ॥१॥ घर नारी पतिव्रता जो छोड़ी, वेश्या के घर सोयारे ॥ २ ॥ सत्संग से मुंह को मोड़े, नशाबाजी में दिन खोयारे ॥ ३ ॥ लालच के वश दे बुढ़े को बेटी, राण्ड बनी तब रोयारे ॥ ४ ॥ गुरु प्रसाद चोथमल कहे, श्राम इच्छा से निम्ब थैं बोयारे ॥५॥
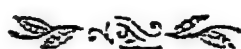
३७० सत्य ही कहना.

(तर्ज—पहलू में यार है मुझे उसकी]

सत्य बात के कहे बिना, रहा नहीं जाता। बुगले को हंस हमसे, बताया नहीं जाता ॥ टेर ॥ मिलता है राज्य तख्त छत्र, एक धर्म से । अधर्म से सुखी होय, सुनाया नहीं जाता ॥ १ ॥ अमृत के पीने से मरे, जीवे जो जहर से । यह आग के बीच बाग, लगाया नहीं जाता ॥ २ ॥ दुनियां भी अगर लौट जाय, अफसोस कुछ नहीं । एरंड को कल्पवृक्ष, बताया नहीं जाता ॥ ३ ॥ कहे चौथमल दिल बीच जरा, गौर तो करो । तारे की ओट चन्द, छिपाया नहीं जाता ॥ ४ ॥

३७१ क्षमा.

[तर्ज-कोरो काजरिये]

सब नर धारोरे, यह क्षमा मोक्ष दातार ॥ टेर ॥ महिमा उपशम की प्रभू, या वरनी सूत्र मंझार ॥ १ ॥ जिन शासन को मूल है, है तप संयम को सार ॥ २ ॥ कर कर के क्षमा कई, तिर गए समुद्र संसार ॥ ३ ॥ खन्दक मुनि क्षमा करी । जब लिनी खाल उतार ॥ ४ ॥ धन्य धन्य मेतारज मुनि, जाने सह्यो परिसो अपार ॥ ५ ॥ गज सुख मुनि शिर खीरा धरिया, मुनि सही अगन की झार ॥ ६ ॥ सूरी कंता निज कंथ ने, दिया जहर जिस वार ॥ ७ ॥ क्षमा करी ने सुर हुवो, यह पहले स्वर्ग मुझार ॥ ८ ॥ चौथमल कहे क्षमा करो, हो जावो भव जल पार ॥ ९ ॥

३७२ कन्या विक्रय निषेध.

(तर्ज—प्रेम बढ़ावोजी.)

कलियुग छायोजी, धर्म छोड़ अधर्म में दुनियां चित्त लगायोजी ॥ टेर ॥ पांच सात दलाल मिली, बुढ़ा को सम्बन्ध करायोजी ॥ १ ॥ और धन्धो सब छोड़, ही व्योपार चलायोजी । अपशकुन कर मूछ मुण्डाई, पिठी मर्दन करायोजी । बुढो बनड़ो बन्यो खूब, श्रृंगार सजा—

यांजी ॥ २ ॥ बान्ध सेवरो घोड़ा पर चढ, सुसरा के घर आयोजी। लोग देखने हंसे सांग यो, आछो बनायोजी ॥ ३ ॥ सुरत देख बुड़े बालम की, कन्या को जी घबरायो-जी। कहे बाप से बेटी पे क्यों, कुठार चलायोजी ॥ ४ ॥ सुने कौन कन्या की बानी, लोभ जणी के छायोजी। भटजी भी गर्जी दमडे का, परणेत करायोजी ॥ ५ ॥ लड्डू खाएयां पंचो ने भी, नीति धर्म विसरायोजी। रत्तक भत्तक बनी घोर, अन्धेर मचायोजी ॥ ६ ॥ कान पकड़ छोरी के न्याय, बुढ़ो लाड़ी लायोजी। कहे लोकां से परमेश्वर, मारो घर मंडायोजी ॥ ७ ॥ बेटा पोता दौहृ दोहिता, कुटुम्ब देखवा आयाजी। माता दादी, नानी कहा किम, वाक्य सुनायोजी ॥ ८ ॥ तन की सरदा कम जान, बुढ़ा ने वेद बुलायोजी। ताकत बढ़े इन काज आप, नुसखा लिखवायोजी ॥ ९ ॥ इम करता अल्प काल में, बुढ़ो परलोक सिधायाजी। खुणे बैठ विचारी बाला, रुदन मचायोजी ॥ १० ॥ पिता आय बेटी के धन पे, अपनो अमल जमायोजी। मात कहे मत रोए बेटी, यही भाग्य लिखायोजी ॥ ११ ॥ होनहार के आगे जोर नहीं, चाले किसको चलायोजी। पत्थर फेंक शिर माण्ड भावी को, मिश ठरायोजी ॥ १२ ॥ कांई देख्यो यूं कही माता, हाथां को चुड़ो रखायोजी। आई अवस्था कठिन विरह ने, जोर जनायोजी ॥ १३ ॥ लज्जावान उत्तम नारी तो, तप कर

जन्म बितायोजी। गई स्वर्ग के बीच धर्म जो, पूर्ण निभा-योजी ॥ १४ ॥ कई नारी व्यभिचार कर्म कर, विधवा धर्म गमायोजी! पाप आय जब उदय हुवो, तब हमल रहायोजी ॥ १५ ॥ बात हुई प्रगट पंचा मिल, नौतो बन्ध करायोजी गर्भपात जब करियो, जाति बकवाद मिटायोजी ॥ १६ ॥ गर्भपात नहीं हुवो तात, तीर्थ को मिश ठहरायोजी। लेई सुता को साथ आप, परदेश सिधायोजी ॥ १७ ॥ औषध किया नहीं गर्भ पड़यो जो, पूर्ण आयु ले आयोजी। घबराय तात सुता को छोड़, निज घर पर आयोजी ॥ १८ ॥ ढूंढे बाप को बेटी स्टेशन पर, कहीं पतो नहीं पायोजी। शांव वृक्ष तल बैठ, राम आछो करवायोजी ॥ १९ ॥ इतने में एक अधम जाति नर, विश्वासी घर लायोजी। मांसाहारी पापी ने मांस को, आहार करायोजी ॥ २० ॥ मुण्डो पकड़ जबरन से पापी, फेर शराब पिलायोजी। बिगड़या मांही गयो बिगड, बाकी न रहायोजी ॥ २१ ॥ कई गर्भ-वती विधवा को, घर का जहर पिलायोजी। कई विधवा को जाति बहार कर, अनर्थ करवायोजी ॥ २२ ॥ ऐसी जान वृद्ध विवाह करो बन्ध, जो जन निज हित चायोजी। बाल लग्न भी बुरो जगत के, बीच चलायोजी ॥ २३ ॥ छोटी उमर में सुता सुत को, नष्ट वीर्य करवायोजी। कलि कुमलाय जूं उन बालों ने, प्राण गमायोजी ॥ २४ ॥ बिन वर जोड़ी व्याव करो मत, यो भी थांने चेतायोजी। अनर्थ

होसी घणो, जो नहीं प्रबन्ध करायोजी ॥ २५ ॥ की अर्जी या पेश आपसे, समय देख लिखलायोजी । जज समान जनता ने सोच, कांई हुक्म लगाये जी ॥ २६ ॥ गुरु प्रसादे चौथमल, यो छन्द बना कर गायेजी । जाति, प्रेमी, देश हितेच्छु, के मन भायोजी ॥ २७ ॥

३७३ पहले सोचें.

(तर्ज—यह क्यों बाल बिखर हैं)

उलझ जाते जो बेढंग से, वही नर फेर रोते हैं । नहीं आराम पाते हैं, उमर फिजूल खोते हैं ॥ टेर ॥ काम करने के पहले ही, सोच अंजाम जो लेते । नहीं तकलीफ वो पाते, सुखों निन्द सोते हैं । १ ॥ बिना सोचा किया रावण, गई जब लंक हाथों से । कुंवर ललितांग भी फंसके फेर गमखुवार होते हैं ॥ २ ॥ दिवाना इश्क का बनके नफा किसने उठाया है । काट के सुरतरु कर से, देखो यह आक बोते हैं ॥ ३ ॥ अलि पुष्पों में उलझा है, मच्छी कांटे से जा उलझी । चौथमल कहे सुनो सज्जन, खास कर्तव के गोते हैं ॥ ४ ॥
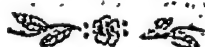
३७४ पापों के फल.

(तर्ज—लाखों पापी तिरगये सत्संग के परताप से)

कहां लिखा तूं दे बता, जालिम सजा नहीं पायगा ।

याद रख तूं आकवत में, हाथ मल पछतायगा ॥ १ ॥ आप तो गुमरा हुआ फिर, और को गुमराह करे । ऐसे अजावों से वहां पर, मुंह सिया होजायगा ॥२॥ हो बेखतर तकलीफ पहूंचाता, किसी मशकीन को। बंबूल का तूं बीज बोकर, आम कैसे खायगा ॥ ३ ॥ रुह होगा कब्ज तेरी, जा पड़ेगा गोर में । बोल बन्दा है तूं किसका, क्या कहीं बतलायगा ॥ ४ ॥ न हुकुमत वहां चलेगी, न चलेगी हुज्जतें । न इजारा वहां किसी का, रियाही कैसे पायगा ॥ ५ ॥ जबानी बातों खरच से, काम वहां चलता नहीं । चौथमल कहे कर भलाई, तो वरी होजायगा ॥ ६ ॥

३७५ सावधान हो.

[तर्ज-स्वामी चरणों का दास बनालो मुझे]

प्यारे गफलत की निंद भगा तो सही, जरा प्रभु से लोह को लगा तो सही ॥ टेर ॥ साथ वाले चल बसे और, तूं भी अब मिजवान है। किस ऐश में भूला फिरे, तेरा किधर को ध्यान है, तेने साथ क्या लिना बता तो सही ॥ १ ॥ हुश्न तो दिन चार का, आखिर में यह ढल जायगा। जालिम बुढापा आयके, तेरे जिस्म पै छायगा, लेगा किसका तूं शरना जिता तो सही ॥ २ ॥ सर पर कजा यह घूमती, जिसकी तुझे खबर नहीं । बद काम में उमर गई अब तक तुझे सबर

नहीं, तेरे दिल से गरूर हटातो सही ॥ ३ ॥ नेकी करले ऐ दिला, तारीफ यहां रहजायगा। चौथमल कहे नेकी से, आराम हर जा पायगा, मिले मोक्ष हवीस—मिटा तो सही ॥ ४ ॥

३७६ भलाई कर चलो.

[तर्ज-लाखों पापी तिरगये सत्संग के परताप से]

मान मन मेरा कहा, तारीफ जहां में लीजियो। अपनी तरफ से जान कर के, दुख न किसको दीजियो॥ १ ॥ तकदीर-के बलसे अहो, इन्सान पन्न तुमको मिला। अपना विगाना छोड़ के, भलपन्न सबों से कीजियो ॥ २॥ गर तुमे कोई जान करके, ये जशा मुंह से कहे। जमीन के माफीक रहो, हरगिज न उस पै खीज़ियो ॥ ३ ॥ मिला तुम को डर सुनाने वाला अब डरियो जरा। नेक नसीहत का यह शरबत, शोक से तुम पीजियो ॥ ४ ॥ गुरु के प्रसाद से कहे, चौथमल ऐ साहिबो। आराम जो चाहो भला, नेकी पै हरदम रीजियो ॥ ५ ॥

३७७ परस्त्री निषेध.

(तर्ज—मथुरा में आकर जन्म लिया, देखो जब बंशी वालेने)

जो जोबन के हो मद माते, परनारी को गर चहाते

हैं। वे सर्वस्व को बरबाद करी, आखिर पापी पछताते हैं ॥ १ ॥ दीपक की लो वत् नारी पे लंपट पतंग पर जाके। बर्जे न रहे दुख पावत है, जल जल के प्राण गमाते हैं ॥२॥ देखी गेरों की औरत को, कामान्ध फिदा होजाते हैं। बे खतर जीना करने को, जाहिल आमाद होजाते हैं ॥ ३ ॥ इज्जत का कुछ भी ख्याल नहीं, निर्लज्ज निडर बनके जालिम। पापों से लेटर भर भर के, दोजख को अपनाते हैं ॥ ४ ॥ गरम बना लोहेकी पुतली, उसके सीने से चेंटाते हैं। गुर्जों की उन्ह पै मार पड़े, रो रो के वहां चिल्लाते हैं ॥ ५ ॥ लंकपति की लंक गई, और पद्मनाभ का राज गया। लाखों नरका नुकसान हुआ, लो तब भी बाज नहीं आते हैं ॥ ६ ॥ आगम वैद्यक पुराणों में, कुरान अंजील भी मना करे। हाकिम भी पीनलकोड खोल के, फौरन दफा लगाते हैं ॥ ७ ॥ दिन चार का है महमान यहां, मत जुल्म पै अपनी बांध कमर। कहे चौथमल धन्य उस नरको, परनारी को बहिन बनाते हैं ॥ ८ ॥

३७८ भाग्य बलवान्.

(तर्ज—पूर्ववत्)

चाहे जितनी तूं तदबीर करे तकदीर लिखा वही पावेगा। चलती नहीं हुज्जत यहां किसकी, चाहे कितना

मगज लड़ावेगा ॥ १ ॥ तूं चाहे बनूं फोजी अफसर, या रईस बनूं सिर चमर ढुरे । जो लिखा जेल मुकद्दर में, तो इसको कौन हटावेगा ॥ २ ॥ प्रभु आदिनाथ फिरे घर घर, नहीं बारे मास उन्हें आहार मिला । नल राजा सा बनवास रहे, जो होनी होके रहावेगा ॥ ३ ॥ पढ़े लिखे आलिम फाजील वो, सिख हजारो हुन्नर को । मकसुम बिना न रखे कोई, दर दर यह फिर फिर आवेगा ॥ ४ ॥ जर जेवर मेल तिजोरी में, दे ताला कुंजी पास रखे । तकदीर बिनाधन कहां रेहवे, वह थूंका यूं ही उड़ जावेगा ॥५॥ चित्र मयूर गया हार निगल, विक्रमसा भूप चउरंग हुवे । घांची के घर फेरी घाणी, फेर भावी क्या दिखलावेगा ॥ ६ ॥ कटपुतली वत् यह कर्म विश्व में, कैसा नाच नचाते हैं । कहे चौथमल विधना की रेख पर, कहो कुण मेख लगावेगा ॥ ७ ॥

२७६ कृष्ण लीला.

(तर्ज-बंशी वाले ने)

मथुरा में आकर जन्म लिया, देखो जब बंशी वाले ने । और कंश की भूमि दी थर्रा देखो जब बंशी वाले ने ॥ टेर ॥ थी अर्ध निशा अंधेरी वो, घनघोर घटा भी छाय रही । तनु तेज से किना उजियाला, देखो जब बंशी वाले ने ॥ १ ॥ कर कमलों में वसुदेवजी, ऊठा चले वो झट पट से ।

फिर यमुना के दो भाग किये, देखो जब वंशी वाले ने ॥ २ ॥ सहस्र नागने छत्र किया, नहीं पड़ा बूंद जब पानी का। किनी जब गोकल को पावन, देखो जब वंशी वाले ने ॥ ३ ॥ मात यशोदा प्रसन्न हुई, और नन्दने महोत्सव खूब किया। घर घर में आनन्द मना दिया, देखो जब वंशी वाले ने ॥ ४ ॥ बीज कला जूं आप बढ़े, खेले घुमे फिरे आंगन में। दी धूम मचा लड़कों के संग, देखो जब वंशी वाले ने ॥ ५ ॥ यमुना के तट पे खेल करा, गई डूब गेंद कालीदह में। फेर नाग नाथके गेंद लिया, देखो जब वंशी वाले ने ॥ ६ ॥ दही दूधका दाण लियां, ग्वालन से आप मुरारी ने। गिरीराज उठाया अंगुली पे,जब काली कम्बली वाले ने ॥ ७ ॥ सज्जन का संकट दूर हरा, और मारा कंश अन्याई को। फिर जीत का डंका त्रिखण्ड में, बजवा दिया वंशी वाले ने ॥ ८ ॥ त्रियासी साल उदयपुर में, यह चौथमल चौमास किया। उपकार कराथा भारतमें, नन्दजी के कनैयालाले ने ॥ ९ ॥

---

३८० समय से सावधान.

(तर्ज—यह फैले चाल विस्तर)

वक्त हरगिज न सोने का, बनो होशियार तुम झटपट। जमाना रंग बदलता है, करो विचार तुम झटपट ॥ टेर ॥

नशा करके सुना गाना, और खाना फर्ज माना । ऊंच हो नीच नारी संग, करो क्यों प्यार तुम झटपट ॥१॥ ले हथियार जंगल में, जाकर बैठ जाते हो । बड़ी खुशी मनाते हो, खेल शिकार तुम झटपट ॥ २ ॥ पढ़ो इतिहास और देखो, करा क्या काम पुरखों ने । सत्यता वीरता दिखला, बनो सरदार तुम झटपट ॥ ३ ॥ था पृथ्वीराज वो चौहान, बना अयासी एकदम से । खोया राज यह सोची, बनो तैयार तुम झटपट ॥ ४ ॥ हुए प्रताप से भूपत, सहे सदमें विपिन में जा । रखा था धर्म यह बातें, न दो विसार तुम झटपट ॥ ५ ॥ रखेगा धर्म को कोई, उसे करतार रखता है । चौथमल यूं करे शिक्षा, उसे लो धार तुम झटपट ॥ ६ ॥

३८१ उपदेशक का कर्तव्य.

(तर्ज—पूर्ववत्)

तुमारी देख के आदत, नहीं उपदेश दे सकते । मगर सच्ची कहे बिन हम भी हरगिज रह नहीं सकते ॥ टेर ॥ असली शेर होकर आप, साथ कुत्ति के रमते हो । इसी तुफैल से तारीफ, जां में ले नहीं सकते ॥ १ ॥ धरा रख के दबाते हो, जाल का खत बनाते हो । जुल्म ऐसे कमाते हो, लिहाज से कह नहीं सकते ॥ २ ॥ नशे में चूर रहते हो, सत्संग से दूर रहते हो । नर्क के दुख हैं ऐसे, जिसे तुम सह

नहीं सकते ॥३॥ चौथमल कहे प्रभु भजलो, पाप का फैसला करलो । बनालो काम मौके पे, फेर तुम कर नहीं सकते ॥४॥

३८२ उपदेश.

(तर्ज—पूर्ववत्)

करो कुछ गोर दिल अन्दर, साथ में क्या लेजावोगे । सवाब का काम तुम करलो, सदा आराम पावोगे ॥ टेक ॥ अमूल्य वक्त को पाके, निन्द गफलत की सोते हो । सुनी को वे सुनी करके, नतीजा क्या उठावोगे ॥ १ ॥ कहे सत्संग की तुमको, बताते हो नहीं फुरसत । महफील में रात खोते हो, गुना यह कहां छिपावोगे ॥ २ ॥ चले नहीं पेरवाई वहां, मुलाजा ना गिने किसका । पालीसी सामने उसके, कहो कैसे चलावोगे ॥ ३ ॥ यहां चन्द रोज के लिये, बनाया आपने बंगला । करो महोबत यहां जिससे, उसी को छोड़ जावोगे ॥ ४ ॥ बना यह खाक का पुतला, सदा रहता नहीं कायम । चौथमल की नसीहत पे, अगर ईमान लावोगे ॥ ५ ॥

३८३ महावीर का झण्डा

[तर्ज—मथुरा में आकर जन्म लिया]

दया धर्म का डंका दुनियां में बजवा दिया त्रशला

नन्दनने। अहिंसा धर्म को आलम में, फैला दिया त्रशला नन्दनने ॥ टेर ॥ अग्नि कुण्ड रचाते थे, वे अपराध पशुको जलाते थे। दे उपदेश उन अनाथों को, बचा दिया त्रशला नन्दनने ॥ १ ॥ वस्त्र रुद्र से भराहुआ नहीं, शुद्ध रुद्र से होता है। हिंसा से धर्म न होय कभी, जितलाया त्रशला नन्दनने ॥ २ ॥ आम खाने की ख्वाईस से, बोया आक इसी वायस से। कहो उनको कैसे आम मिले, फरमाया त्रशला नन्दनने ॥ ३ ॥ द्वादश अंग रची बानी, सब जीवों के हितको जानी। प्रश्न व्याकरण सूत्र विषय, बतलाया त्रशला नन्दनने ॥ ४ ॥ अगर आराम को चाहते हो, क्यों नहीं दया अपनाते हो। कहे चौथमल यूं, श्री मुख से फरमाया त्रशला नन्दनने ॥ ५ ॥

३८४ वीर जन्मोत्सव

[तर्ज—पूर्ववत्]

अवतार लिया जब भारत में, जिस समय आ त्रशला नन्दनने। उद्योत हुआ त्रिलोक विषे लिया, जन्म आ त्रशला नन्दन ने ॥ टेर ॥ इन्द्र इन्द्राणी आकर के, सुमेरु गिरि लेजा करके। फिर अति आनन्द मनाया है, जब निरखी त्रशला नन्दनने ॥ १ ॥ इन्द्र के हृदय संशय आया, देखी प्रभुजी की लघु काया। फिर पांव अंगुष्ट मेरु को, कंपाया

त्रशला नंदन ने ॥ २ ॥ गुन्नतीस वर्ष गृहवास रया, एक वर्ष का वर्षी दान दिया। एक क्रोड़ अष्ट लक्ष सोनैया दिया, नित प्रति त्रशला नंदन ने ॥ ३ ॥ फिर लेके संयम भार प्रभु भव जीवों का उद्धार किया। उपदेश दिया जीव रक्षा का कर करुणा त्रशला नंदन ने ॥ ४ ॥ अभिमान बीच में छाकर के, खड़े इन्द्रभूति जो आकर के। जब संशय उनका दूर किया, स्वामीजी त्रशला नंदन ने ॥ ५ ॥ कई जीवों को तार दिया, प्रभु अब तो हुक्म हो मेरे लिये। गुरु प्रसादे चौथमल की अर्जी यह त्रशला नंदन ने ॥ ६ ॥

३८५ जप महत्वता

[तर्ज-पूर्ववत्]

सुख सम्पत की गर चाय हुवे, कर जाप तूं त्रशला नंदन का। रोग अरु शोक मिटे तत्क्षण, कर जाप तूं त्रशला नंदन का ॥ टेर ॥ यही तारण तिरण जगत स्वामी है घट २ के अन्तरयामी। मन वंछित फल सब पावेगा, कर जाप तूं त्रशला नंदन का ॥ १ ॥ मात अरु तात जो न्याती है। सब स्वार्थ का जग साथी है। शिवपुरी की तुम्हें चाह हुवे, कर जाप तूं त्रशला नंदन का ॥ २ ॥ यही ब्रह्मा, विष्णु, महेश सही, यही पुरुषोत्तम जगदीश सही। चित्त की वृत्ति को शुद्ध करे। कर जाप तूं त्रशला नंदन का ॥ ३ ॥ बयांसी साल चौमासा

किया, नये शहर विषे आनंद भया। गुरु प्रसादे चौथमल कहता है, कर जाप तूं त्रशला नंदन का ॥ ४ ॥

---

३८६ पूर्व परिचय

[तर्ज--भारत में आलिजाप थी इन्साने किसी दिन]

दुनियां में कैसे वीर थे, मोजूदा किसी दिन। तारीफ जिन की करते थे, हर जां में किसी दिन ॥ टेर ॥ लवजी ऋषि लोकाशाह, धर्मसी महात्मा । करने को परहित जान तक, देते थे किसी दिन ॥ १ ॥ गणधर ग्यारे हो चुके, चरचा में वीर थे। उन से शरमाया करते थे, विद्वाने किसी दिन ॥ २ ॥ बाहुबली योद्धा हुवे, भारत के बीच में। पहाड़ तक थरराते थे, सुन वाज किसी दिन ॥ ३ ॥ विक्रम प्रजा के वास्ते, कर सहन आपत्ति। घर घर पूछा करते थे, आराम किसी दिन ॥ ४ ॥ है कीर्ति मौजूद आज, कर्ण भूप की। दीनों का पालन करते थे, दे दान किसी दिन ॥ ५ ॥ मेघरथ शिवी-सा भूपति, दया के वास्ते। काया को खंडन करते थे, वे वीर किसी दिन ॥ ६ ॥ उठा लिया गिरिराज को, अंगुली पे पलक में । अवतारी ऐसे होते थे, जहां में किसी दिन ॥ ७ ॥ अपने धर्म के वास्ते, राणा परतापसिंह । बनवा कर रोटी घास की, खाते थे किसी दिन ॥ ८ ॥ कहे चौथमल चेतो जरा अए हिन्द-

वासियों। वरना तुम पछतावोगे, लो मान किसी दिन ॥ ६॥

३८७ क्षमा

[तर्ज-कही मुश्किल जैन फकीरी]

गम खाना चीज बड़ी है, कोई नर देखोरे गम खाय के ॥ टेक ॥ गम खाई महावीर जी वन में, घोर परीषा सहे हैं तन में, राग द्वेष को जीता छिनमें, शुक्ल ध्यान को ध्याय के, मिली केवल ज्ञान शिरी है ॥ १ ॥ गम खाई मुनिराज उदाई, भाणजे दिया जहर दिलाई, समता दिल में ऐसी ठाई, दिने कर्म खपायके, गए मोक्ष में उसी घड़ी है ॥ २ ॥ गम खा राम बनवास सिधारे, पिता वचन शीप पर धारे, कैकई पै न किया रोप लगारे, गए विपिन बीच हुलसाय के, जाँके कंधे तीर पड़ी है ॥ ३ ॥ दिया जेहर और किया अकाजा, राणी ने नहीं रखा मुलाजा, गम खाई परदेशी राजा, हुवा देव स्वर्ग में जाय के, देवियां कर जोड़ खड़ी है ॥ ४ ॥ सुदर्शन सेठ ने भी गम खाई, शूली पर दिया भूप चढ़ाई, देव सिंहासण दिया बनाई, सकल विघन हटाय के, सत्य धर्म की महिमा करी है ॥ ५ ॥ ऐसे जो कोई गम खावे, सो नर मन वंछित फल पावे, चौथमल तो साफ सुनावे, उलट भावना लायके, पियो समता रस जड़ी है ॥ ६ ॥

३८८ आगम का महत्वता.

(तर्ज-भारतमें आलिजाएं थी इन्साने किसी दिन)

इस कलिकाल के बीचमें, है सूत्र का आधार । करो आराधन भावसे तो निश्चय हो उद्धार ॥ टेक ॥ तीर्थंकर न केवली, भारत के बीच में । मन पर्यव अवधि ज्ञानी भी नहीं संशय के हरनार ॥ १ ॥ जंघाचारण विद्याचारण मुनि यहां नहीं । आहारिक लब्धि के भी धारी, नहीं कोई अणगार ॥ २ ॥ अङ्ग उपाङ्ग मूल छेद, और आवश्यक । जो कुछ भी है तो इन पर ही है, सारा दार मदार ॥ ३ ॥ जिन वन पर श्रद्धान रख लाखों का द्रव्य त्याग । वे साधु साध्वी बनते हैं, तज मोह माया इसवार ॥ ४ ॥ कहे चौथमल जलगांव के श्रोता सभी सुनो । तुम पढ़ो पढ़ावो प्रेम से, करो आगम का प्रचार ॥ ५ ॥

—SX❀+S—

३८९ झूठ निषेध

(तर्ज- दिल चमन तेरा रहे, जिनराज का स्मरण किया)

सोच नर इस झूठ से, आराम तूं नहीं पायगा । हर जगह दुनियां में नर, प्रतीत भी उठ जायगा ॥ टेर ॥ सांच भी गर जो कहे ईश्वर की खाकर कसम । लोग गप्पी जान के, ईमान कोई नहीं लायगा ॥ १ ॥ क्रोध भय अरु हास्य चौथा, लोभ में हो अंध नर । बोलते हैं

झूंठ उन्ह के, हाथ में क्या आयगा ॥ २ ॥ झूंठ पोशीदा रहे, कहां तक जरा तुम सोचलो । सत्यता के सामने, शिरमन्दगी उठायगा ॥ ३ ॥ झूंठे बोले शख्स की, दोजख में कतरे जबाँ । बोलकर जावे बदल, उसका भी फल वहां पायगा ॥ ४ ॥ बोलता है झूंठ जो तूं, जिसलिये अए बेहया । वह सदा रहता नहीं, देख देखते बिरलायगा ॥ ५ ॥ झूंठ बोलना है मना, सब धर्म शास्त्र देखलो । इसलिये तज झूंठ को, इज्जत तेरी बढ़ जायगा ॥ ६ ॥ गुरु के प्रसाद से कहे चौथमल सुनलो जरा । धारले तूं सत्य को, आवागमन मिटजायगा ॥ ७ ॥

---

३६० ममत्व त्याग.

[तर्ज-पूर्ववत्]

क्या पाप का भागी बने तूं, अए सनम धन के लिये । जुल्म करता गेर पर तूं, अए सनम धन के लिये ॥ टेर ॥ तमन्ना ऐसी बढ़ी, हक हलाल को गिनता नहीं । छोड़ के अजीज को, परदेश जा धन के लिये ॥ १ ॥ खम्भा रंदअ भी न देखा, नहीं नाम से जाना सुना । गुलाभी उनकी करे, तूं देखले धनके लिये ॥ २ ॥ फकीर साधु पास जा, खिदमत करे कर जोड़ के । बूंटी को ढूंढे सदा तूं, अए सनम धन के लिये ॥ ३ ॥ इसके लिये भाई बधुओं से, मुकद्दमा बाजी करे । कोरटों के बीच में

तूं, घूमता धन के लिये ॥ ४ ॥ इसके लिये कर खून चोरी, फेर जावे जेल में । झूंठा गवाह देता बिगानी, अए सनस धन के लिये ॥ ५ ॥ तकलीफ क्या कमती उठाई, जिनरक्ष जिनपालने । सेठ सागर प्राण खोया, समुद्र में धन के लिये ॥ ६ ॥ फिसाद की यह जड़ बताई, माल और औलाद को । कुरान के अन्दर लिखा है, देखलो धन के लिये ॥ ७ ॥ भगवान श्रीमहावीर ने भी, मूल अनरथ का कहा । पुराण में भी क्या लिखा है, फेर इस धन के लिये ॥ ८ ॥ गुरु के प्रसाद से, करे चौथमल ऐसा जिकर । धारले संतोष को तूं, मत मरे धनके लिये ॥ ९ ॥

---

३९१ राग परित्याग.

[तर्ज--पूर्ववत्]

मान मन मेरा कहा, तूं राग करना छोड़दे । आवागमन का मूल है, तूं राग करना छोड़दे ॥ टेर ॥ प्रेम प्रीति स्नेह मोहबत, आशक भी इसका नाम है । कुछ सूझता इससें नहीं, तूं राग करना छोड़दे ॥ १ ॥ लोहकी जंजीर का बंधन नहीं कोई चीज है । ऐसा है बंधन प्रेम का तूं राग करना छोड़दे ॥ २ ॥ सुर असुर और नर पशु, इस राग के फंद में फंसे । फिरते फिरे वे भान हो, तूं राग करना छोड़दे ॥ ३ ॥ धन कुटुम्ब यौवन जिस्म से, स्नेह

निश दिन कर रहा। ख्वाब के मानिंद समझ, तूं राग करना छोड़दे ॥ ४ ॥ जीते जी के नाते सब, ये प्राणप्यारी और अजीज। आखिर किनारा वो करे, तूं राग करना छोड़दे ॥ ५ ॥ इन्द्री विषय में मुग्ध हो, गज मीन मधुकर मृग पतंग। परवा न रखते प्राण की, तूं राग करना छोड़दे ॥ ६ ॥ हिरण बने हैं जड़ भरतजी, भागवत का लेख है। सेठ एक कीड़ा बना, तूं राग करना छोड़दे ॥ ७ ॥ पृथ्वीराज मशगुल हुआ, संयोगनी के प्रेम में। गई बादशाही हाथ से, तूं राग करना छोड़दे ॥ ८ ॥ वीर भाषे वत्स गौतम, परमाद दिलसे परहरो। आन प्रगट ज्ञान केवल, राग करना छोड़दे ॥ ९ ॥ गुरु के प्रसाद से कहे चौथमल वीतराग हो। कर्म दल हट जायगा, तूं राग करना छोड़दे ॥ १० ॥

३९२ द्वेष परित्याग.

(तर्ज-पूर्ववत्)

चाहे अगर आराम तो तूं, द्वेष करना छोड़दे। कुछ फायदा इसमें नहीं तूं, द्वेष करना छोड़दे ॥ टेर ॥ द्वेषी मनुष्य की देख सूरत, खून बरसे आँखसे। नसीहत असर करती नहीं, तूं द्वेष करना छोड़दे ॥ १ ॥ बहुत अरसे तक उसका पाक दिल होता नहीं। बने रहे बद ख्याल हरदम, द्वेष

करना छोड़दे ॥ २ ॥ पूछा हमें हम हैं बड़े, मत बात करना गैरकी । दुर्बल बने यश औरका सुन, द्वेष करना छोड़दे ॥ ३ ॥ देख के जरदार को, या सखी धनवान को । क्यों जले अए बेहया, तू द्वेष करना छोड़दे ॥ ४ ॥ हाकमी या अफसरी गर, नौकरी किसकी लगे । सुन के बने नाराज क्यों, तूं द्वेष करना छोड़दे ॥ ५ ॥ देख गजसुखमाल को द्वेष सोमल ने किया । दुर्गति उसकी हुई, तूं द्वेष करना छोड़दे ॥ ६ ॥ पाण्डवों से कौरवों ने, कृष्ण से फिर कंस ने । विरोध कर के क्या लिया, तूं द्वेष करना छोड़दे ॥ ७ ॥ माता पिता भाई भतिजी, दास अरु पक्षी पशु । तकलीफ क्यों देता उन्हें, तू द्वेष करना छोड़दे ॥ ८ ॥ गुरु के प्रसाद से, कहे चौथमल सुनलो जरा । ग्यारमां यह पाप है, तूं द्वेष करना छोड़दे ॥ ९ ॥

---
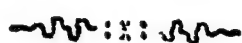
२९३ क्लेश परित्याग.

(तर्ज—पूर्ववत्)

आकबत से डर जरा तूं, क्लेश करना छोड़दे । महावीर का फरमान है, तूं क्लेश करना छोड़दे ॥ टेर ॥ जहां लड़ाई वहां खुदाई, हो जुदाई ईश से । इत्तफाक गौहर क्यों तजे, तूं क्लेश करना छोड़दे ॥ १ ॥ ना बटे लड्डू लड़ाई, बीच कहावत जक्त में । बेजा कहे बेजा सुने, तूं क्लेश करना

छोड़दे ॥ २ ॥ पूजा करे ले जूतियों से, बल के ले हथियार को। सजा आफता भी बने, तूं क्लेश करना छोड़दे ॥ ३ ॥ सन्टर जेल के बीच तुझको, याद रख रखवाऊंगा एब तक जाहिर करे, तूं क्लेश करना छोड़दे ॥ ४ ॥ रावण विभीषण से लड़ा, पहुंचा बिभीषण राम पां। देखो नतीजा क्या मिला, तूं क्लेश करना छोड़दे ॥ ५ ॥ हार हाथी के लिये, कौणक चेड़ा से भिड़ा। हाथ कुछ आया नहीं, तूं क्लेश करना छोड़दे ॥ ६ ॥ कैकई निज हाथ से, यह बीज बोया फूट का। भरतजी नाखुश हुए, तूं क्लेश करना छोड़दे ॥ ७ ॥ हसन और हुसेन से, बेजा किया यजीद ने। हक में उसके क्या हुआ, तूं क्लेश करना छोड़दे ॥ ८ ॥ गुरु के प्रसाद से, कहे चौथमल सुनले जरा। पाप द्वादशमां बुरा, तूं क्लेश करना छोड़दे ॥ ९ ॥

३९४ तोहमत निषेध.

(तर्ज—पूर्ववत्)

इस तरफ तूं कर निगाह, तोमत लगाना छोड़दे। तुफेल है यह तेरवां, तोमत लगाना छोड़दे ॥ टेर ॥ अफसोस है इस बात का, ना सुनी देखी कभी। फौरन कहे तेने किया, तोमत लगाना छोड़दे ॥१॥ तंग हालत देख किसकी, तूं बताता चोर है। बाज आ इस जुल्म से, तोमत लगाना

छोड़दे ॥२॥ मर्द औरत युवान देखी, तूं बताता बद चलन । बुढ़िया को कहे डाकरण है, तोमत लगाना छोड़दे ॥ ३ ॥ सच्चे को झूठा कहे, ब्रह्मचारी को कहै लंपटी । कानून में इसकी सजा, तोमत लगाना छोड़दे ॥ ४ ॥ अपने पर खुद जुल्म दुनियां, देखलो ये कर रही । मालिक की मरजी कहे, तोमत लगाना छोड़दे ॥ ५ ॥ जो देवे कलंक गैर के सिर, आवे उसी पर लौट कर । जैनागम यह कह रहा, तोमत लगाना छोड़दे ॥ ६ ॥ गीता पुराण कुरान अंजील, देखले सबमें मना । इस लिये तूं बाज आ, तोमत लगाना छोड़दे ॥ ७ ॥ गुरुके प्रसाद से कहे, चौथमल सुनले जरा । मान ले नसीहत मेरी, तोमत लगाना छोड़दे ॥ ८ ॥
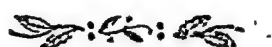
३६५ चुगली निषेध.

[तर्ज--पूर्ववत्]

साफ हम कहते तुझे, चुगली का खाना छोड़दे । चतुर्दशवां पाप है, चुगली का खाना छोड़दे ॥ टेर ॥ चुगल खोर खीताब तुझको, नसीब वर होगा सही । ऐसे समझ कर बाज आ, चुगली का खाना छोड़दे ॥ १ ॥ इसकी उसके सामने, और उसकी इसके सामने । क्यों भिड़ाता है किसे, चुगली का खाना छोड़दे ॥ २ ॥ जिसकी चुगली खाता है, इन्सान गर वह जानले । बन जायगा दुश्मन तेरा, चुगली का खाना

छोड़दे ॥ ३ ॥ इसके जरिये हो लड़ाई, कैदमें भी जा फसे। जहर खा कई मरगये, चुगली का खाना छोड़दे ॥ ४ ॥ शोको भिड़ाई रामने, बनवास सीताको दिया। आखिर सत्य प्रगट हुवा, चुगली का खाना छोड़दे ॥ ५ ॥ गुरु के प्रसाद से कहे, चौथमल सुनलो जरा। आकवत का खोफ ला, चुगली का खाना छोड़दे ॥ ६ ॥

३६६ निन्दा परित्याग.

[तर्ज पूर्ववत्]

आवरु बढ़ जायगी, निन्दा पराई छोड़दे। मानले कहना मेरा, निन्दा पराई छोड़दे ॥ टेर ॥ तेरे सिर पर क्यों धरे तूं, खाख लेके और की। दानीसमंद होवे अगर, निन्दा पराई छोड़दे ॥ १ ॥ गुलाब के गर शूल हो, माली के मतलब फूल से। धार ले गुण इस तरह, निन्दा पराई छोड़दे ॥ २ ॥ खुब सूरती कव्वा न देखे, चींटी न देखे महल को। जरोख जैसे मत बने। निन्दा पराई छोड़दे ॥ ३ ॥ पीठीमंस इसको कहा, भगवान श्री महावीर ने। मीसाल शूकर की समझ, निंदा पराई छोड़दे ॥ ४ ॥ गिव्वत करे नर गेर की, वो भाई का खाता है गोश्त। कुरान में लिखा सफा, निन्दा पराई छोडदे ॥ ५ ॥ सुन भी ली चाहे देखली, गर पूछली कोई शख्स से। झूंठ हो चाहे सांच हो, निन्दा

पराई छोड़दे ॥ ६ ॥ गुरु के प्रसाद से कहे, चौथमल सुनले ज़रा । है चार दिन की जिन्दगी, निन्दा पराई छोड़दे॥७॥

३९७ पाप.

[तर्ज--पूर्ववत्]

वीर ने फरमा दिया है, पाप यही सोलमां । अख-त्यार हरगिज मत करो, है पाप यही सोलमां ॥टेर॥ सत्संग तो खारी लगे, कुसंग में रहे रात दिन । जुंआ बाजी बीच राजी, पाप यही सोलमां ॥ १ ॥ दया दान सत्य शील की, नसीहत करे गर जो तुम्हें । बिलकुल पसंद आती नहीं, है पाप यही सोलमां ॥ २ ॥ गांजा चड़स चंडू तमाखू, बीड़ी सिगरेट भंग को । पी पी मगन रहते सदा, है पाप यही सोलमां ॥ ३ ॥ ज्ञान ध्यान ईश्वर भजन में, नाराज तूं रहता सदा । गोठ नाटक में मगन, है पाप यही सोलमां ॥ ४ ॥ ऐश में माने रति, अरति वेदे धर्म में । कुंड-रिक्ष ने खोया जनम, है पाप यही सोलमां ॥ ५ ॥ अर्जुन मालाकार ने, महावीर की वाणी सुनी । चारित्र ले त्यागन किया, पाप यही सोलमां ॥ ६ ॥ गुरु के प्रसाद से, कहे चौथमल सुनले जरा । चाहे भला तो मेट जल्दी, पाप यही सोलमां ॥ ७ ॥

३६८ झूठ परित्याग.

[तर्ज--पूर्ववत्]

फायदा इसमें नहीं, क्यों झूठ बोले जाल से। इसका नतीजा है बुरा, क्यों झूठ बोले जाल से ॥ टेर ॥ दगा बाजी झूठ मिलकर, पाप सत्तरवां बना। जाइज नहीं है अए सनम, क्यों झूठ बोले जाल से ॥ १ ॥ अच्छी बुरी दोनों मिला, अच्छी बता कर बेंचदे। इसी तरह से वस्त्र दे, क्यों झूठ बोले जाल से ॥ २ ॥ भेद लेने गेर का, बातें बनावे फ़ेब से, अन जान हो कहे जानता, क्यों झूठ बोले जाल से ॥ ३ ॥ भेष जबा दोनों को बदले, चाल भी देवे बदल। रूप को भी फेर दे, क्यों झूठ बोले जाल से ॥ ४ ॥ परदेशी नृप को राणी ने, दिया जहर भोजन में मिला। बोल कर मीठी जबा, क्यों झूठ बोले जाल से ॥ ५ ॥ गुरु के प्रसाद से कहे, चौथमल सुनले जरा। सरलतासे सत्य कहो, क्यों झूठ बोले जाल से ॥ ६ ॥

३६९ मिथ्यात्व दिग्दर्शन.

(तर्ज--पूर्ववत्)

सर्व पापो बीच में, मिथ्यात्व ही सरदार है। इसके तजे बिन ए दिला, होता नहीं भवपार है ॥ टेर ॥ सत्य दया मय धर्म को, अधर्म पापी मानते। अधर्म को माने

धरम, शठ डूबते मझधार है ॥ १ ॥ जीव को जड़ मानते, असत्य युक्ति ठान के। निर्जीव में सजीव की, श्रद्धा रखें हरबार है ॥ २ ॥ सम्यग् दर्शन ज्ञान क्रिया, को कहे उन्मार्ग है। दुर्व्यसनादिक उन्मार्ग को, बतलाते मुक्ति द्वार है ॥ ३ ॥ सु-साधु को ढोंगी समझ, करता कदर उनकी नहीं। धन माल गुरु रक्खे त्रिया, उनके नमें चरणार है ॥ ७ ॥ नाश कर के कर्म को, गये मोक्ष सो माने नहीं। मानता मुक्ति उन्हों की, कर्म जिन के लार हैं ॥५॥ अबतो मिथ्यामत को प्राणी, त्याग देना सार है। समकित रतनको धार फिर तो, छिन में बेड़ा पार है ॥ ६ ॥ साल चौरासी बीच में, नागोर ये आना हुआ। गुरु के प्रसाद से कहे चौथमल हितकार है ॥ ७ ॥

४०० आधुनिक दृश्य.

(तर्ज-भारत में आलिजाएँ थी इन्साने किसी दिन)

श्री वीर प्रभु से विनंती, करता मैं प्रतिदिन। समाज का सुधार अब, होवेगा किसी दिन ॥ टेक ॥ प्रभु त्याग इस संसार को, मुगति में जा बसे। तब से ही तेरा ज्ञान कोष, होगया है भिन ॥ १ ॥ रक्षक धर्मके रख गये, वे भी जहां से। कई तो रुखसत हो गये, कई जाते दिनपे दिन ॥ २ ॥ केवल मन पर्यव ज्ञान तो, गये

यहां से कूंच कर । लघु बंधु अवधि ज्ञान भी, जाता है दिन पै दिन ॥ ३ ॥ भारत में अंधा धुंध मची, नहीं होने से तेरे । छा रहा अज्ञान यह, लोगों के रात दिन ॥ ४ ॥ जो धर्म का पोदा, प्रभु यहां पै लगा गये । सो खण्ड २ होरहा, किस भान्ति आज दिन ॥५॥ आचार्य उपाध्याय हैं, साधु जो विश्व में । पर भिन्न क्रिया होगई है, देखो आज दिन ॥६॥ श्वेतांबरी दिगंबरी, कई गच्छ होगये । आपस में हुज्जत करते हैं, नहीं डरते किसी दिन ॥७॥ कहे चौथमल समाजकूं, श्रोता सभी सुनो । करो ईशसे तुम प्रार्थना, हो सम्प किसी दिन ॥८॥

४०१ उपदेशी पद.

(तर्ज—मेरे स्वामी बुलालो मुगत में मुझे)

कभी नेकी से दिलको हटावो मती । बुरे कामों में जी को लगावो मती ॥ टेर ॥ आए हो दुनियां बीच में, मत ऐश अंदर रीजियो । आराम पावो वहां सदा, उपाय ऐसा कीजियो । ऐसी वख्त अमोल गमावो मती ॥ १ ॥ दिन चार का महमान यहां, इसका भी तुझको ध्यान है । दर्द दिल के वास्ते, पैदा हुआ इन्सान है । सख्त बन के किसी को सतावो मती ॥ २ ॥ नशाखोरी, जिनाकारी, गुस्सा बाजी छोड़दो । हरएक से मोहब्बत करो, तुम फूट से मुंह मोड़दो । जाहिल लोगों के झांसे में आवो मती

॥ ३ ॥ कौन है मादर फादर, कौन तेरे सज्जन हैं । धन माल यहां रह जायगा, तेरे लिये तो कफन है । ऐसी जान के पाप कमावो मती ॥ ४ ॥ साल छियांसी भुसावल, आया जो सेखे काल में । चौथमल उपदेश श्रोता को, दिया बाजार में । जाके होटल में धर्म गमावो मती ॥ ५ ॥

४०२ उपदेशी पद.

[तर्ज—पूर्ववत्]

महावीर से ध्यान लगाया करो, सुख सम्पत इच्छित पाया करो ॥ टेर ॥ क्यों भटकता जङ्ग में, महावीर–सा दूजा नहीं । त्रशला के नन्दन जक्त वन्दन, अनंत ज्ञानी है वही । उनके चरणों में शीश नमाया करो ॥ १ ॥ जगत भूषण विगत दूषण, अधम उधारण वीर है । सूर्य्य से भी तेज है, सागर के सम गम्भीर है । ऐसे प्रभु को नित्य उठ ध्याया करो ॥ २ ॥ महावीर के प्रताप से, होती विजय मेरी सदा । मेरे वसीला है उन्हीं का, जाप से टले आपदा । जरा तन मन से लोह लगाया करो ॥ ३ ॥ लसानी ग्यारे ठाणा, आया चौरासी साल है । कहे चौथमल गुरु कृपा से, मेरे वर्तें मंगल माल है । सदा आनन्द हर्ष मनाया करो ॥४॥
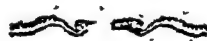
४०३ उपदेशी पद.

(तर्ज—ना छेड़ो गाली दूंगारे)

जो आनन्द मंगल चावोरे, मनावो महावीर ॥ टेर ॥ प्रभु त्रशला जी का जाया, है कञ्चन वर्णी काया । जांके चरणा शीश नमावोरे, मनावो महावीर ॥ १ ॥ प्रभु अनंत ज्ञान गुणधारी, है सूरत मोहनगारी । जां का दर्शन कर सुख पावोरे, मनावो महावीर ॥ २ ॥ या प्रभुजी की मीठी वाणी, है अनन्त सुखों की दानी । थें धार धार तिरजावोरे, मनावो महावीर ॥ ३ ॥ जांके शिष्य बड़ा है नामी, सदा सेवो गौतमस्वामी । जो रिद्धि सिद्धि थें पावोरे ॥ ४ ॥ थारा सर्व विघन टलजावे, मन वंछित सुख प्रगटावे । फेर आवा गमन मिटावोरे, मनावो महावीर ॥ ५ ॥ ये साल गुणयासी भाई, देवास शहर के मांई । कहे चौथमल गुण गावोरे, मनावो महावीर ॥ ६ ॥

४०४ क्षमापना.

(तर्ज—कव्वाली)

श्री संघ से विनय कर के, आज सबको क्षमाते हैं । मन वच कर्मणा करके, आज माफी चहाते हैं ॥ टेर ॥ उपसम सार संयम का, होय शुद्धि निजात्म की । वीरवाणी हृदय धर के, आज सबको क्षमाते हैं ॥ १ ॥ अर्हन् सिद्ध

आचारज,उपाध्याय सवे संतों को। नमा के शीश करजोड़ी, आज सबको खमाते हैं ॥ २ ॥ चौरासी लक्ष योनी के प्राणी भूत जीव सत्त्व। आतमवत् समझ करके, आज सबको खमाते हैं ॥ ३ ॥ खमाना और खमा करना, है सर्वोत्तम यही जग में। समझ के धर्म यह अपना, आज सबको खमाते हैं ॥ ४ ॥ जो गलती हुई हो मुझ से, आप खमजो सकल भ्राता। चौथमल शुद्ध भावों से, आज सब को खमाते हैं ॥ ५ ॥

स्तवन नम्बर ४०५

(तर्ज—तूही तूही याद आवे रे दर्द में)

शान्ति शान्ति शांति चाहूं, शान्ति प्रभु से शान्ति चाहूं ॥ टेक ॥ शान्तिमयी हो जग यह सारा, सदा भावना ऐसी चाहूं ॥ १ ॥ राग द्वेष दोई दूर हटा के, शान्तिमयी जीवन बना हूं ॥ २ ॥ शान्ति रूप स्वरूप है मेरा, इसी बीच में चित्त रमा हूं ॥ ३ ॥ ओ३म् शान्ति ओ३म् शान्ति, इसी मंत्र से ध्यान लगा हूं ॥ ४ ॥ चौथमल कहे शान्ति जपी, मैं सुख सम्पत आनन्द फल पाहूं ॥ ५ ॥

स्तवन नम्बर ४०६

(तर्ज--मेरे मोला की मैं तो)

वीर प्रभुका मैं तो दर्श किया ॥ टेक ॥ हाथ जोड़

कर मेघ कुंवरजी, कहे माता से आय। भेंट आज प्रभु को मैंने, सफल करी निज काय ॥ १ ॥ अद्भुत वाणी सुन कर जाना, यह संसार असार। है स्वार्थ की दुनियां सारी, कोई न आवे लार ॥ २ ॥ छाया घट वैराग्य हमारे, लूंगा संयम भार। दीजो आज्ञा जननी मुझको, करो न किंचित् वार ॥ ३ ॥ मुनि बनूंगा मैं तो माता, छोड़ी सब घरबार। सुनकर माता पड़ी जमी पर, छूटी आंसू धार ॥ ४ ॥ सहल नहीं है संयम जाया, है खाण्डा की धार। विविध भांति समझाया पर नहीं, मानी मेघ कुंवार ॥ ५ ॥ महोत्सव करके संयम दिलाया, माता धारनी नार। मेघकुंवरजी करणी करके, पहुंचे स्वर्ग मझार ॥ ६ ॥ साल सित्यासी बारा संत मिल, बारामति में आया। गुरु हीरालाल प्रसाद चौथमल, जोड़ सभा में गाया ॥ ७ ॥
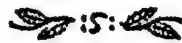
नम्बर ४०७

[तर्ज--चर्खा चला चला के]

अघ को जला जला के, मुक्ति का राज लेंगे ॥ टेक ॥ क्षमा का खड्ग लेकर, क्रोधादि दुश्मनों को। सम्पूर्ण नष्ट करेंगे, मुक्ति का राज लेंगे ॥ १ ॥ चारित्र पालने में होती है जो कठिनता। उस से न हम डरेंगे, मुक्ति का राज लेंगे ॥ २ ॥ जो धर दिया है आगे, हमने कदम हमारा। पीछे

न हम हटेंगे, मुक्ति का राज लेंगे ॥ ३ ॥ निज देश वो हमारा, है प्राण से भी प्यारा । सुख से वहां रहेंगे, मुक्ति का राज लेंगे ॥ ४ ॥ यों चौथमल सुनाता, अब जागो सर्व भ्राता । सत्य सत्य हम कहेंगे, मुक्ति का राज लेंगे ॥५॥
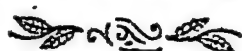
नम्बर ४०८

(तर्ज—कांटो लागोरे देवरिया)

आए रूप मुनि का करके, स्वर्ग से देव विप्र के द्वार॥टेर॥ मुख पर मुंहपत्ति सोहे तिनके, रजोहरण है कांख में जिनके। कर में झोरी उज्वल उनके, नीची निगाह निहाल, आवत देखे पुरोहित अनगार ॥ १ ॥ कहे पुरोहित धन्य भाग सवाया । आज मुनि का दर्शन पाया । मेरे घर तुम चरण पठाया । कर गुन गान वेरायो अन्न जल, तब बोले अनगार ॥ २ ॥ नहीं खुशी चेहरे पर तेरे, क्या कारण कहे भक्त तुमेरे । सांच सांच जाहिर करदे रे । है सब सुख महाराज, पुत्र नहीं जिसका बड़ा विचार ॥ ३ ॥ मत कर चिन्ता मुनि फरमाया । संत आङ्गण पर आया । होगा सब आनन्द सवाया । दो पुत्तर होवेंगा पर वे लेगा संयम भार ॥ ४ ॥ सुन कर प्रोहित मन में हर्षाया । देव कोल कर स्वर्ग सिधाया । चौथमल ने यह पद गाया । अब कैसे ले जन्म आयके सो आगे अधिकार ॥ ५ ॥

नम्बर ४०६

(तर्ज—भजन)

एक दिन कजा जब आयगी, ये कोल हो जाने के बाद। फिर बनेगा कुछ नहीं, मृत्यु निकट आने के बाद ॥ १ ॥ पुण्य उदय नर तन मिला, खोते हो इस को इश्क में। आंसू बहाओगे वहां, मौका निकल जाने के बाद ॥ २ ॥ सारी उमर धंधे में खोई, निज कुटुम्ब पोषन किया। होगा लेखा आकबत में, दम निकल जाने के बाद ॥ ३ ॥ जुल्म मस्कीनों पै करते, तुम दया लाते नहीं। बदला देना होगा तुमको, नर्क में जाने के बाद ॥ ४ ॥ जीतेजी सुकृत न कुछ भी, हाथ से कीना नहीं। जाति रक्षा कब करो, खाख होजाने के बाद ॥ ५ ॥ चाहते हो मुक्ति तुम गर, पर दुख मिटाना सिखलो। अहंकार को तुम कब तजोगे, प्रीति निकल जाने के बाद ॥ ६ ॥ जाति के दुश्मन क्यों बनो, गांवों में धाड़े डाल कर। फूट को अब कब तजोगे, तादाद घट जाने के बाद ॥ ७ ॥ गुरु के प्रसाद से यों, चौथमल तुम से कहे। धर्म क्रिया कब करोगे, मनुज तन खोने के बाद ॥ ८ ॥

नम्बर ४१०

(तर्ज—मेरे स्वामी बुलालो)

पर त्रियासे प्रीत लगावो मति, उनके दरपर भूलके जावो मति

॥ टेर ॥ पाप है इस में जबर, हर ग्रन्थ में बतला दिया । कुरान और पुराण देखो, सब जगह जितला दिया । रूप देख के कोई लुभाओ मति ॥ १ ॥ जो जो लगे इस कर्म में, उनका फजिता हो गया । प्राण तक भी खो दिए, अपकीर्ति यहां पर बो गए । ऐसी जान कुपंथ में जाओ मती ॥ २ ॥ रावण कीचक पद्म नृप की, देखलो हुई क्या दशा । कुछ नहीं सुझा उन्हें । यौवन का छाया था नशा । नर जन्म अमूल्य गमाओ मती ॥ ३ ॥ शीलरत्न का यत्न कर लो, अवतो प्यारो तुम सभी । चौथमल कहे गर्भ में, तुम फिर न आओगे कभी । सत्य शिक्षा को तुम बिसराओ मती ॥ ४ ॥

नम्बर ४११

(तर्ज—मैं तो दासी बनी)

सिया दूंगा नहीं, मैं तो दूंगा नहीं, रावण कहे सुन भ्रात विभिक्षण,नहीं तेरे में ज्ञान । करता दुश्मन की कीर्ति और, मुझे दबाता आन ॥ १ ॥ नीति और अनीति मैं तो, नहीं जानता भाई । जब तक जान जिस्म में मेरे, तब तक दूंगा नाई ॥ २ ॥ राम लखन दोई भील रण्य के, क्या कर सकते आके । नहीं जानते बल वो मेरा, अभी हटाऊं जाके ॥ ३ ॥ होनहार है बुरा जिसी का, सद्बुद्धि कब आवे । गुरु प्रसादे चौथमल यूं, नगर शहर में गावे ॥४॥

नम्बर ४१२

(तर्ज—धोसो बाजोरे)

आनंद छायोरे आनंद छायोरे, माता त्रशला महा-वीर ने जायोरे ॥ टेर ॥ तीन लोक में हुई खुशी, जब जन्म आपने पायोरे। स्वर्ग नर्क मनुष्य लोक से, तम हटायोरे ॥ १ ॥ छप्पन कुंवारी मिल कर आई, उन्हने मङ्गल गायोरे। शक इन्द्र ले प्रभुजी को, मेरु पै सिधायोर ॥ २ ॥ चौसठ इन्द्र महोत्सव कीनो, सब ने हर्ष मनायोरे। महावीर दियो नाम आप, जब मेरु धुजायोरे ॥ ३ ॥ तीस वर्ष गृहवासा रहे फिर, जग सारो छिटकायोरे। घोर परि-षह सहन करी, केवल प्रगटायोरे ॥ ४ ॥ जग जीवों पर दया करीने, द्विविध धर्म बतायोरे। कर्म काट आखिर में प्रभु, अमर पद पायोरे ॥ ५ ॥ साल इक्यासी चौथमल कहे, मङ्गल आज मनायोरे। बम्बई शहर कान्दावाड़ी में जोड़ सुनायोरे ॥ ६ ॥

नम्बर ४१३

(तर्ज-कमलीवाले की)

देकर सद्बोध जगाया है, भारत को वीर जिनेश्वर ने। सुपंथ सिधा दिखलाया है, भारत को वीर जिनेश्वर ने ॥टेर॥ एक क्रोड अष्ट लक्ष सोनैया, नित्य बारे मास तक दान

दिया । यों बनो दानी तुम बतलाया, भारत को वीर जिनेश्वर ने ॥ १ ॥ राज ऋद्धि और भोग सभी, एक छिन में त्यागन कर दीना । यों मार्ग त्याग का बतलाया, भारत को वीर जिनेश्वर ने ॥ २ ॥ अहिंसा सत्य दत्त ब्रह्मचर्य, अकंचन व्रत खुद धारलिया । यों धारन करना सिखलाया, भारत को वीर जिनेश्वर ने ॥ ३ ॥ कठिन तपस्या आप करी, और घोर परिषह सहन किए । यों करम काटना दिखलाया, भारत को वीर जिनेश्वर ने ॥ ४ ॥ लेकर केवल फिर मोक्ष गए, अन्तिम सन्देश सुनाया है । कहे चौथमल यों जाना मोक्ष, जितलाया वीर जिनेश्वर ने ॥ ५ ॥

नम्बर ४१४

(तर्ज--एक तीर फेंकता जा)

पैदा हुआ है जहां में, एक दिन तो वह मरेगा । जैसे मका बना है,आखिर तो वह गिरेगा ॥ टेक ॥ संयोगी जो पदारथ, उसका वियोग होगा । हरगिज़ रहे न कायम, सो यत्न भी करेगा ॥ १ ॥ धातु अनल वायु, पानी पशु मनुज भी । संयोगी नाम सारे, कब ज्ञान यह धरेगा ॥ २ ॥ किस को तू रो रहा है, किस में तू मोह रहा है । अज्ञान के हटे बिन, नहीं आतमा तिरेगा ॥ ३ ॥ जीव

अजीव दोनों, है नित्य निज स्वभावी । कहे चौथमल समझले, तो कार्य सब सरेगा ॥ ४ ॥

—~~—

नम्बर ४१५

(तर्ज—छोटी बड़ी सैयांए)

अए मन मेरारे, प्रभु से ध्यान लगावना ॥ टेक ॥ शुभाशुभ जो, वरत रहे हैं, है यह कर्म स्वभाव । आश्चर्य नहीं लावना ॥ १ ॥ उपादान है, अपना पूर्व का २ नहीं निमित्त का दोष । द्वेष विसरावना ॥ २ ॥ सौख्य रहा नहीं तो, दुख किम रहेसी २ यह भी जावेगा विरलाय । सन्तोष उर लावना ॥ ३ ॥ जो जो भाव ज्ञानी, देखे है ज्ञान में २ वरतेगा वही वरतान । नाहक पछतावना ॥ ४ ॥ एक अवस्था रहे न किस की २ जैसे कृष्णादि राम । उन्हों पै ध्यान लगा-वना ॥ ५ ॥ गुरु प्रसादे, चौथमल कहे २ शहर बम्बई के मांय । पुना से हुआ आवना ॥ ६ ॥

—~~—

नम्बर ४१६

[तर्ज—आनन्द कन्द ऐसा]

तुम द्वेषता तजोरे, चाहो अगर सुधारा ॥ टेक ॥ है पाप महान् जबर यह, दिल में जरा तो सोचो । बे हाल होंगे आगे, पर भव में वहां तुमारा ॥ १ ॥ निज स्वार्थ

पूर्ति के, खातिर करे जुल्म क्यों । मरना तुझे है एक दिन, बान्धे क्यों पाप भारा ॥ २ ॥ कर खून न्याय का तूं, दिल में खुशी मनावे । लेजायगा क्या यहां से, रहेगा सभी पसारा ॥ ३ ॥ करके बुराई क्यों तूं, आदत को पोषता है । जहां तक सहायी पुण्य है, सुधरेगा काज सारा ॥४॥ करले तूं प्रेम सब से, अब छोड़ क्रूपता को । होगा भला इसी में, अए दिल समझ प्यारा ॥ ५ ॥ यह पाप ग्यारवां है, महावीर ने बताया । कहे चौथमल समझले, तुझ को किया इशारा ॥ ६ ॥

नम्बर ४१७

(तर्ज-कमलीवाले की)

यह अधम उधारन जन्म लिया, भारत में वीर जिनेश्वर ने । अज्ञान तिमिर को दूर किया, भारत में वीर जिनेश्वर ने ॥ टेक ॥ मिथ्यात्व भर्म में पड़ करके, भूले थे जन सत्य पथ को भी । उन को सुमारग दरसाया, भारत में वीर जिनेश्वरने ॥ १ ॥ समवशरण में सुर नर सिंह, बकरी पशु आदि आते थे । पर राग द्वेष को बिसराया भारत में वीर जिनेश्वर ने ॥२॥ अहिंसा तत्त्व सब के दिल में,प्रभु कूट कूट के भर दीना । फिर हिंसा को वनवास दिया, भारत में वीर जिनेश्वर ने ॥ ३ ॥ खूब धर्म प्रचार किया, ले दीक्षा अन्तर्यामी ने । अब रखो प्रेम यों सिखलाया, भारत में

वीर जिनेश्वरने ॥ ४ ॥ साल अठयासी बम्बई बीच, निर्विघ्न चौमासा पूर्ण किया । कहे चौथमल उपकार किया, भारत में वीर जिनेश्वर ने ॥ ५ ॥

~~:*:~~

नम्बर ४१८

गौतमजी कर अभिमान, आडम्बर से आया है । संग में अपने कई पढ़े लिखे, छात्रों को लाया है ॥ टेक ॥ समवसरन के बीच में, आकर के जब खड़े । देखी आनन्द जिनराज का, अति विस्मय पाया है ॥ १ ॥ ऐसी न कला है कोई, इनको मैं जीत लूं । पड़ गए द्विधा में इन्द्रभूति, मन में पछताया है ॥ २ ॥ पीछा भी फिरना है नहीं, अच्छा मेरे लिए । करना क्या अब यों मन ही मन, संकल्प ठाया है ॥ ३ ॥ बोले हैं वीर उस समय, सब ही के सामने । आओ गौतम यों आपने, श्रीमुख फरमाया है ॥ ४ ॥ जाने न कौन सूर्य को, जाहिर मेरा है नाम । इससे नहीं पूर्ण ज्ञानी, जब संशय मिटाया है ॥ ५ ॥ लिनी है दीक्षा आपने, संसार त्याग के । मुनियों में हुए शिरोमणी, गणधर पद पाया है ॥ ६ ॥ प्रातः ही रटो सदा, गणधर के नाम को । कहे चौथमल पाओगे ऋद्ध, नासिक में गाया है ॥ ७ ॥

नम्बर ४१९

(तर्ज—इलाजे दर्द दिल तुम से)

जगत के बीच नारी की, बड़ी अद्भुत माया है। सुरासुर इन्द्र लो मानव, नहीं कोई पार पाया है ॥ टेक ॥ निशाना नैन से मारे, लगा के हाथ के झाले। बिना क़सूर कइयों के, शीष इसने कटाया है ॥ १ ॥ बड़े आलिम व फाजिल हो, बेरिष्टर या कोई हाकिम। करे पागल उन्हें छिन में, पास नापास बनाया है ॥ २ ॥ सरासर हार हाथों से, छुपाया देखलो इसने। अरे निर्दोष कन्या पे, तोमत कैसा लगाया है ॥ ३ ॥ नृप परदेशी की प्यारी, थी सूरीकंता वह नारी। खिला कर जहर प्रितम को, गला उसने घुटाया है ॥ ४ ॥ इसी मुआफिक हुई यह बात, जो मंत्रि ने सुनाई है। कहे यों चौथमल यहां सार, थोड़े में ही बताया है ॥ ५ ॥

नम्बर ४२०

(तर्ज—बापुजी केरी भिटियेरे)

माता कहे छे उसवार, जम्बूजी केरी माता कहेरे। माता कहे छे उसवार, कँवरजी केरी माता कहेरे ॥ टेक ॥ साधुपणा की जाया कठिन छे क्रिया, चलनो है खाण्डा की धार। हांरे जाया चलनो है खाण्डा की धार, जम्बूजी केरी माता कहेरे ॥ १ ॥ हाथी घोड़ानी यहां तो करो

सवारियां, वहां तो अरवाणे विहार। हांरे जाया वहां तो अरवाणे विहार, जम्बूजी केरी माता कहेरे ॥ २ ॥ यहां तो पोढ़ो छो जाया मुखमल के ढोलिये, वहां कंकराली भूंवार। हांरे जाया वहां कंकराली भूंवार, जम्बूजी केरी माता कहेरे ॥ ३ ॥ यहां तो बने छे विविध भोजन तरकारियां, वहां पर तो निरस आहार। हांरे जाया वहां पर तो निरस आहार, जम्बूजी केरी माता कहेरे ॥ ४ ॥ यहां तो हाजिर छे सोना रूपानी थालियाँ, वहां दारु पात्र मझार। हांरे जाया वहां काष्ट पात्र मझार, जम्बूजी केरी माता कहेरे ॥ ५ ॥ यहां तो किया न हाथ नीचा उमर भर, मांगे वहां हाथ पसार। हांरे जाया मांगे वहां हाथ पसार, जम्बूजी केरी माता कहेरे ॥ ६ ॥ दो वीश परिषा जाया जितना दोहिला, तूं सुखमाल कुंवार। हांरे जाया तूं सुखमाल कुंवार, जम्बूजी केरी माता कहेरे ॥ ७ ॥ विविध भांति से समझायो कुंवर ने, मानी न एक लगार। हांरे जाया मानी न एक लगार, जम्बूजी केरी माता कहेरे ॥ ८ ॥ संयम दिलायो माता महोत्सव करीने, होगए जम्बू अणगार। हांरे जाया होगए जम्बू अणगार, जम्बूजी केरी माता कहेरे ॥ ९ ॥ चौथमल कहे छोटी में आय के, साल इठयासी मझार। हांरे जाया साल इठयासी मझार, जम्बूजी केरी माता कहेरे ॥ १० ॥

नम्बर ४२१

[तर्ज--पूर्ववत्]

बेटियाँ बोले छे उसवार, ऋषभजी केरी बेटियाँ बोलरे। बेटियाँ बोले छे उसवार, बापुजी केरी बेटियाँ बोलेरे ॥ टेक ॥ मारा प्रभु के शत कुंवरा की जोड़ियाँ, सौ बचे पाड्या छे भाग। हाँरी बेनी सो बचे पाड्या छे भाग, ऋषभजी केरी बेटियाँ बालेरे ॥ १ ॥ मोटा चाहे छे पट् खण्डनी सायबो, नानो न माने छे आन। हाँरी बेनी नानो न माने छे आन, ऋषभजी केरी बेटियाँ बोलरे ॥ २ ॥ मोटो कहे छे मानो आण हमारी, नानो करे छे इन्कार। हाँरी बेनी नानो करे छे इन्कार, ऋषभजी केरी बेटियाँ बोलरे ॥ ३ ॥ मोटे करी छे बेन! युद्धनी तैयारी, नाने गृही छे तलवार। हाँरी बेनी नाने गृही छे तलवार, ऋषभजी केरी बेटियाँ बोलेरे ॥ ४ ॥ मोटे उपाड़ी मुष्टी बन्धुने मारवा, नाना ने पुण्य रखवाल। हाँरी बेना नाना ने पुण्य रखवाल, ऋषभजी केरी बेटियाँ बोलेरे ॥ ५ ॥ मोटाने आय शक्रइन्द्र समझावियो, नाने लिनो है संयम भार। हाँरी बेनी नाने लिनो है संयम भार, ऋषभजी केरी बेटियाँ बोलेरे ॥ ६ ॥ मोटो रमे छे राज रंगनी वाडिमां, नानो डूंगरड़ा नी ढ़ार। हाँरी बेनी नानो डूंगरड़ा नी ढ़ार, ऋषभजी केरी बेटियाँ बोलेरे ॥ ७ ॥ चौथमल कहे इगतपुरी

में, धन्य धन्य ते अणगार । हारी बेनी धन्य धन्य ते अणगार, ऋषभजी केरी बेटियाँ बोलेरे ॥ ८ ॥

नम्बर ४२२

[तर्ज--कैसे गुरु गुणवानों ने]

महावीर ने अहिंसा का,झण्डा फरराया है। जब से ही भारत देश में,आनन्द छाया है ॥ टेक ॥ हर जगह पै घूम कर, प्रचार जो किया। दे दे कर के सत्य बोद्ध,फिर अज्ञान हटाया है ॥ १ ॥ थे अज्ञात तत्व के, कुछ भी न जानते । भूले हुए को रास्ता, सीधा दिखलाया है ॥ २ ॥ लाखों पशु को होमते, लाते नहीं दया । उन्ह के हृदय में करुणा का, अङ्कुर प्रकटाय है ॥३॥ तारीफ हमसे आप की,जो हो नहीं सकती । महान् किया उपकार, सब को ही जगाया है ॥ ४ ॥ कहे चौथमल भूले न हम, अहसान आपका, इगतपुरी में आय के, चक्कर में गाया है ॥ ५ ॥
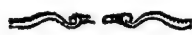
४२३ नम्बर

[तर्ज-बापुजी केरी]

तप की झूले छे तलवार, प्रभुजी केरी तपकी झूलेरे। तप की झूले छे तलवार,वीरजी केरी तप की झूलेरे ॥टेक॥

मारा प्रभुजी राजपाट तजीने, वैराग्य हृदय विचार । हाँरे देखो वैराग्य हृदय विचार, प्रभुजी केरी तपकी झूलेरे ॥१॥ मारा प्रभुजी ज्ञान घोड़ा पे चाढ़िया, लिनी है तप की तलवार । हाँरे देखो लिनी है तप की तलवार, प्रभुजी केरी तपकी झूलेरे ॥ २ ॥ सतरे विध संयम की सेनाले साथ में, इरिया का उड़े निशान । हाँरे देखो इरिया का उड़े निशान, प्रभुजी केरी तपकी झूलेरे ॥ ३ ॥ बावीस परिषह की फोजां को जीती, समता का ले हथियार । हाँरे देखो समता का ले हथियार, प्रभुजी केरी तप की झूलेरे ॥ ४ ॥ शुक्ल ध्यान का बाजे नक्कारा, कांपे है पाप उसवार । हाँरे देखो कांपे है पाप उसवार, प्रभुजी केरी तप की झूलेरे ॥ ५ ॥ खप्पक श्रेणी चढ़ मोह नृप को, छिन्न में है डाला विडार । हाँरे देखो छिन्न में है डारा विडार, प्रभुजी केरी तपकी झूलेरे ॥ ६ ॥ मारा प्रभु की जब विजय हुई है, लीनो है मुक्ति को राज । हाँरे देखो लीनो है मुक्ति को राज, प्रभुजी केरी तप की झूलेरे ॥ ७ ॥ चौथमल की यही है विनति, कीजोजी नैया को पार । हाँजी प्रभु कीजोजी नैया को पार, प्रभुजी केरी तप की झूलेरे ॥ ८ ॥

नम्बर ४२४

(तर्ज-कमली वाले की)

दया धर्म का परिचय आलिम को, दिखला दिया

मेघरथ राजा ने। सब जीवों की तुम करो दया, सिखला दिया मेघरथ राजा ने ॥ टेर ॥ बाज़-फाक्ता बन करके सुर, आये परीक्षा काज वहां। गिर गया फाक्ता गोदी में, अपना लिया मेघरथ राजा ने ॥ १ ॥ कहे बाज यों नृपति से, देदो यह मेरा भक्ष मुझे। नहीं देंगे इसको हम हरगिज़, फरमा दिया मेघरथ राजा ने ॥ २ ॥ गिरि-छुआरे मेवादिक, खाने की चीज़ें हैं कई। देदेंगे तुझको मांग वही, जितला दिया मेघरथ राजा ने ॥ ३ ॥ अगर बचाना चाहते हो, निज तन का देदो मांस मुझे। सुनकर के फौरन आप छुग, मंगवा लिया मेघरथ राजा ने ॥ ४ ॥ सज्जनस्नेही मिल कर के, कहे हाथ जोड़ यों भूपति से। करते हो गजब क्यों स्वामी जब, समझा दिया मेघरथ राजा ने ॥ ५ ॥ कर दीना तन नृपति अर्पण, परहित करन सत् धारीने। नहीं चला धर्म से, पक्षी को बचवा दिया मेघरथ राजा ने ॥ ६ ॥ हो प्रकट देव कहे स्वामी की, कीनी प्रशंसा इन्द्र ने। निज मुख से फिर धन्यवाद देव, दीना है मेघरथ राजा ने ॥ ७॥ साल सित्यासी नगर बीच कहे, चौथमल श्रोता सुनियो। बनके तीर्थंकर करुणा-रस, बरसा दिया मेघरथ राजा ने ॥ ८ ॥

नम्बर ४२५

(तर्ज—मेरे स्वामी बुलालो मुगत में मुझे)

प्रभु-ध्यान से दिलको हटावो मती। दुनियां-दारी

में वक्त गमाओ मती ॥ टेर ॥ है फना यह दुनियां सारी, साथ में नहीं आयगा। छोड़कर सारा पसारा, कूंच नू कर जायगा ॥ इसमें फँस के उसे बिसरावो मती ॥ १ ॥ प्राण प्यारी द्वार तक, रोती खड़ी रह जायगा। मित्र-दल तेरा तुझे, शमसान तक पहुंचायगा ॥ करके अनीति द्रव्य कमाओ मती ॥ २ ॥ पर लोक में ले जायगा, पुण्य-पाप गठड़ी बांधकर, लेंगे बदला तुझसे जो, मारे थे बाण से सांध कर ॥ ऐसी जान किसी को सताओ मती ॥ ३ ॥ एक धर्म ही सच्चा सखा, आराम इससे पायगा। कहे चौथमल बिन धर्म के, आगे तू वहां पछतायगा ॥ मिथ्या माया के बीच लोभाओ मती ॥ ४ ॥

नम्बर ४२६

[तर्ज-कमली वाले की]

यह सदा एक-सी रहे, नहीं, तुम देखो ज्ञान लगा करके। करलो जो करना हो तुमको, यह वक्त मिला है आकरके ॥ टेर ॥ तीन खंड का राज लिया, कर दमन आप सब ही जन को। देखो जंगल में प्राण तजे, फिर तीर योग से जाकर के ॥ १ ॥ मगध देश का मालिक था यह श्रेणिक नामा भूप जबर। एक दिन हाथों से मरे वही, देखो जहर को खाकर के ॥ २ ॥ सीता के लिये वन

बन में फिरे, श्रीरामचन्द्रजी ढूंढन को। जब दिन पल्टे तब वही सीता, छोड़ी जंगल में ला कर के ॥ ३ ॥ वीर विक्रमादित्य हुआ, देखो कलियुग में सत् धारी। दिन पल्टे जब रहे घांची, घर वह सूखी-रुखी खाकर के ॥ ४ ॥ राज महल में रहते थे, आनन्द से हरिचन्द प्रणधारी। वही काशी में फिर जाय बिके, आराम-ऐश बिसरा करके ॥५॥ साल सित्यासी नगर बीच, कहे चौथमल श्रोता सुनलो। मत फूलो सम्पत देख देख, रहो राग द्वेष बिसरा करके ॥६॥

नम्बर ४२७

(तर्ज- मेरे स्वामी)

जो हो मोक्ष के बीच में जाना तुझे। होगा दुनियां से प्रेम हटाना तुझे ॥ टेर ॥ सत्य-शील दया-दान को, दिल में बसाना चाहिये। काम क्रोध मद-लोभ को, एक दम भगाना चाहिये ॥ नहीं विषयों के बीच ललचाना तुझे ॥ १ ॥ बैठ के एकान्त में, तू ढूंढ अपने आप को। अभ्यास से मन रोक के, हरदम जपो प्रभु-जाप को ॥ घट के पट में ही दर्शन पाना तुझे ॥ २ ॥ ढ़ेर कर्मों का जला अग्नि लगा के ज्ञान की। खटपट सकल मिटजायगा, जब लौ लगेगी ध्यान की। नहीं आवागमन में फिर आना तुझे ॥ ३ ॥ निज-स्वरूप में तू रमण कर अक्षय सुख तू पायगा।

त्रिकाल तीनों जगत् हस्ताम्ल ज्यूं दरसायगा ॥ यही चौथमल का जितलाना तुझे ॥ ४ ॥

नम्बर ४२८

(तर्ज-पूर्ववत्)

सखी बात पर क्यों नहीं ध्यान धरे । पिया मिलने की क्यों न तैयारी करे ॥ टेर ॥ दिन चार पियर बीच में आखिर तूं रहने पायगी । याद रख सुसराल में फिर अंत हीं तूं जायगी, मत मिथ्या मोह के बीच परे ॥ १ ॥ ज्ञान जल स स्नान कर, अघमेल तज दीजियो । शील का शृंगार तन, अच्छी तरह सज लीजियो । पूरी करके सजावट पहुंच घरे ॥ २ ॥ तेरेसे भी अधिक गुण में, पिया के कई जानियो । यौवन की मद माती बनी, अभिमान तूं मत आनियो । बिना पिया के क्यों तूं भटकती फिरे ॥३॥ करके निगाह तूं देखले, बिन पिया सुख कब पायगा । कहे चौथमल यूं मुफ्त तेरा, जन्म सारा जायगा ! शुद्ध ध्यान पिया का धरे सो तिरे ॥ ४ ॥

नम्बर ४२९

[तर्ज-पूर्ववत्]

कभी भूल तमाखू तुम पीजो मती । पीने वालों का

संग भी कीजो मती ॥ टेर ॥ है बुरी ये चीज ऐसी, खर नहीं खाता इसे। इन्सान होके पीने को तूं, किस तरह लाता इसे ॥ इसे जान अशुद्ध चित्त दीजो मती ॥ १ ॥ देख पीते और को, जाते हैं वहां पर दौड़कर। चाहे जितना कार्य हो, पीवेगा सबको छोड़कर ॥ ऐसी आदत से हरदम रीझो मती ॥ २ ॥ उत्तम से लेकर शूद्र तक की, एक हो जाती चिलम। शुद्धता रहती नहीं, दे छोड़ तू मत कर विलम्ब ॥ अपने कर से चिलम कभी छूजो मती ॥ ३ ॥ देता तमाखू दान वह, दाता नरक में जायगा। देखो पुराण में साफ ही लिखा तुम्हें मिल जायगा ॥ मिले मुफ्त तो भी तुम लीजो मती ॥ ४ ॥ जाता है पैसा गांठ का, होती है फिर बीमारियां। चौथमल कहे छोड़ दो, भारत के नर और नारियां ॥ सुनके बात मेरी तुम खीजो मती ॥ ५ ॥

नम्बर ४३०

(तर्ज—पूर्ववत्)

कभी चहा की चाह तुम कीजो मती। प्राण नाशक समझ तुम पीजो मती ॥ टेर ॥ परतन्त्र भारत हो गया आधीन होके चाय के। कान्ति रूपी रत्न को, खोया होटल में जाय के ॥ इस में फंस के प्राण तुम दीजो मती ॥ १ ॥ एक वार चा का गर्म पानी, कोप भर के पी लिया। है छूटना मुश्किल फिर, उपाय चाहे सो किया ॥ निर्भर इस

के ही ऊपर रीजो मती ॥ २ ॥ चूसने में खून को, जलोक मानिन्द जानलो । फायदा इस में नहीं, सच्ची कहें हम मान लो ॥ मीठी देख उसे तुम रीझो मती ॥ ३ ॥ सत्ताईस क्रोड़ रुपयों का, होता खरच हरसाल में । अय हिन्दवासी भाइयों कुछ भी लाओ ख्याल में ॥ कभी भूल के चहा तुम छूजो मती ॥ ४ ॥ फिजूल खर्चा बन्द कर, सत्कर्म में दो माल को । चौथमल कहे है नहीं, देखो भरोसा काल का ॥ कर के कुकृत्य अपयश लीजो मती ॥ ५ ॥

नम्बर ४३१

(तर्ज--पूर्ववत्)

दारू भूल के पीने न जाया करो । पागल पन को खरीद न लाया करो ॥ टेर ॥ शराब पीने वालों को कुछ भी न रहता भान है । हैवान कहते हैं सभी रहता न कोई ज्ञान है ॥ ऐसे स्थान पे भूल न जाया करो ॥ १ ॥ बकता है मुंह से गालियां, इन्सान पागल की तरह । नालियों में जा गिरे, पेशाब कूकर आ करे ॥ इसके पीने से दिल को हटाया करो ॥ २ ॥ माँ–बहिन का भी मान वो, नर भूल जाता है सभी । मार देता जान से तलवार लेके वो कभी ॥ जुल्म करने से बाज तुम आया करो ॥ ३ ॥ बदबू निकलती मुंह से, शराब पीने से सदा । अच्छे पुरुष छूते नहीं, हाथ से

हरगिज कदा ॥ वृथा इसमें न धन को लगाया करो ॥ ४ ॥ गरम शीशा करके, यम दोजख में तुमको पायगा। साफ लिखा शास्त्र में पीछे वहां पछतायगा ॥ दिल में खैफा खुदा का भी लाया करो ॥ ५ ॥ साल सित्यासी में कहे, यों चौथमल सुन लीजियो। चाहो अगर अपना भला, त्यागन इसे कर दीजियो ॥ मेरी शिक्षा को दिल में जमाया करो ॥ ६ ॥

नंबर ४३२

[तर्ज--पूर्ववत्]

कभी नैनों से पाप कमाओ मती। इनके वश में हो जन्म गमाओ मती ॥ टेर ॥ चार दिन की है जवानी, इसमें क्यों तुम बहकते। हाथ कुछ आता नहीं, क्यों बद निगाह से देखते। देखी सुरूपा मन को डिगाओ मती ॥ १ ॥ नैनों के वश में होके खोता, पतंग देखो प्राण को। आग में पड़ता है जाके, क्या खबर हैवान को। ऐसे आखों के वश में होजाओ मती ॥ २ ॥ किस लिये आंखें मिली, किस काम को करने लगे। थिएटर, तमाशा देखने में सब से ही आगे भगे। पोट पापों की बांध के जाओ मती ॥ ३ ॥ पालो दया सब जीव की, आखों का यही सार है। चौथमल कहे नहीं तो फिर, यह नैत्र ही बेकार है। भूल विषयों में तुम ललचाओ मती ॥ ४ ॥

नंबर ४३३

[तर्ज--पूर्ववत्]

मत चहा की चाट लगाया करो । खुद पीवो न औरों को पाया करो ॥ टेर ॥ फायदा कुछ भी नहीं, नुक्सान करती है सदा । भूल कर हाथों से भी, हरगिज न तुम छूओ कदा । भर-भर प्याला न इसका उड़ाया करो ॥१॥ दूध-शक्कर के मजे से पीते हैं नर हो फिदा । रोग पैदा करती है और नींद हो जाती विदा । ऐसी जान इसे छिटकाया करो ॥ २ ॥ वीर्य का भी नाश कर देती है, जहरीली पत्ती । नामर्दपन पैदा करे नहीं झूंठ है इस में रत्ती । अपने मन को जरा समझाया करो ॥ ३ ॥ धर्म और कर्म को, भूले हो इसकी याद में । बन गये कंगाल कई जो लगे इस नाद में । ऐसे व्यसन को दूर हटाया करो ॥ ४ ॥ फिजूल खर्ची मत करो, जो चाहते हो खुद का भला । चौथमल तुमको कभी, हरगिज न देता कुसलाह । मेरी नसीहत पर ध्यान लगाया करो ॥ ५ ॥

नंबर ४३४

[तर्ज--पूर्ववत्]

तेरे दिल में तो वह दिलदार बसे । तूं तो ज्ञान लगा कर देख उसे ॥ टेर ॥ जैसे सुगंधी फूल में, और धातू ज्यूं

पाषाण में। तिल-तेल—घृत-है दुग्ध में, फिर खड्ग जैसे म्यान में। मोह-जाल में फंस क्यों भूला उसे ॥ १ ॥ नाभि-कमल में मुश्क का, नहीं मृग को कुछ भान है। घास को वह सूंघता, जगत् ऐसे अज्ञान है। कहे कहां तक खुद की न खबर जिसे ॥ २ ॥ कर की नब्ज से भी निकट, नहीं दूर उसको जानना। दगाबाजी का हटा, पर्दा उसे पहिचानना। विना सत्संग के मिलता न वह तो किसे ॥३॥ कहे चौथमल द्वित भाव और दुरंगी चालें छोड़ दे। ढूंढ़ल अपने ही अन्दर मिथ्याभ्रम को तोड़ दे। इन विषयों में नाहक तू तो फंसे ॥ ४ ॥
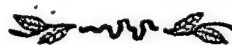
नंबर ४३५

[तर्ज पूर्ववत्]

कैसे वीर कजा के हुक्म में चले। क्या है ताकत अदूली जो करके चले ॥ टेर ॥ छत्र धारी राय-राना धनी निर्धन भी चले। कौन कायम यहां रहा, जब काल का चक्र चले। करनल, लेफ्टन, जनरल सर्जन चले ॥ १ ॥ वैद्य धन्वतरि चले हकीम लुकमां भी चले। कप्तान सूबेदार और साहिब मुन्शी भी चले। दफ्तर छोड़ के बाबू साहब चले ॥ २ ॥ चक्रवर्ती, बादशाह, माण्डलिक, अवतारी चले। काल की गर्दिश में सूर्यग्रह तारा भी चले। राम रावण, फिर चारों ही युग चले ॥ ३ ॥ पटेल, नम्बरदार,

सूबा, वकील, बैरिस्टर चले । फरीक मुदाई चले, हुकूमत तज हाकिम चले । इसके आगे न किसी की मजाल चले ॥ ४ ॥ पल्टन, रिसाला, तोफखाना, दारू,सिक्का धर चले । कहे चौथमल जौहरी जवाहिर, पेटियों में भर चले । प्रभु नाम बिना जन्म खो के चले ॥ ५ ॥

नंबर ४३६

[तर्ज--पूर्ववत्]

कभी होटल में जाकर के खाओ मती । अपना धर्म उत्तम गमाओ मती ॥ टेर ॥ दूध और शकर के लालच सहज पीते चाह को । देखते ऋतु नहीं पीते हैं बारह मास को । अपने तन को मिट्टी में मिलाओ मती ॥१॥ नीचता और ऊँचता का रहता नहीं,कुछ भान है । है सभी एक साव वहां पर और नहीं कुछ ज्ञान है । ऐसे स्थान पर भूल के जाओ मती ॥ २ ॥ खाद्य पदार्थ का भी तो विचार करते हैं कहां । शराब और ब्रांडी को भी संसर्ग से पी लेंगे वहां । जाकर कान्दे के भुजिये उड़ावो मती ॥ ३ ॥ बनती है दो-दो पैसे में, घर चीज उम्दा हाथ से । होटल में देते चार पैसे तो न मिले आजाद से । फँस के फैशन में धन को गमाओ मती ॥ ४ ॥ साल सित्यासी में कहे यूँ चौथमल तुम से सफा । हानी सिवा नहीं लाभ है,

मिलता न है कोई नफ़ा । मेरी नसीहत को दिल से भुलाओ मती ॥ ५ ॥

नम्बर ४३७

[तर्ज-पूर्ववत्]

जिया गफ़लत की नींद में सोवे मती। वृथा मनुष्य-जनम को खोवो मती ॥ टेर ॥ पूर्व भव के पुण्य से, आकर मिली है सम्पदा । अब न लूटे लाभ तो, यह फिर न मिलने की कदा ॥ सच्चे मुक्ता तज झूठे पिरोवो मती ॥ १ ॥ मुख मिला प्रभु-भजन को, क्यों न भजे नादान तू। कान से प्रभु-वाणी सुन, फिर हाथ से दे दान तू॥ कभी विषयों के वश में तू होवे मती ॥२॥ नैन से कर दर्श मुनियों के, सदा तू प्रेम से। तन से करले तू तपस्या, हरगिज डिगे मत नेम से ॥ भव सिन्धु में नैया डुबोवे मती ॥३॥ मैं तुझे समझा चुका अब, मान या मत मान तू। चौथमल कहे किस लिये आया जरा पहिचान तू ॥ मिथ्या-माया को देख तू मोवे मती ॥ ४ ॥

नम्बर ४३८

[तर्ज-पूर्ववत्]

दुनियां सपनेसी जान लोभावो मती । इसके झांसे

में भूल के आवे मती ॥ टेर ॥ जितने पदार्थ जगत् में, दिखते हैं तुमको नैन से । नाशवान् हैं ये सभी, जानले प्रभु वैन से ॥ इसमें कोई भी संशय लावे मती ॥ १ ॥ रात में आया स्वप्न, जैसे किसी कंगाल को । बन गया वह बादशाह भर-भर उड़ावे माल को ॥ बोले हुक्म से बाहिर जावे मती ॥ २ ॥ बैठा सिंहासन आपके सिर छत्र और चंवर ढुरे । हुरमा खड़ी है सामने, सज धज के वह लटका करे ॥ झूठी जाल में कोई ललचावे मती ॥ ३ ॥ मुंदी है आंखें ये जब तक, ठाठ है मानो सही । खुलगई जब आंख तो,आता नजर फिर कुछ नहीं । ऐसी जान जगत् में लुभावे मती ॥४॥ छोड़कर गफलत को तुम, अब तो जरा ओसान लो । गुरु के प्रसादे कहे चौथमल अब मानलो॥ धर्म छोड़ अधर्म कमावे मती ॥५ ॥

नंबर ४३६

[तर्ज—पूर्ववत्]

मुझे भूल के जालिम सतावे मती । मेरे धर्म में दखल पहुंचावे मती ॥ टेर ॥ है तुझ मालुम नहीं क्या, मैं हूं दुश्मन जानकी । इन्द्र से भी न डिगूं, ताकत है क्या इन्सान की ॥ भय मृत्यु का मुझको दिखावे मती ॥ १ ॥ प्राण से भी तो अधिक प्यारा मुझे सद्धर्म है । हरगिज न

छूंगा इसे तुझको न मूर्ख शर्म है ॥ बुरी बातों से पेश तू आवे मती ॥ २ ॥ घास खाती सिंहनी नहीं, खायगा खज़ होज भी। लंघन करेगी वह मगर, तृण न चाहेगी कभी। मेरे आगे तू जाल फैलावे मती ॥ ३ ॥ छोड़के इन्सानपन तू क्यों बना नादान है। कहे चोथमल दिन चार का दुनियां में तू महमान है ॥ बदी बांध के साथ ले जावे मती ॥ ४ ॥
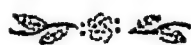
नंबर ४४०

[तर्ज-शिक्षा दे रहीजी हमको रामायण]

शिक्षा धारियों रे, हमारे देश के प्रेमी बन्धु ॥ध्रुव॥ आटा गिन्नी का मत खाओ, इसमें दोष है भारी । ताक़त हीन बनावे तुमको, धर्म न रहे लगारी ॥ १ ॥ कीड़ों की होती है हिंसा, इस रेशम के काज, थोड़े शोक के कारण प्यारो, मतना करो अकाज ॥ २ ॥ हिंसाकारी वस्त्र विदेशी, मत तुम हरगीज़ धारो। खादी देश की है आबादी, इसको मति विसारो ॥ ३ ॥ सस्ता जान के चर्बी मिश्रित, घी कभी मत खाओ। नकली घी से असली ताकत, कहो कहां से लाओ ॥ ४ ॥ संवत् उन्नीसे साल सित्यासी, शहर सतारा मांई। गुरु प्रसादे चोथमल कहे, गुनियों ध्यान लगाई ॥ ५ ॥
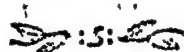
नम्बर ४४१

[तर्ज—मर्दवनो मर्दवनो]

बन्द करो बन्द करो, तुम बालविवाह को बन्द करो ॥ ध्रुव ॥ छोटे छोटे छोरा छोरी, खेले धूल में मिलकर टोरी। मत लग्न करो मत लग्न करो, लघुवय में मतना लग्न करो ॥ १ ॥ समझत नहीं हिताहित माई, मोह वश देवे परणाई। ध्यान धरो ध्यान धरो, हित शिक्षा पै कुछ ध्यान धरो ॥ २ ॥ बच्चपन में विद्या न पढ़ाओ, नाहक लग्न उनके करवाओ। क्यों बदनाम करो बदनाम करो, भारत का मत बदनाम करो ॥ ३ ॥ मत वीर्य नष्ट लघुवय में कराओ, ब्रह्मचर्य उनसे पलवाओ। मत जुल्म करो जुल्म करो, निज बच्चों पै मत जुल्म करो ॥ ४ ॥ जीवित कब उन के सुत रहावे, अल्प उम्र में कई मर जावे। विचार करो विचार करो, सब बान्धव अब विचार करो ॥ ५ ॥ गोर करो जाति के मुखिया, होय तभी यह भारत सुखिया। कुछ गोर करो गोर करो, जाति के मुखिया गोर करो ॥ ६ ॥ चौथमल सबको जितलाया, शहर सतारे भजन बनाया। सुधार करो सुधार करो, निज जाति का सुधार करो ॥ ७ ॥

नंबर ४४२

(तर्ज—कमली वाले की)

मत बेचो कन्या को कोई, दिल बीच दया तुम

लाकर के। क्यों भरते हो तुम पाप पिण्ड, वे हक का पैसा खा करके ॥ टेर ॥ देते थे उलटा द्रव्य हजारों का, लड़की का माता पिता। निर्दय बनके अबतो बेंचे, वे लोग लाज विसरा करके ॥ १ ॥ नहीं देखे बुड्ढा बालक, हो लोभ बीच बनते अंध। नहीं सोचे कृत्याकृत्य, ढकेले कूप बीच जा करके ॥ २ ॥ बोर मोगरी मालन ज्यूं, बेंचे है बाजार में जा करके। वैसे ही कन्या को देते, फिर रूपे नगद गिनवा करके ॥ ३ ॥ जहां देते वहां वो जाती है नहीं करती है इन्कार कभी। नहीं जोर जबर दिखलाती है, रहती है वो शरमा करके ॥ ४ ॥ हरगिज न होगा कभी भला, वे हक का धन को खाने से। कहे चौथमल हरदम तुम से यह भजन सवारे गा करके ॥ ५ ॥

नंबर ४४३

(तर्ज—शिक्षा दे रही जी हम को रामायण)

इन्हें तुम त्यागियोरे, भारत देश हितेच्छु प्यारो ॥ ध्रुव ॥ बिड़ी सिगरेट और तमाखू को, मत पीना भाई। फिजूल खर्ची बन्द करो तुम, आदत बुरी मिटाई ॥ १ ॥ गांजा पिकर प्यारो तुमतो, सीना नाहक जलाते। तरुणपने में खांसी हो कर, जल्दी कई मरजाते ॥ २ ॥ भूल कभी मत पिओ भंग को, करती है नुकसान। पागल जैसा बना

देती है, कुछ भी न रहता भान ॥ ३ ॥ बुरा नशा है दारू का, सब भूल जाए वह मान । जाकर गिरता है नाली में, मुख पर मूते श्वान ॥ ४ ॥ लाखों रुपयों की होती है हर-साल में हानी । देश दुखी होगया इसी में, तो भी न तजते प्रानी ॥ ५ ॥ अपना तो तुम, सुनजो ध्यान लगाई । गुरु प्रसादे चौथमल कहे, शहर सतारा मांई ॥ ६ ॥

नंबर ४४४

(तर्ज--कमली वाले की)

इस दुनियां के पड़दे से तूं तो, अवश्यमेव ही जावेगा । ले जावेगा संग में तूं तो, जो नेकी बदी कमावेगा ॥ टेर ॥ नहीं अमर रहे जग में कोई सुरनर–इन्द्र भी बड़े बड़े । उनका कजा कर गई गटका, क्या तुझको भी नहीं आवेगा ॥ १ ॥ रहती थी फौज लाखों तावे और उठाते हुक्म सभी उसका । जिस वक्त बने नहीं कोई सहायी, जब मृत्यु गला दबावेगा ॥ २ ॥ धन माल खजाना ये तेरा, रह जावेंगे सब ही यांही । पितु–मात–भ्रात सज्जन सब ही, श्मशान बीच पहुँचावेगा ॥ ३ ॥ दुनियां के हाट में आकर के मत खाली हाथ तू तो जाना । नहीं तो परभव में आखिर तू, जाकर के वहां पछतावेगा ॥ ४ ॥ मिला अमोल सु अव-सर यह, जिसका भी दिल में ख्याल करो । कहे चौथमल करले सुकृत, परभव में तू सुख पावेगा ॥ ५ ॥

नंबर ४४५

(तर्ज -कांटा लागोरे)

सच्चे देव वही तुम मानो, जिसमें दोष अठारह नाय। दोष अठारह नाय। उनके वन्दो नित तुम पाय ॥ टेर ॥ दान,[1] लाभ,[2] भोग,[3] उपभोग,[4] अन्तरायवीर्य,[5] का हुआ वियोग,[6] । हास्य,[7] रति,[8] अरति,[9] दुगच्छा,[10] दीनी दूर हटाय ॥ १ ॥ भय,[11] शोक,[12] और काम,[13] निवारा, मिथ्यात्व,[14] अज्ञान,[15] से किया किनारा, निन्द्रा,[16] अव्रत,[17] राग-द्वेष[18] लिये जीत विजय पाय ॥ २ ॥ घन घाति कर्म हटाया, अनन्त ज्ञान दर्शन प्रकटाया, महिमा फैली तीन लोक में सुरनर भी गुणगाया ॥ ३ ॥ ऐसे देव को जो नर ध्यावे, स्वर्ग मोक्ष का वह फल पावे, आवागमन मिट जावे, संशय इस में तूं मत लाय ॥ ४ ॥ गुरु प्रसादे चौथमल गाया, सच्चे देव का चिन्ह बताया। साल सित्यासी नगर शहर में दियो चौमासा ठाय ॥ ५ ॥
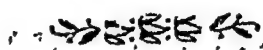
नंबर ४४६

(तर्ज---मर्द बनो मर्द बनो)

दया करो, सब भारतवासी दया करो दया करो ॥ ध्रुव ॥ देवी स्थान पे तुम जा जा के, टोनगे बकरे को ला ला के। मत प्राण हरो प्राण हरो हरगीज मत उन के

प्राण हरो ॥ १ ॥ माता नहीं हिंसा चाहती है, जीव मार दुनियां खाती है । मत पाप करो पाप करो, हिन्दु बन्धु मत पाप करो ॥ २ ॥ जैसे तुम भी जीना चाहो वैसे परको भी अपनाओ । प्रेम करो प्रेम करो, पर जीवन पै तुम प्रेम करो ॥ ३ ॥ बलिदान जीवों का करते, तदपि अक्षय वो नहीं जीते । ध्यान धरो ध्यान धरो, कुछ शिक्षा ऊपर ध्यान करो ॥ ४ ॥ करे रक्षा वह माता पक्की, होय हिंसा तो डायन नक्की । तुम दूर करो, दूर करो हिंसा से तबियत दूर करो ॥ ५ ॥ हिंसा कर नरकन में जावे, सब मजहब ऐसे जितलावे । बाहर करो, बाहर करो हिंसा को हिंद से बाहर करो ॥ ६ ॥ गुरु प्रसादे चौथमल गावे, हिंदवासियों को जितलावे । बन्द बन्द करो, अब हिंसा करना बन्द करो ॥ ७ ॥

नंबर ४४७

(तर्ज गुलशन में आई बहार)

दिल में रखो विश्वास, विश्वास मेरे प्यारे ॥ टेर ॥ रखती है विश्वास त्रिया पतिपे, वृद्धि होती है सुत की खास २ ॥ १ ॥ वेश्या के विश्वास नहीं होने से, होती न संतान तास २ ॥ २ ॥ कृषी विश्वास रखता है दिल में, होती है धान्य की रास २ ॥ ३ ॥ ऐसे ही धर्म पे विश्वास

रखो, जो चाहते हो मुक्ति को वास २ ॥ ४ ॥ साल सित्यासी शहर नगर में, कियो चौथमल चौमास २ ॥ ५ ॥

नंबर ४४८

[तर्ज–मेरे स्वामी मुगत में बुलालो मुझे]

मिली कसी अमोल ये काया तुझे, कृपा कर के गुरुजी चेतावे तुझे ॥ टेर ॥ तीर्थंकर नर काया से, लेते हैं जो अवतारजी, कर के करणी देही से, होते हैं भव दधि पारजी, मैं तो सची सची ये जीतावुं तुझे ॥ १ ॥ महावीर ने नर देही से, उपकार भारत में किया, राम ने अवतार जग में, इसी काया से लिया, परहित कर लो ये ही समझावुं तुझे ॥ २ ॥ कंचन से महंगी काया है, यह निती का ठहराव है, कहे चौथमल वरना यह काया, मिट्टी से खराब है, करले काया से तपस्या जितावुं तुझे ॥ ३ ॥

नंबर ४४९

[तर्ज–महावीर से ध्यान लगाया करो]

तेरे दिलका तूं भ्रम मिटा तो सही, जरा राह निजात की पातो सही ॥ टेर ॥ महावीर का फर्मान है अव्वल तो सम्यक् ज्ञान हो, नो पदार्थ पट् द्रव्यका यथार्थ फिर भान

हो, अविद्याको दूर हटा तो सही ॥ १ ॥ समकित में पक्के बनो, सैनिक राजा के तरह, मत साज तंछो देवकी कुजापे भी मत ना करो । रूपातित से लोह लगा तो सही ॥ २ ॥ पाप के बचने के खातिर, त्याग सेवन कीजिये । ऐसी अमोलख वक्त को नहीं भूल जाने दीजिये । मनुज जन्म का कर्तव्य बजा तो सही ॥ ३ ॥ कर तपस्या भाव से इसी नफ़स को तूं मार ले । कहे चौथमल मौक़ा मिला अब आतमा को तार ले । पूना शहर में धर्म कमातो सही ॥ ४ ॥

नंबर ४५०

(तर्ज—पूर्ववत्)

कभी भूल किसी को सतावो मती, अपने दिल को तो संगीन बनावो मती ॥ टेर ॥ मत सतावो तुम किसी को, मान लो तुम मानलो । वरना दोजख में गिरोगे, बात सची जानलो । जुल्म करने में कदम बढ़ावो मती ॥ १ ॥ कर्ता तकब्बुर जिस्म का, पर यह सदा न रहायगा । जो खाक का पुतला बना, वह खाक में मिल जायगा । खूब सूरत देखने लुभाओ मती ॥ २ ॥ धनके लालच बीच आ, मत जिंदगी बरबाद कर । किस लिये पैदा हुवा इस बात को तूं यादकर, बुरे कामों में पैसा लगाओ मती ॥ ३ ॥ अय युवानों इस युवानी, का गरम बाज़ार है ।

नेकी बदी का सोदा इस में, बिकरहा हर वार है। यहां से बदी खरीद ले जावो मती ॥ ४ ॥ तन से तुम तपस्या करो, सखावत करो धन धान से। साल सत्यासी बाघली में चौथमल कहे आनके। कभी भांग का रगड़ा लगावो मती ॥ ५ ॥

नम्बर ४५१

(तर्ज—पूर्ववत्)

तूं है कौन यह ज्ञान लगा तो सही, अज्ञान का परदा हटा तो सही ॥ टेर ॥ क्या तफावत सोचलो, इनसान और हैवान में। हेवान से विचार शक्ति अधिक है इनसान में। जरा सोच के दिल में जमा तो सही ॥ १ ॥ आर्य मनुष्य चत्री नृपत अपने तांई मानता। संयोग के लक्षण को असली समझना अज्ञानता। सच्ची बातें ये दिल में बिठा तो सही ॥ २ ॥ जिसम भी तेरा नहीं मानिंद है एह सदन के। म्यान से तलवार जैसे तूं जुदा है बदन से, प्यारे देह का मान मिटा तो सही ॥ ३ ॥ गरुर गुस्सा दगा लालच इसको भी वह मत जानियो। अच्छे बुरे निमित्त के फल इसे पहचानियो। असली बातों को दिल में बिठा तो सही ॥ ४ ॥ निज २ विषय को जाने इंद्रिय नहीं दिगर का भान है। प्रत्येक इंद्रिय का विषय का सब उसीको ज्ञान है। वह कौन है हमको बता तो सही ॥ ५ ॥

निद्रा स्वप्न जागृत दशा, इन तीन से भी अन्य है। जानने उसकी गति नहीं काम देता मन है । सुरता से भी परे तूं जाता सही ॥ ६ ॥ ज्ञाता से जो ज्ञेय पदार्थ दृश्य जड़ स्वरूप है । तूं ज्ञान मय तो है चिदानंद आत्मा अरूप है। तूं अपने स्वभाव में आता सही ॥ ७ ॥ मैं कौन हूं मै कौन हूं । यह कहनेवाला है वही, कहे चौथमल इस बात में बिलकुल ही संशय नहीं, इस का भेद तो गुरु से तूं पाता सही ॥ ८ ॥

नम्बर ४५२

[तर्ज--पूर्ववत्]

चेतन निज स्वरुप तूं पाया नहीं, जिससे मृत्युका अंतभी आया नहीं ॥ टेर ॥ इन्द्रिय संबंधी जो विषय है तू उसे सुख मानता । पाप केई कर रहा है यह तेरी अज्ञानता । तक्कर पिनी मक्खन कभी खाया नहीं ॥ १ ॥ दुनियां के सुख तो दृष्टिसे देखके पलटायगा । सदा कायम जो रहे असली व सुख कहेलायगा । इस का क्या है मर्म तेने पाया नहीं ॥ २ ॥ रत्न पाणी में पड़ा, पाणी तो हिलता रहायगा । वहां तलक वह रत्न है, तेरी नजर नहीं आयगा । इस न्याय पे ध्यान लगा तो सही ॥ ३ ॥ विषय कषाय के योगसे, तेरा मन चंचल हो रहा । कुछ भान तुझको है नहीं, नर जिंदगी को खो रहा । एक स्थान पे दिलको जमाया नहीं ॥ ४ ॥ मन की चंचलता सभी अभ्यास से मिटजा-

यगा। कहे चोथमल अज्ञान का, परदा तेरा हट जायगा। ज्ञान पानेसे फिर भरमाया नहीं ॥ ५ ॥

नम्बर ४५३

[तर्ज--पूर्ववत्]

फानि दुनियां में कोई लुभावो मती, नर जन्म को मुफ्त गमावो मती ॥ टेर ॥ दुनियांतो दोजख की तरह है मोमनोके वासते, और जन्नत जानलो तुम काफिरों के वासते। दिलसे खोफ खुदाका हटावो मती ॥ १ ॥ दुनियां तो खती आखरत की, सौचलो दिलमें जरा। सामान ले तू आकबत का, काल तेरे शिर खड़ा। यहांसे खाली हाथ तुम जावो मती ॥ २ ॥ मुर्दार के मानिंद दुनियां, श्वान चाहता है इसे। इनसे मोहब्बत ना करे वो है खुदा प्यारा जिसे। इन पुद्गलों से प्रेम लगावो मती ॥३॥ दुनियां तो घर फरेब का, फांसे में कोई आना मती। आखरत् है घर खुशी का भूल तुम जाओ मती। सच्ची बात हंसीमें उड़ावो मती ॥ ४ ॥ घोढ़नदी समा सितीमें कहता तुम को चौथमल। छोड़ बीदड़पन को अबतो बढ़ाले आतमबल। खाली वख्त बातोंमें बिताओ मती ॥ ५ ॥

नम्बर ४५४

(तर्ज—पूर्ववत्)

थोड़े जिने पे क्यों तूं गुमान करे, प्रभु नाम का क्यों ना तूं ध्यान धरे ॥ टेर ॥ चंचल है चपला सम ये आयु तुट एकदम जायगा। फिर जुड़े हरगिज नहीं आगे वहां पछतायगा। करके पाप वृथा अघ कुंभ भरे ॥ १ ॥ जुल्म कर लूटे गरीबों को, न तूं लावे दया। माल यहां रहजायगा नहीं साथ किसके ये गया। केई खाली हाथ कर कर के मरे ॥ २ ॥ ऐश और आराम में फंसके उमर खोई सभी। हाथ से दिना नहीं उपकार में कौड़ी कभी। नहीं करे तपस्या दिन रात चरे ॥ ३ ॥ स्वार्थी संसार नहीं कोई, काम तेरे आयगा। खाने में शामिल है सभी, कर्जा तूंही चुकायगा, अब तो आओ जरा तुम समझके धरे ॥ ४ ॥ साल सत्यासी में कहे यों चौथमल कान्हूर में। लूटलो तुम लाभ इस भव सिंधु रूपी पूर में। विना धर्म कहो नर कैसे तरे॥५॥

नम्बर ४५५

(तर्ज-याद हम करते हैं)

कम मत जाणो योरे कभी पुरुषसे नार ॥ टेर ॥ बाल ब्रह्मचारिणी रही थी, ब्राह्मी सुंदरी नार। सुयश फैला सुभद्रा का, खोले चंपाके द्वार ॥ १ ॥ गिरनार गुफामें राज

सतिने, जाके चीर सुखाया । रहे नेम को पतित होता, देके ज्ञान समझाया ॥ २ ॥ नारी निंदा मत करो नारी रत्न खान, नारी से नर पैदा होवे तीर्थंकर से महान ॥ ३ ॥ पतिव्रता हुई जनक दुलारी, जाने लोक तमाम । पतिके पहले याद करे सब. देखो सीताराम ॥ ४ ॥ तप जप करके स्वर्ग मोक्षमें, करती नार निवास । लीलावती की गिनत प्रकट है, पढ़लो तुम इतिहास ॥ ५ ॥ चितौड़ गढ़ पर पद्मनीने, निज पति को छोड़ाया । अग्नी बीच प्रवेश होयकर, अपना धर्म बचाया ॥ ६ ॥ मनमाड़ से विहार करिने, येवला शहर में आया । गुरु प्रसादे चौथमल ने साल छियासी गाया ॥ ७ ॥

नम्बर ४५६

(तर्ज—तुमे अपना तन मन लगाना पड़ेगा)

तुमे यहां से एक दिन जाना पड़ेगा, इस दुनियां से डेरा उठाना पड़ेगा ॥ टेर ॥ तेरे माता पिता और ज्ञाति कुटुम्ब, तुम्हें इन से मोहब्बत हटाना पड़ेगा ॥ १ ॥ तू तो शक्त बना दिल जुल्म करे, नतीजा तुमे इन का पाना पड़ेगा ॥ २ ॥ जो कुछ करना हो करलो यह वक्त मिली, नहीं तो वहां रंज उठाना पड़ेगा ॥ ३ ॥ जो मानोगे नहीं तो पड़ोगे नर्क में, फिर रोरो के रंज उठाना पड़ेगा ॥ ४ ॥

अगर मोक्ष की ख्वाइस दिल में लगी है, तो तुमे अपना फर्ज बजाना पड़ेगा ॥ ५ ॥ कहे चौथमल सदा धर्म करो, नहीं आवागमन में फिर आना पड़ेगा ॥ ६ ॥

नम्बर ४५७

(तर्ज—करना जो चाहे करले)

नर तन अमुल्य प्राणी तन कठिन से पाया, नव घाटी में भटकता अब पुण्य उदय में आया ॥ टेर ॥ पृथ्वी और पाणी अग्नी वायु वनस्पति में । आदि असंख्य व अनंता इसमें समय बिताया ॥ १ ॥ विकलेंद्रिय तीन मांही मर मर पुनः तूं जन्मा, किनी दया न किसने कैसा थें दुःख उठाया ॥ २ ॥ योनी पशु की पाई, सन्नी असन्नी दोनों । वहां पर भी कष्ट कैसा लद लद के घास खाया ॥ ३ ॥ नव मास तूं उदर में, लटका है देख प्राणी । दसमां मिला मनुष्य भव श्रीवीर ने बताया ॥ ४ ॥ क्यों खो रहा समय को, झूठे जगत के अंदर । अब तो प्रभु को भजलो यूं चौथमल चेताया ॥ ५ ॥

नम्बर ४५८

(तर्ज—वंशी वालों ने)

दुर्लभ नर का ये जन्म पाय शुभ कर्म करो उत्तम

प्राणी, हर वक्त समय यह नांय मिले, कुकर्म तजो उत्तम प्राणी ॥ टेर ॥ जो कुछ लिखा तकदीर बीच वैसी संपत तुझ आय मिली, अब आगे की तजवीज करो मत देर करो अवसर जाणी ॥ १ ॥ जो वक्त हाथ से जाता है, नहीं लौट कदापि आता है, नहीं मिले किसी जगह मोल, फिर है कैसी अमोलक जिंदगानी ॥ २ ॥ मत जुल्म करो प्रभु से तो डरो क्यों पापों का तुम घट भरो, अच्छे के लिये तेरे हक में समझाते हैं सत्गुरु ज्ञानी ॥ ३ ॥ धन दौलत और सुत दारा ये मिले आय कई पापी को, लेकिन मिलना है मुश्किल दिल सत्संग और प्रभु की वाणी ॥ ४ ॥ उन्नीसो छियासी चौथमल जलगांव बीच चौमासा किया उपदेश दिया फिर श्रोता को सुनो प्रेम लगा अति हित आणी ॥ ५ ॥

नम्बर ४५९

(तर्ज- अर्ज पर हुक्म श्रीमहावीर)

मिले अगर बादशाही तो खुदाही आय जाती है, जब आंखें चार होती है तो मोहब्बत आय जाती है ॥ टेर ॥ देखे केई मालदारों को घूमते बग्गी मोटर में, गरीबों की सुनते हैं नाहीं खुदाही आय जाती है ॥ १ ॥ पढ़े लिखे बड़े आलम वकील और बैरिष्टर, वो भी नहीं दीन को गिनते खुदाही आय जाती है ॥ २ ॥ कलेक्टर सुबा साहेब

मजिस्ट्रेट और डिपटी, और कप्तान तहसीलदार खुदा ही आय जाती है ॥ ३ ॥ चौधरी पंच नंबरदार पटेल पटवारी जमादार, बनावे जो सुखी किसी को खुदा ही आय जाती है ॥ ४ ॥ चौथमल कहे भजो ईश्वर, तजो मोह माया दुनियां की, मुरतबा जो मिले बहेतर खुदा ही आय जाती है ॥ ५ ॥
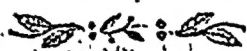
❀ वीर स्तुति ❀

महावीर मन मोहन प्रभुका, नाम है शान्ति करण सदा ।

हार्दिक भाव से उमग उमग के, करता हूँ मैं स्मरण सदा ॥

वीतराग जिन देव विभु भव-सिन्धु तारण तिरण सदा ।

रमण करे तुम नाम हृदय में, मिथ्या कुमत तम हरण सदा ॥

प्रणमत इन्द्र नरेन्द्र सुरासुर, अर्चित है तुम चरण सदा ।

भूतिमन्न सर्वज्ञ, "चौथमल" दास तुमारे शरण सदा ॥

ॐ शान्ति ! शान्ति ! शान्ति !

छप गया ! छप गया !! छप गया !!!

स्था० जैन साहित्य का चमकता हुआ सितारा,

भगवान् महावीर का आदर्श जीवन—

लेखक- प्रखर पंडित मुनि श्री चौथमलजी महाराज

सच्ची ऐतिहासिक घटनाओं का भण्डार वैराग्य रस का जीता जागता आदर्श, राष्ट्र--नीति व धर्म-नीति का खजाना सुमधुर--ललित भाषा का प्राण, सजीव भाषा में विरचित भगवान् महावीर का आद्योपान्त जीवन चरित्र छप कर तैयार है। जिसकी जगत् वल्लभ प्रसिद्धवक्ता पं० मुनि श्री चौथमलजी महाराज सा० ने साधुवृत्ति की अनेक कठिनाईयों का सामना करके अपने अमूल्य समय में रचना की है।

संसार की कैसी विकट परिस्थिति में भगवान् का अवतार हुआ ? भगवान् ने किस धीरवीरता के साथ उन विकट परि-स्थितियों का समूल नाश कर अमर शांति का एक छत्र शासन स्थापित किया, लोक कल्याण के लिये कैसे कैसे असह्य परि-षहों को सहन किया ? आदि रहस्यपूर्ण घटनाओं का सच्चा हाल पुस्तक के पढ़ने से ही विदित होगा। स्थानाभाव से हम यहां उसका विस्तृत वर्णन नहीं कर सकते। अथाह संसार सागर को पार करने के लिए यह जीवनी प्रगाढ़ नौका का काम देगी। इस की एक एक प्रति तो प्रत्येक सद्गृहस्थ को अवश्य ही अपने पास रखना चाहिए। बड़ी साइज के लगभग ६०० पृष्ठ सुनहरी जिल्द तिसपर भी मूल्य केवल २॥) मात्र। शीघ्र मंगा-कर पढ़िये। अन्यथा द्वितीय संस्करण की प्रतीक्षा करनी पड़ेगी।

पता - श्री जैनोदय पुस्तक प्रकाशक समिति, रतलाम.

वीर भगवान् की पवित्र वाणी का
अपूर्व संग्रह

निर्ग्रंथ प्रवचन

संग्रह कर्ता-प्रखर पंडित मुनिश्री चौथमलजी
महाराज

यह ग्रंथ भगवान् महावीर के उपदेश रूपी समुद्र से निकाले हुए अपूर्व धर्म रत्नों का खजाना है । ग्रंथकारने अपने जीवन के अनुभव और परिश्रम का पूर्ण उपयोग करके इस संग्रह को तैयार किया है ।

इसमें गृहस्थ धर्म, मुनि धर्म, आत्म शुद्धि, ब्रह्मचर्य, लेश्या, षट् द्रव्य, नर्क स्वर्ग आदि अनेक विषयों पर जैन सूत्रों में से खोज खोज कर गाथाएं संग्रह की गई हैं । पहिले मूल गाथा-और उसका अर्थ और फिर उसका सरल भावार्थ देकर प्रत्येक विषयको स्पष्ट रूपसे समझाया गया है । अन्तमें जिन सूत्रों से गाथाएं संग्रह की गई हैं उनका नाम और अध्याय नं० देकर सोने में सुगन्ध ही करदिया है । इस एक ग्रंथ द्वारा ही अनेक सूत्रों का सार सहज में प्राप्त होजायगा ।

३५० पृष्ठ और सुनहरी जिल्दसे सुसज्जित इस ग्रंथ का मूल्य केवल ॥) मात्र । शीघ्र मंगाइए अन्यथा दूसरे संस्करण की प्रतीक्षा करना पड़ेगी ।

पता-श्री जैनोदय पुस्तक प्रकाशक समिति, रतलाम